vk/kqfud dkyhu fgUnh lkfgR; esa ukjh&vfLerk dk /kjkryh; lp

08 Qjojh 2020

jk"Vªh; 'kks/k& laxks"Bh foHkkx& fgUnh

fo"k; % ^^vk/kqfud dkyhu fgUnh lkfgR; esa ukjh&vfLerk dk /kjkryh; lp** ij dsfUnzr 'kks/k iqLrd

lEiknd

Mk- jes'k V.Mu

विभागाध्यक्ष, हिन्दी

महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय खरसिया (छ.ग.)

वैभव प्रकाशन

रायपुर (छ.ग.)

vk/kfud dkyhu fgUnh lkfgR; esa
ukjh&vfLerk dk /kjkryh; lp

ISBN-978-81-944420-2-3

●

प्रकाशक
वैभव प्रकाशन
अमीनपारा चौक, पुरानी बस्ती रायपुर (छत्तीसगढ़)
दूरभाष : 0771-4038958, मो. 94253-58748
e-mail : sahityavaibhav@gmail.com
www.vaibhavprakashan.com

आवरण सज्जा : कन्हैया साहू
प्रथम संस्करण : फरवरी 2020
मूल्य : 500.00 रुपये
कॉपी राइट : लेखकाधीन

ADHUNIK KALIN HINDI SAHITYA MEN NARI–ASMITA KA DHARATALIY SACH
BY : DR. RAMESH TANDAN

●

Published by
Vaibhav Prakashan
Amin Para, Purani Basti
Raipur, Chhattisgarh (India)
First Edition : 2020
Price: Rs. 500.00

(पुस्तक में समाहित लेखों से संरक्षक, सम्पादक, प्रकाशक व आयोजन समिति का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। शोध–पत्रों में वर्णित तथ्य या विचार उसके लेखक के स्वयं के हैं। किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र रायगढ़ (छ.ग.) होगा और उसके लिए उस शोध–पत्र का लेखक जिम्मेदार होगा।)

leil.k

V. C. Sajjanar (IPS)

Cyberabad Police Commissioner

को शोध–पत्रों से युक्त संपादित

यह पुस्तक इस विश्वास के साथ

समर्पित कि नारी–अस्मिता का मान हो.

Prof. D K Sanjay, Dr. R K Tandan(HoD), Prof. J R Kurre, Prof. Vinod Jangade

हिन्दी साहित्य विभाग, 2019-20

एम जी शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय खरसिया

''आधुनिक कालीन हिन्दी साहित्य में नारी–अस्मिता का धरातलीय सच'' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय शोध–संगोष्ठी के अवसर पर पूरे देश के हिन्दी–विद्वानों से प्राप्त शोध–पत्रों के पुस्तक–प्रकाशन से मुझे अत्यन्त हार्दिक प्रसन्नता हुई है। संगोष्ठी अपने उद्देश्य में सफल हो, इसी आशा के साथ महाविद्यालय परिवार को शुभकामनाएँ...

(पत्र क्र.0059/MINISTER/CG/GOVT/2020 दिनांक 25 / 01 / 2020)

(उमेश पटेल)

केबिनेट मंत्री,
उच्च शिक्षा विभाग, छ.ग.

(पत्र क्रमांक 2578 / नि.स. / 2020 बिलासपुर दिनांक 27 / 01 / 2020)

यह हर्ष का विषय है कि औद्योगिक एवं इस्पात नगरी के श्यामांचल में स्थित महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय खरसिया जिला– रायगढ़ द्वारा ''आधुनिक कालीन हिन्दी साहित्य में नारी–अस्मिता का धरातलीय सच'' विषय पर आधारित राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस आयोजन पर प्रदेश के बहुप्रतिष्ठित एवं सम्माननीय विद्वानगण एवं छत्तीसगढ़ के समस्त महाविद्यालयों के प्राध्यापकगण के मार्गदर्शन में विभिन्न शोधार्थियों की भागीदारी होगी, साथ ही इनके द्वारा प्रेषित शोध–पत्र प्रकाशित करने की इस योजना की मैं हृदय से सराहना करता हूँ। आशा करता हूँ कि राष्ट्रीय संगाष्ठी में प्रकाशित होने वाली इस पुस्तक के माध्यम से प्रदेश एवं देश में महिलाओं की स्थिति को विशेष रूप से समावेश किया जाएगा, जिससे किसी भी क्षेत्र में चाहे वह राजनीतिक, सामाजिक अथवा वाणिज्यिक हो, महिला के प्रति दृष्टिकोण में कई बड़े बदलाव अवश्य ही होंगे। आधुनिक भारत में महिलाएँ– राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोक सभा अध्यक्ष, प्रतिपक्ष की नेता आदि जैसे शीर्ष पदों पर आसीन हुई हैं। एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी पर आधारित संपादित इस किताब के सफल प्रकाशन हेतु मेरी और विश्वविद्यालय परिवार की ओर से महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय खरसिया जिला– रायगढ़ (छ.ग.) एवं आयोजक समिति को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई....

नववर्ष 2020 के शुभकामनाओं सहित।

ik- th- Mh- 'kek

कुलपति
अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय
बिलासपुर

ikpk;l dh y[kuh l---

समुद्री सतह से 280 मीटर की ऊँचाई पर धरातल में 210 58′ 48′′ उत्तरी अक्षांश व 820 05′ 03′′ पूर्वी देशान्तर के मध्य अवस्थित है– खरसिया। व्यापार एवं धन–धान्य से भरपूर इस धरा में लोगों की आस्था धर्म व संस्कृति के प्रति इतनी गहरी हुई कि अब यह 'धर्म की नगरी' के नाम से ख्याति प्राप्त है। राष्ट्रीय स्तर के कवियों के द्वारा काव्य–पाठ, देश व प्रदेश स्तरीय धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन, बेटियों पर केन्द्रित अनेक कार्यक्रम आदि इस नगरी की अन्यतम विशेषताएँ हैं। रायगढ़, जांजगीर व कोरबा तीन जिलों को स्पर्श करते हुए 157 किमी की परिधि के केन्द्र बिन्दु पर स्थित खरसिया नगरी का एक मात्र, 1910 विद्यार्थियों की स्वीकृत छात्र संख्या का यह शासकीय महाविद्यालय (सत्र 2019–20 में दर्ज संख्या 1593) जो वर्तमान में अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय बिलासपुर (छ.ग.) से संबद्ध है और अपनी स्थापना की स्वर्ण जयंती मना चुका है (स्थापना वर्ष 1964 ई0), जांजगीर–चाम्पा जिले के सक्ती क्षेत्र, डभरा क्षेत्र, धार्मिक पर्यटन नगरी चन्द्रपुर क्षेत्र, हाथी परिभ्रमण परिक्षेत्र धरमजयगढ़ के छाल क्षेत्र, कोरबा जिले के खरसिया समीपवर्ती क्षेत्र, खरसिया स्थित बरगढ़ खोला के आदिवासी अंचल में निवासरत छात्र–छात्राओं को कला, वाणिज्य एवं विज्ञान जैसे मुख्य संकायों में ज्ञान लाभ देने के लिए कटिबद्ध तो है ही, साथ में महाविद्यालय का स्टेडियमनुमा खेल मैदान, परिसर में ही कन्या छात्रावास, महज 100 मीटर की दूरी पर बालक छात्रावास, एनसीसी–एनएसएस स्पोर्ट्स–स्वीप, आईक्यूएसी–रेडक्रास– प्रतियोगिता परीक्षा के लिए स्पेशल कोचिंग कक्षाएँ, इण्डक्शन–मेंटर सुविधा–ऑनलाईन शुल्क भुगतान व एस एम एस की सुविधा आदि इस महाविद्यालय की अद्वितीय विशेषताएँ होने से यह महाविद्यालय छात्रों के आकर्षण का केन्द्र भी है। हिन्दी विभाग में अनवरत कवि–गोष्ठी, हिन्दी दिवस, साहित्यकारों की जयन्ती, राष्ट्रीय स्तर की पत्रिका यथा 'हंस', 'चिन्तन–सृजन', 'समकालीन भारतीय साहित्य', 'साहित्य अमृत' आदि से हिन्दी के प्रबुद्ध छात्रों में साहित्य–सृजन के प्रति गहरी रूचि जागृत हुई है। इस राष्ट्रीय शोध–संगोष्ठी से अंचल सहित सम्पूर्ण देश के हिन्दी–पाठक, साहित्य में नारी व समाज में नारी की अवस्थिति को सुगमता से आत्मसात कर पाएंगे एवं पाठक जागृत, समोन्नत व सृजक भी होंगे।

अंत में, इससे जुड़े हुए समस्त मेहमानों व मेजबान दल को असीम शुभकामनाएँ.

Mk- ih lh ?krygj

प्राचार्य

lıikndh;---

यह सत्य है कि विश्व का निर्माण, विभिन्न राज्यों से; राज्य का निर्माण, विभिन्न समुदायों व समाज से; समाज का निर्माण, मनुष्यों से और मनुष्य का निर्माण, नारियों से होता है। परन्तु यदि नारी ही संकट में हो, नारी की अस्मिता कलुषित हो रही हो, नर उसे अपने पैरों तले रौंद रहा हो, सामूहिक बलात्कार कर रहा हो, बलात्कार के बाद जिंदा जला रहा हो तो विश्व का कल्याण कैसे हो सकता है ? जन्मदायिनी, जीवनसंगिनी, भगिनी व आत्मजा आदि अनेक प्रस्थिति में अपने आपको स्थापित कर सकने में सक्षम नारी जो करूणा, प्रेम, ममता, सेवा, त्याग की प्रतिमूर्ति है, की अस्मिता दिनों–दिन नीलाम होती जा रही है। एक ओर इंसान मंगल ग्रह की सैर करना चाहता है, तो दूसरी ओर कुछ वहशी लोग धूर्तता व दरिंदगी की गर्त में डुबते हुए कोख पर ही कालिख पोत रहे हैं। ज्ञान व शिक्षा का स्तर जितना ऊँचा होते जा रहा है, लोग उसका इस्तेमाल उतने ही ज्यादा चालाकी, दरिंदगी व लड़कियों को बहलाने–फुसलाने में कर रहे हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार पिछले दो वर्षों में नारियों पर हो रहे अपराधों की तादात में वृद्धि हुई है, इससे यह पुष्टि होती है कि देश विकास की ओर नहीं, पतन की ओर अग्रसर हो रहा है। साहित्य में नारी के जिन रूपों का वर्णन मिलता है वह सत्य तो है क्योंकि कहा गया है– साहित्य समाज का दर्पण होता है, परन्तु आज दर्पण की आवश्यकता नहीं जो घटना का प्रतिबिम्ब दिखाए, बल्कि दर्पण की जगह तलवार हो, जो ऐसी तीर चलाए कि अपराध ही कारण–कार्य सहित नष्ट हो जाए।

संगोष्ठी में आधुनिक कालीन हिन्दी साहित्य में नारी अस्मिता के धरातलीय सच के सम्बन्ध में व्यापक चर्चा– परिचर्चाएँ, शंकाएँ, समाधान की तलाश इन शोध पत्रों में दृष्टिगोचर होते हैं। देश भर के साहित्य व विषय के प्रति रूचि रखने वाले अध्येताओं के विचार, लेख, शोध जो इस पुस्तक में संपादित हैं, निश्चित रूप से नारियों की दिशा व दशा को उन्नत करने,

उनकी अस्मिता की रक्षा करने, पुलिस व कानून के द्वारा अधिक सुरक्षा मुहैया कराए जाने, सुखी नशीली दवाओं के रोकथाम करने, नारियों को शारीरिक व मानसिक रूप से मजबूत बनाने आदि में सहायक सिद्ध होंगे।

उम्मीद करते हैं, देश के विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त शोध–पत्र, इन पृष्ठों पर ही अमिट न हो, अपितु देश के जन–जन तक, हर पाठक तक पहुँचे और ऐसा उबाल मारे कि आस–पास कोई भी ऐसी घटना न घटे जो नारी की कुण्ठा व क्रंदन का कारक बने।

महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय खरसिया छ.ग. में हिन्दी विभाग के द्वारा ''आधुनिक कालीन हिन्दी साहित्य में नारी अस्मिता का धरातलीय सच'' विषय पर आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी के संरक्षक/प्राचार्य डॉ. पी सी घृतलहरे, संगोष्ठी के कोषाध्यक्ष प्रो. जयराम कुर्रे, संगोष्ठी के सह–संयोजक प्रो. द्वय दिनेश कुमार संजय व विनोद जाँगड़े, अन्य विभाग के प्राध्यापकों, कर्मचारियों, हिन्दी विभाग के छात्र–छात्राओं, महाविद्यालय के अन्य छात्र–छात्राओं, पोस्टर–रंगोली में अपना अमूल्य योगदान करने वाले छात्र–छात्राओं का उनके विशिष्ट योगदान के लिए संगोष्ठी–संयोजक डा. रमेश टण्डन (विभागाध्यक्ष–हिन्दी) के अन्तर्मन से साधूवाद–साभार।

देश भर से आगत समस्त विद्वानों, विदुषियों का आत्मीय अभिनन्दन, स्नेह। राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी के आयोजन में जिन्होंने प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से सहयोग किया, उन सभी का हृदय से धन्यवाद। निवेदन है, आगामी संगोष्ठी में शोध–पत्र प्रकाशन के पूर्व आपका सुझाव व मार्गदर्शन हमें अवश्य प्राप्त होगा।

''जय–नारी''

Mk- je'k V.Mu

vuØe

1.	आधुनिक कालीन हिन्दी–साहित्य में नारी–अस्मिता का धरातलीय सच	डॉ. रमेश टण्डन	11
2.	भारतीय काव्य में नारी समाज का अनुशीलन	प्रो. राजकुमार लहरे	18
3.	नारी अपराध	नेहा विश्वकर्मा	26
4.	वर्तमान दौर में नारी का बदलता स्वरूप	श्रीमती अलका यादव	30
5.	महिला स्वास्थ्य, शिक्षा व देखभाल	मोना केवट	33
6.	हिन्दी साहित्य में नारी विमर्श	प्रदीप कुमार दास दीपक	35
7.	मेहरून्निसा परवेज के कथा साहित्य में नारी की स्थिति	डॉ. डेजी कुजूर	40
8.	नारी और समाज	श्रीमती मार्ग्रेट कुजूर	46
9.	नारी एवं समाज	दीपिका प्रजापति	52
10.	साहित्य में नारी के रूप	डॉ. सुनीता राठौर	55
11.	नारी और समाज	प्रो. रीता सिंह	57
12.	समकालीन हिन्दी कविताओं में स्त्री–चरित्र	श्रीमती मंजू देवी कोचे श्री नरेन्द्र कुमार कुलमित्र	62
13.	हिन्दी साहित्य में नारी–विमर्श	डॉ. आँचल श्रीवास्तव प्रज्ञा सिंह	75
14.	नारी और समाज	अविनाश बाड़ा	81
15.	नारी एवं नारी शिक्षा की महत्ता	कु. अलका रिनी खलखो	85
16.	नारी और भारतीय समाज	श्रीमती आशा भारद्वाज	89
17.	मन्नू भंडारी की कहानियों में बदलते परिवेश की स्त्री	डॉ. आकांक्षा मिश्रा	96
18.	साहित्य और समाज में स्त्री का स्वरूप	विनोद कुमार	102
19.	भारतीय ग्रामीण महिलाओं की अस्मिता	चरणदास बर्मन	107
20.	वर्तमान समाजिक परिदृश्य एवं नारी अस्मिता	डॉ. बी.एन. जागृत बिन्दु डनसेना	118

21. साहित्य में नारी : कल और आज	डॉ. बी. नन्दा जागृत	122
22. हिन्दी उपन्यासों में नारी का धरातलीय सच	दिनेश कुमार संजय	126
23. हिन्दी साहित्य में महिला लेखिकाएँ और नारी अस्मिता	डोमन प्रसाद चंद्रवंशी	132
24. नारी और समाज	वंदना राठौर	136
25. प्रेमचंद जी के उपन्यासों में नारी चिंतन	डॉ. रेखा दुबे	143
26. आधुनिक हिन्दी काव्य में नारी अस्मिता का धरातलीय सच	डॉ. बी.एन. जागृत पुष्पा यादव	147
27. हिन्दी उपन्यासों में नारी का धरातलीय सच	डॉ. चन्द्र कुमार जैन जीवंतिका ठाकुर	150
28. भारतीय समाज में नारी का स्थान कल, आज और कल	लैनदास मानिकपुरी मनीषा वर्मा	153
29. हिन्दी साहित्य में नारी–विमर्श	डॉ. सुनीता राठौर डॉ. बी.आर. महिपाल	157
30. अगनपाखी में नारी संघर्ष	डॉ. हरिणी रानी आगर लक्षेश्वरी	159
31. नारी विमर्श के परिप्रेक्ष्य में 'छिन्नमस्ता'	डॉ. दयानिधि सा	160
32. नारी और समाज	डॉ. सुशीला गोयल	169
33. हिन्दी साहित्य में नारी विमर्श	अमित कुमार चौबे मंजरी कुशवाहा	172
34. नारी और कानून	मदन मल्होत्रा	177
35. स्वातंत्र्योत्तर काल की हिंदी कविता में नारी	डॉ. स्वामीराम बंजारे	182
36. नारी और समाज	डिम्पल अग्रवाल	191
37. हिन्दी महाकाव्य में नारी अस्मिता का धरातलीय सच	जयराम कुर्रे	194
38. नारी–विमर्श	डॉ. बेठियार सिंह साहू	201
39. नारी एवं समाज	शिवानी शर्मा	210

vk/kfud dkyhu fgUnh&lkfgR; e: ukjh&vfLerk dk /kjkryh; lp

Mk- je'k V.Mu
विभागाध्यक्ष–हिन्दी,
महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान
महाविद्यालय खरसिया, जिला– रायगढ़ (छ.ग.)

fgUnh lkfgR; e: ukjh

नारी–अस्मिता से तात्पर्य है, नारी का अस्तित्व, उसकी अपनी पहचान, उसकी अपनी सत्ता, अपने अस्तित्व का एहसास, उसका अपना एक दृष्टिकोण। विभिन्न युगों से अपने उलझे जीवन के प्रश्नों के उत्तर खोजती हुई नारी आज भी पुरूष के लिए ही नहीं स्वयं के लिए भी प्रश्न बनी हुई है। नारी अस्मिता के संदर्भ में मन्नू भण्डारी तथा चंद्रकांता के उपन्सायों का मूल्यांकन करती हुई शिवाजी विश्वविद्यालय से संगीता व्ही पाटिल 2007 में लिखती है कि नारी अस्मिता को नारी तथा पुरूष दोनों द्वारा उपेक्षित होना पड़ता है। उसे कभी शिक्षा नहीं दी जाती, तो कभी वह खुद इतनी उच्च शिक्षित होती है कि उसके विवाह में बाधा आ जाती है। पुरूष जिम्मेदारी न निभाये तो नारी को मातृत्व की इच्छा को दबाना पड़ता है। प्रेम में असफल होने के कारण अकेलेपन की समस्या सामने आती है। दाम्पत्य संबंधों में तनाव से संयुक्त परिवार बिखर रहे हैं। दिखावटी रिश्तों की समस्या भी है।

2005 में महात्मा गांधी विश्वविद्यालय से रानी कोशी अपने शोध प्रबंध ''नारी के बदलते रूप–स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटकों में'' में लिखती है कि परिवर्तनशील नारी पुरूष के समकक्ष प्रेम संबंधों में या यौन संबंधों में स्वतंत्र व्यक्तित्व रखना चाहती है। नारी के व्यक्तित्व की पूर्णता के लिए एक से अधिक पुरूष की आवश्यकता पर बल देने वाली देवयानी, मनीषा, सावित्री, केशी, कंचन रूपा जैसी नारियाँ यह सत्य भूल जाती हैं कि मॉडेन बनने की चक्कर में पड़कर वे पवित्र पारिवारिक आदर्शों को गंवार लेती हैं। अपनी अस्मिता के लिए प्रयत्नशील स्त्री, समाज–सम्मत, सभी नैतिक मूल्यों को पैरों तले कुचल कर आत्मसुख की दौड़ में मस्त घूमती रहती हैं। इस भ्रमण में अपने परिवार को भी तोड़ती हैं। पुराने जमाने में नारी पुरूष के आश्रय

में रहती है तो आज वह पुरूष के बराबर है। उसकी अस्मिता को लेकर समाज में हमेशा ही समय–सापेक्ष अनेकानेक प्रश्न उठाये जाते रहे हैं। उनका समाधान हुआ है या नहीं। यह सब कुछ निरुत्तरित ही है।

महादेवी वर्मा अपने गद्य साहित्य में लिखती हैं, ''चाहे हिन्दू नारी की गौरव–गाथा से आकाश गूँज रहा हो, चाहे उसके पतन से पाताल काँप उठा हो परन्तु, उसके लिए 'न सावन सूखे न भादों हरे' की कहावत ही चरितार्थ होती रही है। उसे अपने हिमालय को लजा देने वाले उत्कर्ष तथा समुद्रतल की गहराई से स्पर्धा करने वाले उपकर्ष दोनों का इतिहास आँसुओं से लिखना पड़ा है और सम्भव है, भविष्य में भी लिखना पड़े।'' सम्बलपुर विश्वविद्यालय से मंजू महापात्रा 2005 में ही अपने शोध प्रबंध में महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य में वर्णित उनके विचारों को रेखांकित करती हुई लिखती है कि ''भारतीय पुरूष जैसे मनोरंजन के लिए रंग–बिरंगे पक्षी पाल लेता है, उपयोग के लिए गाय या घोड़ा पाल लेता है उसी प्रकार वह एक स्त्री को भी पालता है तथा अपने पालित पशु–पक्षियों के समान ही वह उसके शरीर और मन पर अपना अधिकार समझता है। हमारे समाज के पुरूष के विवेकहीन जीवन का सजीव चिन्ह देखना हो तो विवाह के समय गुलाब की खिली हुई स्वस्थ बालिका को पाँच वर्ष बाद देखिए। उस समय, वह असमय प्रौढ़ा, कई दुर्बल संतानों की रोगिनी माता में कौन सी विवशता, कौन सी रूला देने वाली करुणा न मिलेगी।''

नारी जागरण के परिप्रेक्ष्य में रजनी पनिकर और चन्द्रकांता के उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करती हुई कानपुर विश्वविद्यालय से सी ज्ञानेश्वरी 2011 में लिखती हैं कि आज हमारे समाज में नारी जिन–जिन समस्याओं का सामना कर नही है उनमें प्रमुख है–शोषण की समस्या। जहाँ एक ओर नारी को सारी सुविधाएँ और अधिकारी देकर उसका स्थान उन्नत बनाने का प्रयास हो रहा है वहीं दूसरी ओर उस पर शोषण का बोलबाला आज भी जारी है। दोनों लेखिकाओं ने घर–बाहर दोनों जगहों पर स्त्री पर किए जाने वाले अत्याचार और शोषण का सच्चा एवं यथार्थ चित्रण करके सम्पूर्ण समाज को इस ओर सजग बनाया है। साथ ही नारी को केवल चीज तथा यंत्र मानने वाली समाज की मनोदशा का पर्दाफाश किया है। स्त्री सशक्तीकरण के कारण 'महिला युग' के नाम से उद्घोषित इस इक्कीसवीं सदी में स्त्री कामयाबी के उत्तुंग शिखर पर पहुँच गई है। अपितु आज भी उस पर अत्याचार और शोषण का बोलबाला हो रहा है तथा उसकी स्थिति अत्यंत

दयनीय एवं शोचनीय है। समाज का सच्चा और यथार्थ चित्रण साहित्य में मिलता है। अतः नारी और उसकी दयनीयता तथा समस्याएँ भी साहित्यकारों की नजरों से छिप नहीं सकी। परन्तु जैसे ही साहित्य जगत में महिलाओं ने पदार्पण किया; नारी को, उसकी समस्याओं को साहित्य में ज्यादा महत्त्व दिया जाने लगा। महिला लेखिकाओं की रचनाओं में स्त्री जीवन की सच्चाई को उन्हीं के नजरिए से वाणी मिली और उनकी परेशानियों का समाधान ढूँढने का प्रयास भी किया जाने लगा।

पं. रविशंकर विश्वविद्यालय से सुनीता बोकड़े 2017 में लिखती हैं कि यदि स्त्री जीवन के स्याह पक्ष पर नजर डालें तो महिलाओं पर दिन प्रतिदिन हो रहे अत्याचारों की गणना करते हुए अत्यंत कष्टदायक सिहरन की अनुभूति होती है। कन्या भ्रूणहत्या, भेदभावपूर्ण पालन पोषण, महिला निरक्षरता, बाल विवाह, दहेज प्रथा, ससुराली–उत्पीड़न, पारिवारिक–कलह, नव–वधू वध, बलात्कार, वेश्यावृत्ति, हत्या, सतीप्रथा और विधवाओं का घोर अनादर एवं दुर्दशा जैसी अत्यंत घृणित एवं दंडनीय कुकृत्यों के समाचार प्रायः प्रतिदिन ही आते रहते हैं।

पंजाब विश्वविद्यालय से सरिता विश्नोई 2011 में प्रस्तुत अपने शोध प्रबंध में लिखती है कि मैत्रेयी पुष्पा स्त्री की देह तथा आत्मा को एक–दूसरे से भिन्न नहीं मानती। चूँकि स्त्री का सर्वाधिक शोषण स्त्री–देह को आधार बनाकर ही किया जाता है, इसलिए वे स्त्री–मुक्ति के लिए उसकी दैहिक–मुक्ति को भी अनिवार्य मानती है। लेकिन दैहिक मुक्ति के नाम पर वे अपनी नायिकाओं के माध्यम से किसी प्रकार की अनैतिकता या व्यभिचार को प्रश्रय नहीं देतीं, अपितु इनकी नायिकाएँ अपनी देह पर अपना अधिकार जताकर उसे अपने स्वत्व की रक्षा के लिए हथियार के रूप में प्रयोग करती हैं। समाज में नारी–चेतना जाग्रत करने तथा नारी–सशक्तीकरण में हिन्दी की महिला लेखिकाओं ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। जहाँ स्वतंत्रता पूर्व श्रीमती बंग महिला, प्रियम्वदा देवी, सुभद्राकुमारी चौहान, सुमित्रा कुमारी सिन्हा, चन्द्रकिरण सोनरेक्सा इत्यादि कुछ गिनी–चुनी लेखिकाओं ने कथा–लेखन के माध्यम से समाज में स्त्री–चेतना जगाने में अपना अहम् योगदान दिया, वहीं स्वतंत्रता–प्राप्ति के पश्चात् चन्द्रकिरण सोनरेक्सा, कंचनलता सब्बरवाल, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, चित्रा मुद्गल, ममता कालिया, नासिरा शर्मा, मृदुला गर्ग, कुसुम अंसल इत्यादि कथा–लेखिकाओं से लेकर वर्तमान में अनेक प्रसिद्ध लेखिकाएँ अपने लेखन को आधार बनाकर स्त्री–अधिकारों के लिए आवाज उठा रही हैं और स्त्री–सशक्तीकरण का

मार्ग प्रशस्त कर रही हैं।

ukjh vfLerk dk /kjkryh; lp

दिल्ली की सड़क पर चलती बस में 23 साल की निर्भया के साथ सामूहिक बीभत्स बलात्कार होने के बाद उसकी हत्या हो जाती है। 07 साल बाद, 22 जनवरी 2020 को आरोपियों को फांसी दिए जाने की सजा होती है। परन्तु नवभारत 08 जनवरी 2020 के अनुसार, जिस बस स्टैण्ड (मुनिरका) से निर्भया अपने दोस्त के साथ बस पर सवार हुई थी, वहाँ आज भी अंधेरा है और महिलाओं को अश्लील टिप्पणियों का सामना करना पड़ता है। प्रशासन ने सुरक्षा के तमाम वादे भी किए, पर वादा पूरा नहीं हुआ। रात्रि नौ बजे के बाद पूरा क्षेत्र गैरकानूनी पार्किंग में बदल जाता है।

नवभारत 07 दिसम्बर 2019 के अनुसार, मुख्य पंक्ति में ये समाचार छपा कि....''हैदराबाद रेप केस : पुलिस ने किया आरोपियों को ढेर, लोगों ने की फूलों की बारिश, जहाँ दरिंदगी, वहीं किया एनकाउंटर, पुलिस कमिश्नर बोले– कानून ने अपना काम किया।'' परन्तु, इसका अगला भाग यह भी है कि राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग की टीम इस मुठभेड़ की जाँच करेगी।

नवभारत 06 दिसम्बर 2019 के अनुसार, मुख्य पंक्ति में ये समाचार छपा कि.... ''हैदराबाद की घटना के कुछ दिनों बाद ही दूसरी घटना, दिसम्बर में गैंगरेप, मार्च में एफ आई आर, अब जिंदा जलाया, उन्नाव की घटना, उत्तरप्रदेश में कोर्ट जा रही रेप पीड़िता को जिंदा जला दिया, आरोपियों ने चाकू मारा, फिर केरोसिन डाल आग लगाई।''

समाचार पत्र हरिभूमि 09 दिसम्बर 2019 के अनुसार, महाराष्ट्र के गढ़चिरौली में 20 साल की महिला नर्स के साथ एक व्यक्ति ने अमानवीय कृत्य किया।

समाचार पत्र हरिभूमि 13 दिसम्बर 2019 के अनुसार, महाराष्ट्र के पुणे में 15 साल की नाबालिक लड़की के साथ अमानवीय कृत्य किया गया, इसके बाद उसकी गला घोंटकर हत्या कर दी गई।

समाचार पत्र हरिभूमि 23 दिसम्बर 2019 के अनुसार, ''राजस्थान में दो महिलाओं को बुरी तरह से पीटा गया है। जिसके बाद एक महिला का अपहरण कर ले जाया गया है। जिसमें दावा किया गया है कि महिलाओं का लगातार अपहरण किया जाता है जिसके बाद उनके साथ बलात्कार होता है। ऐसा शायद ही कोई दिन जाता हो जब बलात्कार जैसे वारदात की खबर सामने न आती हो।''

समाचार पत्र हरिभूमि 27 दिसम्बर 2019 के अनुसार, गुजरात के सूरत

में 3 साल की बच्ची से हुए अमानवीय कृत्य व हत्या के मामले में आरोपी को फांसी की सजा दी गई।

समाचार पत्र हरिभूमि 01 जनवरी 2020 के अनुसार, उत्तरप्रदेश में सीतापुर के लहरपुर में 25 साल की महिला को दो दिनों तक बंदी बनाकर तीन लांगों ने उनके साथ अमानवीय कृत्य किया।

समाचार पत्र हरिभूमि 01 जनवरी 2020 के अनुसार, मुंबई के बांद्रा इलाके में 60 साल के एक बुजुर्ग ने 25 साल की एक महिला के साथ अमानवीय कृत्य किया।

समाचार पत्र हरिभूमि 08 जनवरी 2020 के अनुसार, बिहार की राजधानी पटना में मॉल के बाहर चार लड़कों ने बंदूक की नोक पर एक लड़की को अगवा किया, फिर एक फ्लैट में ले जाकर उसके साथ अमानवीय कृत्य किया।

समाचार पत्र हरिभूमि 21 दिसम्बर 2019 के अनुसार, देश में 5 ऐसे सामूहिक अमानवीय कृत्य हुए हैं जिसमें पीड़िताओं को अपनी जान गंवानी पड़ी है–

1. रांची रेप केस– झारखण्ड के रांची में बी टेक की छात्रा के साथ अमानवीय कृत्य और जिंदा जलाने की घटना में आरोपी राहुल रॉय को विशेष अदालत ने फांसी की सजा सुनाई।
2. हैदराबाद गैंगरेप– आरोपियों ने महिला पशु चिकित्सक के साथ पहले सामूहिक अमानवीय कृत्य किया, फिर जिंदा जला दिया।
3. उन्नाव रेप केस– आरोपी ने युवती का पहले अमानवीय कृत्य किया, फिर कुछ दिन बाद उस पर पेट्रोल डालकर जिंदा जला दिया।
4. दिल्ली निर्भया गैंगरेप कांड– 16 दिसम्बर 2012 को चलती बस में 06 आरोपियों ने उसके साथ सामूहिक अमानवीय कृत्य कर उसे बाहर फेंक दिया, जिससे उसकी मौत हो गई।
5. उन्नाव रेप कांड– पूर्व विधायक कुलदीप सिंह सेंगर ने 2017 में एक युवती का अपहरण कर उसके साथ अमानवीय कृत्य किया। बयान देने के लिए जाते वक्त आरोपी ने 28 जुलाई को युवती की कार में एक ट्रक से टक्कर मरवा दी थी, जिसमें पीड़िता की मौत हो गई।

समाचार पत्र हरिभूमि 07 दिसम्बर 2019 के ''मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, राजधानी दिल्ली में महिलाओं के साथ होने वाले अपराधों की

रिपोर्ट सामने आई है। इस रिपोर्ट के मुताबिक, दिल्ली में रेप, गैंगरेप, मारपीट, छेड़छाड़ और अपहरण करने के मामले में हर दिन 36 महिलाएँ शिकार होती हैं।'' ''दिल्ली पुलिस से मिली ताजा रिपोर्ट में कहा गया है कि हर दिन दिल्ली में 6 महिलाएँ रेप का शिकार होती हैं। बीते 7 सालों में दिल्ली में 1 लाख से ज्यादा महिलाएँ किसी ना किसी तरह के वारदातों का शिकार हुई हैं अगर रेप और गैंगरेप के ममालों की बात की जाए तो इस साल इन बारदातों में बढ़ोत्तरी देखी गई है, जो काफी चिंता का विषय है। वहीं दूसरी तरफ 2018 और 19 में सबसे ज्यादा अपहरण और रेप का शिकार महिलाएँ हुई हैं।''

इस प्रकार दिल्ली, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, आंध्रप्रदेश, झारखण्ड, बिहार समेत देश के कई राज्यों में पिछले दो सालों में महिलाओं के साथ हुए अपराधों की तादात बढ़ी है। इस संबंध में नवभारत के द्वारा दिनांक 09 दिसम्बर 2019 को किया गया खुलासा उल्लेखनीय है, ''पिछले दो सालों में महिलाओं के साथ हुए अपराधों के लेकर पुलिस की एक रिपोर्ट में यह खुलासा हुआ है कि छेड़छाड़ और दुष्कर्म जैसे अपराधों को ज्यादातर सूखे नशे (गांजा, पाउडर, नशीली दवा आदि) में धुत अपराधियों ने ही अंजाम दिया है।'' नवभारत की पड़ताल में यह बात सामने आई है कि शराब के दाम बढ़ने के बाद ज्यादा नशे के लिए नशेड़ी शराब में इन नशीली दवाओं और पाउडर को मिलाकर शराब का सेवन करते हैं, इससे तेजी से नशा लगता है, ऐसी शराब का सेवन करने के बाद सोचने–समझने की क्षमता खत्म हो जाती है और अपराधी वरदात करते हैं। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि सूखे नशे की सप्लाई का नेटवर्क तोड़ने में पुलिस फेल रही है।

कुछ दिनों के भीतर घटित हैदराबाद और उन्नाव रेप केस से सबक लेते हुए छत्तीसगढ़ पुलिस ने कुछ सकारात्मक कदम उठाए हैं जिसे नवभारत ने दिनांक 08 दिसम्बर 2019 को प्रमुखता से लिखा– क्राइम ब्रांच रायपुर के आई जी श्री आनंद छाबड़ा ने यह व्यवस्था दी कि मुसीबत में फंसी महिलाओं तक पुलिस तुरंत पहुँचेगी, थानेदारों से कहा कि हॉस्टल, कॉलेज व होटलों से बात करें, जगह–जगह हेल्पलाईन नंबर (112, 1091, 100, 108) के साथ–साथ सी एस पी, थाना प्रभारियों व थानों के नंबर भी उपलब्ध कराए जाएं, थानेदार सुनसान जगहों की मार्किंग करें व वर्किंग महिलाओं की सुरक्षा के इंतजाम किए जाएं।

ये मात्र दो–चार दिवसों के समाचार पत्रों का अवलोकन विश्लेषण है।

ऐसे अनगिनत और हकीकत मामले अखबारों में मिल जाएंगे, जिस पर हम पाठकों को चिंतन–मनन कर समाधान की तलाश में जुट जाना है। कानून, देर से ही सही, अपना काम कर रहा है, पुलिस भी अपना काम कर रही है, साहित्य साधक भी अपनी कलम से खूब लिख रहा है। पर कहाँ कमी है कि पिछले दो सालों में महिला अपराध बढ़ गए?

शायद जन–जागरूकता की कमी...!!!

शायद कठोर कानून की कमी, त्वरित कानूनी–कार्यवाही की कमी..!!!

शायद महिलाओं में आत्मविश्वास की कमी, सुरक्षा संबंधी प्रशिक्षण की कमी...!!!

संदर्भः–

1. पाटिल, संगीता व्ही; नारी अस्मिता के संदर्भ में मन्नू भंडारी तथा चन्द्रकांता के उपन्यासों का मूल्यांकन, 2007, शिवाजी विश्वविद्यालय.
2. कोशी, रानी; नारी के बदलते रूप–स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटकों में, 2005, महात्मा गांधी विश्वविद्यालय.
3. महापात्रा, मंजू; 'नारी' महादेवी के गद्य साहित्य में, 2005, सम्बलपुर विश्वविद्यालय.
4. सी ज्ञानेश्वरी, नारी जागरण के परिप्रेक्ष्य में रजनी पनिकर और चन्द्रकांता के उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन, 2011, कानपुर विश्वविद्यालय.
5. बोकड़े, सुनीता; नारी सशक्तीकरण का उनकी निर्णय क्षमता और वृत्तिक परिपक्वता पर प्रभाव का अध्ययन, 2017 पं0 रविशंकर विश्वविद्यालय.
6. विश्नोई, सरिता; नारी विमर्श के संदर्भ में मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य का अध्ययन, 2011, पंजाब विश्वविद्यालय.
7. हरिभूमि दिनांक– 07 दिसम्बर 2019, 09 दिसम्बर 2019, 13 दिसम्बर 2019, 23 दिसम्बर 2019, 27 दिसम्बर 2019, 01 जनवरी 2020, 08 जनवरी 2020
8. नवभारत दिनांक– 06 दिसम्बर 2019, 07 दिसम्बर 2019, 08 दिसम्बर 2019, 09 दिसम्बर 2019, 08 जनवरी 2020

■■

Hkkjrh; dkO; e: ukjh lekt dk vu'khyu

ik- jktdekj ygj
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) शास. पी. डी.
वाणिज्य एवं कला महाविद्यालय रायगढ़ (छ.ग)

स्त्री–पुरूष के मिलन व संबंध द्वारा जीवन का निर्माण होता है और दोनों के समन्वित व्यवहार से सामाजिक उत्थान। ये एक सिक्का के दो पहलू के समान है! एक रथ के दो पहिया!! सदियों से विकास का मूल मंत्र नारियों का पुरूषों के साथ–साथ चलकर घर–परिवार, समाज व देश विकास के प्रति अपना स्पष्ट व तार्किक दृष्टिकोण रखना है। लेकिन नारी को समानता के स्थान पर नरक का द्वार तक कहा गया और भोग्या (मनोरंजन की वस्तु) समझा गया। साहित्य भी नारी अधिकार की बात पूरजोर आखिर क्यों नहीं उठाता ? आज पुरूष वृति द्वारा नारी विमर्श की बात संवैधानिक बातों तक तो ठीक है लेकिन धर्म व समाज तथा व्यवहारिक स्तर में वही ढाक के तीन पात वाली कहावत।

मूलशब्द : नारी और पुरूष, अधिकार व कर्त्तव्य, धर्म व समाज,साहित्य व संस्कृति।

वैदिक काल में नारी का स्थान पुरूषों के समकक्ष था स्त्री यज्ञ मंत्रोच्चारण व अनुष्ठानों में भाग लेती थी। और पुरूषों के साथ मनोभाव को व्यक्त कर लेती थी। देवी देवता, किन्नर, गणिकायें, दूत–दूती व प्रेमी–प्रमिका आदि रूपों में वर्णित नारी से स्पष्ट होता है कि नारी इस काल में पुरूषों के समान सहचरी व स्वतंत्र चेता था।

यत्र नार्यस्तु पूज्यंतें रमन्ते तत्र देवता।

यत्रातास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्त्र त्राफलाः कियाः।।

–(मनुस्मृतिः श्लोक 56)

रामायण काल में कैकयी, मंथरा, अहिल्या,सीता, मंदोदरी, उर्मिला, आदि का वर्णन से साहित्य भरा है। इस समय नारी स्व विचार करती थी

तथा समाज द्वारा विचारों को पुरूषों के समान महत्व दिया जाता था। विक्टर हूमो का कथन है–

पुरूष की दृष्टि होती है नारी की दिव्यदृष्टि।

महाभारत काल में नारियों का स्थान पुरूषों के साथ साथ वर्णित है लेकिन नारी को पुरूषों का दासी व गुलाम समझा जाता था। राजनीति व जुवा जैसे विषयों में वस्तु के रुप में उपयोग किया जाता था। स्त्री पात्रों में द्रोपदी, हिडिम्बा, कुन्ती, गांधारी प्रमुख है। स्त्री के प्रति सम्मान भीष्म के कथन से व्यक्त होता है –

त्रियः ऐता स्त्रियोमाम सत्कार्या भूति भिच्छता
पालिता निमृहोता चत्री भवति भारत।।

–(महाभारत अनुषासन पर्व 46,15)

बौद्धकालीन जातक कथाओं में स्त्रियों की दशा एवं दिशा तथा सामाजिक संरचना में भागीदारी व्यक्त हुआ है। वहीं मुगलकालीन साहित्य में नारी का स्थान समाज में एक भोग्या ,दासी, रक्षिता के रूप में स्थान पायी है। फलस्वरूप सामाजिक व्यवस्था में नारी को चार दिवारी मान लिया गया और नारी भी गांधारी के भांति समाज में सब कुछ देख कर भी अनदेखी होती गयी । अंधायुग में गाँधीजी का वक्तव्य अवलोकनीय है।

नैतिकता मर्यादा, अनासक्ति, कृष्णार्पण
यह सब है अंधी प्रवृत्ति की पोषाकें
जिनमें फटे कपडों की आखें सिली रहती है।
मुझे तो झुठे आंडम्बर से नफरत थी,
इसलिए स्वेच्छा से मैंने हम आँखों पर
पट्टी चढ़ा रखी थी।।

–(अंधा युगः धर्मवीर भारती)

धर्मवीर भारती की कृति कनुप्रिया में राधा आधुनिक भाव बोध को व्यक्त करने वाली पात्र है। जब राधा कहती है–

तुम्हें कोई भी कसौटी नहीं मिलती
और जा के पासे की तरह
निर्णय को फेंक देते हो
जो मेरे पैंताने है वह स्वधर्म
जो मेरे सिराहने है वह अधर्म।

प्रवाद पर्व में नरेश मेहता जी प्रश्न उठाते हुए जब कहते हैं–

राज्य की यह आतुरता
कर्मता, केवल सीता था
हमारे लिए क्यों
क्यों नहीं
जंगल में लकडियाँ बीनने वाली
असहाय
अनाम नारी के लिए।

इन्द्र के सम्मुख जब मेनका कहती है–

वह उसके हाथ में नहीं है
क्या वह विद्रोह नहीं कर सकती।
उस पूरी व्यवस्था के खिलाफ
जिसमें उसे जीना
एक यंत्रणा से अधिक
और कुछ नहीं

कविता में स्त्री रचनाकारों की उपस्थिति से साफ होता है कि अपनी अधिकारों के प्रति सामाजिक सादिभत धारणाओं को तोड़कर कितना सजग है । इंदु जैन की कविता संग्रह यहाँ कुछ तो हुआ था। मोना गुलाटी का कविता संग्रह, महाभिनिष्क्रमण सुनीता जैन का कविता संग्रह सुत्रधार कात्यायनी का कविता संग्रह सात भाईयों के बीच चंपा प्रगति सक्सेना का कविता संग्रह आश्चर्य लोक, स्त्री मनोदशा को आकांत करता है। खण्डित अस्तित्व बोध को जब सुनीता जैन कहती है–

जीवन जैसा भी हो
स्वीकार मुझे
एक अस्वीकार बस
नारी में नायिका खण्डित।

शशि शर्मा की पहाड़ कविता नारी अस्तित्व व चेतना को व्यक्त करती है–

मीठे झरनों और हरियाले
मदीले पेडों से
भरा पूरा पहाड़ है वह

बड़ा अजीब सा लगता है न उसका
एक औरत का पहाड होना।

अनेक स्त्री पात्रों के प्रति रागात्मक बोध की अभिव्यक्ति पुरूष रचनाकारों के कृतियों वैसा चकित नहीं करती, जैसा स्त्री रचनाकारों में, विश्व बालिका दिवस पर सुमेधा की मेरी बच्ची कविता बच्ची के समुचित विकसित जीवन के प्रति आश्वस्ति के स्थान पर विवशता का भाव स्पष्ट झलकता है।

सुमेधा की अस्तित्व का स्त्रीबोध अत्यंत मार्मिक है–
मैं आदर्शों भरी किताब नहीं
अखबार का वह पेज हूँ
जिसे हाथों हाथ गुजर कर
कूडेदान तक पहूँचना है
रास आ जायेगी जिस्म को खूबसूरती
तो कापी को जिल्द बनालोगे
रोक लो.....
यह नियति है
तो मैं पैदा होना नहीं चाहती।

शिक्षा के विकास के साथ मनुष्य लोभ का नया वितान भी रचा है। अब स्त्रियों को जलाया नहीं जाता इसे गर्भ में ही मार दिया जाता है। आधुनिक उपकरण, कानुन, सामाजिक व्यवस्था तथा अहम अमानवीय सोच इसके लिए जिम्मेदार है । भगवान स्वरूप कटियार की कविता स्त्री का लोकतंत्र ऐसा ही मुद्दों को रेखांकित करता है जो भावनात्मक स्तर से कुण्ठित है लेकिन अभिव्यक्ति में अनुचित माना जाता है स्त्री का लोकतंत्र कवितांश दृष्ट्रव्य है–

मैं स्वयं लिखुंगी
अपने लोकतंत्र का संविधान
जिसमें पुरूष की भी होगी जगह
किन्तु स्वामी के रूप में
यह मेरा जीवन है
ये मेरी अस्मिता है
इस पर मेरा ही होगा अधिकार

मैं स्वयं करूँगी
इसका निर्धारण व अनुसंधान
अपने जीवन पथ का

ग्रामीण स्त्री जीवन आर्थीक अशसक्त (विकलांग) व सामाजिक व्यवस्था के दानव बीच पीस रहा है। निरंतर विपरीत परिस्थितियों को भोगते हुए अपनी ही घर–परिवार के पोषण के उपादान के रूप में स्वयं के जीवन को समर्पित करने वाली ग्रामीणा असमय विधवा, वृद्धावस्था व मृत्यु को प्राप्त कर लेती है। निराला की मजदूरनी और तोड़ती पत्थर कविता में जिस वेदना की अभिव्यक्ति हुई है उसके लिए बहुत सी शासकीय योजनाएँ लागू है पर वास्तिविकता के साथ कब लागू होगा जिसमें नारियों को आज के युग में पुरूषों के समान जिंदगी मिल सके।

स्त्री द्वारा रचित स्त्री विषयक कविताओं में जो संयमित विद्रोह है उसकी अभिव्यंजना शब्द विन्यासों से अलग धीर गंभीर शब्दावली का स्वर है। यह उत्तेजित नहीं करता अर्थवत्ता में पुरूषों को अपनी अन्तस्थल तक उतरने को मजबूर करता है। स्त्रियों की चुप्पी तोड़ने की सिलसिला जो दिखाई पड़ता है उसमें स्त्रियों को अपनी आत्म विष्वास ही है। मेरी आवाज कविता की पंक्तियाँ दृष्टव्य है–

मुझे मेरी आवाज चाहिए
इन लोगों को पता नहीं, इतना पीछे
अपनी आवाज देने आयी हूँ
ये मेरी आँख में देखते नहीं
और मैं चीख नहीं सकती
मेरी आवाज उन कांटों ले
लगातार जख्मी ही रही है
मुझे उसे बचाना है, वापस लाना है।
उन्हें पता ही है
कि मुझे कितनी जरूरत है अपनी
आवाज की।

स्त्री विमर्श एक आवाज है साहित्य के माध्यम से जन संचार के विभिन्न साधनों से आज कठिन से कठिन क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज करा ली है। परन्तु संघर्ष अभी शेष है। स्त्री तथा समाज का स्वरूप अभी शेष

है। स्त्री तथा समाज का स्वरूप आज जगदीश चतुर्वेदी की कविता में प्यार का सत्य प्रगट हुआ है–

हर प्यार का एक इतिहास होता है
हर औरत में एक गंध होती है
पर इतिहास सत्य नहीं होता
और औरत में गंध नहीं होती
युद्ध सत्य जान गया हूँ
मैं किसी औरत से प्यार नहीं कर सकता।

घर और घरनी बिन धरनी घर का डेरा कहावत स्त्री को घर में घेरती है जिससे हाऊस वाईफ कहा जाता है और केन्द्र में घर व समाज के रीति–रिवाज जो घेरे रखती है इस संकुचित दायरा में घुटन एकरसता भरा रहता है। ऐसा जीवन त्रिनेत्र जोशी की कविता वाह जीवन में व्यक्त होता है –

कुतरी हुई स्त्री, निढाल गिर जाती है
चौरासी लाख योनि में
एक और मनुष्य के साथ
आलू छिलते हुए सोचा
बिटामिन बी 12 के बारे में
किसी गुलाबी औरत का विज्ञापन छपता है

स्त्री विषयक आधुनिक कविताओं में स्त्री पुरूष रचनाकारों के अनुभुति जब सामने आता है ग्रामीण और महानगरों में निवासरत दो स्त्री पटल पर रेखांकित होता है सुरेन्द्र पाले की स्त्री कविता को देखें

जब मैं लिखता हूँ स्त्री
कई गुना वजनी हो जाता है कागज
नदी बहती चली जाती है
पन्नों पर समुद्र फैल जाता है।

ज्योत्सना मिलन की कविता में स्त्री मन के संदर्भ कुछ इस प्रकार है

भूल गया मुझको नाम
जो मैं तुम्हें देना चाहती थी
इस प्रक्रिया में देती चली गई तुम्हें
एक के बाद एक नाम

गुप्त जी की कविता में स्त्री विषयक संवेदना व्यक्त हुआ है –

अबला जीवन हाय तेरी यही कहानी
आंचल में है दूध और आँखों में पानी

प्रकृति के सुकुमार छायावादी कवि पंत ने भी स्वीकार किया है–

योनि नहीं रे चिर वंदनी नारी

महादेवी वर्मा की कविता वह जीवन सामंजस्य इतना प्रभावशील है–

मैं नीर भरी दुख की बदली
उमडी कल थी मिट आज चली

सुभद्रा कुमारी चौहान, मीरा बाई, दयाबाई, सहजोबाई, सभी ने स्त्री को पुरूषों के संगिनी के रूप में स्वीकार कर कोई गृहस्थ तो कोई भक्त हो गया संध्या गुप्ता की चीजें छुती है देह को कविता में नवीन विचार धारा की प्रभावशील रूप शब्द पायी है।

रोशनी आती है
बंद आँखो की चुभती है और छट जाती है
पलकों के उपर से
भीतर का अंधेरा एक तक देखता है उसे
बस दूर जाते हुए।

उपभोक्तावादी एवं बाजारवादी परिवेश में मानसिकता के धरातल बदले हैं। गुड़ियों का व्याह करने बाकी बालिका के स्थान पर एक गंभीर छवि सामने आयी है जो अपनी शिक्षा, सम्मान तथा अस्तित्व के प्रति सजग है यह आवेग विशेष रूप से स्त्री लेखिकाओं की अनुभूति व शक्ति है।

अगले जनम मोहे बिटिया न की जो

जैसी प्रार्थना के पीछे अत्यंत पीडादायक स्त्री जीवन के अनुभव समाहित है। ज्योत्सना चौधरी की कविता देखिये–

वे अक्सर सोचेंगे
स्त्रियाँ क्यों मारती हैं
स्त्रियों को
वे सोचेंगे यह सब कई कई बार।

दुल्हन के रूप में स्त्री को स्त्री सजाती है विवाह स्त्रियों के लिए जितना आकर्षक है विवाह प्रतिकुल होने पर उतना ही त्रासद।

प्रसाद जी ने कामायनी में इसीलिए कहता है

नारी तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास रजत नग पग तल में
पीयुष स्त्रोत सी बहा करो
जीवन के सुन्दर समतल में ।

आज महिला साहित्यकारों के द्वारा महिलाओं का जो चित्रांकन हो रहा है नारी मुक्ति के प्रति जो चर्चा और संघर्ष समाज और राजनीति में होने लगा है जो नारी के पहनावा, रहन सहन,खान पान व आचार विचार के रूप में साहित्य सिनेमा जैसे विभिन्न माध्यमों से आज हो रहा है वह समय के साथ विचारणीय है।

■■

ukjh vijk/k

ugk fo'odek]
अतिथि प्राध्यापक
कन्या कला एवं वाणिज्य महा. खरसिया

नारी के बिना हम किसी भी समाज की कल्पना नहीं कर सकते है। एक नारी ही है, जो हर रिश्ते में बंध कर उस रिश्ते को सहृद्य निभाती है। क्योंकि नारी के अंदर ही त्याग, बलिदान, समपर्ण और प्रेम जैसे भावों का समावेश होता है। एक नारी अपना सम्पूर्ण जीवन अपने परिवार की देख–रेख में गुजार देती है। कभी अपने बारे में कुछ नहीं सोचती। सारी इच्छाओं को खत्म कर के वो सिर्फ अपने परिवार के बारे में ही सोचती है। जब किसी घर में वह बेटी के रूप में जन्म लेती है तो वह मॉ–बाप के लिए एक अच्छी बेटी का कर्त्तव्य निभाती है। और जब वह विवाह योग्य हो जाती है,तो उसका विवाह कर दिया जाता है। जिसके बाद वह पत्नि धर्म निभाती है। इसके बाद जब वह मॉ बन जाती है तो वह मॉ का कर्त्तव्य निभाती है। इसी प्रकार वह अपनी पूरी जिंदगी अपने परिवार की सेवा में गुजार देती है। किसी से किसी भी प्रकार की कोई उम्मीद नहीं रखती और निःस्वार्थ भाव से सेवा करती है। नारी की महिमा का वर्णन करते हुए डॉ. एनीबीसेन्ट ने कहा है कि–

"कोई भी पक्षी एक पंख से नहीं उड़ सकता इसी प्रकार कोई भी राष्ट्र स्त्री और पुरूष दोनों में से किसी एक वर्ग के द्वारा उन्नत नहीं हो सकता।"

डॉ. एनीबीसेन्ट ने नारी की महिमा का बखान करते हुए कहती है कि जिस प्रकार कोई भी पक्षी एक पंख से नहीं उड़ सकता। ठीक उसी प्रकार से अगर राष्ट्र को उन्नत बनाना है तो स्त्री और पुरूष दोनों वर्ग को मिलकर काम करना होगा। अगर इन दोनों में से कोई भी वर्ग कमजोर है तो वह राष्ट्र की उन्नति में बाधक सिध्द होगा। एक राष्ट्र की उन्नति में जिस प्रकार पुरूष वर्ग महत्व रखता है, ठीक उसी प्रकार से स्त्री वर्ग भी अपनी अहम भूमिका रखती है। एक स्त्री जो एक राष्ट्र के योगदान में अहम भूमिका

रखती हैं, आज वहीं स्त्री सुरक्षित नहीं है? आज एक तरफ देश विकास की ओर प्रगति कर रहा है तो दूसरी तरफ महिला वर्ग के लिए जघन्य अपराध तेजी से बढ़ते जा रहा है।

आपको तो याद ही होगा निर्भया गैंग रेप केस। जिसे हमारे भारत देश की राजधानी दिल्ली में 16 दिसम्बर 2012 को इस घटना को अंजाम दिया गया था। इसी प्रकार की दूसरी घटना प्रियंका रेड्डी के साथ हैदराबाद मे हुआ और सबसे दिल–दहला देने वाली घटना जो मानवता को शर्मशार कर देती है। ट्विंकल शर्मा जो सिर्फ 3 साल की मासूम छोटी बच्ची थी। उस बच्ची के साथ बड़ी बेरहमी से बलात्कार करके उसका गला घोट के मार दिया गया।

मैं समाज में महिला वर्ग की सुरक्षा की बात कर रहीं हूँ और यहॉ 3 साल की मासूम बच्चियॉ भी सुरक्षित नहीं हैं, न जाने कितने ऐसे मासूम बच्चियॉ है जो ऐसे जघन्य अपराध का शिकार हुए है। ऐसे ही हमारे समाज में और भी ऐसे अपराध है जैसे– दहेज प्रथा, बाल विवाह, भ्रूण हत्या, एसिड अटैक, यौन शोषण, घरेलु हिंसा।

आज भी भारत की कई बेटियां सिर्फ इस लिए जलाई जाती है कि वह दहेज अपनी बाप के हैसियत के मुताबिक नहीं बल्कि अपने ससुराल की इच्छा के मुताबिक नहीं लाती है। समाज के कुछ वर्ग झूठी शान, समाज में रूतबा बढ़ाने के लिए, भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए अपने घर की बहुओं की जीवन लीला ही समाप्त कर देतें है। समाज की दूसरी बुराई है पुत्र की लालसा अर्थात् ससुराल वालों की सोच पुत्र पाने की इच्छा जिसके कारण वह बार–बार भ्रूण हत्या जैसे–अपराधो को अंजाम देते है। वो लोग एक महिला को शारीरिक और मानसिक प्रताड़ना देकर विवश कर देते है कि वो अपने बच्चे की हत्या गर्भ में ही कर दे। आज देश तरक्की की सीढ़ियो में चढ़ रहा है और समाज के कुछ ऐसी छोटी सोच के लोग है जो आज भी लड़कियो और लड़को में भेद करते है। लिंग जॉच करवाते है और पता चलने पर कि गर्भ में एक लड़की है तो भ्रूण हत्या जैसे अपराधों को अंजाम देते है।

लक्ष्मी अग्रवाल, ये नाम आज के समय में बहुत चर्चित नाम है। समाज में बढ़ते अपराधों का शिकार जैसे–निर्भया, प्रियंका रेड्डी और ट्विंकल शर्मा हुई है। ठीक उसी प्रकार से लक्ष्मी अग्रवाल भी ऐसे

अपराधों का शिकार हुई। लक्ष्मी अग्रवाल जो सिर्फ 15 साल की उम्र में एसिड अटैक का शिकार हुई। एसिड अटैक के कारण उनका पूरा चेहरा झूलस के बर्बाद हो गया। इस हादसे के कारण उनका पूरा आत्म विश्वास ही खत्म हो गया। इसी तरह से ऐसी कई प्रकार की घटना जो एक स्त्री के मान, सम्मान, स्वभिमान को ठेस पहुँचाती है। उसे उम्र भर के लिए शारीरिक और मानसिक पीड़ा दे देती है।

भगिनी निवेदिता का कथन है– "निखिल विश्व में नारियॉ ही मानवों नैतिक आर्दशों की संरक्षिका है।" भारतीय समाज में विश्व तथा मानवों की नैतिक आर्दशों की संरक्षिका नारी को बताया गया है। और इस समाज में नारी खुद सुरक्षित नहीं है।

आज हम देश के विकास के लिए, राष्ट्र के विकास के लिए, नये–नये योजना, नये–नये तकनीकों का प्रयोग कर रहें है। तो ठीक इसी प्रकार से हमें नारी की सुरक्षा के लिए कदम उठाने चाहिए। कानून बनाने चाहिए जिससे स्त्री वर्ग अपने आप को सुरक्षित महसूस कर सकें। जिस तेजी से अपराध बढ़ते जा रहे है। जैसे– बालात्कार, एसिड अटैक, छेड़छाड़, भ्रूण हत्या, घरेलु हिंसा, यौन उत्पीड़न । इन पर सरकार को सख्त कानून बनाने चाहिए और जो लोग ऐसे अपराधों को अंजाम देते है। उनको सख्त से सख्त सजा मिलनी चाहिएद्य। ताकि कोई दूसरा व्यक्ति इस प्रकार के अपराधों को अंजाम देने के बारे में सोच न सकें। महिलाओं के लिए प्रशिक्षण केन्द्र की व्यवस्था की जानी चाहिए। महिलाओं को आत्मरक्षा कैसे की जाती है इसका प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। और आत्मरक्षा के लिए प्रशिक्षण केन्द्र सिर्फ शहरों में ही स्थापित नहीं किया जाना चाहिए बल्कि गांवो–गांवो में भी इसकी स्थापना की जानी चाहिए। जिससे गावों की महिलाएं भी आत्मरक्षा कैसे की जाए इसकी जानकारी उनको भी हों। जब एक स्त्री घर से बाहर निकले पूरे निडर, स्वतंत्र और भरपूर आत्मविश्वास के साथ निकले और अपने अंदर अपने आप को सुरक्षित महसूस करे। किसी प्रकार का कोई डर, भय चिंता न रहे। मनुस्मृति के अनुसार भी स्त्रियों का महत्व निम्नलिखित लोक स्पष्ट होता है।

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता,
यत्र एतास्तु न पूजयन्ते सर्वास्त प्राफलाः दियाः।।

अर्थात् जहॉ नारी का सम्मान होता है, वहॉ देवताओं का निवास

होता है, और जहॉ नारी का अपमान होता है। वहॉ समस्त क्रियाएँ विफल हो जाती है।

यदि हमें एक अच्छे समाज की कल्पना करनी ही है तो हमें समाज में स्त्रियों का सम्मान करना चाहिए। उसके मान सम्मान की रक्षा करनी चाहिए। समाज में किसी भी प्रकार की कोई भेदभाव नहीं करना चाहिए महिला और पुरूष के बीच क्योकि राष्ट्र के योगदान में जितना योगदान पुरूष वर्ग का होता है उतना ही योगदान महिला वर्ग का भी है।

'' नारी केवल एक इन्सान ही नहीं इस प्रकृति को आगे ले जाने वाली निर्माणकर्त्ता भी है।''

''यदि नारी सुरक्षित है, तभी हमारा भविष्य भी सुरक्षित है।''

■■

orleku nkj e ukjh dk cnyrk Lo: i

Jherh vydk ;kno
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
पी.एन.एस. महाविद्यालय, राजेन्द्रनगर, बिलासपुर (छ.ग.)

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमंते तत्र देवताः कहा जाता है कि जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवताओं का निवास होता है किन्तु वर्तमान दौर में नारी का रूवरूप ही बदल गया है उसे पूजा की नहीं आदर की पात्र बनने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। वर्तमान में नारी को देवी की पदवी से गिराकर भोग्या समझा जाने लगा है।

नर और नारी मिलकर मनुष्य–जाति के रूप को स्वरूप प्रदान करते है। वर्तमान समय में नारी समाज को दो भागों में विभाजित किया गया है। पहला वर्ग गाँवों और शहर के अनपढ़, अशिक्षित परंपरावादी परिवार की स्त्रियाँ जिन्हें पहले से ही वह रहती चली आ रही है । उन्हे अपने परिवार की देखरेख और सेवा तक ही अपने को सीमित रखना पड़ता है। दूसरा वर्ग वह है जो स्त्री को शिक्षित और आधुनिकता के साथ हर प्रकार की आजादी देता है। आजादी से तात्पर्य वह अपना निर्णय स्वयं ले। नारियों को परंपरागत रूढ़ियों को आत्मसात नहीं करना चाहिए उसे स्वतंत्र बुद्धि से सोचना चाहिए ।

हम आधुनिक समाज में जी रहे है और आज स्त्रियों ने धरती से अंतरिक्ष तक हर क्षेत्र में अपनी योग्यता को सिद्ध किया है, फिर भी देर रात अकेली घर से बाहर जाते हुए वह डरती है, क्योंकि आज भी स्त्री पुरूषों की नजर में भोग्या बनी हुई है।

गुप्त जी 1914 में प्रकाशित महत्वपूर्ण काव्य 'भारत–भारती' में आधुनिक महिलाओं की उन्नति पर अत्यधिक बल देते हुए देश में शिक्षा के व्यापक स्तर पर प्रसार की बात करते हुए कहते है कि ''हमारी शिक्षा तब तक कोई काम नहीं आएगी, जब तक महिलाएँ शिक्षित नहीं होगी, यदि पुरूष शिक्षित हो गए और महिलाएं अनपढ़ रह गई तो हमारा समाज ऐसे शरीर की तरह होगा जिसका आधा हिस्सा लकवे से बेकार है।''

गृहस्थी पुरूष और नारी की साझी व्यवस्था है। पुरूष का दायित्व बाहरी कार्यों को निपटाना है तो नारी के जिम्मे परिवार की अंदरूणी व्यवस्था है। नारी आंतरिक व्यवस्था को संभालती है तो पुरूष का अधिकांश समय परिवार के दायित्वों को पूरा करने में बाहरी क्षेत्र में बीतता है। खाली समय दोनों के पास बचता है, अतः उसका उपयोग अपनी योग्यता बढ़ाने में किया जा सकता है।

शिक्षित नारियाँ घर के दायित्वों की अपेक्षा नौकरी करना उचित समझती है। पारिवारिक स्थिति को आर्थिक रूप से मजबूत करना ज्यादा उचित समझती है लेकिन कुछ आधुनिक नारियाँ यह समझती है कि अपनी आवश्यकताओं के लिए किसी पर निर्भर न रहे लेकिन वर्तमान में पति–पत्नी के बीच प्रतिद्वंद्विता का भाव जब आ जाता है तो पति–पत्नी के बीच स्नेह और प्रेम लुप्त होता दिखाई देता है। आर्थिक सहायता के लिए तो गाँव की नारियाँ भी काम करती है पर उनमें प्रतिद्वद्विता की भावना नहीं रहती। पति–पत्नी के बीच चलने वाला टकराव और संघर्ष से बच्चों के मन में गलत प्रभाव पड़ता है और कई कुण्ठाओं को जन्म देता है।

शिक्षा एक विभूति है और शिक्षित है विभूतिवान यदि शिक्षित नारियाँ अपनी क्षमता का सही उपयोग करें तो उनके लिए यह एक कर्त्तव्य बन जाता है कि वे रूढ़ियों और परंपरा के बोझ से दबी नारियों को उबारने का ईमानदारी से प्रयत्न करे। परंतु आधुनिकता का अभिशाप ही है कि वर्तमान नारी उनकी ओर देखना भी नहीं चाहती, सहयोग करना तो दूर की बात है।

परंपरावादी नारी जीवन वर्तमान संदर्भो में जरा भी उचित नहीं कहा जा सकता घर को ही उसका कार्य क्षेत्र मान लेने के कारण उसके पालन–पोषण पर भी उचित ध्यान नहीं दिया जाता और शिक्षा–दीक्षा पर भी नहीं। पुत्र की अपेक्षा कन्या पर कम ध्यान देने की बात निंदनीय और ओछी वृत्ति है पर शिक्षा पर ध्यान न देने का मुख्य कारण यह है कि घर–परिवार में इसकी कोई आवश्यकता नहीं समझी जाती। घरेलू कार्यो में शिक्षा का क्या उपयोग? यदि उसे भी पुत्र की तरह परिवार की भावी जिम्मेदार सदस्या समझा जाए तो लड़कियों को शिक्षा दिलाना जरूरी लगेगा।

स्त्री और पुरूष मिलकर ही चरित्रवान और कर्मनिष्ठ प्रखर व्यक्तित्व का निर्माण कर सकते है। इसे एकाकी पुरूष नहीं कर सकता सुसंस्कृत नारी ही इस उद्देश्य की पूर्ति में प्रधान भूमिका निभा सकती है।

निष्कर्षतः यह कहना उचित ही होगा कि नारी का शोषण, पिछड़ापन सभी क्षेत्रों से तो हटा नहीं है, पर विकसित स्थिति में देखा जा रहा है नए परिक्षेत्र में नारी को शिक्षित और स्वावलंबी बनने का अवसर मिल रहा है। आज महिला दिवस के अवसर पर नारियाँ को तरह–तरह के सम्मान दिये जाते हैं, तरह–तरह से उनकी उपलब्धियों और संघर्षों को सराहा जाने लगा है। परंतु यह सामयिक ही होता है यदि नारी सम्मान को धरातल पर सदैव के लिए लाना है तो जन–जन को उसके सम्मान को हृदय में स्थान देना होगा, उसे वर्ष में एक दिन नहीं बल्कि हर दिन हर क्षण सम्मान की दृष्टि से देखना होगा। उसे प्रतिद्वंदी न समझकर सहयोगी रूप में स्वीकारना होगा। सभी नारी को सही मायने में सगर्व सम्मान की प्राप्ति हो सकेगी। नारी अपने स्नेह सहयोग से नर में ऐसा परिवर्तन करेगी कि वह अत्याचार करने में आज जैसा स्वेच्छाचारी न रह सके इक्कीसवीं सदी नारी की होगी।

I ınHk I ph %&

(1) डॉ. डी.डी. शर्मा – समाज शास्त्र द्वितीय एवं तृतीय वर्ष

(2) किरण बेदी – जाग उठी नारी शक्ति

(3) डॉ. सुधा बाल कृष्णा – नारी अस्तित्व की पहचान

(4) समाचार पत्र–पत्रिका एवं इंटरनेट से सम्मिलित

(5) डॉ. एम.एल. गुप्ता – साहित्य भवन एप्लीकेशन, आगरा

■■

efgyk LokLF;] f'k{kk o n[kHkky

ekuk dsoV

सहायक प्राध्यापक (समाज शास्त्र)

पी.एन.एस. महाविद्यालय, राजेन्द्रनगर, बिलासपुर (छ.ग.)

महिलाओं की भूमिका को बच्चे को जन्म देने व उनका पालन–पोषण करने तक ही सीमित माना जाता है। श्रम के समाज–वैज्ञानिक विभाजन में बच्चों व घर के प्रति महिलाओं का उत्तरदायित्व अधिक होता है। शिक्षा, गतिशीलता व सूचना तक उनकी पहुँच कम होती है।

स्वास्थ्य देखभाल व सुविधाओं का उपयोग करने के लिए उनके पास वित्तीय संसाधनों का अभाव होता है। यद्यपि सरकार द्वारा स्वास्थ्य की सुविधाएँ जन–जन व गाँव–गाँव तक सुचारू रूप से पहुँचाने के उपरांत ही महिलाओं के स्वास्थ्य में उत्तरोत्तर वृद्धि संभव है।

सूचना, शिक्षा व संचार के माध्यम से व्यक्तिगत चर्चा, छोटे समूह की बैठकों, सूचनाप्रद पुस्तकों व क्लिप चार्ट द्वारा महिलाओं को शिक्षित करना संभव है। यह स्वास्थ्य से जुड़े मुद्दों द्वारा महिलाओ की ज्वलंत समस्या से निजात पाने का एक सशक्त माध्यम है।

किसी भी देश के विकास का स्तर उस देश में महिलाओं की स्वास्थ्य, शैक्षणिक, मनोसामाजिक व आर्थिक स्थिति पर निर्भर करता है। इसे महिलाओं द्वारा भी साबित किया गया है।

आज ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है, जहाँ महिलाओं ने सकारात्मक रूप से पदार्पण न किया हो अर्थात् अपनी योग्यता व क्षमता का लोहा न मनवाया हो। महिला के स्वास्थ्य सशक्तिकरण के लिए एक अवरोध है।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन में दो मिशन शामिल है –

1. राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन।
2. राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन।

भारत एक ग्राम बाहुल्य व कृषि आधारित विकासशील देश है। जनगणना 2011 के अनुसार 6 लाख 40 हजार 867 गाँव है, जहाँ आज भी

आधारभूत सुविधाओं का अभाव पाया जाता है इसलिए अवस्थापन की व्यवस्था करना विकास के लिए अनिवार्य घटक है। पंचवर्षीय योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन द्वारा निरन्तर रूप से विकास किया जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धनतम परिवारों को वहनीय एवं विश्वसनीय गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्यपूर्ण स्वास्थ्य सेवाएँ मुहैया कराने हेतु की गई थी।

जैसे कि संस्थागत प्रसव एवं गर्भवती माताओं की स्वास्थ्य जाँच कराना हो या जच्चा व बच्चा टीकाकरण तथा सुरक्षा के संदर्भ में जानकारी प्रदान करना और स्वास्थ्य सेवाओं को जरूरतमंद लोगों तक पहुँचाने के लिए एक सेतु के रूप में करना आदि।

I nHk I ph %&

1. महिला स्वास्थ्य एक अवलोकन—मीन तंवर।
2. महिला स्वास्थ्य —डॉ मनजीत विरदी।
3. स्वस्थ तन— स्वस्थ मन —डॉ गोविन्द प्रसाद उपाध्याय।

■■

fgUnh lkfgR; e ukjh foe'k

çnhi dqekj nkl nhid
व्याख्याता हिन्दी
शा. हाई स्कूल रजपुरी (सीतापुर)

प्रत्येक देश में पुरुष सत्ता का समाज ही प्रचलन में है। नारी सत्तात्मक समाज अपवाद स्वरूप ही पाए जाते हैं। साहित्य में नारी विमर्श होते रहे हैं, होना भी चाहिए। नारी विमर्श क्या है ? एक उत्तर– यदि नारी के रूप का चित्रण अथवा नारी के मनोविकारों, हाव–भावों आदि का अथवा नारी की अतृप्त कामनाओं का चित्रण मात्र नारी विमर्श है तो यह हिंदी साहित्य के आदिकाल से होता रहा है रीतिकालीन साहित्य इसमें बदनाम तो है ही। भक्तिकालीन साहित्य या परवर्ती आधुनिक कालीन साहित्य का अध्ययन करें तो क्या जो साहित्य लिखे गए उसमें नारी विमर्श नहीं हैं ? हिंदी साहित्य में नारी की समस्याओं पर लेखिकाओं के साथ–साथ पुरुष लेखक भी प्रामाणिक ढंग से लिख रहे हैं यह विडंबना है कि पुरुष लेखकों द्वारा नारी पर लिखित साहित्य की चर्चा प्रायः नहीं की जाती या नारी विमर्श के प्रसंग में याद नहीं किया जाता। नारी विमर्श केवल लेखिकाओं तक सीमित होना अनुप्रयुक्त है।

कविवर मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग के महान कवि माने जाते हैं, जिनकी रचनाओं में नारी भावना का विशद चित्रण हुआ है। मातृत्व भाव की प्रबलता से युक्त कैकेयी का, द्वापर काव्य में विधृता का, यशोधरा में यशोधरा का, साकेत में उर्मिला की त्रासदी का चित्रण बड़े मनोयोग से किया है। गुप्त जी नारी के संपूर्ण जीवन को दो पंक्तियों में मार्मिकता से अभिव्यक्त करते हैं –

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आंचल में है दूध और आंखों में पानी ।।[1],

साहित्य में नारी विमर्श एक ज्वलंत मुद्दा है हिंदी साहित्य में छायावाद काल से नारी विमर्श का जन्म माना जाता है। प्रेमचंद के गोदान में धनिया का चरित्र भारतीय ग्रामीण नारी का प्रतिनिधित्व करता है शोषण के अवाध चक्र में पिसता हुआ होरी धनिया के बिना अधूरा है। धनिया स्नेहमयी कर्तव्यपरायण पत्नी होने के साथ–साथ ममतामयी माता भी है। दुख और विपदा में सदैव

पति का साथ देने वाली धनिया को होरी के सीधे पन पर क्रोध आता है किंतु जब धनिया होरी से लड़ती है तो रणचंडी बनकर जो वाग्प्रहार करती है उससे होरी भी परास्त हो जाता है– तू हट जा गोबर, देखूं तो क्या करता है मेरा? दरोगा जी बैठे हैं। इसकी हिम्मत देखूँ। घर में तलाशी होने से इज्जत जाती है, अपनी मेहरिया को सारे गांव के सामने लतियाने से इसकी इज्जत नहीं जात। [2]

कारण चाहे जो भी हो वास्तविकता यही है कि समाज में नारी को व्यक्ति से वस्तु बना दिया गया। उसके एहसास, उसकी पीड़ा, उसकी संवेदनाओं से समाज का सरोकार न होना नारी संघर्ष की मूल गाथा रही है। नारी चेतना के ये स्वर व्यर्थ नहीं गये हैं। नारियों में कम मात्रा में सही परंतु जागृति आई है। नारियों ने विरोध करना सीखा है और यह विरोध किसी एक ही बात के लिए नहीं वरन् समाज के हर उत्पीड़न के विरुद्ध होने लगा है। चित्रा मुद्गल के शब्दों में कहा जा सकता है कि– समय जरूर लगेगा मगर सीमाएं हटेंगी। भोग्या और देवी के बीच पिसती हुई स्त्री अपनी स्त्री का आत्मसम्मानपूर्ण समाधान खोज ही लेगी।[3]

एक भ्रम तुलसीदास के विषय में है कि उन्होंने नारी जाति की निंदा की है, परंतु यह बिल्कुल भ्रामक है उन्होंने नारी जीवन की वेदना के प्रति अपनी सबसे गहरी सहानुभूति इन पंक्तियों में प्रकट की है –

कत विधि सृजी नारि जग माहि
पराधीन सपने हूँ सुख नाहीं ।[4]

सारा का सारा भारतीय साहित्य नारी के विविध चारित्रिक चरित्रों से ओतप्रोत है। आदिकाल से लेकर आज तक का भारतीय इतिहास इस बात का साक्षी है कि नारी किस प्रकार जीवन के क्षेत्र में पुरुष की अभिन्न सहयोगिनी के रूप में अपने नारीत्व को दीपित करती आयी है। नारी के सहयोग के अभाव में पुरुष ने सदा एकाकीपन अनुभव किया है और जहां भी सहयोगिनी के रूप में नारी प्राप्त हुई है वहां उसने अभिनव से अभिनव सृष्टि की है। नारी की इसी प्रतिभा से पराजित हो प्रसाद की श्रद्धा फूट पड़ती है–

नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष स्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुंदर समतल में।[5]

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी गद्यकार एवं कवि रघुवीर सहाय जी नारी जीवन का एक वास्तविक चित्र खींचते हुए उन्हें भी अपने काव्य में नारी को बेचारी कहना पड़ा एवं उसकी दयनीय दशा का वर्णन किया जो अपने अधिकारों के लिए लड़ नहीं पाती–

नारी बिचारी है
पुरुष की मारी
तन से क्षुधित है
लपक कर झपक कर
अंत में चित है।[6]

स्थिति आज परिवर्तित है अब नारी 'बेचारी' नहीं रही य वह अपनी हर एक अधिकार को लेकर रहेगी। यही लड़ाई नारी विमर्श या नारी सशक्तिकरण के रूप में परिलक्षित होती है। जरूरी है नारी विमर्श पूर्वाग्रह या व्यक्तिगत विश्वासों तक ही सीमित न हो।

देश से जुड़ी योजनाओं को तोड़ने की बात, स्वत्वबोध की पहचान स्त्री को अपने अस्तित्व की खोज की ओर उन्मुख करते हैं। महादेवी वर्मा इस स्वत्वबोध के संबंध में कहती हैं– हमारी मानसिकता दासता मानसिक तन्द्रा से दूर होते ही ना कोई वस्तु हमारे लिए अलभ्य रहेगी, ना कोई अधिकार दुष्प्राप्य, कारण अपने स्वत्वों से परिचित व्यक्ति को उन से वंचित रख सकना कठिन ही नहीं असंभव है।[7]

आज नारी जिंदगी के नये विकल्पों को तलाश रही है। कानून द्वारा प्रदत्त तलाक की सुविधा का उपयोग वह अपने जीवन की यंत्रणा से मुक्ति पाने के लिए कर रही है। वेश्यावृत्ति भी नारी की एक ऐसी मजबूरी है जिसमें पुरुष ही उसे ढकेलता है और कोई भी संघर्ष नारी को शरीर का धंधा करने की मजबूरी से छुटकारा नहीं दिला पा रहा है। आज तक कई महिला संगठन भी पर्याप्त श्रम कर रहे हैं फिर भी उसके इस भोग्या रूप से छुटकारा नहीं दिला पाते हैं। कहीं–कहीं नारी अपने परिवार का पेट पालने के लिए भी वेश्यावृत्ति करने को विवश है । कृष्णा अग्निहोत्री की कहानी 'गुहार' ऐसे ही एक परिवार की कहानी को उद्घाटित करती है।

आज के विकृत समाज में रेप जैसे अनवरत जघन्य वारदातों पर समाज की चुप्पियों को तोड़ने के प्रयास से अंतर्मन की हूक मेरे सेदोका संग्रह के एक सेदोका में उद्घाटित होता है–

जलता देश
शिला शिल्पी प्रियंका
ट्विंकल औ निर्भया
आम है रेप
कुछ दिन के चर्चे
फिर तो पटाक्षेप।[8,]

वर्तमान समाज में नारी के लिए एक बड़ी समस्या बलात्कार है। जिस महिला के साथ बलात्कार होता है वह कौमार्य भंग की क्षति ही नहीं सहती वल्कि गहन भावनात्मक दंश, मानसिक वेदना, भय, असुरक्षा और अविश्वास को झेलने हेतु विवश होती है। चर्चित लेखक अरविंद जैन की पुस्तक औरत होने की सजा इस वैचारिक लेखन में ऊंचा दर्जा प्राप्त है। यह पुस्तक भारतीय समाज व कानून की नजर में महिलाओं की दोयम दर्जे को सामने लाने का सफल प्रयास करती है।

प्रेमचंद से ले कर आज तक अनेक पुरुष लेखकों ने स्त्री समस्या को अपना मजबूत विषय बनाया। स्त्री विमर्श की इन्हीं शुरुआती गूंज के उपरांत नारी सशक्तिकरण जोर पकड़ी जिसमें– उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, शिवानी से लेकर मैत्रेयी पुष्पा तक लेखिकाओं के नाम चर्चित हैं।

मन्नू भंडारी का उपन्यास 'आपका बंटी' हिंदी साहित्य में नारी विमर्श के लिए एक मील का पत्थर है, जो अपने समय से आगे की कहानी कहता है और हर समय का सच होने के कारण कालातीत भी है। शकुन के जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी यही है कि व्यक्ति और माँ के इस द्वंद्व में वह न पूरी तरह मां बन पाती है, न पत्नी बन पाती है न प्रेमिका। भारत की हजारों नारियों की यही त्रासदी है।

मृदुला गर्ग की चित्तकोबरा, एक जमीन अपनी मेहरून्निसा परवेज का कोरजा नासिरा शर्मा का 'एक और शाल्मली', ठीकरे की मंगनी प्रभा खेतान की 'पीली आंधी' जैसे ढेरों साहित्य में स्त्री की त्रासदी के वर्णन के साथ–साथ पुरुष प्रधान सत्ता को चुनौती देते हैं।

वास्तव में मनु की युक्ति– 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता' का उद्घोषक समाज इससे इतना विपरीत क्यों है ? इस ज्वलंत प्रश्न का उत्तर देते हुए कंचनलता सब्बरवाल कहती हैं– भारतीय नारी को, उसी शक्ति प्रदायिनी को जो अपने रूप और यौवन के बल से न जाने कितने अकर्मण्य पुरुषों को कर्मठ बना सकती है, केवल मात्र देवी बनाकर जीवन के दायरे

में से अकारण ही हटा दिया गया है। मंदिर में रखकर उसकी पूजा की जा सकती है। घर की रानी कहकर उसे बाहर के संसार से एकदम निर्वासित किया जाता है। ह्रदय की रानी का कह कर उससे हर प्रकार की सेवा ग्रहण की जा सकती है, किंतु बाजार से खरीदी हुई सुगंधित फूलमाला से अधिक उसका मूल्य है ही कहाँ जिसे की रात में पहन कर सुबह मुरझाने पर फेंक दिया जाता है। उसकी शक्ति उसमें ही कुचल दी जाती है।[9]

निष्कर्ष कह सकते हैं कि– हिंदी साहित्य के सभी कालखण्ड में नारी विमर्श विभिन्न कवि लेखक और लेखिकाओं द्वारा होते रहे हैं। इन विमर्शों में नारी के कमजोर पक्ष अधिक उद्घाटित होने के कारण नारी हमेशा ठगी हुई महसूस करती है। नारी विमर्श में केवल नारी सौंदर्य, वासना, देह आदि कोमल व कमजोर पक्ष को ही केंद्रित कर विमर्श के बजाय उसके अंतर्निहित शक्ति पक्षों को भी विशेष फोकस देकर उजागर करने की आवश्यकता है। इससे समाज नारी के अंतर्निहित शक्ति पक्षों से भी परिचित हो सके।

साहित्य में नारी विमर्श की सबसे बड़ी सीमा यह भी है कि आज भी वह पुरुष सत्तात्मक समाज में अपनी बेबाक अभिव्यक्ति का साहस नहीं जुटा पाती है। अत्यंत संयत और शालीन बनकर सृजन करना भी नारी विमर्श की एक चुनौती है, इसलिए आज भी हिंदी साहित्य में भारतीय नारी की स्थिति अपने आप में एक पूर्ण शोध का विषय है।

lanHk lwph&

1. मैथिली शरण गुप्त, यशोधरा– पृ.क्र. 03
2. प्रेमचंद, गोदान, भाग– 09, पृ.क्र.
3. चित्रा मुद्गल, एक जमीन अपनी – पृ.क्र. 102
4. तुलसीदास, रामचरितमानस
5. जयशंकर प्रसाद, कामायनी, लज्जा सर्ग – पृ.क्र. 106
6. रघुवीर सहाय, कविता– नारी, रचना काल – 1954
7. महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कड़ियाँ – पृ.क्र. 25
8. प्रदीप कुमार दास दीपक, अंतर्मन की हूक पृ.क्र. 96
9. कंचनलता सब्बरवाल, कल्प दृ पृ. क्र.181, 182

■■

eg:fUulk ijots+ dk dFkk lkfgR; esa ukjh dh fLFkfr

Mk- Mh-th- dqtj
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी
शासकीय मिनीमाता कन्या महाविद्यालय, कोरबा (छ.ग.)

हिन्दी साहित्य जगत के आधुनिक कथाकारों में मेहरून्निसा परवेज़ का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। स्त्री और पुरूष समाज के समान इकाई है, समाज के समेकित विकास के लिए दोनों ही महत्तवपूर्ण है, फिर भी आधी आबादी को दोयम दर्जा दिया गया है। एक ही समाज में रहने के लिए दोनों के लिए अलग–अलग नियम है। मेहरून्निसा परवेज़ के कथा संसार में स्त्री पुरूषों की शोषिता है, उसके अधीन है, उसकी आश्रिता है, जैसा कि आमतौर पर समाज में महिलाओं की स्थिति को देखा–सुना जाता है। पुरूष स्त्री का मास्टर होता है उसका दमन करता है, उसके स्वाभिमान को कुचलता है, उसकी लाचारी का लाभ उठाता है, उसे अपनी भोग्या से ऊपर का स्थान नहीं देता और भारतीय समाज के इसी सत्य का कच्चा चिट्ठा मेहरून्निसा परवेज़ ने अपने कथा संसार में प्रस्तुत किया है। उनका कथा साहित्य स्त्री–पुरूष के संबंधों पर केन्द्रित है।

हमारे समाज में स्त्रियों का पुरूषों पर निर्भर होने का एकमात्र कारण आर्थिक है। आर्थिक स्वतंत्रता व्यक्ति को आत्मनिर्भर तो बनाता ही है साथ ही अपने अंदर आत्मविश्वास पैदा करता है, स्वाभीमान के साथ जीना सीखाता है। वर्तमान में औरतों की स्थिति में तेज़ी से परिवर्तन आया है। पुरूषों पर उनकी निर्भरता कम हुई है। विभिन्न उद्योग धन्धों व व्यवसायों में प्रवेश कर उन्होंने अपनी रोज़ी रोटी की व्यवस्था करना प्रारंभ किया है। कुछ उद्योग एवं व्यवसायों में तो वे अपना एकाधिकार भी स्थापित करने लगी हैं। इतना होने पर भी घर के बाहर कदम रखने वाली महिलाओं के प्रति पुरूष की सोच नहीं बदली। उसके बढ़ते कदम को रोकने के लिए वह नित नये तरीके अपनाता है। मेकरून्निसा परवेज़ के उपन्यास ''अकेला पलाश'' की नायिका तहमीना कहती है कि – '' आज मैं क्योंकि बाहर काम कर रही हूँ, मेरा बाहर नाम है, तब यह लोग मेरे बारे में उल्टी–सीधी अफवाहें उड़ा रहे हैं ...... क्या आज मुझे अपने मन से जीने का हक नहीं ? सिर्फ

इसलिए कि मैं एक अच्छे ऊँचे पद पर काम करती हूँ।''[1]

आज जब औरतें आत्मनिर्भर है, आत्मविश्वास से भरी हुयी है तब उसके आत्मसम्मान को कुचलने के लिए पुरूष वर्ग सीधे उसके चरित्र पर उंगली उठाता है। जबकि उसकी खुद की नियत ठीक नहीं होती। वह कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाली कामकाजी महिलाओं को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखता, इसलिए उसे चारदीवारी के भीतर कैद रखना चाहता है। उसे अपनी गृहस्थी में अपने, बाल बच्चों में इतना उलझा देता है कि उसे अपने बारे में सोचने विचारने की फुरसत ही नहीं रहती। इतने पर भी वह अपनी पत्नी को वह सम्मान और प्रेम नहीं देता जिसकी वह हकदार होती है। मेहरून्निसा परवेज़ की कहानी ''ओढ़ना'' में पति की उपेक्षा और दुत्कार सहती पत्नी कहती है – ''यह पुरूषों की जात ही ऐसी है। वही आदमी बाहर की औरत से हंस–हंसकर बातें करता है और घर की दहलीज़ चढ़ता है तो गुस्से से भरा, मानो किसी का खून करके आया हो।''[2]

मेहरून्निसा परवेज़ ने अपने कथा साहित्य में पुरूष के हाथों छली गयी स्त्रियों का चित्रण किया है, जहां पुरूष अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए नए–नए तरीके निकालता है, कभी प्यार से, कभी सहानुभूति दिखाकर, कभी डरा धमका कर, कभी समाज की मर्यादा का हवाला देते हुए अपना उल्लू सीधा करता है। ''अकेला पलाश'' का तुषार तहमीना से शादी नहीं करता लेकिन उसे अपने साथ शारीरिक संबंध बनाये रखने के लिए अपने प्रेम का हवाला देता है। वह प्रेम की नई–नई परिभाषाएं गढ़ कर, उसे झूठी सहानुभूति दिखाता है। वह तहमीना को उसके बुढ़ढे नपुंसक पति को छोड़ने नहीं देता और इधर अपने से संबंध जोड़े रखने के लिए दबाव बनाता है, तुषार तहमीना को समझाते हुए कहता है – ''नहीं, मैं तुमसे कुछ छीनना नहीं चाहता, मैं तो केवल तुम्हें यह बताना चाहता हूँ कि तुम अपने को मत मारो ..... मैं तुम्हारी मजबूरी समझता हूँ, बस मैं यह जानता हूँ तुम मुझसे भी संबंध रखो और अपने घर के भी संबंध निभाओ।''[3]

इसी प्रकार कहानी ''हत्या एक दोपहर की'' का महेश अपनी प्रेमिका को धोखा देता है, उसे कुंवारी मां बनाकर खुद चुपके से दूसरी जगह विवाह कर लेता है। जब उसकी पत्नी माँ नहीं बन पाती तब उसे फिर अपनी प्रेमिका की याद आती है। वह अपने स्वार्थ के लिए कहानी की नायिका नुपूर से कहता है ''नुपूर सोच लो ज़िंदगी के बाकी बचे दिन हम इस समझौते से काट सकते है,'' महेश बोला था दोनों अपनी–अपनी ज़िंदगी में बंधे रह

सकते हैं। मुझे बिनी को छोड़ना नहीं पड़ेगा और न तुम्हें पिंटू को ..... दोस्त की तरह रह लेंगे।''[4] कभी अपने शरीर की भूख मिटाने के लिए वह नारी को बहलाता–फुसलाता और प्यार करता है तो कभी पेट की आग बूझाने के लिए। मेहरून्निसा परवेज़ की कहानी ''अकेला गुलमोहर''की नायिका को उसका बड़ा भाई शादी नहीं करने देता। ''सोच रही थी, छोटे भईया ठीक ही कहते हैं, भईया सिर्फ इसलिए ब्याह की स्वीकृति नहीं दे रहे कि फिर महीने का बंधा दो सौ रूपया बंद हो जायेगा।''[5] इसी तरह से परिवार के पालन पोषण में आर्थिक सहायता देने वाली बेटी के प्रति पिता इतना स्वार्थी हो जाता है कि वह उसका विवाह नहीं करना चाहता। '' विद्रोह'' कहानी की नायिका कहती है – ''उससे बुरी लड़कियों के विवाह हो जाते हैं, फिर वह तो अच्छी है, बस ऐब यही है कि आर्थिक हालत ठीक नहीं, तो इसमें किसका दोष है ? उसका या बाबूजी और मां का। उन्हीं के कारण तो उसका विवाह नहीं हो पा रहा है, बाबूजी ने क्यों इतने बच्चे पैदा किए ?''[6]

''उसका घर'' उपन्यास गिरते पारिवारिक मूल्य पर आधारित कथा है जिसमें पुरूष का स्वार्थ चरम सीमा पर नज़र आता है। वह दमे से पीड़ित अपनी परित्यक्ता बहन से जिस्मफरोशी कराता है। अपने व्यवसाय में तरक्की के लिए, घर की बुजुर्ग आंटी के विरोध करने पर भी इतना स्वार्थी हो जाता है कि अपने अफसर के साथ ऐलमा को सोने के लिए मजबूर कर देता है। स्वार्थी पुरूष का मेहरून्निसा परवेज़ ने एक और चित्र खींचा है जिसने शादी केवल दहेज के लिए की। कहानी ''ढहता कुतुबमीनार'' का राहुल अपनी छोटी बहन की शादी के लिए सपना से शादी करता है। सपना के लाए दहेज से वह अपनी बहन की शादी कर देता है।

हमेशा से ही बेकसूर महिलाएं पुरूषों की हैवानियत की शिकार होती आयी हैं। ये दरिंदे न केवल समाज में खुले घूम रहें हैं बल्कि खुद के घर में मौजूद होते हैं। बलात्कारी हमेशा अपरिचित नहीं होता। अधिकतर घटनाओं में वह जान पहचान का ही होता है। नेशनल क्राईम रिकॉर्ड ब्यूरो के 2015 के वार्षिक प्रतिवेदन के अनुसार ''हमारे देश में कुल 34,651 बलात्कार हुए, जिनमें से 34,000 अपराधी पीड़िता के जान–पहचान या रिश्तेदार है।''[7] मेहरून्निसा परवेज़ के कथा संसार में ऐसे ही दरींदे घूम रहे हैं, जिन्होंने कभी पिता या रिश्तेदार का नकाब पहन रखा है। अपने उपन्यास ''कोरजा'' में उन्होंने रहमान खाँ जैसे औरतबाज़ को चित्रित किया है जिसकी नज़र अपनी ही जवान होती बेटी फातमा पर पड़ती हैः–''वह समझ

गई कि अचानक लड़की की ओर बाप का प्रेम नहीं उमड़ा है, बल्कि यह मक्कार आदमी की वहशी आँखों का पानी था, जो घर में फुदकते नये परों की फड़फड़ाती चिड़िया को एक ही बार में दबोच लेना चाहता था।''8 कुछ ऐसा ही चित्र उन्होंने कहानी ''शनाख्त'' और उपन्यास ''उसका घर'' में खींचा है। सोफिया के शब्दों में– ''.....जब भूखे पेट से होकर शराब आँखों में उतरती थी तो बेटी और पत्नी में अन्तर नहीं दिखता था।''[9]

कहानी ''देहरी की खातिर'' में नायिका को जब उसका पिता घर से निकाल देता है तब वह अपने काका के घर रहने चली जाती है लेकिन मौका मिलते ही एक रात काका उसके साथ दुराचार करने का प्रयास करता है। ''काका उसे बाँह पकड़कर घसीटता हुआ घर के पिछवाड़े ले गया। उसकी देह दीवार की रगड़ से भरभरा उठी। काका ने उसे बुरी तरह अपनी बाँहों में कैद कर लिया, हरामज़ादी नखरे दिखाती है। हराम का बच्चा पैदा करने में नाक नहीं कटी। मेरे घर इत्ते महीने से खा रही, ऐसे ही। अब तो तुझे अपनी औरत बनाकर छोडूँगा।''[10]

कहानी ''सूकी बयड़ी'' में जीजा अपनी पत्नी के होते हुए साली पर जो उसके छोटे भाई की पत्नी भी है, पर बुरी नज़र रखता है। ''बइण, कल रात मैं ऑगणे में सो रही थी तो वह मेरे पैर सहला रहा था और बोला – म्हारे वास्ते बेटा जनेगी तो राणी बनकर रहेगी।''[11]

परिवार के लोग ही जब अपने घर की बहु–बेटियों की इज्ज़त पर हाथ डालते हैं तब समाज में खुले आम घूम रहे भेड़िए से उसे भला कौन बचा सकता है। मौका मिलते ही ऐसे भेड़िये उसे अपना शिकार बना ही लेता हैं। ''अकेला पलाश'' में तहमीना के पिता का दोस्त जमशेद, उसके साथ उसकी माँ की मौजूदगी में बलात्कार करता है। घर के नौकर घर की बहु–बेटियों पर और मालिक नौकर की बहु–बेटियों पर बुरी नज़र रखते हैं। कुछ इसी प्रकार के प्रसंग उपन्यास ''कोरजा'' में चित्रित है। घर के नौकर घर की बेटियों पर बुरी नज़र रखते हैं। बलात्कार तो करते ही हैं लेकिन जब–तब छोटी बच्चियों को प्यार करने के बहाने उन्हें छूते और सहलाते रहते हैं। ''कोरजा'' में ऐसे ही नौकर को मेहरून्निसा परवेज ने चित्रित किया है – ''फिर हाथ के बोरे को ज़मीन पर रख जाने क्या सोचकर मुलायम पड़ते हुए बोला, आओ तुम दोनों को एक खेल सिखाऊँ, कहते हुए गफ़्फार ने रब्बो को अपनी गोद में बिठा लिया ओर उसे प्यार करने लगा।''[12]

उपन्यास ''कोरजा'' का मुनीम जो कभी नसीमा की नानी के यहां

मुनीमगिरी करता था, अब उसके हाथ में घर की ज़मीन चली गयी है। वह इस षर्त पर नानी को उस घर में रहने की इज़ाज़त दे देता है कि नानी अपनी बेटी यानी साजो खाला, जिसे उसने कभी बचपन में गोद में खिलाया था, को उसके पास हर रात भेज दे। जवान साजो खाला घर की हालत को देखते हुए बूढ़े मुनीम के पास जाने लगती है, ''पर यह दुनिया अजीब है, उसके कानून अजीब हैं। एक माँ को मजबूर होकर अपनी बेटी से गुनाह करवाना पड़ता है और एक जवान बेवा, भरपूर औरत को, किसी बूढ़े खूसट का वहशीपन बर्दाशत करना पड़ता है।''[13] नौकर ही मालिक के बच्चों पर नज़र रखते हैं ऐसा नहीं है बल्कि मालिक भी नौकर की बहू–बेटियों पर नजर रखते हैं। अपनी हवस को शान्त करते समय उन्हें अपनी प्रतिष्ठा, अपनी मर्यादा, ऊँच–नींच, जात–पात, कुछ याद नहीं रहता है, याद रहता है तो सिर्फ औरत का शरीर – ''कमरे में छोटे मालिक खड़े थे। कमरा बंद था। कुएँ में भटकी चिड़िया की तरह वह कुएँ में नीचे–ही–नीचे मार्ग ढूंढने उतरती गई। ..... बहुत रोई, बहुत गिड़गिड़ाई, पर अंत में चिड़िया को तो डूबना था।..... समझ में आया कि वह एक नौकर की घरवाली है।''[14]

मेहरून्निसा परवेज़ के उपन्यासों और कहानियों को पढ़कर लगता है कि इसके नारी पात्र हमारे इर्द गिर्द है जो अपने साथ हुए अत्याचार का ज़हर पी कर भी जिंदा है। वह सब सहती है, छली जाती है, मार खाती है, उपेक्षित है फिर भी जीने की लालसा उसमें बनी रहती है, वह ज़िंदगी से जूझती है, लड़ती है, संघर्ष करती है पर उसकी जीवटता खत्म नहीं होती। इस गुण के कारण वह साधारण होते हुए भी विशेष हो जाती है। पुरूष उसके इर्द–गिर्द ही घूमता है उससे नफरत करता है, उसे त्याग देता है उसकी उपेक्षा करता है और फिर भी उस पर आश्रित रहता है। स्त्री–पुरूष के संबंधों पर टिका मेहरून्निसा परवेज़ का कथा साहित्य आधुनिक भारतीय समाज का ताना बाना बुनता है, जो पाठक को अपने अंदर की इंसानियत का पुनः विशलेषण करने का अवसर देता है।

I nHkZ xzFk I ph&

1. मेहरून्निसा परवेज़, अकेला पलाश : पृ.–15, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली–1997
2. मेहरून्निसा परवेज़, ओढ़ना, ; सोने का बेसर द्ध : पृ.–91, सत्साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली–1991

3. मेहरून्निसा परवेज़, अकेला पलाश : पृ.–137, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली–1997
4. मेहरून्निसा परवेज़, हत्या एक दोपहर की ; ढ़हता कुतुबमीनार द्ध पृ. –8, विद्या विहार, नई दिल्ली–1993
5. मेहरून्निसा परवेज़, अकेला गुलमोहर, ; आदम और हव्वा द्ध : पृ.–90, नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली–1972
6. मेहरून्निसा परवेज़, विद्रोह, ;आदम और हव्वाद्ध : पृ.–124, नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली–1972
7. https://en.m.wikipedia.org/wiki/Rape_in_India
8. मेहरून्निसा परवेज़, कोरजा : पृ.–20, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली–1997
9. मेहरून्निसा परवेज़, उसका घर : पृ.–86, नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली–1972
10. देहरी की खातिर ; ढ़हता कुतुबमीनार द्ध : पृ.–107, विद्या विहार, नई दिल्ली–1993
11. सूकी बयाड़ी ; समर द्ध : पृ.–137, ग्रन्थ अकादमी, नई दिल्ली–1999
12. कोरजा : पृ.–57, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली–1997
13. कोरजा : पृ.–72, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली–1997
14. जगार ; समर द्ध : पृ.–25, ग्रन्थ अकादमी, नई दिल्ली–1999

■■

Ukkjh vk|j lekt

Jherh ekxV d|t|j
सहायक प्राध्यापक हिन्दी
शास.महाविद्यालय धरमजयगढ़ जिला– रायगढ़ (छ.ग)

मनुस्मृति में कहा गया है कि

यत्र नार्यस्तु पूज्यतें रमन्ते तत्र देवताः।
यतैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।

जहॉ स्त्री जाति का आदर व सम्मान होता है, वहॉ पर हर आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। उस स्थान, समाज तथा परिवार से देवतागण प्रसन्न रहते हैं। जहॉ ऐसा नही होता और उनके प्रति तिरस्कारमय व्यवहार किया जाता है, वहॉ देवकृपा नहीं रहती है और वहॉ संपन्न किये गये कार्य सफल नहीं होते हैं। भारत में नारी को प्राचीन समय से लेकर अब तक माता व देवी के स्वरूप माना गया है। यहॉ तक की हमारी पवित्र भारत भूमि को भारत माता के नाम से संबोधित किया जाता है। लेकिन हमारा यह भारतीय समाज प्राचीन काल से ही पितृसतात्मक रहा है और यहॉ व्यवस्था, संस्कार एवं कर्तव्य के नाम पर उन्हे दबाया जाता रहा है , उसे अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए हर युग की सामाजिक, राजनैतिक , आर्थिक ,धार्मिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था से संघर्ष करना पड़ा है और पड़ रहा है। अतः यहॉ पर हम उन कालों व स्थितियों पर पर चर्चा करेगें जो हमें स्त्रियों की दशाओं के संबंध में बतायेंगे।

वैदिक एवं उपनिषद काल में नारी– वैदिक काल में स्त्रियों को पुरूषों के समान अधिकार प्राप्त थे उन्हे अस्त्र–शस्त्र धारण करने के साथ–साथ युद्व एवं शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार प्राप्त था। भारतीय समाज का एकमात्र यह काल हमें इतिहास से प्राप्त होते है जहॉ स्त्रियों को सम्मान जनक स्थान प्राप्त था। वैदिक काल में अपाला,घोषा, विश्वावरा, माण्डवी आदि चमकता हुआ नक्षत्र थी। उपनिषद काल में गार्गी, मैत्रेय आदि की प्रतिभा अविस्मरणीय है। रामायण व महाभारत काल में स्त्रियों की दशा में कुछ ह्रास हुआ किन्तु फिर भी सीता ,द्रौपति जैसी नारियों के कारण यह काल भी नारी गौरव से सुषोभित था।

सल्तनत काल एवं मुगलकाल काल– इस काल में हमें स्त्रियों की

स्थिति में गिरावट देखने को मिलती है। पर्दा प्रथा, बाल विवाह, जौहर ,सती प्रथा, जैसे कुप्रथाओं में नारी को बॉध दिया गया था। नारी को या तो घर के चार दिवारी में बंद कर परिवार पोषण के लिए समझा गया और कहीं उसे वस्तु समझ कर खरीदा, बेचा व युद्व में जीता, हारा गया तब नारी का अस्तित्व एक वस्तु के समान रह गया था। महिलाओं की शिक्षा पर प्रतिबंध लग गया उन्हे पूर्णरूप से पुरूषो पर आश्रित बन दिया गया। विध वाओं को अनादर का सामना करना पड़ा।

आधुनिक काल–अंग्रेजों के आगमन के साथ भारतीय समाज ने पुनः करवट लेना प्रारंभ किया । पाष्चात्य संस्कृति के प्रभाव से भारतीय समाज में पुनः जागरण की स्थितियॉ निर्मित हुई। अंग्रेजी शिक्षा ने जहॉ एक ओर गुलाम मानसिकता वाले लोगो को तैयार किया वही दूसरी ओर ऐसे लोग मैदान में आये जो अपने समाज की जड़ता को मिटा कर , उसमें फैली कुरीतियों को दूर करना चाहते थे। फलस्वरूप भारत में समाज सुधार आन्दोलनों की लहर सी चल पड़ी। जिसका सूत्रपात राजाराममोहन राय ने – 19वी शताब्दी में किया । उन्होने सतीप्रथा, बालविवाह, विधवा पुनर्विवाह निषेध जैसी कुप्रथाओं के –विरूद्व एक सशक्त आन्दोलन चलाया। ईश्वरचंद विद्यसागर, देवेन्द्रनाथ ठाकुर, स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी राम कृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, केशवचंद्र सेन, सर सैयद अहमद खॉ, ज्योतिबा फूले एनी बेसेंट, मार्गरेट काउसिन्स, महात्मा गॉधी आदि के प्रयासों से समाज सुधार आन्दोलन तीव्र हुए तथा भारतीय समाज में पुनः परिवर्तन की लहर चल पड़ी। ब्रिटिश शासन काल में विभिन्न समाज सुधार आन्दोलनों एवं स्वतंत्रता संग्राम के आदर्शो से स्त्रियों में सामाजिक चेतना उत्पन्न हुई अनेक सुधार आन्दोलनों के फलस्वरूप विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, बालविवाह प्रतिबंध अधिनियम ,संपत्ति अधिकार अधिनियम, पारित हुआ तथा स्त्रियों को –मताधिकार मिला।

भारत देश की नारियों ने हर क्षेत्र में अपनी योग्यता को सिद्व किया है व देश का नाम गौरन्वित किया है। श्रीमती इंदिरा गॉधी ने अपने दृढ़ –संकल्प के बल पर भारत व विश्व राजनीति को प्रभावित किया है। तथा प्रतिभा पाटिल ने राष्ट्रपति के पद को सुशोभित किया है। श्रीमती सुषमा स्वराज एक सशक्त विदेश मंत्री के रूप में अपनी पहचान बनाई है। अपने कर्तव्य निर्वहन में श्रेष्ठता के लिए विख्यात भारत की पहली महिला आई. पी. एस. किरण बेदी आज भी लाखों महिलाओं की प्रेरणास्रोत है। सौदर्य प्रतियोगिता के क्षेत्र में भारत सुंदरियों ने पूरे विश्व में साबित कर दिया है

कि वे सौदर्य के मामले में किसी से कम नही है इनमें प्रमुख हैं मिस युनिवर्स सुष्मिता सेन, मिस वर्ल्ड एश्वर्या राय, लारा दत्ता, युक्तामुखी, डायना हेडेन मानुषी छिल्लर इत्यादि। खेल जगत में पी. वी. सिन्धु, पी. टी. ऊषा, सानिया मिर्जा, साइना नेहवाल एम. सी. मैरीकाम ने अपना लोहा मनवाया है। कल्पना चावला, सुनिता विलियम्स, ने अंतरिक्ष में जाकर भारत का झंड़ा फहराया है। वर्तमान उद्योग जगत के क्षेत्र में भारतीय महिलायें तेजी से आगे बढ़ी और शीर्ष पदों पर रही हैं, यह दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के लिए बहुत सुखद अनुभूति है। उद्योग जगत की महिलाओं में इंदिरा नूरी, किरण मजूमदार, श्रीमती चंदा कोचर, नैना किदवई, श्रीमती शिखा शर्मा, श्रीमती अरूंधती भट्टाचार्य, श्रीमती अनंत सुब्रमण्यम एवं श्रीमती एम एम स्वाति का नाम बड़े ही अदब व सम्मान के साथ लिया जाता है। इसी प्रकार रानी लक्ष्मी बाई ने वीरता का तथा रानी दुर्गावती ने शौर्य और पराक्रम से देश की रक्षा की है और भारतीय इतिहास में अमर हो गई।

स्वतंत्र भारत में अनेक भारतीय महिलाओं ने अपने निजी प्रयासों से श्रेष्ठ उपलब्धियॉ हासिल की है पर समाज एवं शासन उन्हे भयमुक्त, स्वतंत्र विकास का वातावरण उपलब्ध करा नही सका, वे आज भी लैंगिक भेदभाव का शिकार , संपत्ति का अधिकार से वंचित, यौन शोषण का शिकार, समाज में दोयम दर्जे का व्यवहार से अपमानित एवं आर्थिक रूप से पुरूषों पर निर्भर है।

कन्या भ्रूण हत्या मानवता व विशेष रूप से समूची स्त्री जाति के विरूद्व जघन्य अपराध है। बेटे की इच्छा व दहेज प्रथा ने ऐसी स्थिति को जन्म दिया है, जहॉ बेटी के जन्म को किसी भी कीमत पर रोका जाता है। पिछले तीन दशकों में बड़े पैमाने पर कन्या भ्रूण हत्या के कुप्रभाव से गिरते लिंगानुपात और विवाह योग्य लड़कों के लिए वधुओं की कमी के रूप में सामने आये हैं।

दहेज समाज में एक सामाजिक अपराध है और इस अपराध ने समाज के सभी तबकों में महिलाओं की जानें ली है। चाहे वे गरीब हो, मध्यमवर्ग हो, या धनाढ्य, लेकिन वे गरीब हैं जो इसके जाल में सबसे ज्यादा फंसते हैं। जिसका मुख्य कारण जागरूकता एवं शिक्षा की कमी है। इसी दहेजप्रथा के कारण बेटियों को बेटों की तुलना में कम महत्व दिया जाता है, उन्हे बोझ समझा जाता है, उन्हे हीन समझा जाता है एवं द्वितीय श्रेणी का समझा जाता है ,चाहे वह शिक्षा हो या अन्य सुविधाएँ।

भारत की सामाजिक व्यवस्था में जाति एवं धर्म का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है , एक पिता अपनी पुत्री को मरता हुआ देख सकता है, लेकिन किसी अन्य जाति व धर्म के पुरूष से विवाह करते नही देख सकता कहने का तात्पर्य है, कि इस भारतीय समाज में एक स्त्री को अपने मनपसंद का जीवन साथी चुनने व अपने जीवन को अपने अनुसार जीने का अधिकार प्राप्त नही है। भारत के कुछ समाजों में बाल विवाह का संबंध प्रचलित सामाजिक मान्यताओं से जोड़ा जाता है, जिसमें एक युवा लड़की जिसकी आयु 15 वर्ष से कम हो जिसका विवाह एक व्यस्क पुरूष से किया जाता है, कम उम्र में विवाह के कारण लड़कियों में अनेक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ आ जाती है, जो उन्हे लिंगभेद, गरीबी, बेकारी जैसे कुचक्र में फंसा देते हैं।

जिन रीति रिवाजों , प्रथा परंपराओं ने नारी के व्यक्तित्व को कुठिंत करने में योग दिया है उनमें से एक है पर्दा प्रथा , पर्दा प्रथा हमारी संस्कृति में कभी प्रचलित ही नही रही है, शिक्षित व आधुनिक कहे जाने वाले परिवारों में संस्कारों के नाम पर इस प्रथा को उसी प्रकार अपनाया जाता है जैसा कि परंपरावादी परिवारों में। अपने आपको शिक्षित कहे जाने वाले युवक भी विवाह के बाद अपनी पत्नी से पर्दा की आपेक्षा रखते हैं। और पढ़ी लिखी लड़कियॉ भी विवाह के बाद अपने ससुराल वालों को खुश रखने के लिए पर्दे में चली जाती है।

इंटरनेट एवं सोशल मिड़िया के प्रयोग से महिलाओं को कई गंभीर साइबर अपराध का सामना करना पड़ रहा है। साइबर एब्युज किसी के साथ भी हो सकता है, फिर चाहे वह महिला हो या पुरूष लेकिन दुनिया का सबसे बड़ा कड़वा सच यही है कि पुरूषों के मुकाबले महिलाओं को हर चीज का ज्यादा खतरा होता है। भद्दी बातें कहना, गालियॉ देना, गंदी तस्वीर भेजना यही है साइबर एब्युज। भारत में साइबर अपराध के मामलों में शिकायत करने वाली महिलाओं की संख्या काफी कम है।

कार्यस्थल पर महिला कर्मचारियों के साथ छेड़–छाड़ , छींटाकशी, भद्दे कमेंट्स तथा ऑफिस में बॉस के द्वारा महिला कर्मचारियों को वेतनवृद्वि, पदवृद्वि का लालच देकर यौन हिंसा का शिकार बनाना एवं घरों में घरेलू हिंसा की घटनाएँ, पति के द्वारा पत्नी को प्रताडित करना, घरों में काम करने वाली नौकरानियों, छोटी बच्चियों के साथ होने वाले यौन अपराध की घटनाएँ हमें आये दिन न्युज चैनलों ,समाचार पत्रों आदि में देखने व सुनने को मिलते हैं।

रेप किसी भी लड़की के लिए एक ऐसा अमानवीयकृत है जिस घटना के लिए किसी भी रूप में लड़की जिम्मेदार नही होती। रेप सिर्फ शरीर का उत्पीड़न नहीं बल्कि मन व पूरे वजूद पर हमला है, 16 दिसम्बर 2012 को इस गैंगरेप की विभत्स घटना ने भारत को नही बल्कि पूरे विश्व को हिलाकर रख दिया था। और पूरे विश्व की मिडिया में भारत की यह घटना चर्चा का विषय बनी हुई थी कहने का तात्पर्य यह कि निर्भया के दरिदों ने विश्व पटल पर निर्भया के साथ–साथ हमारी पवित्र भारत भूमि को कलंकित किया है,तथा पूरे विश्व को यह सोचने को मजबूर कर दिया कि राम और कृष्ण की इस पवित्र भूमि में महिलाओं के साथ ऐसी दरिंदगी पूर्ण व्यवहार होता है। निर्भया के प्रति सब्र का पैमाना अभी भी बंधा हुआ है, सियासत बदल गई है ,निर्भया ने मृत्यु से पहले अपने समस्त हत्यारों के नाम व पहचान बतायें हैं लेकिन आज भी उसके गुनाहगारों कों सजा नही दी गई है और दी भी जा रही है तो सात साल बाद क्यों ? यह भी समाज के लिए एक चिंतन का विषय है।

17 जनवरी 2018 को जम्मू कश्मीर के कठवा में आठ साल की मासूम बच्ची के साथ गैंगरेप और हत्या की वारदात ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया था। इस घटना के दो पहलुओं नें पूरे देश को सोचने को मजबूर कर दिया, वह है कि इस घटना में पुलिस का जवान शामिल था। वहीं इस घिनौने वरदात को धार्मिक स्थल पर अंजाम दिया गया और आज असीफा के गुनहगारों ने अपना गुनाह तो कबूल कर लिया है लेकिन आज भी असीफा के माता पिता और असीफा की आत्मा को न्याय का इंतजार है। कहने का तात्पर्य है कि आज स्थिति ऐसी है की छोटी–छोटी बच्चियों के साथ रेप फिर हत्या की घटनाएँ आम हो गई है, इस तरह की घटनाओं को अंजाम देने वाला व्यक्ति हमारे आस–पास का या पहचान का ही होता है, और इस तरह की घटनाओं को अंजाम देने वाला हर व्यक्ति मानसिक रोगी भी नही होता, कहीं न कहीं पर हमारे समाज के द्वारा परोसी जाने वाली अश्लील फिल्में, अश्लील मैगजीन, टी.वी. में दिखाये जाने वाले क्राइम पेट्रोल तथा सोशल में मिडिया में परोसी जाने वाली अश्लील चींजों को काफी हद तक जिम्मेदार ठहराया जा सकता है।

आज हम जिस विकासशील समाज में जी रहे हैं वहॉ हम अपनी बेटियों को माता व बहनों को सुरक्षा देने में असमर्थ पा रहे हैं, बेटी बचाओ और बेटी पढ़ाओं से ज्यादा महत्वपूर्ण है बेटियों को सुरक्षा दो यद्यपि

सरकार के द्वारा महिलाओं व बेटियों की सुरक्षा हेतु अनेक नियम व कानून बनाये गये हैं, आज हम सब को मिलकर एक ऐसे समाज का निर्माण करना होगा जहॉ बेटियॉ निर्भय जीवन जी सके। हमें कभी ऐसे समय का इंतजार करना न पड़े जहॉ निर्भया , प्रियंका रेड्डी, असिफा, भंवरी देवी का अस्तित्व दांव पर लगने के बाद सरकार व समाज जागे।

I nHk xFk&

1. पत्र–पत्रिकाएँ
2. नेट

- http://hi. vikaspedia.in/e-governance
- http://hi.vikaspedia.in/social- welfare
- http://literature.awgp.org/book/
- https://www.navodaytimes.in/news/khabre/
- https://khabar.ndtv.com/news/blogs/
- https://vichaarsankalan.wordpress.com

■■

ukjh ,oa lekt

nhfidk itkifr
डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय
कोटा, बिलासपुर (छ0ग0)

बेशक हमारा समाज एक पुरूष प्रधान समाज रहा पर स्त्रियों की भागीदारी भी इसमें पूर्णरूप से समान रही है। स्त्री और पुरूष को गाड़ी के दो पहियों के रूप में बताया गया है। जो समान रूप से एक साथ चले तो जीवन का निर्वाह करना सरल हो जाता है। परिवार हो समाज हो या देश इनको सुचारू रूप से चलाने के लिए दोनों का बराबर योगदान होता है। पर इस पुरूष प्रधान समाज में नारी के इस योगदान को पर्दे के पीछे रखा गया। उसे खुलकर कभी समाज के सामने न आने दिया उसे बस चार दीवारों के अंदर ही समेट कर हमेशा रखा गया। धीरे–धीरे सामाजिक परिवेश में परिवर्तन हुआ। लोगो की सोच कुछ हद तक बदली और स्त्रियाँ निर्भिक होकर समाज में अपने अस्तित्व को रखा उन्होंने यह सिद्ध किया कि कोई भी क्षेत्र हो और कोई भी कार्य हो वह पूर्ण रूप से सक्षम हैं। चाहे वह घर संभालने की बात हो, शिक्षा का कोई भी क्षेत्र हो देश चलाने से लेकर आसमान की ऊँचाईयों तक पहूँचने की, सामाजिक राजनीतिक तथा वैज्ञानिक क्षेत्रो में स्त्रीयों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। रजिया सुल्तान जिनका नाम भारतीय इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाता है। वह उस समय देश की पहली शासक बनी जब स्त्रियों को पर्दे के पीछे ही रखा जाता था। वही सन् 2007 में माननीय प्रतिभा पाटिल जी को भारत देश की प्रथम महिला राष्ट्रपति बनने का गौरव प्राप्त हुआ। कल्पना चांवला भारत की प्रथम महिला थी जिन्होंने अंतरिक्ष पर अपना कदम रखा और इसी अंतरिक्ष यात्रा के दौरान उनकी मृत्यु हुई। सुनिता विलियम्स तथा कई ऐसी अन्य महिलाये है। जिन्होंने अपने योगदान से भारत को गौरान्वित किया। घर की चार दीवारों में पुरूषों ने जिसे बंद कर रखा था। उसने आज समाज में अपनी एक महत्वपूर्ण जगह बनाई।

समाज में स्त्रीयों की दशा से संबंधित कुछ पंक्तियाँ –

स्त्री! तेरी क्या कहानी कहूँ मैं तेरी स्थिति तो कल भी दयनीय थी और आज भी दयनीय ही है।

तुम जननी हो, तुम्ही धरती हो तुम मंदिरों में पूजी जाने वाली दुर्गा काली हो।

पुरूषों को जन्म देने वाली माँ हो तुम समाज में बेटी, बहन, पत्नी, माता अनेको बंधनों से युक्त हो तुम

दुनिया के तमाम बोझो को दुःखो के
भार को ढोने वाली सहनशील

व्यक्तित्व हो तुम।

स्त्री रूप में तुम वह व्यक्तित्व हो जो समाज के समस्त बंधनों को समेटे हुए है। कही तुम्हे शक्ति रूप में पूजा गया तो कहीं तुम्हारे अस्तित्व को ही कुचला गया।

तुममें पूर्णता होते हुए भी तुम्हारी संपूर्णता पर प्रश्न चिन्ह् लगाया गया। रात के साये में ही नहीं दिन के उजाले पर भी तुम्हारे अस्तित्व पर कालिख पोती गयी।

आज के सामाजिक परिवेश में दिन पर दिन नारी के ऊपर बढ़ते अपराधों से वह सुरक्षित नहीं है। क्योंकि सदियों से ही नारी को भोग विलाश की वस्तु समझा जाता रहा है। पुरूषों कि गंदी नजरों और अश्लीलता उन पर रही है। रात के अंधेरे में वह बाहर नहीं निकल सकती है। खुलकर वह जीवन नही जी सकती है। वह अपनी इच्छा के अनुसार घूम फिर नहीं सकती है। कही दहेज के लिए उसे प्रताड़ित किया जा रहा है। तो कही तेजाब डालकर उसे जलाया जा रहा है। कही उसकी दैहिक शोषण कर उसे बीच रास्ते में मरने के लिए छोड़ दिया जा रहा है। उसकी चीख पुकार और दर्द कोई नहीं सुन पाता अंत में उसी पर लान्छन लगाकर जीवन भर ओछी नजरों से देखा जाता है। तेजाब हमले जैसी खबरें दिन प्रतिदिन अखबार की सुर्खियाँ बटोर रही है। लक्ष्मी अग्रवाल जिस पर सन् 2005 में तेजाब का हमला हुआ था। वह पुरी तरीके से उसमें झूलस गयी थी उस समय महज वह केवल 15 वर्ष की थी जब उसके साथ यह घिनौनी घटना हुई। वह किस स्थिति से उस समय गुजरी होगी इसका अंदाजा कोई नहीं लगा सकता है, उसका शरीर तो जला पर साथ ही साथ उसके मन में भी एक गहरी चोट लगी। उसने अपने गुनहगारों को सजा दिलवाने की ठान ली। उसने एक साहस और उम्मीद के साथ लड़ाई लड़ी की साल सन् 2006 में उन्होंने तेजाब बंद करवाने की याचिका सुप्रीम कोर्ट में दी और साल सन् 2013 तक उनकी इस याचिका पर सुनवाई हुई और अवैध तेजाब बेचने

और खरीदने पर रोक लगवा दी साथ ही अपने गुनहगारो को सजा भी दिलवाई। लक्ष्मी अग्रवाल के ऊपर फिल्म अभिनेत्री दीपिका पादुकोण द्वारा एक फिल्म बनाई जा रही है। जिसका शीर्षक है ''छपाक'' इस फिल्म के द्वारा लक्ष्मी अग्रवाल के साथ हुए तेजाब हमले के हादसे की कहानी के साथ उनके साहस और संघर्ष को बखूबी बताया गया है। जिस तरह वह अपने गुनहगारो को सजा दिलवाई और तेजाब पर रोक लगावाई।

इस निर्दयी समाज में दहेज के लिए तुम्हें जलाया गया। स्त्री होकर ही स्त्री को जन्म देने के लिए तुम्हे दण्डित किया गया।

तुमने खुद को पुरूषों के बराबर खड़ा किया खुद के अस्तित्व को उजागर करना चाहा पंखो के साथ उड़ना चाहा, अपने मनोबल और साहस के साथ आगे बढ़ा पर क्या कहें इस निर्दयी समाज को तुम्हारा यह सुख भी न देखा गया। तुम्हारे बढ़ते कदमों को निर्ममता पूर्वक खींचा गया। तुम्हारे अस्तित्व को पैरो तले रौंदा गया तुम्हे बदनाम किया गया।

तुम्हारे जख्मों को भरने के बजाये उसे और कुरेदा गया शरीर के साथ–साथ तुम्हारे मन का भी इस सारे समाज में बार–बार बलात्कार किया गया। फिर भी तूने हार न मानी अपने मान सम्मान के लिए तुम

उठ खड़ी हुई। दिया न साथ तुम्हारा किसी ने फिर भी आस और साहस न छोड़ी लड़ती रही तब तक जब तक खुद के लिए न्याय न ले ली।।

I nHkZxzFk&

1. उमेश प्रताप सिंह एवं राजेश कुमार गर्ग (सं.) : महिला सशक्तीकरण : साहित्यिक दृष्टि,जयभारती प्रकाशन इलाहाबाद 2012
2. आशा कौशिक : महिला मानवाधिकार संरक्षण बनाम वस्तुनिष्ठ, अविष्कार पब्लिशर्स, जयपुर 2016
3. प्रभा खेतान : छिन्नमस्ता, राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली द्वितीय संस्करण 2010 (प्र. सं. 1997)
4. मृदुला सिन्हा : बिटिया है विशेष (स्त्री विमर्श), सामाजिक प्रकाशन, नयी दिल्ली 2009
5. रमणिका गुप्ता : स्त्री मुक्ति संघर्ष और इतिहास, सामाजिक प्रकाशन, नयी दिल्ली 2012
6. राजेन्द्र यादव : आदमी की निगाह में औरत, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली 2013

■■

lkfgR; e ukjh d :i

Mk- lquhrk jkBkj
शा.एम.एम.आर. पीजी कॉलेज, चांपा

Mk- ljkt 'kekZ
शा.नवीन गर्ल्स कॉलेज, जांजगीर

घृतकुम्भसभा नारी तप्तागारसम; पुमान। नारी घी का कुऑ है और पुरूष जलता हुआ अंगार। दोनों के संयोग से ज्वाला प्रज्वलित हो उठती है, यानी नारी और पुरूष एक दूसरे के पूरक है। नारी के बिना पुरूष का कोई अस्तित्व नहीं। पुरूष के अभाव में नारी का कोई मूल्य नहीं। नारी के सहयोग के अभाव में पुरूष ने सदा एकाकीपन अनुभव किया है और जहॉ भी सहयोगिनी के रूप में नारी प्राप्त हुई हैं वहॉ उसने अभिनव से अभिनव सृष्टि की है। नारी की इसी प्रतिमा से पराजित ही प्रसाद जी की श्रद्धा फूट पड़ी।

नारी तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास रजत नग पग तल में
पीयूश स्रोत सी वहा करो ,
जीवन के सुन्दर समतल में।

सारा का सारा भारतीय साहित्य नारी के विविध चित्रों से ओतप्रोत है। वास्तव में सत्य यह है कि जिस युग के समाज में नारी का जो स्थान था, उस युग के साहित्य में नारी उसी रूप में चित्रित की गयी है। साहित्य समाज का दर्पण होता है। समाज की सारी मान्यतायें मर्यादायें उसके युग के साहित्य में स्वतः उभर उठती है। यही कारण है कि आदिकाल से लेकर आज तक साहित्य में चित्रित नारी के विविध–रूप, अपने युग की नारी विषयक मान्यताओं के ही प्रतिरूप है।

भारतीय इतिहास का प्रारंभ वैदिक युग से होता है। वैदिक युग भारतीय संस्कृति का उज्ज्वलतम युग का, उस युग में नारी का समाज में आदर का , वह पुरूषों के साथ ही जीवन के क्षेत्र में कन्धा मिलाकर कार्य करती थी। उसें पुरूष के समान अधिकार प्राप्त थे। गार्गी, मैत्रेय, विश्ववारा उस युग की ऐसी नारियॉ हैं, जिन्होने अपनी प्रतिमा के बल पर ऋषियों का पद प्राप्त किया था।

नारी के आदर्शो को देखकर आज के युग की पुकार है कि हमें रीतिकालीन–युग की वासनात्मक नारी नहीं चाहिए, हमें आदर्श मॉ चाहिए। हमें विश्वास है,कि आज के जागरूक कवियों द्वारा नारी जीवन के आदर्श रूपों की सृष्टि होगी जो सदियों से पीड़ित नारी को मुक्त करानें में, उसकी भावना को अभिव्यक्ति करेंगें और तभी मनु की वह युक्ति भी चरितार्थ हो सकेगी।

यत्र नार्यस्तु पूज्यते।

नारी भावनाओं की यह अभिव्यक्ति जो कई सदियों से भीतर ही भीतर छटपटा रही थी और आज नारी लेखन में ही अभिव्यक्त हुई, क्योकि नारी नें ही नारी की पीड़ा को समझा और नारी ने ही उन्हें समझकर उनकी पीड़ा को शब्द दिए। जो की एक पुरूश नहीं समझ सकता नारी ने ही उनके जीवन की समस्त व्यथा को लिखा।

मन्नू भंडारी' उषा प्रियवंदा चंन्द्र किरण सोनेरिक्सा , शशिप्रभा शास्त्री का लेखन नारी अस्मिता को तलाश है, आज के समय में जहॉ तक देखा गया है, कि भारत में महिलाओं की स्थिति ने पिछले कुछ सदियों में कई बड़े बदलावों का सामना किया हैं, महिलाओं ने प्राचीन काल में पुरूषों के साथ बराबरी के स्तरीय जीवन और सुधारकों द्वारा सामान अधिकारों को बढ़ावा दिए जाने तक भारत में महिलाओं का इतिहास काफी गतिशील रहा।

नारी साहित्य लेखन एक ओर स्वान्तः सुखाय है तो दूसरी ओर जन हिताय नारी साहित्य इस परिवर्तन युग का शुभचिंतक है।

साहित्य में नारी का अतुलनीय रूप मिलता है, कहीं लड़नेवाली कहीं ममतामयी मॉ के रूप में, कहीं आदर्श पुत्री के रूप में प्रेमचंद के गोदान' उपन्यास में धनिया आदर्श मॉ, आदर्श पत्नी के रूप में सामने आती है। 'एक दिन' एकांकी में शीला आदर्श पुत्री के रूप में नजर आती है।

इस प्रकार आज के दौर में भारतीय संस्कृति में नारी को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया हैं; वह शिव भी है और शक्ति भी वह वो सभी कार्य कर सकती है जो एक पुरूष करता है, वह एक पुरूष के समान उससे अधिक कार्य कर सकती है और करती भी है।

■■

ukjh vkj lekt

ik0 jhrk flg
अर्थशास्त्र विभाग
एम0जी0कॉलेज खरसिया (छ0ग0)

भारत के प्राचीन आध्यात्मिक विज्ञान के अनुसार आत्मा की पूर्णता प्राप्त करने के लिए ही नर–नारी का आविर्भाव हुआ है, और दोनों में कुछ ऐसे पृथक–पृथक गुणों का विकास किया गया है जिनके सम्मिलन से सर्वोच्च आध्यात्मिक स्थिति प्राप्त की जा सकती है। शास्त्रों के मतानुसार पुरूष में जिन शक्तियों का विकास हुआ है उनमें ज्ञान,बल,तेज की प्रधानता है और नारी को जो शक्तियाँ प्रदान की गई हैं उनमें श्रद्धा,भक्ति,सेवा की प्रमुखता है। यह दोनों ही प्रकार की गुण मानव समाज की प्रगति और उन्नति के लिए अनिवार्य है। यही कारण है कि जब तक स्त्री और पुरूष अपने–अपने कर्तव्यों का यथोचित रीति से पालन करते रहते हैं तब तक समाज में सुख, संतोष, शक्ति, प्रगति के दृश्य दिखाई देते रहते हैं और सब प्रकार की अमंगल जनक परिस्थितियाँ टलती रहती हैं पर इसके विपरीत जहाँ वे अपने स्वाभाविक कर्तव्यों को भूल जाते हैं और एक दूसरे के अधिकारों का अन्याय पूर्वक अपहरण करने की चेष्टा करते हैं वहाँ तरह तरह की कठिनाईयाँ, अपत्तियाँ, क्लेश उत्पन्न होते हैं और समाज अवनति की ओर अग्रसर होने लगता है।

यह ठीक है कि बहुत समय से संसार के एक बड़े भाग में पुरूष का कार्य क्षेत्र घर से बाहर रहा है और स्त्री को घर के भीतर ही रह कर अपने कर्तव्यों का पालन करना पड़ा है। इसके परिणाम स्वरूप पुरूष में शारीरिक शक्ति, साहस, पुरूषार्थ, सुझबुझ, बुद्धिमता को विशेष रूप से विकास हो गया है। इसके विपरीत नारी का मुख्य कार्य सन्तानोत्पादन तथा शिशु पालन रहा है, जिसमें उसे एक प्रकार की साधना और तपस्या का जीवन बिताना पड़ा है। संतान के लिए माता को कितना त्याग करना पड़ता है और अनेक बार आत्मा बलिदान तक देना पड़ता है यह बात किसी से छिपी नहीं है। नारी का केवल एक गुण इतने महत्व का है जिसके कारण पुरूष को उसके सामने सदैव नतमस्तक रहना चाहिए।

नारी को पुरूष की पूर्णता कहा गया है। वह संसार का मूल है। नारी के बिना परिवार या घर की कल्पना करना भी असंभव है। वह माँ के रूप में, पत्नि के रूप में, प्रेयसी के रूप में ,बहन के रूप में विद्यमान है। वह जीवन के अनेक

रूपों को प्रभावित करने वाली है । वह पुरूष की सहधर्मिणी है, सहचरी एवं सहकर्मिणी है।

चाहे मध्ययुगीन यशोधरा, दुर्गावती, अहिल्याबाई, पद्मिनी जैसी नारियाँ हो अथवा आधुनिक भारतीय जीवन के उज्ज्वल आकाश में सुशोभित श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित, कमला नेहरू, कस्तुरबा गांधी , सरोजनी नायडू, इंदिरा गांधी, सुचेता कृपलानी, महादेवी वर्मा या सुभद्रा कुमारी चौहान हों, सभी की गौरव गाथायें उनकी शिक्षा, ज्ञान , प्रतिभा आदि पर टिकी हुई हैं। आज नारियों को पुरूषों के समान अधिकार प्राप्त हैं। स्वतन्त्र भारत में आज नारी किसी भी पद अथवा स्थान को प्राप्त करने से वंचित नहीं है। धनोपर्जन के लिए वह आजीविका का कोई भी साधन अपनाने के लिए स्वतन्त्र है।

प्राचीन काल में स्त्रियों के लिए कोई भी स्थान वर्जित नहीं था वो युद्ध भूमि में पुरूषों के समान रण कौशल दिखाया करती थीं। रामायण में माता कैकेयी इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं, जिन्होंने युद्ध भूमि में राजा दशरथ को सहयोग प्रदान किया था। इसके अलावा सीता, अनुसूया एवं सुलोचना आदि आदर्श नारियों ने नारी जगत को एक नवीन दिशा प्रदान की है। महान विदुशियों में आपने गार्गी का नाम तो सुना ही होगा।

मध्यकाल में आकर नारियों की दशा दयनीय हो गयी। विदेशी आक्रमणकारियों के हमले और उनका भारत के विभिन्न स्थानों पर हमला और उस पर अपना अधिकार करना, इन सब ने बहुत प्रभाव डाला। मध्य काल के शासकों की कामलोलुप निगाहों से नारी को बचाने के लिये पर्दा प्रथा लागू हुई। इस काल में नारियों को चारदीवारी तक सीमित कर दिया गया। इस तरह मध्य काल में आकर शक्ति स्वरूपा नारी अबला बन कर रह गई।

गुप्त जी ने कुछ पंक्तियाँ लिखी थी जो इस काल की नारी के लिए बहुत सटीक जान पड़ती हैं–

'' अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आंचल में है दूध और आँखों में पानी ''

भक्ति काल में नारी जनजीवन के लिए इतनी उपेक्षित हो गई कि विद्वान कवि कबीर दास ने उन्हें ''महाविकार एवं नागिन'' कह कर घोर निंदा की । महाकवि तुलसी दास ने भी नारियों के प्रति सहानुभूति नहीं दिखाई उन्होंने लिखा–

मां–बहन और अर्धांगिनी इन सभी रूपों में उसका शोषित और दमित स्वरूप ,वैदिक काल में अपनी विद्वता के लिए सम्मान पाने वाली नारी, मुगल

काल में रनिवासों की शोभा बन कर रह गई।

जीवन के हर क्षेत्र में कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाली नारी की सामाजिक स्थिति में फिर भी परिवर्तन नही ंके बराबर हुआ है। घर–बाहर की दोहरी जिम्मेदारी निभाने वाली महिलाओं से यह पुरूष प्रधान समाज चाहता है कि वह अपने को पुरूषों के सामने दूसरे दर्जे पर समझे।

आज की संघर्षशील नारी इन परस्पर विरोधी अपेक्षाओं को आसानी से नहीं स्वीकारती। आज की नारी के सामने जब सीता या गांधारी के आदर्शों का उदाहरण दिया जाता है, तब वहा इन चरित्रों के हर पहलू को ज्यों का त्यों स्वीकारने में असमर्थ रहती है। देशकाल, परिवेश और आवश्यकताओं का व्यक्ति के जीवन में बहुत महत्व है। समाज इन से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता।

सीता के समय में और इस समय के सामाजिक परिवेश में धरती आसमान का अंतर है। समाज सेविका श्रीमती ज्योत्सना बत्रा का कहना है कि आज के परिवेश में सीता बनना बड़ा कठिन है। सीता स्वयं में एक फिलॉसफी थीं उनका जन्म मानव जाति के मानव मूल्यों को समझाने के लिए हुआ था।

दूसरों का आदर्श बनने के लिए व्यक्ति को स्वयं बहुत त्याग करने पड़ते हैं। जैसे सीता ने किया। राम और सीता ने जीवन को दूसरों के लिए ही जिया। राम जानते थे कि धोबी द्वारा किया गया दोषारोपण गलत है, मिथ्या है परन्तु उन्होंने उसका प्रतिरोध न करके प्रजा की संतुष्टि के लिए सीता का त्याग कर दिया। राम की मर्यादा पर कोई आंच न आए, प्रजा उन पर उंगली न उठाएं, यह सोचकर सीता ने पति द्वारा दिए गए वनवास को स्वीकार किया और वाल्मीकि के आश्रम में रहने लगी। अब न राम के जैसे शासक हैं और न वाल्मीकि समान गुरू।

आज भी भारतीय नारी पति के साथ अपना जन्म–जन्म का नाता मानती है। यू ंतो सीता धरती पुत्री थीं षिवजी के भारी–भरकम धनुष को सरका कर उन्होंने अपनी शक्ति का परिचय दिया था। पर अग्नि परीक्षा ..... ?? आज के समय में अच्छी शिक्षा पाना, अच्छी नौकरी पाना, दफ्तरों की राजनीति का शिकार न बनना, अपने घर और दफ्तर की जिम्मेदारियां अच्छी तरह निभाना यह किसी अग्नि परीक्षा से कम है?

जिस आधुनिक लोकतांत्रिक समाज में मनुष्य अपने व्यक्तित्व की नई ऊंचाईयाँ छू रहा है, उसके निर्माण में भी स्त्री की भूमिका दूसरे दर्जे की नहीं मानी जा सकती है।

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते , तत्र देवता रमयन्ते' के दावेदार हों या सभी को

गुलामी से आजाद कर शरीके हयात बनाने के दावेदार, अपनी आत्मा में झांक कर देखें तो समझ जाएंगे कि स्त्री को देवी बनाने में सभी प्रोजेक्ट असल में उसे व्यक्तित्व से वंचित करने के प्रोजेक्ट ही हैं।

आज अगर महिलाओं की स्थिति की तुलना सैकड़ों साल पहले के हालात से की जाए तो यही दिखता है कि महिलाएं पहले से कहीं ज्यादा तेज गति से अपने सपने पूरे कर रही हैं। पर वास्तविकता में महिलाओं का विकास सभी दिशाओं में नहीं दिखता। अपने पैरों पर खड़े होने के बाद भी महिलाओं को समाज की बेड़ियां तोड़ने में अभी भी काफी लंबा सफर तय करना है। आज भी समाज की भेदभाव की नजरों से बचना महिलाओं के लिए नामुमकिन सा दिखता है। ऐसा लगता है कि पुरूष और महिला के बीच की इस खाई को भरने के लिए अभी काफी वक्त और लग सकता है।

समाज सेवा के क्षेत्र में स्त्रियां पुरूषों से अधिक सफल हैं। इस प्रकार की सेवाओं की आवश्यकता मुख्य रूप से गांव में होती है। यहां परिवार नियोजन और बाल कल्याण के अभियान के कार्यों को स्त्रियाँ ही ठीक से निभा रही हैं। गांव की अनपढ़ औरतों को परिवार कल्याण की बातें औरतें ही अच्छी तरह से समझा सकती हैं। शहरी इलाकों में अनाथ और बेसहारा विधवाओं और अनाथ आश्रम की औरतों को पढ़ाने और देखभाल करने के कार्य को भी स्त्रियां उचित रूप से कर रही हैं।

वे बेसहारा स्त्रियों को सिलाई बुनाई, कढ़ाई तथा अन्य हस्त कला में प्रवीण कर अपने पैरों पर खड़ा करने में सहायता प्रदान कर रही हैं। वे बाढ़, अकाल, भूकंप या अन्य प्राकृतिक आपदाओं से पीड़ित इलाकों में समाज सेवा कर रही हैं।

बाल कल्याण, प्रसूति ,पर्दा –प्रथा, दहेज, विधवा–विवाह, स्त्री शिक्षा के संबंध में स्त्रियों के विचार पुरूषों से अधिक गंभीर हैं क्योंकि उन्होंने स्वयं किसी न किसी रूप में उसको भोगा है वर्तमान भारत के निमार्ण में स्त्रियों की भूमिका महत्वपूर्ण है।

नारी ने अपनी समस्त शक्ति और साधनों को पुरूष के उच्च निर्माण में लगा दिया है। इस स्थिति में उसमें हीनात्मा की कल्पना करना विवेक शून्यता के सिवाय और कुछ भी नहीं कहा जा सकता।

जहां कहीं भी अवसर मिला नारियों ने बड़े से बड़े कार्यों को पूर्ण योग्यता से कर दिखाया है। हमारे देश में भी समय–समय पर ऐसी नारियां पैदा हुई हैं, जिन्होंने आवश्यकता पड़ने पर पुरूषों से भी अधिक शौर्य, वीरता, बुद्धिमत्ता,

आध्यात्मिकता का परिचय दिया है। फिर भी संयोग और परिस्थितियों के कारण वर्तमान समय में नारी की जो स्थिति है वह न तो उसके लिए शोभनीय और सुखप्रद है, और न ही समाज के लिए सम्मानजनक और कल्याणकारी है। ऐसे पुरूषों की कमी नहीं है जो स्त्रियों को कठोर नियंत्रण में रखने के पक्षपाती हैं।

नर और नारी का दर्जा समानता का है। जीवात्मा और प्रकृति की दृष्टि से उनमें छोटे –बड़े का कोई भेद नहीं किया गया है। अब यह हमारा काम है, कि हम दोनों को उपयुक्त कार्यों में नियोजित करें, उन्हें उपयोगी बनाने, समाज के खुशी और समृद्धि का साधन होने का अवसर दें। अब तक की गलती का सुधार करके नारी को उसका उचित व उच्च स्थान देना परम आवश्यक है जिससे वह अपने समाज उत्थान के महान कर्तव्य को भली प्रकार पूरा कर सके।

आज नारी डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, जज, अध्ययापिका, प्रशासनिक अधिकारी ही नहीं अपितु राजनीति में भी सक्रिय है। नारी अपने मनोबल को बढ़ा ले तो कोई भी कार्य दुष्कर नहीं।

वर्तमान में कुरूप सामाजिक समस्याओं जैसे – दहेज, शारीरिक व मानसिक हिंसा की शिकार स्त्री के अत्यंत सजग होने की आवश्यकता है। उसे भरपूर आत्मविश्वास व योग्यता अर्जित करनी होगी तभी वह सशक्त व समर्थ व्यक्तित्व की स्वामिनी हो सकेगी। अन्यथा उसका प्राकृतिक कोमल स्वरूप संरचना तथा अज्ञानता उसे समाज के शोषण का शिकार बनने पर विवश कर देगा। नारी के इसी कल्याणमयी रूप को लक्ष्य कर हिन्दी के छायावाद के सशक्त हस्ताक्षर जयशंकर प्रसाद ने कहा है –

''नारी तुम केवल श्रद्धा हो,विश्वास,रजत नभ पग तल में,
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो,जीवन के सुन्दर समतल में।''

पर आज के संदर्भ में मैं समाज से इतना ही कहना चाहूंगी ....

''न बैठाओ पलकों पर अपनी, न किसी देवी का नाम दो,
सिर उठा जी सकूं इस धरा पर, बस इतना मुझे सम्मान दो।''

InHk %&

1. hindikiduniya.com
2. guldasta.com
3. प्रकाशित विभिन्न पत्रिकाएं।

■■

ledkyhu fgUnh dforkvksa esa L=h&pfj=

Jherh eatw nsoh dkps]
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी
Jh ujsUnz dqekj dqyfe=
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी
आचार्य पंथ श्री गृन्ध मुनि नाम साहेब
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कवर्धा

कवि अपनी कविता से कल्पना के यथार्थ का चित्र खींचने का कार्य करता है। दर्पण में हम अपने बाहरी बिम्ब को तो बखूबी देख पाते हैं, परन्तु कविताएँ हमारी आत्मा में झाँकती है। जब कुछ भी नहीं था, तब काव्य हमारे साथ था। जब हमारे पास अभिव्यक्ति नहीं थी, तो कविताएँ ही हमारी अभिव्यक्ति का माध्यम बनी। हमारी आवाज में ऊर्जा एवं संचार इन्हीं कविताओं ने किया। आज कविता कहीं अधिक सशक्त रूप में विद्यमान रहती है। हिन्दी साहित्य में आदि काल से काव्य रचना होती आई है। अपने समय के देशकाल, परिस्थितियों एवं वातावरण को काव्य में अपने में समेटा है। काव्य तब भी जन–सामान्य की आवाज था, आज भी आम–जन से जुड़ा है।

विगत चार दशकों से हिन्दी साहित्य जगत में स्त्रीवादी लेखन और स्त्री समस्याओं की सक्रियता बढ़ी है। समाज के बदलते स्वरूप और स्त्रियों की भूमिका, काफी कुछ स्त्री चिन्तन की ओर संकेत करता है। सभ्यता के उषा काल से अद्यतन तक स्त्री जीवन समस्याओं, सवालों और टकरावों से आगे बढ़ रहा है। स्त्री का जीवन सवालों के बीच पैदा होता है और जवाब की तलाश में गुम हो जाता है। प्रश्नों से जूझना, लड़ना और लड़ कर हारना जैसे स्त्री की नियती हो गई है। पुरूष प्रधान समाज में नारी शिक्षा, समानता की बातें तो बहुत की जाती हैं परन्तु स्त्री के प्रश्न पुरूषों की सत्ता से पैदा होते हैं और उत्तर देने वाली और उत्तर देने की कोशिशों में स्त्रियों के पीछे धार्मिक, सामाजिक विधान ताऊम्र चलते रहते हैं। औद्योगिक क्रांति, प्रौद्योगिकी, महानगरीकरण, नये कानूनों की व्यवस्था, वैश्वीकरण, बाजारवाद, संचार क्रांति इत्यादि अनेक घटकों के कारण व्यक्तिक एवं पारिवारिक विघटन

तीव्रतर हो गया है। साहित्यिक व साँस्कृतिक आदान–प्रदान से विभिन्न राष्ट्रो के मध्य न केवल भौगोलिक दूरियाँ कम हुई हैं, बल्कि वैचारिक धरातल पर भी निकटता परिलक्षित होती है। फलस्वरूप हिन्दी साहित्य लेखन में भी 'स्त्री–विमर्श' का स्वर प्रखर हुआ है। साहित्यिक विधाओं में स्त्रियों पर रचनाओं के प्रवृत्ति बढ़ी है। पुर्नजागरण के परिणाम स्वरूप स्त्रियों को समाज में स्थान देने के लिए तथा उनके उत्थान के लिए अनेक कार्य किए गए हैं। स्त्रियों को मुख्य धारा में जोड़ने के लिए कविताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। वैसे तो हिन्दी कहानी, उपन्यास, नाटक आदि सभी में स्त्री के जीवन एवं संघर्षों को जन सामान्य तक पहुँचाने का प्रयास हुआ है। स्त्री संवेदना और पीढ़ा प्रेमचंद के उपन्यासों में देखने को मिलती है, साथ ही, प्रसाद के नाटकों में भी, स्त्री के विभिन्न पक्षों को प्रमुखता से स्थान मिला है। स्त्रियों को जीवन की चुनौती और अस्वीकृति गर्भ से ही मिलने लगती है। समाज में कन्या भ्रुण हत्या एक संकीर्ण मानसिकता को परिलक्षित करती है। आज के विज्ञान और टेक्नॉलॉजी के युग में तेजी से लड़का–लड़की का अनुपात बिगड़ना इस बात की ओर ईशारा करता है कि सही मायने में हम तरक्की नहीं कर पा रहे हैं। 21वीं सदी में भी 99 फीसदी समाज लड़का–लड़की के चक्कर में उलझा है। देश को बुलंदी के शिखर तक पहुँचने की खबर महज एक शोर ही कहा जा सकता है, जब तक हम इससे ऊपर उठ नहीं जाते, तब तक स्त्री मुक्ति की लड़ाई लक्ष्यहीन और बलहीन मानी जायेगी। बुनियादी सवालों की कब्र खोदकर हम उससे न तो मुक्त हो सकते हैं और न ही मानस पटल से विस्मृत कर सकते हैं ।

इतिहास गवाह है कि स्त्री विषयक सवाल कभी भी खत्म नहीं हुए। पुरानी समस्याएँ आधुनिकता का जामा पहने खड़ी हो जाती है। द्रौपदी के चीर हरण की घटना भले ही प्राचीन है, परन्तु उतनी ही नवीन आज भी है। आज भी महिलाओं को निर्वस्त्र करने की अनेक घटनाएँ समाचारों की सुर्खियाँ बटोरती है। आज हमारा समाज तेजी से बदल रहा है, और नये आयाम हमारे सामने आ रहे हैं। इस बदलाव से हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि परिवर्तन भविष्य में कौन से रूप में प्रकट होगा? लिक से हटकर चलने और कुछ करने की कीमत एक स्त्री को हमेशा चुकानी पड़ती है। जब भी कोई स्त्री अपनी समझ और काबिलियत प्रकट करती है तब वह बद्तमीज और कुलक्षणी मानी जाती है। पुरूष प्रधान समाज में स्त्री की आजादी खौफजदा है। गगनगिल ने स्त्री की पीड़ा को अपने शब्दों में बखूबी उभारा

है ''एक दिन लौटेगी लड़की'' कविता में उन्होंने नारी की पीड़ा का चित्रण कुछ इस प्रकार किया है–

एक दिन लौटेगी लड़की,
हथेली पर जीभ लेकर,
हाथ उसका लहू से लथपथ
मुँह से टपका लहूँ, कपड़ों से सूखा हुआ।[1]

''सभ्यता पुराने होते हैं, विचार पुराने होते हैं, चीजें पुरानी हो जाती है लेकिन स्त्रियों के जीवन से जुड़े सवाल कभी पुराने नहीं होते। हर सवाल नये दौर में नयी ताजगी के साथ मुश्तैद रहता है।'' [2] समय चक्र रफ्तार लिये हुए हैं नहीं बदलता तो स्त्री के जीवन का यथार्थ। स्त्री कल भी पीड़ित थी, आज भी छली जा रही। स्त्री की कमजोरी किसी का हथियार बन जाती है, जिसके लिए जान देती है, वह उसकी जान ले लेता है। प्रेम, संवेदना, सहानुभूति, इच्छा, आकांक्षा ऐसे खेल हैं जो स्त्रियों के साथ हमेशा खेले जाते हैं। अरस्तु ने औरत को पारिभाषित यह कहकर किया था कि और कुछ गुणों में कमी की वजह से ही औरत बनती है। प्राकृतिक रूप से उसमें हमेशा पुरूषों की अपेक्षा कुछ कमियाँ होती है, जैसा कि हम जानते हैं। कविता व्यक्ति के आक्रोश, विद्रोह, क्षोभ, उत्तेजना, तनाव और छटपटाहट को अधिक गंभीरता से प्रदर्शित करती है इसलिए स्त्री की पीड़ा व व्यथा के लिए जिम्मेदार परम्परागत रूढ़िया, सामाजिक व्यवस्थायें हिन्दी कविता में पर्याप्त मात्रा में मुखरित हुई हैं। समकालीन कवयित्रियों ने इन व्यवस्थाओं को नकारने का प्रयास किया है। बदली व्यवस्थाओं में स्त्रियाँ खुद को बदल रही है। आत्मबोध, आत्मस्वीकृति और आत्मसम्मान के भाव से उसकी जिन्दगी के मायने आज बदल गये हैं। स्वयं को पहचानने, अपनी शर्तों पर जीने की जिद ने परम्पराओं को कुठाराघात किया है। तमाम विडम्बनाओं के बाद भी उसे अपने वजूद का एहसास है–

उसने अपने वजूद का
एक बड़ा हिस्सा
किराये पर उठाये रखा है।
दुनिया, दफ्तर, दवा–पानी
उसी आसरे चलता है,
बाकी के हिस्सों में कोई नहीं आता

उस हिस्से, इस हिस्से बीच
लेकिन है बचा हुआ अब तक,
एक पुल–धूप–हवा और कविता का।[3]

पश्चिम में स्त्रीवादी आंदोलन की शुरूआत 'जॉन स्टुवर्ड' की पुस्तक 'असब्जेक्शन ऑफ वुमैन' (1869) से हो चुकी थी। सन् 1942 में वर्जिनिया वुल्फ की 'अ रूम ऑफ वन्स ओन' तथा सन् 1949 में 'सिमोन द बाउवार' की पुस्तक 'द सैकण्ड सेक्स' जिसमें स्त्री की संवेदनशील विषयों पर विचार किया गया। अमेरिका, इण्लैण्ड तथा फ्रांस इत्यादि पश्चिमी देशों में उपजी स्त्रीवादी दृष्टि ने समूचे विश्व का ध्यानाकर्षण किया। स्त्री समस्याओं का चित्रण 1887 में पं. श्रद्धा राम फिल्लौरी द्वारा लिखित हिन्दी के प्रथम उपन्यास 'भाग्यवती' में भी प्रकट हुई है। प्रेमचंद के 'गोदान' में तात्कालिक यातना का चित्रण है। समकालीन साहित्य में स्त्री रचनाकारों की संवेदनशील अभिव्यक्ति एवं साहसिक स्वीकृतियाँ चौकाने वाली है। उन्होंने स्त्री होने के नाते जिस गहराई एवं सूक्ष्मता से स्त्री जीवन की व्यथा, बाधा, अधिकार एवं मांगों पर विचार किया है वह पुरूष रचनाकारों की तुलना में कहीं अधिक संवेदनशील है। अनामिका, गगनगिल, तेजीग्रोवर, अर्चना वर्मा, सविता सिंह, निर्मला गर्ग, निलेश रघुवंशी, स्वरांगी साने, इत्यादि इन सब स्त्री रचनाकारों ने नारी की स्थिति, स्त्री–पुरूष के मध्य टकराव, परम्परा एवं आधुनिकता का द्वंद, नारी स्वयं की अस्मिता की तलाश जैसे विषयों की सूक्ष्मता से अभिव्यक्ति दी है। अर्चना वर्मा की कविता 'दिनचर्या' में स्त्री–पुरूष के टकराव की अभिव्यक्ति है–

आज उसने तुम्हारे गलत को गलत नहीं कहा
बच्चे को बेबात पड़ा थप्पड़
अपने गाल पर सहा
औरतों की बेअक्क्ली पर
तुम्हारा लतिफा सुना
और न सुनने का बहाना किया
बल्कि,
खुद ही जुटा दिए
अपनी बेवकूफी के सबूत
और
तुम्हारे दंभ को सहलाया।[4]

इन कवयित्रियों ने समाज की व्यवस्था एवं ढकोसलों का विरोध किया है, आज जहाँ हम विकास की बात करते है। कहीं न कहीं हमारी सोच विकास में बाधाएँ उत्पन्न करती है। कूप–मंडूक सोच और अंधविश्वासों से घिरे समाज में सच्ची स्वतंत्रता और प्रगति की कामना एक स्त्री के लिए केवल 'रेत के कीले' बनाने जैसा है जो कि एक ही आंधी में उड़ जाता है और रह जाता है केवल रेगिस्तान। जहाँ हरियाली की कल्पना मात्र एक 'मरिचिका' होती है। सामाजिक नैतिकता और मानवीय न्याय की दोहरी मानसिकता ने स्त्री शरीर को दबा दिया। उसके जीवन जीने की इच्छा को गगनगिल ने 'एक आवाज' कविता में यथेष्ठ प्रभावी बनाया है–

मैं जीना चाहती हूँ
वह कहती थी अपने से अक्सर
मैं जीना चाहती हूँ
दिमाग के अंधेरे में
कुतरता था ततैया,
एक छोटी सी नस
आता था यह स्वर वहीं से।[5]

स्त्री विमर्श के कई महत्वपूर्ण प्रश्नों जिस प्रकार की विमर्श की अपेक्षा की जाती है, विमर्श नहीं हो पाता है। अक्सर ग्रामीण और वृद्ध महिलाओं की समस्याएँ एवं संघर्ष इन विमर्शों से कोशो दूर रहता है। वृद्धाएँ बेगानेपन की यातनाएँ छेलती हैं। परिवार को संजोने में ताऊम्र लगाने वाली वृद्धाएँ परिवार में ही उपेक्षित रह जाती है। कवयित्री अनामिका की चिंता सामाजिक वास्तविकताओं का दर्पण दिखाती है–

वृद्धाएँ धरती का नमक हैं,
किसी ने कहा था,
बच्चे ज्यादा अच्छा पलते हैं,
उनकी नन्हीं–मुन्नीं उल्टियाँ सँभालती
जागती हैं वे रात–भर
उनके ही संग साथ से भाषा में बच्चों की
आ जाती है एक अजब कौंध
मुहावरों, मिथक, लोकोक्तियों
लोकगीतों, लोकगाथाओं और कथा सम्यकों की।[6]

आधुनिक हिन्दी काव्य परिदृश्य में स्त्री के प्रति चिन्ता व सरोकार विस्तृत रूप में अभिव्यक्त हुए हैं। स्त्री जो सोचती है वह उस पर, जीवन के प्रति उसके दृष्टिकोण, उसकी आकाँक्षाएँ तथा अपेक्षाएँ आदि सभी पक्षों पर विचार करना आज के युग की प्राथमिकता रही है। सदियों से पुरूष की प्रताड़ना का शिकार स्त्री आज की स्त्री–रचनाकारों की चिन्ता का प्रमुख विषय है। स्त्री आज भी शारीरिक व मानसिक प्रताड़ना को सहने के लिए अभिशप्त है। 'नहीं हो सकता तेरा भला' कविता में कात्यायनी ने स्त्री की मानसिक प्रताड़ना की अभिव्यक्ति की है–

वेबकूफ जाहिल औरत,
कोई कैसे करेगा तेरा भला,
अमृता शेरगिल का तूने
नाम तक नहीं सुना,
हे ईश्वर! मुझे ऐसी औरत क्यों नहीं दी,
जिसका कुछ तो भला किया जा सकता....
यह औरत तो सिर्फ भात रांध सकती है,
और
बच्चे जन सकती है।
इसे भला कैसे मुक्त किया जा सकता है।[7]

'दरवाजा' कविता में स्त्री की पीड़ा को अनामिका ने इस प्रकार अभिव्यक्त किया है –

मैं एक दरवाजा थी,
मुझे जीतना पीटा गया,
मैं उतना खुलती गई,
खुदा ने कलम रख दी,
और कहा
'औरत है' उसने यह गलत नहीं कहा।[8]

स्त्री की पीड़ा व व्यथा में परम्परागत रूढ़िया जिम्मेदार हैं। स्त्री एक खुंटे से बंध जाती है जिसकी रस्सी तोड़कर मुक्त होने की कल्पना भी नहीं कर पाती। सामाजिक व्यवस्था के चक्र में फंसी स्त्री उस चक्र से बाहर निकलने का साहस नहीं कर पाती। इन सब पहलुओं की बारिकियों को समकालीन कवयित्रियों ने चुनौती देने का साहसिक कदम उठाया। 'नमन

करूँ छोटी बेटियाँ' में सविता सिंह ने अपने रोष को सशक्त रूप से प्रकट किया है–

नमन करूँ इस देश को,
जहाँ मार दी जाती हैं हर रोज
ढेर सारी औरतें,
जहाँ एक औरत का जीवित रहना
एक चमत्कार की तरह है।[9]

स्त्री अपने सीमित परिवेश से बाहर निकलकर, लिक से हटकर, जीवन की नयी संभावनाओं को तलाशना चाहती है। परिवर्तन की माँग करती है, नीलेश रघुवंशी की कविता 'भली स्त्री' इसका बखूबी उदाहरण है–

कंकरीले पत्थर, उबड़–खाबड़ रास्ते
खट्टे–मीठे किस्से सुनते–सुनाते
घर को पीठ पर लादे,
रेल्वे पुल पर खड़ी हूँ
भर देना चाहती हूँ जीवन को यात्राओं से
तंग आ चुकी हूँ
खिड़की से आसमान देखते–देखते।[10]

लड़कियाँ अगर प्रेम करती है तो उस प्रेम की स्वीकृति में डरती हैं क्योंकि, आज प्रेम और प्रेम करने वाले समाज में स्वीकारे नहीं जाते। प्रेम की परिभाषा ही बदल गई है। आज समाज राधा–कृष्ण, हीर–रांझा, शिरी–फरहाद के किस्से तो सुनाता है, परन्तु उसी प्रेम को अपने घर में, समाज में घृणित नजरों से देखता है। सुनीता जैन की चिन्ता इन पंक्तियों में देखने को मिलती है –

जब से वह प्रेम से जुड़ी है
जब से कांच पे खड़ी है
न चले बनता है, न बिन चले ही
कांच को बचा ले, किरच–किरच होने से
या बचा ले पैर अपने
जब से वह प्रेम से जुड़ी है,
सचमुच, सचमुच डरी है।[11]

विभिषिकाओं से घिरी स्त्री स्वयं का पथ तलाशती जीवन पर्यन्त है।

दायित्वों एवं परम्पराओं से जकड़ी स्त्री आज बंधनों से मुक्त होने की चेष्ठा कर रही है। मुक्ति की कामना करती हुई समाज और सत्तासे संघर्ष करती है। नीलेश रघुवंशी ने 'माँ' के माध्यम से समाज के परम्परागत ढांचे में घुटती दमित स्त्री की पीड़ा व उससे जुड़े अनेक सत्य का उद्घाटन किया है। 'सत्रह साल की लड़की', 'हण्डा', 'चबूतरा', 'उदासी' आदि कविताओं में स्त्री मुक्ति की कामना है। कामकाजी महिलाओं के दर्द ने नीलेश रघुवंशी ने कुछ इस प्रकार प्रस्तुत किया हैः–

रहती है उदास, गिनती है दिन
तनख्वाह मिलने के
स्वप्न और दुःस्वप्न के चलते
बनेगी वह माँ
फाईलों को लेकर उतरते–चढ़ते
देखते हैं हम सब उसे
एक आशंका के साथ।[12]

आज उपभोक्तावादी और बाजारवादी संस्कृति के बढ़ते वर्चस्व के कारण 'जो दिखता है वो बिकता है' अधिक चरितार्थ है। इस बाजारवादी संस्कृति के केन्द्र में 'स्त्री देह' है। आज टी.वी., सिनेमा, विज्ञापन, फैशन परेड इत्यादि में हर जगह स्त्री की देह का प्रदर्शन हो रहा है। मध्यवर्गीय सुविधायुक्त जीवन की लालसा में स्त्री बुरी तरह उलझ रही है, ऐसे में स्त्री कहीं न कहीं अपने ही साथ खिलवाड़ कर रही है। स्वयं का तमाशा बना रही है और सभ्य समाज तमाशबीन बना खड़ा देख रहा है। समकालीन हिन्दी साहित्य में 'स्त्री देह' का चित्रण स्त्री मुक्ति की कामना नहीं करता। अपितु बाजारवादी समाजशास्त्री साहित्य को दर्शाता है। मानवीय संवेदनाओं को दबाती बाजारवादी संस्कृति का चित्रण निर्मला गर्ग की इन पंक्तियों में देखने को मिलता हैः–

लड़की तेरे बात मुलायम है
और मुलायम बना लड़की,
तेरी त्वचा कोमल है,
और कोमल बना,
लड़की तू सुन्दर है, और सुन्दर दिख
नित–नयी चीजें बनायी जा रही है तेरे लिए
तेरे लिए ही तो दुनिया सजायी जा रही है।[13]

सदियों से स्त्री, पुरूष की प्रताड़ना को सहती आ रही है। आज भी स्त्री एक ऐसे समाज में है जहाँ समाज के ठेकेदारों ने स्त्री को स्वतंत्रता के लायक नहीं माना है। वहां विकास और नारी उत्थान की बात करना ''अंधेरे में तीर'' चलाने जैसा है। स्त्रियों पर जैसे अत्याचारों की बाढ़ सी आ गई है। आये दिन समाचारों की सुर्खियो में स्त्रियों की बलात्कार हत्या, अपहरण जैसी घटनाएं छायी रहती है। महिला अपराधों की संख्या में एक दशक में अधिक तेजी देखी गई है। 'निर्भया' जैसी हजारों लड़कियाँ समाज के वहशीपन का शिकार हो रही हैं। ताजा आंकड़ों की अगर हम बात करते हैं तो देश में 6 फीसदी महिला अपराधों में वृद्धि हुई है। तात्कालीन शासक वर्ग इतना गंभीर नहीं है परिणाम आज यह है कि भरत खण्ड–खण्ड विकास कर रहा है। एक ओर जहां दिल्ली मुम्बई जैसे महानगर हैं जैसे भुखमरी में आत्महत्या दंश झेलते गांव। एक ओर अमीरी का विश्व रिकार्ड है तो दूसरी ओर 30 प्रतिशत् जनता गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन को मजबूर है। आज भी जिस देश की आधी आबादी स्त्रियाँ है जो गांवों में निवास करती है, खटती हैं, बोझा ढोती है, खेतों में काम करती हैं, दिन की शुरूआत से अंत तक अपना शरीर जलाती हैं फिर भी मानसिक और शारीरिक प्रताड़ना को चुपचाप झेलती हैं। वे कभी फरियाद नहीं करती और अगर करें भी तो सुनवाई नहीं होती। क्या ऐसी स्त्रियों पर विचार–विमर्श किया जा रहा है? 21वीं सदी की कविता में संघर्षरत् स्त्री आज भी दमनचक्र से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पायी है। अपने अस्तित्व के प्रति सजग हो रही स्त्री घर–परिवार तथा बाहर हर स्तर पर पुरूष का सामना कर रही है। 'बड़ी होती लड़कियाँ' कविता इसे व्यापक रूप से प्रगट करती हैंः–

बड़ी होती लड़कियाँ,
सवालों का जवाब देकर
सिद्ध करती हैं कि
वे गुँगी नहीं हैं,
चल–फिर कर दिखाती हैं कि,
सही सलामत हैं उनके हाथ–पैर,
सुनाकर गीत
देती हैं अपने गले के सुरीलेपन का सबूत,
बजाकर वाद्ययंत्र दिखाती हैं कि
उन्हीं की ऊंगलियों में बसते हैं सात–सुर।[14]

''देह की क्रांति ने स्त्री के सारे विकल्प उसके पक्ष में ही नहीं सौपे हैं, देह के स्वामित्व और देह की छवि से पैसा कमाने की स्त्री की आकांक्षा को बाजार ने अपने हित में भुनाया है। स्त्री की स्वतंत्रता को सेक्स उद्योग ने हाथों हाथ लपक लिया और स्त्री फिर खेल बन गयी। पुरूष ने 'पौरूषीय बदलों' के लिए उसकी देह का विष कन्या की तरह इस्तेमाल किया और 'हमजाद' जैसी रचनाओं का जन्म हुआ। स्त्री सेक्स शोषण का औजार बनी रही कुछ रूप बदलकर।15 रविन्द्र वर्मा का मानना है कि, ''आज औरत ही नहीं आदमी भी पण्य वस्तु है कुछ इस तरह जैसे पहले कभी नहीं हुआ था और हमारे यहाँ उदारीकरण की प्रक्रिया के तहत आज भी रोज सस्ता हुआ जा रहा है। जब आदमी सस्ता होता है तो स्त्री कौड़ियो के मोल बिकती है। समान्यतः पुरूष प्रधान समाज में दोयम दर्जे का नागरिक होने की वजह से औरत पर किसी भी सामाजिक विघटन का ज्यादा दबााव पड़ता है। वह एक ज्यादा संवेदनशील इकाई है। उसके तारे में पूरे समाज की आह है। आज हम जिस मुकाम पर खड़े हैं उसके आगे सामन्ती जड़ता और उपभोक्तावादी मोह की अंधी गली है। स्त्री की नियती पूरे समाज की नियति के साथ गुथी है। एक छोटा सा दायरा मध्य व उच्च वर्ग में मुक्त होती स्त्रियों का जरूर है। स्त्री जाती की मुक्ति अभी बहुत दूर है, जैसे हमारे सम्पूर्ण समाज की''[16]

अपनी देह को पण्य वस्तु बनाने वाली उपभोक्तावादी संस्कृति से वाकिफ स्त्री इसके खिलाफ कुछ इस तरह व्यक्त करती हैः–

धीरे–धीरे
मेरे कंधों से उतर रहा है
मेरा घर,
धीरे धीरे उतर रही है चमड़ी
मेरे ये कपड़े
मेरे सामने
घुटनों के बल बैठे
कह रहे हैं कि अब बहुत हुआ
आओ सब भूलकर नहाओ
धूल जायेगी सारी मिट्टी
फिर जो बचेगा

उसको न घर की जरूरत होगी
न ही चमड़ी की।[17]

सांस्कृतिक एवं राजनीतिक प्रतिस्पर्धाओं ने आज तक स्त्री दलितों व उपेक्षितों को हाशिये पर रखा है। दलित स्त्रियों को उनके अधिकार और अस्तित्व स्वीकार की आवयकता है। तेजी ग्रोवर स्त्री के वजूद को बचाने में सजग दिखती है। ''मेरे सपने में थोड़े हूँ,'' ''सच है,'' ''मैने कहा, अब नहीं'', ''या फिर मुझे ठीक से पता नहीं'' महत्वपूर्ण हैं:–

मैं तेरे सपनों में थोड़े हूँ पगली
मैं तो बैठा हूँ टाट पर
सजूगर
अचार भरी ऊँगलियाँ चाटता
मैं टाट पर थोड़े हूँ पगली
झूलती खाट में
नीचे सो रहा हूँ तेरे पास
इतना पास
कि तेरा पेट गुड़गुड़ाया
तो मैंने सोचा मेरा है।[18]

स्त्रियों को तो जीवन की चुनौतियों और अस्वीकृति उनके गर्भ में आने के साथ ही मिलने लगती है। विकास पथ पर आरोहित 21वीं सदी में भी 99 फीसदी समाज सभी उपलब्धियों को धता बता रहा है। गायत्री प्रियदर्शिनी की ''धरती अजन्मी कविता में'' भ्रूण हत्या की मार्मिकता को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

नहीं नम हुई कोई आँख,
जरा भी न कांपे हत्यारे हाथ
गर्भ के अंधेरे में धंस गई कटार
बिना ही चीखें
तोड़ गई दम
धरती अजन्मी एक।[19]

वस्तुतः हिन्दी में जिन सूक्ष्म संवेदनाओं और समस्याओं की प्रस्तुति कथा साहित्य में भी नहीं हो पायी, ऐसे तमाम मुद्दों को कविता में उठाया गया है। सत्य तो यह भी है कि, बुनियादी सवालों को भूलकर हम सच्ची

सफलता और मुक्ति की कामना नहीं कर सकते। तथापि स्त्री चेतना के विकास और उसके प्रति सच्चे सम्मान की भाव की संभावनाओं की दिशा में कदम बढ़ाने की आवश्यकता है।

I nHk xFk %&

1. पंचशील शोध समीक्षा, पृष्ठ–72, त्रैमासिक हिन्दी शोध पत्रिका अंक–06, संपादक डॉ.हेतु भारद्वाज।
2. डॉ.ज्योति किरण, समकालीन कवयित्रियों की कविताओं में स्त्री मुक्ति के स्वप्न एवं संघर्ष (लेख), पंचशील शोध समीक्षा, पृष्ठ–59, त्रै.मासिक हिन्दी शोध पत्रिका–06, संपादक डॉ.हेतु भारद्वाज।
3. पंचशील शोध समीक्षा, पृष्ठ–59, त्रैमासिक हिन्दी शोध पत्रिका अंक–06, संपादक डॉ.हेतु भारद्वाज।
4. पंचशील शोध समीक्षा, पृष्ठ–72, त्रैमासिक हिन्दी शोध पत्रिका अंक–06, संपादक डॉ.हेतु भारद्वाज।
5. पंचशील शोध समीक्षा, पृष्ठ–73, त्रैमासिक हिन्दी शोध पत्रिका अंक–06, संपादक डॉ.हेतु भारद्वाज।

   पंचशील शोध समीक्षा, पृष्ठ–60, त्रैमासिक हिन्दी शोध पत्रिका अंक–06, संपादक डॉ.हेतु भारद्वाज।
7. पंचशील शोध समीक्षा, पृष्ठ–73, त्रैमासिक हिन्दी शोध पत्रिका अंक–06, संपादक डॉ.हेतु भारद्वाज।
8. पंचशील शोध समीक्षा, पृष्ठ–73, त्रैमासिक हिन्दी शोध पत्रिका अंक–06, संपादक डॉ.हेतु भारद्वाज।
9. पंचशील शोध समीक्षा, पृष्ठ–73, त्रैमासिक हिन्दी शोध पत्रिका अंक–06, संपादक डॉ.हेतु भारद्वाज।
10. पंचशील शोध समीक्षा, पृष्ठ–74, त्रैमासिक हिन्दी शोध पत्रिका अंक–06, संपादक डॉ.हेतु भारद्वाज।
11. पंचशील शोध समीक्षा, पृष्ठ–62, त्रैमासिक हिन्दी शोध पत्रिका अंक–06, संपादक डॉ.हेतु भारद्वाज।
12. पंचशील शोध समीक्षा, पृष्ठ–74, त्रैमासिक हिन्दी शोध पत्रिका अंक–06,

संपादक डॉ.हेतु भारद्वाज।

13. पंचशील शोध समीक्षा, पृष्ठ–76, त्रैमासिक हिन्दी शोध पत्रिका अंक–06, संपादक डॉ.हेतु भारद्वाज।
14. वागर्थ, अंक–198, पृष्ठ–83, मार्च–2011 कोलकाता भारतीय भाषा परिषद।
15. रेखा कस्तवार, अकेली स्त्री (लेख), उद्धृत, स्त्री के लिए जगह, संपादक राजकिशोर वाणी प्रकाशन, सन् 1994, पृष्ठ 177
16. रवीन्द्र वर्मा, ताकत का खेल, (लेख) उद्धृत स्त्री के लिए जगह, संपादक राजकिशोर वाणी प्रकाशन, सन् 1994, पृष्ठ 111–112
17. पंचशील शोध समीक्षा, पृष्ठ–76, त्रैमासिक हिन्दी शोध पत्रिका अंक–06, संपादक डॉ.हेतु भारद्वाज।
18. पंचशील शोध समीक्षा, पृष्ठ–77, त्रैमासिक हिन्दी शोध पत्रिका अंक–06, संपादक डॉ.हेतु भारद्वाज।
19. वर्तमान संदर्भ, स्त्री मुक्ति : यथार्थ और युटेपिया, संपादक–संगीता आनंद।

■■

fgUnh lkfgR; e ukjh&foe'k

Mk- vkpy JhokLro
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी

iKk flg
शोधार्थी (एम. फिल) हिन्दी विभाग
डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय
करगी रोड़ कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श की शुरूआत छायावाद काल से माना जाता है। महादेवी वर्मा की कविताओं में वेदना का विभिन्न रूप देखने को मिलता है। उसकी श्रृंखला की कड़िया स्त्री सशक्तिकरण का सुंदर उदाहरण है जिसमें नारी–जागरण एवं मुक्ति के सवाल को उठाया गया है। ऐसा साहित्य जिसमें नारी जीवन की अनेक समस्याओं का चित्रण हो नारी–विमर्श कहलाता है।

सामाजिक सरोकारों से लैस बुद्धिजीवियों और कार्यकर्ताओं के बीच लंबे समय से यह लगातार चर्चा और चिंता का विषय रहा है कि हिन्दी में नारी प्रश्न पर मौलिक लेखन आज भी काफी कम मात्रा में मौजूद है। नारी विमर्श की सैद्धान्तिक अवधारणाओं एवं साहित्य में प्रचलित नारी विमर्श की प्रस्थापनाओं की भिन्नता या एकांगीपन के संदर्भ में पहला प्रश्न यह उठता है कि हिन्दी साहित्य जगत में नारी विमर्श के मायने क्या है? साहित्य, जिसे कथा, कहानी, आलोचना, कविता इत्यादि मानवीय संवेदनाओं की बाहक विद्या के रूप में देखा जाता है वह दलित, स्त्री, अल्पसंख्यक तथा अन्य हाशिए के विमर्शों को किस रूप में चित्रित करता है, साहित्य अपने यर्थाथवादी होने के दावे के बावजूद क्या नारी विमर्श की मूल अवधारणाओं को रेखांकित कर उस पर आम जन के बीच किसी किस्म की संवेदना को विकसित कर पाने में सफल हो पाया है ?

प्रेमचंद से लेकर आज तक अनेक पुरूष लेखकों ने स्त्री समस्या को अपना विषय बनाया लेकिन उस पीड़ा को गहराई से महसूस कर नहीं लिखा, जिस रूप में स्वयं महिला लेखिकाओं ने लिखा है। अतः नारी विमर्श की शुरूआती गुंज पश्चिम में देखने को मिला। सन् 1960 ई. के आस–पास नारी सशक्तिकरण जोर पकड़ा जिसमें चार नाम चर्चित हैं। उषा प्रियंवदा,

कृष्णा सोवती, मन्नू भण्डारी एवं शिवानी आदि लेखिकाओं ने नारी मन की अंर्तद्वद्वों एवं आप बीती घटनाओं को उकेरना शुरू किया और आज नारी –विमर्श एक ज्वलंत मुद्दा है।

आठवें दशक तक आते–आते यही विषय एक आंदोलन का रूप ले लिया जो शुरूआती नारी विमर्श से ज्यादा शक्तिशाली सिद्ध हुआ। आज मैत्रेयी पुष्पा तक आते–आते महिला लेखिकाओं की बाढ़ सी आ गयी जिसने पितृसत्ता समाज को झकझोर दिया।

विमर्श कोई भी बुरा नही होता है, क्योंकि साहित्य का एक मात्र उद्देश्य मनोरंजन मात्र नहीं है बल्कि अनेक प्रासंगिक विषयों पर चर्चा, चिंतन, मनन और विमर्श है। एक प्रश्न यह है कि विमर्श किस का? एक उत्तर यह दिया जाता है कि नारी द्वारा किया गया नारी विषयक विमर्श। दूसरा यह हो सकता है कि नारी के विषय में लेखकों और लेखिकाओं का विमर्श। पर अक्सर यह देखते हैं नारी विमर्श लेखिकाओं से ही जोड़ा जाता है, जो एक संकीर्ण दृष्टिकोण है? तो मेरा उत्तर है विचार या विचारों का विमर्श ही विमर्श है। विमर्श विचारहीन नही हो सकता। विचार ही विमर्श की धुरी है।

पुरूष का अस्तित्व नारी के बिना असंभव है नारी वह अमोघ शक्ति है, जो पुरूषों में श्रद्धा एवं आस्था के द्वारा प्रेरणा भरती है। यह प्रेरणा ही जीवन संवाहिका है। नारी प्रकृति की सर्वोत्तम सृष्टि है, जो सृष्टा की परंपरा को सतत् प्रवाहशील करती है। सामाजिक रूढ़ियों और मानवीय विकृति मानसिकता ने उसकी इस महानता को आघात पहुंचाया है।

साहित्य में महिला लेखन के रूप में उपलब्ध विभिन्न कहानियों, कविताओं तथा आत्मकथाओं में स्त्री की दैहिक पीड़ा से परे जाकर उसकी वर्गीय, जातीय एवं लैंगिक पीड़ा का वास्तविक प्रतिबिंब क्यों नही हो पा रहा है? नारी साहित्य के सवालों के मूल्यांकन के संदर्भ में भी हिन्दी आलोचना में गैर–अकादमिक एवं उपेक्षापूर्ण रवैया क्यों मौजूद है। साठ के दशक में पुरूष वर्चस्ववाद की सामाजिक सत्ता और संस्कृति के विरूद्ध उठ खड़े हुए नारियों के प्रबल आंदोलन को नारीवादी आंदोलन का नाम दिया गया। वस्तुतः नारीवादी आंदोलन एक राजनीतिक आंदोलन है जो नारी की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं दैहिक स्वतंत्रता का पक्षधर है। नारी मुक्ति अकेले नारी मुक्ति का प्रश्न नही है बल्कि यह संपूर्ण मानवता की

मुक्ति की अनिवार्य शर्त है। दरअसल यह अस्मिता की लड़ाई है। इतिहास ने यह साबित भी किया है कि आधी आबादी की शिरकत के बगैर क्रांतियाँ सफल नहीं हो सकतीं।

अंतर विषयक अध्ययन होने के कारण यह अन्य विषयों के साथ ज्ञानात्मक संबंध भी कायम करता है। नारी प्रश्नों के प्रति अकादमिक जगत में स्पेस बनाने के लिए भी स्त्रीवाद को पढ़ाया जाना अति आवश्यक है। जरूरी नही कि उच्च शिक्षा संस्थानों में स्त्रीवाद पढ़ने के बाद लोग स्त्रीवादी बने ही परंतु यह संभव हो सकेगा कि वह उन पहलुओं को समझने की कोशिश करें और एक नया क्षितिज बन सके।

समाज के दो पहलू नारी–पुरूष एक दूसरे के पूरक है। एक गाड़ी के दो पहिये के समान है एक पहिए के बिना गाड़ी का चलना संभव नही है। उसके बाद भी पुरूष समाज ने महिला समाज को अपने बराबर के समानता से वंचित रखा। यही पक्षपात दृष्टि ने शिक्षित नारियों को आंदोलन करने को मजबूर किया जो आज ज्वलंत मुद्दा नारी–विमर्श के रूप में दृष्टिगोचर है।

नारियों की दशा को देखकर विवेकानंद कहते है– नारियों की अवस्था को सुधारे बिना जगत के कल्याण की कोई संभावना नही हैं। पक्षी के लिए एक पंख से उड़ना संभव नहीं है। विवेकानंद जी महिला समाज की वास्तविक दशा से चिंचित, देश एवं समाज के लिए महिला समाज के तरक्की के बगैर असंभव बताया है।

स्त्री की दशाओं पर अनेक समाज सुधारकों ने चिंता व्यक्त की है और यथा संभव दूर करने का प्रयास भी किया है जिससे नारी की स्थिति में परिवर्तन एवं सुधार हुआ है। ब्रम्ह समाज, रामकृष्ण मिशन, आर्य समाज, थियोसोफिकल सोसायटी तथा अनेक सरकारी संगठनों ने नारी शिक्षा पर जोर दिया, जिसका सकारात्मक परिणाम आया। वंदना वीथिका को शब्दों में– नारियों के लिए सबसे बड़ा अभिशाप उनकी अशिक्षा उनकी थी और उनकी परतंत्रता का प्रमुख कारण उनकी आर्थिक स्वतंत्रता का अभाव था आज स्त्री की स्थिति परिवर्तित हुई है। आज हर क्षेत्र का द्वार नारियों और लड़कियों के लिए खुला है। वे हर जगह प्रवेश पाने लगी है और हर क्षेत्र में अपने मुकाम हासिल कर रही है– चाहे वह अंतरिक्ष हो या जमीन।

आज स्त्री समाज सभी क्षेत्रों में अपनी भागीदारी निभा रही है। राजनीतिक हो या सामाजिक, आर्थिक हो या सांस्कृतिक उसके बाद भी यह

लड़ाई क्यो? लेकिन सवाल तो यह है कि वह पुरूष की भांति स्वतंत्रता चाहती है इसलिए पितृसत्ता का विरोध कर पारंपरिक बेड़ियों को तोड़ना चाहती है।

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में नारीवादी विचार को पनपने का सुअवसर मिला। भूमण्डलीकरण ने अपने तमाम अच्छाईयों एवं बुराईयों के साथ सभी वर्ग के शिक्षित स्त्रियों को घर से बाहर निकलने का अवसर दिया परिणामस्वरूप स्त्री ने अपने वर्जित क्षेत्रों में ठोस दावेदारी की और स्वावलंबन की दिशा में तीव्र प्रयास भी सामने आए।

हिन्दी कथा लेखिकाओं ने अपने–अपने लेखन में नारी मन की अनेक समस्याओं को विषय बनाया है। अमृता प्रीतम के रसीदी टिकट, कृष्णा सोबती– मित्रों मरजानी, मन्नू भण्डारी–आपका बंटी, चित्रा मुद्गल– आबां, ममता कालिया– बेघर, मृदुला गर्ग– कठ गुलाब, मैत्रेयी पुष्पा– चाक, उषा प्रियंवदा के पचपन खंबे लाल दीवारे आदि में नारी संघर्ष देखा जा सकता है। प्रेमचंद ने शहरी और ग्रामीण जीवन का सुंदर चित्रण किया है। जिसमें नारी के विभिन्न पक्ष को उजागर करने का प्रयास किया है 'गोदान' में प्रेमचंद ने धनिया और मालती के चरित्र का चित्रण किया है। नारीत्व दृष्टि से देखे तो जयशंकर प्रसाद प्रेमचंद से कहीं अधिक प्रगतिशील दिखाई देते है। वह ही हैं जो ध्रुवस्वामिनी में पति के जीवित रहते ध्रुवस्वामिनी का विवाह उसकी पसंद के पुरूष चंद्रगुप्त से करने की वकालत करते है।

भगवतीचरण वर्मा के 'भूले बिसरे चित्र' में भी भारतीय नारी की जागरूकता का चित्रण है। गंगा पढ़ी लिखी प्रगतिशील नारी है जो पति तथा ससुराल वालों के दुर्व्यवहार से रूष्ट होकर संबंध विच्छेद कर लेती है तथा नौकरी करके आत्मनिर्भर जीवन बिताना चाहती है। धीरे–धीरे हिन्दी उपन्यासों में नारी को सतीत्व और देवीत्व के कटघरे से निकालकर मानव रूप में प्रतिष्ठित करन का प्रयास किया जाने लगा।

रांघेय राघव के 'कब तक पुकारूँ' की प्यारी और कजरी भी सशक्त स्त्रियाँ है। रामदरश मिश्रा के ''बिना दरवाजे का मकान'' तथा भीष्म साहनी के ''बंसती'' में महरी का काम करने वाली नारियों की संघर्ष कथा है। सुरेन्द्र वर्मा के 'मुझे चांद चाहिए' में एक कस्बे की लड़की एन.एस.डी. में प्रवेश पाती है और अभिनेत्री बनती है। 'त्यागपत्र' की मृणाल जहाँ आत्मपीड़न की शिकार है वही दशार्क की रंजना टूटती नही है अपना रास्ता स्वयं बनाती

है। जैनेन्द्र का नायक दशार्क नारी की सशक्तता का समर्थन करता है। आज साहित्य में महिला आंदोलन द्वारा उठाए गए मुद्दे प्रमुखता से उभर रहे है। यह एक अच्छी खबर है।

आज नारियों पर हो रहे अत्याचारों के लिए आवाज उठाने का समय आ गया है। जब नारी गलत का विरोध स्वयं करती है और अपने मान सम्मान की रक्षा के लिए दुनिया से लड़ जाती है। 16 दिसम्बर 2012 की निर्भया का केस हो या हैदराबाद की डॉ. रेड्डी का केस हो। इन सभी दुर्घटनाओं के लिए कठोर कदम उठाए जाने चाहिए और उठाए गए है जिससे ऐसा करने वालों और सोचने वालों की रूह कांप जाए और हमारा समाज और देश स्वस्थ मानसिकता के साथ स्वतंत्र रूप से सुरक्षित महसूस कर जी सके। कुछ नारी लेखिकाएँ पुरूषों के समान कार्य करने में समानता का अधिकार समझती है लेकिन आज आवश्यकता है विचारधारणाओं में परिवर्तन कर हम नारी को हृदय से समान अधिकार दे, जिससे सृदृढ़ समाज का निर्माण हो सके और समाज में होने वाली ऐसी शर्मनाक घटनाओं को रोका जा सके नारी मां, बेटी, बहू है, देवी है, तो आवश्यक है समाज की इस कड़ी को समाज में मजबूती से स्थान दिया जाए और उनका सम्मान किया जाए।

राजा राममोहन राय, महात्मा गांधी और उन जैसे हजारों समाज सेवकों एवं साहित्य में नारी विमर्श को लेकर जो आंदोलन चलाए गए उसका सुखद परिणाम तो दृष्टिगोचर हुआ। संविधान में समानता का अधिकार, कानून में संरक्षण के साथ ही लोगों में जागरूकता तो आयी है किन्तु यह अत्यल्प है। हजारों लाखों वर्षो से पुरूष प्रभुत्व वाले समाज को एकाएक नहीं बदला जा सकता। शासन और कानून तो अपना काम कर रहा है किन्तु जब तक समाज इसे सहज रूप में स्वीकार नहीं कर लेता तब तक यह स्थिति परिर्वतित नहीं की जा सकती। नारी के प्रति पुरूषों की जो वस्तुपरक और मानसलता वादी सोच है उसे बदलना आवश्यक है पाकिस्तान की एक मशहूर शायरा ने लिखा है कि ''औरत हाड़–मांस से बनी सिर्फ वस्तु नहीं कुछ और भी है।'' खेद की बात है कि बड़े शहरो के बुद्धिजीवियों में नारी के प्रति विचार में कुछ आंशिक परिवर्तन तो आया है किन्तु आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में नारियों के प्रति वही प्राचीन रूढ़ीवादी परंपराएं कायम है आए दिन मीडिया और समाचार पत्रों में नारी पर होने वाले अत्याचारों की

भयावह तस्वीर दिखाई पड़ती है। इस विचार को परिवर्तित करने हेतु व्यापक जन आंदोलन की आवश्यकता है। किसी लेखिका का यह कथन दृष्टव्य है– 'नारी का सबसे बड़ा शत्रु उसकी देह और कोख है।'

lnHk & lph&

1. शुक्ल डॉ. रामचंद, हिन्दी साहित्य का इतिहास, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली संस्करण – 1996/ पृ. 82
2. अनामिका, स्त्रीत्व का मानचित्र, सारांश प्रकाशन दिल्ली 1999
3. चतुर्वेदी जगदीश्वर, स्त्री अस्मिता साहित्य और विचारधारा, सुधा सिंह (संपा.), आनंद प्रकाशन, कलकत्ता, 2004
4. देशपांडे डॉ. वैशाली, स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार, विकास प्रकाशन, कानपुर, 2007
5. त्रिपाठी डॉ. रमेश कुमार, समकालीन हिन्दी पत्रकारिता में हिन्दी संदर्भ, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2007
6. कस्तवार रेखा, स्त्री चिंतन की चुनौतियां, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009
7. शर्मा क्षमा, स्त्रीत्ववादी विमर्श : समाज और साहित्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012
8. वर्मा महादेवी, श्रृंखला की कडियाँ, लोकभारती पेपर बैक्स, इलाहाबाद, 2012
9. उपाध्याय रमेश, स्त्री सशक्तिकरण की राजनीति, संज्ञा उपाध्याय (संपा.) शब्द संधान प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012
10. गुप्ता रमणिका, स्त्री मुक्ति : संघर्ष और इतिहास, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014
11. पचौरी सुधीश, उत्तर आधुनिक दौर में साहित्य, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली

■■

ukjh vkj lekt

vfouk'k ckMk
संत जॉन हाई स्कूल,
नवाटांड, माण्डर, राँची, (झारखण्ड)

भारतीय समाज में नारी एक विशिष्ट गौरवपूर्ण स्थान पर प्रतिष्ठित है। आर्य–पुरूषों ने सदा ही उसे अर्धांगिनी माना है। यही नहीं व्यवहार में पुरूष मर्यादा से नारी मर्यादा सदा ही उत्कृष्ट मानी गई है। आर्य पुरूषों का यह कथन आज भी भारतीय नारी को गौरवान्वित कर रहा हैं–

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्त्राफला क्रियाः।।

शास्त्र के इस कथन के अनुसार स्त्री–धर्म की रक्षा से ही भारत देवताओं का स्थान बना था। देवताओं को अमर–लोक से मर्त्य–लोक में उतारने के लिए एक नारी धर्म ही समर्थ है।

नारी के प्रति यह उदात्त भावना विभिन्न धर्मों के ग्रंथों में मिलते है किन्तु हिन्दु धर्मशास्त्रों में अधिक दृष्टिगोचर होते है। हिन्दु समाज की नारी भगवती दुर्गा की प्रतिमूर्ति है। पाश्चात्य शिक्षा से प्रभावित व्यक्तियों का भी कहना है कि जिस जाति में नारियों का जितना ही सम्मान होता है वह जाति उतनी ही सभ्य है।

वाल्मीकि ने गार्हस्थ्य धर्म की जिस श्रेष्ठता को प्रतिष्ठित किया वही अन्य काव्यों एवं सामाजिक जीवन में आदर्श बन गई। राम–कथा में स्त्री का अनेक रूप में वर्णन हुआ है। माता कौशल्या, विमाता कैकेयी, विदुषी, अनसूया, विरहिणी, उर्मिला, पतिव्रता मन्दोदरी, सती सुलोचना आदिरूप में नारी के अनेक चरित्रों को प्रस्तुत किया गया है।

मुनिभरत ने नायिका ही नहीं अपितु सामान्य नारी के जीवन एवं अवस्थाओं का भी विस्तृत विवेचन किया है। इससे अनुमान होता है कि भरत सम्पूर्ण मानव जाति के अन्तर्मन एवं भावों के कुशल वेत्ता एवं उत्तम नियोजक थे। उन्होंने स्त्रियों के गुण, अलंकार आदि का वर्णन प्रस्तुत करते हुए स्त्रियों में आयु की परिपक्वता से आने वाले भेदों का भी निरूपण किया है।

आज हम भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को विश्व की सबसे पुरानी सभ्यता मानते हैं और ऐसा भी माना जाता है कि भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति से ही विश्व की कई सारी सभ्यताओं एवं संस्कृति का उद्‌य हुआ है हम यह भी कह सकते है कि भारतीय परम्परा कई सारी परम्पराओं की दात्री है और हमारी भारतीय परम्परा में जो स्थान नारी को दिया गया है वह किसी और को प्राप्त नहीं है नारी ही हमारे समाज में स्वयं को अलग अलग रूपों में प्रकट करती है और अपने दायित्व का निर्वाह भी जो सहन शक्ति नारी अपने अंदर रखती है वह सहन शक्ति विश्व के किसी अन्य प्राणी के पास नहीं।

भारतीय ही नहीं अन्य देशों के इतिहास के अध्ययन से पता चलता है कि भारत के अलावा अन्य देशों में भी नारी को एक सर्वोच्च स्थान प्रदान किया गया था। फ्रांसीसी क्रांति के दौरान ''मारिआन'' और जर्मनी की क्रांति के दौरान ''जर्मेनिया'' को नारी रूपक चित्र एवं मूर्ति के रूप में दर्शाया गया था, वियातनामी स्वातंत्रता संग्राम के दौरान भी ''ट्रंग बहनों'' को योद्धा महिला के रूप में प्रेरणा श्रोत माना जाता है।

इस तरह समस्त सृष्टि में नारियों का स्थान प्रारंभ से ही उच्च रहा, भारतीय इतिहास में रानी लक्ष्मीबाई, जीजाबाई, अहिल्या, सावित्री आदि नारियों ने अपनी क्षमता के बल पर खुद को प्रमाणित किया और नारी की गौरवशाली परम्परा को आगे बढ़ाने का काम किया, हम यह कह सकते हैं कि नारी इस ब्रहमांड के विद्याता की प्रतिनिधि है।

लेकिन आज के वक्त में समाज में, महिलाओं और बच्चियों की स्थिति के बारे में जब सोचते हैं, तब मन बहुत ही ज्यादा व्यथित हो जाता है, क्योंकि आज के समय में नारी हर तरह से संघर्ष कर रही है, नारी अपने असतित्व को बनाये रखने के लिए संघर्ष कर रही है, नारी अपने सम्मान को बनाये रखने के लिए संघर्ष कर रही है, नारी खुद को साबित करने के लिए संघर्ष कर रही है, परन्तु इतने संघर्ष के बाद भी नारी ने खुद को सबसे ज्यादा स्थापित किया है, अपने आप को हर एक क्षेत्र में साबित करने में सफलता भी पायी है और अपने जुझारू व्यक्तित्व और सहनशीलता की वजह से ही आज नारी हर एक क्षेत्र में अपनी बुलंदी का झंडा गाड़ रही है।

हर तरफ सिर्फ और सिर्फ नारी की चीख ही सुनाइ देती है, कहीं नारी का मानसिक शोषण हो रहा है, तो कहीं नारी का शारीरिक शोषण हो रहा

है, कहीं नारी दहेज की आग में जल रही है तो कहीं तेजाब में झूलस रही है, और तो और सबसे ज्यादा दर्दनाक पहलू यह है कि गर्भ में आते ही, इस दुनिया में कदम रखते ही उनको खत्म कर दिया जाता है।

गर्भ में आने के बाद से लेकर जीवन के आखिरी सांस तक नारी पर सिर्फ और सिर्फ अत्याचार ही होता है और इसी अत्याचार के बीच में नारी अपने विभिन्न रूपों से इस समाज का पालन पोषण भी करती है और खुद के अस्तित्व को बनाये रखने के लिए इस समाज से लड़ाई भी करती है.. वाह, विधाता की अनमोल रचना है।

आज के समय में जब हम सभी खुद को आधुनिक कहते हैं, ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यही है, कि क्या वाकई हम सभी आधुनिक हैं? सिर्फ आधुनिक कपड़े पहनने से और आधुनिक वस्तुओं का प्रयोग करने मात्र से कोई आधुनिक नहीं बन सकता, समाज और इंसान आधुनिक बनता है अपने विचारों से और मुझे यह कहने में बिल्कुल भी हिचक नहीं हो रही है कि हम बदलते वक्त में आधुनिक नहीं बल्कि और ज्यादा अज्ञानी हो गये हैं, क्योंकि हम खुद को आधुनिक मानें भी तो आखिर किस आधार पर, गर्भ में पल रही बच्चियों को मार देना क्या आधुनिकता हैं? बच्चियों को पढ़ने–लिखने में बंदिसें लगाना क्या आधुनिकता है? बच्चियों का शोषण करना क्या आधुनिकता है?

दहेज के नाम पर नारी पर अत्याचार करना और जला देना क्या आधुनिकता है? खोखली इज्जत और शान के नाम पर बच्चियों की हत्या कर देना क्या आधुनिकता है? कार्य स्थल पर महिलाओं के साथ गैर मानवीय व्यवहार करना क्या आधुनिकता है? और ना जाने कितनी ऐसी घटनाएँ हैं, जो हमारी बच्चियों के साथ एवं, महिलाओं के साथ हमारे समाज में हो रहे हैं लेकिन कभी सामने नहीं आते... क्या यही आधुनिकता है?

नारी के दर्द और तकलिफों के बारे में सोचते सोचते बस एक ही बात मन में आती है कि, हमारी पुरातन सभ्यता और संस्कृत में नारी को जो स्थान दिया गया था उसे हम सभी ने मिलकर नारी से छीन लिया है, इसके लिए समाज का हर एक व्यक्ति जिम्मेदार है और हम सभी ने नारी को घुट घुट कर जीने के लिये मजबूर कर दिया है। हम सभी को यह समझना होगा कि, अगर नारी जगत जननी है तो नारी काली भी है और जब नारी अपने विनाशकारी रूप में आती है उस समय प्रलय रूपी विनाशलीला में सब कुछ खत्म कर देती है।

अंत में यही कहना चाहूँगा कि समाज में अगर नारी के सम्मान की रक्षा नहीं की गई तो वह दिन दूर नहीं जब हम सभी जीवन के आखिरी चक्र में खुद को पायेंगे, क्योंकि जो जीवन दायिनी है अगर वही सुरक्षित नहीं है ऐसी परिस्थिति में सृष्टि का सुचारू रूप से चल पाना संभव नहीं है।

■■

ukjh ,oa ukjh f'k{kk dh egÙkk

d- vydk fjuh [ky[kk
शोध छात्रा
डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय, करगी रोड,
कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

'नारी' शब्द अपने आप में ही एक व्यापक अर्थ लिए हुए है। यह शब्द किसी परिचय की मोहताज नहीं है। नारी एक ऐसी शक्ति है, जिसके बिना किसी भी क्षेत्र की कल्पना नहीं की जा सकती। जिस प्रकार समुद्र के दूसरे छोर को देख पाना असंभव है, ठीक उसी प्रकार नारी शब्द का पूर्णतः बखान कर पाना असंभव है। जैसा कि हम जानते हैं, नारी के समान और कोई दूसरा नाम नहीं, जिसे पूजा के योग्य माना गया है। जिस पर संस्कृत में श्लोक है–

यस्य पूज्यन्ते नार्यास्तु तत्र रमन्ते देवाः।

(HkkokFk& जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं)

श्लोक नारी की महानता को स्पष्ट करती है। किसी भी साहित्य को उठाकर देखिए क्या कोई साहित्य नारी के बिना पूरी हुई है? क्या कोई परिवार नारी के बिना परिवार कहला सकता है? क्या कोई समाज नारी के बिना समाज बन पाया है? क्या कोई कार्यक्षेत्र नारी के बिना सफल हो पाया है? कदापि नहीं। नारी शक्ति कल्पना से परे है। यही है नारी शक्ति, जो हर जगह पर अपनी महानता का परिचय देती आई है, नारी चाहे कम पढ़ी–लिखी हो या शिक्षित हो, एक नारी की महत्ता कभी कम नहीं हुई है, वह एक ज्योति के समान है, जिस जगह पर रहती है, वह जगह प्रकाशमान हो जाता है। नारी एक माँ, बेटी, बहु, बहन के रूप में भलिभाँति अपना कर्तव्य निभाती है, जिसका कोई तोड़ नहीं है।

11वीं शताब्दी से लेकर 19वीं शताब्दी तक नारी की सम्मान एवं उसकी स्थिति में कई उतार–चढ़ाव हुए हैं। नारी को उस समय सैद्धांतिक रूप से सम्मान तो दिया जाता था, किन्तु व्यवहारिक रूप में यह सम्मान एक औपचारिक मात्र था।

नारी उस समय चारदीवारी के अन्दर रहने पर मजबूर थी, उसकी स्वतंत्रता जैसे उनसे छीन ली गई थी। समाज में वह नीची दृष्टि से देखी जाती थी। राजा महाराजाओं द्वारा नारी को उपभोग की वस्तु समझकर उसका इस्तेमाल किया गया। कई प्रकार की प्रथाएँ (सती प्रथा, बाल–विवाह प्रथा, दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा आदि)

शुरू कर दी गई थी, जिससे महिलाओं की स्थिति दयनीय होती चली गई। जिसके परिणामस्वरूप नारी का सम्मान उससे छिन सा गया। इस प्रकार धीरे–धीरे महिलाओं की स्थिति हीन होती चली गई।

तत्पश्चात् 19वीं शताब्दी से लेकर 20वीं शताब्दी तक महिलाओं की स्थिति में काफी सुधार हुआ। चूँकि इस समय कई समाज सुधारक उभर कर आये, जिनमें राजाराम मोहनराय, दयानन्द सरस्वती जैसे नाम सर्वविदित हैं। जिन्होंने नारी के प्रति सामाजिक अव्यवस्था पर जमकर आवाज उठाई। प्राचीन काल से चले आ रहे वे तमाम प्रथाएँ जो नारी के हित में नहीं थी, समाप्त कर दिया गया और कई कानून बनाए गए। इन समाज सुधारकों के साथ नये समाज सुधारकों द्वारा नारी चेतना पर नये संगठनों का सूत्रपात हुआ, जिनके द्वारा नारी जागरूकता को जोर–शोर से बढ़ावा मिलने लगा। नारी शिक्षा पर जोर दिया गया। कई सुधार आन्दोलन हुए, जिससे नारियों में नई जागरूकता उत्पन्न हुई। नारी शिक्षा की अनिवार्यता से सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन में एकाएक परिवर्तन आया।

21वीं सदी जैसे नारी को एक नई जगह पर लाकर खड़ा कर दिया। इस समय ऐसा हुआ मानों किसी ने महिलाओं पर शिक्षा की फूँक मार दी और वह उड़ान भरने लगी। अर्थात् नारी शिक्षा की अनिवार्यता से चहुँ ओर नारियों की ताकत दिखाई देने लगी। 2001 में 'राष्ट्रीय महिला उत्थान नीति' बनाई गई। यह नीति महिला सशक्तिकरण हेतु बनाई गई थी, जिसका मूल उद्देश्य था, पुरूषों एवं स्त्रियों के बीच असमानता की दृष्टि को खत्म कर, पुरूषों व स्त्रियों को आर्थिक सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक जैसे सभी क्षेत्रों में एक समान अवसर प्राप्त हो। इस नीति के द्वारा नारी के उत्थान हेतु सभी क्षेत्रों में भिन्न–भिन्न रूपों में कार्यक्रमों का संचालन किया गया, जिससे नारी अपनी योग्यता को पहचानकर, सफलता की ऊँचाइयों को छूती जाए, और ऐसा ही हुआ।

नारी शिक्षा समाज का आधार स्तंभ है। जैसा कि, महात्मा गाँधी ने कहा है– ''एक लड़की की शिक्षा एक लड़के की शिक्षा के अपेक्षा अधिक

महत्वपूर्ण है, क्योंकि एक लड़के को शिक्षित करने पर वह अकेला शिक्षित होता है, किन्तु एक लड़की की शिक्षा से पूरा परिवार शिक्षित होता है।'' हम जानते है कि एक बच्चे की पहली पाठशाला अपना घर होता है, वह बच्चा परिवार से ही सबकुछ सीखना शुरू करता है, और यह भी जानते हैं कि हर बच्चे की पहली शिक्षिका उसकी माता होती है। इसलिए चाहिए कि हर नारी शिक्षित हो, जिससे वह अपने परिवार को शिक्षा की ज्योत में आगे बढ़ाए।

आज नारी में शिक्षा की अनिवार्यता ही, नारी को सभी जगह पर पहचान दिलाई है। नारी शिक्षा उसके जीवन के मानो सभी द्वार खोल दी है। नारी शिक्षा, नारी को सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक सभी क्षेत्रों में सुदृढ़ बनाया है। नारियों में एक नई चेतना उत्पन्न हुई है, वह उनके प्रति होने वाली सभी कुरीतियों का विरोध कर उस पर सफलता हासिल की है। आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी सफलता की बिंगुल बजाई है। पुरूषों की स्त्रियों के प्रति मानसिकता में बदलाव आया है। वर्तमान में ऐसी कोई क्षेत्र नहीं होगी, जहाँ महिलाएँ अपनी उपलब्धि दर्ज नहीं करा पायी हो, कोई भी क्षेत्र स्त्रियों से अछूता नहीं है। चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, चाहे वह चिकित्सा का क्षेत्र हो, चाहे वह अनुसंधान का क्षेत्र हो, चाहे वह मीडिया का क्षेत्र हो, चाहे वह राजनीति का क्षेत्र हो, अनगिनत क्षेत्रों में वह अपने आयामों को बढ़ा चुकी है और बढ़ा रही है। वह महिलाओं के प्रति पुराने मानसिकताओं को काफी पीछे छोड़ चुकी है। अर्थात् नारी एक ऐसी ताकत बन चुकी है जो परिवार, समाज, देश, विदेश को एक अलग पहचान दिलाने की क्षमता रखती है। किन्तु चिन्ता का विषय यह है कि कई परिवारों व समाज में आज भी महिलाएँ अपने विचारों को खुलकर सामने रखने से झिझकती हैं। कारण यह है कि, सरकार द्वारा कई नीतियाँ जो महिलाओं के उत्थान हेतु संचालित किए जा रहे हैं, वह निचले स्तर के परिवारों व समाज तक नहीं पहुँच पा रही है, वे आज भी पुराने मानसिकताओं में जी रहे हैं। आज जरूरत है, छोटे एवं निचले स्तर तक नारी शिक्षा तथा सरकारी योजनाओं को पहुंचाया जाए, जिससे एक भी नारी, कहीं भी, दबी–सहमी महसूस न कर पाए। वह अपने विचारों को खुलकर सामने रखने का

हक समझ सके। पुरूषों को यह समझना होगा कि नारी पूजनीय मानी जाती है, वह नारी की महत्ता समझकर उसके विचारों का सम्मान करें। तभी स्त्री–पुरूष में एकरूपता आएगी और वे साथ–साथ सफलता के सीढ़ियों को पार करेंगे।

vr e ukjh ij NkVh dfork&

नारी हूँ नारी मैं नारी हूँ नारी मैं हर
परिवार की कली
हर समाज की फुलवारी हूँ मैं
कलियों को खिलने दो
महकने दो, महकाने दो
नारी हूँ नारी मैं, नारी हूँ नारी मैं हर
जगह प्रकाशमान कर दूँ.
हर हार विजयमान कर दूँ

जरा सी तिली मुझमें लगा दो जरा
सी ताकत मुझमें जगा दो नारी हूँ
नारी मैं, नारी हूँ नारी मैं
बनाना चाहो तो, आन बन जाऊँ
बनाना चाहो तो, शान बन जाऊँ बस
शिक्षा दो मुझे बस सिखा दो मुझे

नारी हूँ नारी मैं, नारी हूँ नारी मैं।

lnHk xFk&

1. गौतम हरेन्द्र राज 2006 महिला अधिकार संरक्षण, कुरूक्षेत्र।
2. व्यास, जयप्रकाश, 2003 नारी शोषण।
3. शैलजा नागेन्द्र 2006 वीमेन्स राइट्स ए.डी.वी. पब्लिशर्स रायपुर।
4. सुरेश लाल श्रीवास्तव 2007 राष्ट्रीय महिला आयोग, कुरूक्षेत्र।
5. सिंह करण बहादुर 2006 महिला अधिकार व सशक्तिकरण, कुरूक्षेत्र।
6. डॉ. राजकुमार 2005 नारी के बदले आयाम अर्जुन पब्लिशिंग हाउस।

■■

ukjh vkj Hkkjrh; lekt

Jherh vk'kk Hkkj}kt
व्याख्याता–हिन्दी
शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पोता
जिला– जांजगीर–चांपा

''नारी उस वृक्ष की भाँति है जो विषम परिस्थितियों में भी तटस्थ रहते हुए राहगीरों को छाया देती है।'' जिस प्रकार मनुष्य का जीवन जल या आक्सीजन के बिना संभव नही है उसी प्रकार नारी के बिना समाज का विकास संभव नही है। जिस प्रकार रीढ़ की हड्डी हमारे पूरे शरीर को संतुलित रखती है उसी प्रकार नारी समाज को संतुलित रखती है। नारी को देवी के रूप में हमेशा से ही पुष्प अर्पित किए जाते है। उसके बिना समाज की कल्पना भी नही की जा सकती है। नारी ही तो सृष्टि का प्रमुख उद्‌गम स्रोत है। बिना नारी के पुरुष अधूरा है। ईंट, पत्थर, सीमेंट से बना मकान घर नही होता एक स्त्री ही मकान को घर बनाती है । नारी को स्त्री,वनिता,महिला चाहे जिस नाम से पुकारा जाए नारी तो एक ही है ।वह ईश्वर की वो रचना है जिसे सृजन की शक्ति प्राप्त है, नारी ईश्वर की वह सुंदर कल्पना है जिसमें प्रेम, त्याग, करूणा, सहनशीलता, सेवा जैसे भावों से भरा हृदय है। जो शरीर से भले ही कोमल है। लेकिन इरादों में फौलाद भरा है ।जो अपने जीवन में अनेक किरदारों को सफलतापूर्वक जीती है।

जिन मनीषियों ने मानव समाज की रचना की है उन्होंने नर–नारी की स्थिति और महत्ता को समान बतायी है, दोनों को एक बराबर महत्व दिया है क्योंकि दोनों में से एक के बिना समाज का अस्तित्व कायम नही रह सकता और न ही जीवन सुविधा पूर्वक व्यतीत हो सकता है। पर वास्तविक स्थिति में यह विचार कार्यरूप में परिणित होता दिखाई नही देता वरन् समाज की गति विपरीत ही दिखाई पड़ती है। नारी को पुरूष की अपेक्षा सभी प्रकार से हीन और उसके विपरीत मान लिया गया है। स्वयं भगवान ने अर्धनागेश्वर का रूप धारण कर नर और नारी को समान माना है ।आध यात्म–विज्ञान के अनुसार आत्मा की पूर्णता प्राप्त करने के लिए ही नर–नारी का आविर्भाव हुआ है। और दोनों में कुछ ऐसे पृथक–पृथक गुणों का विकास किया है कि जिनके सम्मिलन से सर्वोच्च आध्यात्मिक स्थिति प्राप्त

की जा सकती है, नर और नारी का दर्जा समानता का है। जीवात्मा और प्रकृति की दृष्टि से उनमें छोटे–बड़े का कोई भेदभाव नही किया गया है।

आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक नारियों ने समाज में अपनी अहम् भूमिका निभाई है। हमारा समाज नारी के विविध रंगों से सजा हुआ है,समाज की सारी मान्यताएँ,मर्यादाएँ स्वतः उजागर करती है, यही कारण है कि साहित्य में नारी के विविध स्वरुपों का वर्णन मिलता है।

नारी रुप अनेक है,
किसको करुँ सलाम।
श्रेष्ठ जगत में है सदा,
सब रिश्ते सब काम।।

देशकाल और परिस्थिति के अनुसार नारी अब चारदिवारी से निकलकर स्वतंत्र रुप से पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर स्वयं की धूमिल हुई छबि को प्रकाशवान कर रही है। भारतीय समाज नारी के परिवर्तन के इन प्रयासों को आज भी संस्कृति के विरुध्द मानती है। इतिहास के पन्नों को यदि आज भी खोला जाए तो नारी को असहाय और निर्बल बताया गया है वही दूसरी ओर नारी का महत्व नर से बढ़कर बताया गया है किसी समय तो नारी का स्थान नर से इतना अधिक बढ़ गया था कि पिता के नाम के स्थान पर माता का नाम प्रधान होकर परिचय का सुत्र बन गया था। धर्म दृष्टा मनु ने नारी को श्रद्धामयी और पूजनीय मानते हुए महत्व प्रदर्शित किया है– जहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ देवताओं का निवास होता है। जहाँ इनका आदर नही होता वहाँ सारे धर्म–कर्म निष्फल हो जाते है। संस्कृति और सभ्यता का देश कहा जाने वाला हमारा भारतवर्ष नारी के सम्मान और इज्जत के लिए जाना जाता है ।आज के दौर में भी नारी निर्बल नही संबल हो गयी है। वह धीरे–धीरे सामाजिक परंपरा को तोड़ते हुए, मर्यादित दायरे में स्वयं को रखकर कुशलता पूर्वक अपने कार्यो का निर्वहन कर रही है। स्वतंत्रता आँदोलन में भी नारियों ने अहम् भूमिका निभायी है। भारतीय समाज नारी के अस्तित्व बोध की समस्या से अब अनभिज्ञ नही है विषमताओं की त्रासदियाँ जो जंजीर की तरह उनके तन–मन को जकड़ी हुई थी उन जंजीरों को तोड़कर नारियों ने अपने सही अस्तित्व को उजागर किया है। नारी पुरुष की पूरक सत्ता है, वह पुरुष की सबसे बड़ी शक्ति है, उसके बिना पुरुष अपूर्ण है वह उसे पूर्णता देती है, उसके उजड़े चमन को पल्लवित करती है। वैसे तो स्त्री और पुरुष दोनों एक दूसरे के पूरक है फिर भी कर्तव्य,

उत्तरदायित्व तथा त्याग के कारण पुरुष से नारी कही अधिक महान है। नारी जीवन यात्रा में पुरुष के साथ ही नही चलती वरन् समय आने पर उसे शक्ति और प्रेरणा भी देती है। नारी की वाणी जीवन के लिए अमृत श्रोत है, उसके नेत्रों में करुणा, ममता और सरलता के दर्शन होते है। नारी की हँसी में संसार की निराशा और कड़वाहट मिटाने की अपूर्व क्षमता होती है,वह अपनी ममतामयी मूरत से सभी की झोली में खुशियाँ ही डालती है।

संसार के सभी महापुरुषों ने नारी में उसके दिव्य स्वरुप के दर्शन किये है, जिससे वह पुरुषों के लिए पूरक सत्ता के ही नही बल्कि उर्वरक भूमि के रुप में उसकी प्रगति,उन्नति और कल्याण का साधन बनी है। नारी जन्मदात्री है, संसार का प्रत्येक पुरुष उसकी गोद में खेलकर बड़ा हुआ है। कामायनी में जयशंकर प्रसाद जी ने नारी के प्रति अपनी अपार श्रद्धा बतायी है–

''नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नभ–पग–तल में
पीयुष स्रोत–सी बहा करो
जीवन के समतल में''

वह जननी है, यदि जननी ना हो तो कैसे संसार का उद्‌भव होगा? कैसे समाज का सृजन होगा? और कैसे समाज विकसीत होगा? नारी घर–गृहस्थी को ही नही देखती बल्कि सभी क्षेत्रों में पुरुषों की संगिनी,सहायक और प्रेरक भी रही है। नारी विविध रुपों में सदैव मानव जाति के लिए त्याग, बलिदान, स्नेह, श्रद्धा, धैर्य, सहिष्णुता का जीवन बिताती है। ''नारी समाज का केन्द्र बिन्दु है, धूरी ह'' जो समाज को सही मार्ग दिखलाती है। महादेवी वर्मा के अनुसार– ''नारी केवल एक नारी ही नही अपितु वह काव्य और प्रेम की प्रतिमूर्ति है।'' पुरुष विजय का भूखा होता है और नारी समर्पण की। वास्तव में भारतीय नारी पृथ्वी की कल्पलता के समान है।

सदियों से ही भारतीय समाज में नारियों की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही है, उसी के बलबुते पर भारतीय समाज खड़ा है। नारी ने भिन्न–भिन्न रुपों में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है, परन्तु फिर भी वह क्रुर समाज के अत्याचारों एवं शोषण की शिकार होती रही है। नारी के सम्मान और उसके हितों की रक्षा करना हमारे देश की सदियों पुरानी संस्कृति है। यह एक विडम्बना ही है कि भारतीय समाज में नारी की स्थिति विरोधाभाषी रही है। एक तरफ तो उसे शक्ति के रुप में प्रतिष्ठित किया गया है, तो दूसरी तरफ उसे बेचारी अबला भी कहा गया है, इन दोनों ही अतिवादी धारणाओं ने नारी

के स्वतंत्र विकास में बाधा पहुँचायी है। जहाँ तक विश्व विख्यात मनोवैज्ञानिक सिग्मंड फ्रोएड ने अपने प्रयोगों से सिद्ध कर दिया है कि स्त्रियाँ पुरुषों की तुलना में अधिक मेहनती, धैर्यवान, अहिंसक और ईमानदार होती है और ये सभी गुण उन्नति के मार्ग में मिल का पत्थर साबित होती है। एक समय था, जब भारत वर्ष जगत गुरु कहलाता था। विशव के कोने–कोने से शिक्षार्थी यहाँ के विश्व विद्यालयों में विद्या ग्रहण करने आते थे। परंतु परिस्थितियों के चक्रवात में भारत ऐसा फँसा कि अशिक्षा और अज्ञान का साम्राज्य बढ़ गया। विश्व के निरक्षरों का एक बड़ा प्रतिशत भारत में विद्यमान रहा है। यहाँ के नारियों की स्थिति और भी दयनीय हो गयी। अक्षर–ज्ञान, स्कूली शिक्षा, तकनीकी शिक्षा आदि में वे बहुत पिछड़ गयी। ऐसा नहीं है कि भारतीय नारियाँ सदा से ही अशिक्षित रही हों। प्राचीन काल में स्त्रियों को भी पुरुषों के समान शिक्षा दी जाती थी। अनुसूया, गार्गी, लीलावती आदि विदुषियों ने अपने ज्ञान से समाज को प्रभावित किया है। आचार्य मंडन मिश्र की पत्नी ने जगद्गुरु शंकराचार्य से शास्त्रार्थ करके स्त्रियों के गौरव को बढ़ाया था। परंतु दुर्भाग्य से भारत वर्ष को शताब्दियों तक आक्रमणकारियों से जुझना पड़ा था। अपने अस्तित्व से लड़ते हमारे देश का शैक्षिक विकास रुक गया। भारतीय नारी को अपनी लाज बचाने के लिए घर की दहलीज में सीमित रहना पड़ा। परिणामस्वरुप अशिक्षा और घूँघट उसकी विवशता बन गये। उल्लेखनिय बात यह है कि युगों तक विद्यालयीन शिक्षा से वंचित रहने पर भी भारतीय नारी ने पुरुष समाज को सुसंस्कारित करने का बीड़ा उठाया।

नारी और पुरुष दोनों समाज रुपी रथ के दो पहिए है। दोनों का समान रुप से शिक्षित होना आवश्यक है। समाज के कुछ पुरातन पंथी स्त्री शिक्षा के विरोधी है। वे स्त्री को पराया धन ष्या पाँव की जूती या अनुत्पादक मानकर पुरुषों के समकक्ष नहीं आने देना चाहते। परंतु वे भूल जाते है कि मनुष्य जीवन की सबसे मूल्यवान शक्तियाँ नारी के हाथों में है। नारियाँ ही माँ बनकर बच्चों को पालती है,उन्हें गुणवान बनाती है। शिशु की प्रथम गुरु माँ ही होती है। वही उस कच्ची मिट्टी को अपने कल्पित साँचे में ढालती है। वह उसे देवता भी बना सकती है और राक्षस भी। यदि नारी में ही विवेक न होता तो उसकी संतानें कैसे विवेकवान रहेगी। अतः सर्वप्रथम नारी को शिक्षित, संस्कारित एवं ज्ञान समृद्ध बनाना आवश्यक है। नारी को अशिक्षित रखकर कोई समाज अपने कल्याण की बात नहीं सोच सकता। अरस्तु के कथानूसार– ''नारी के उन्नति और अवनति पर ही राष्ट्र की उन्नति और

अवनति निर्भर करती है।'' प्रश्न यह है कि नारी–शिक्षा का स्वरुप क्या हो? क्या नारी और पुरुष की शिक्षा में कोई अंतर होना चाहिए? हाँ, होना चाहिए। जब प्रकृति ने उन्हें स्वभावतत्या भिन्न बनाया है तो उसकी शिक्षा भी भिन्न होनी चाहिए। नारी स्वभाव से कोमल होती है। उसमें समस्त रचनात्मक क्षमताएँ होती है। उसमें दया, ममता, मधुरिमा, विश्वास, स्वच्छता, समर्पण, त्याग आदि वृत्तियाँ होती है। अतः उनकी शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे उनकी इन शक्तियों का उत्तरोत्तर विकास हो। वास्तव में दमन का विरोध और प्रगतिशील नवीन विचारों को अपनाना ही नारी का आधुनिक होना है। और ऐसा वह प्रत्येक युग में कर रही है। नारी को भोग्या बनाने वाले पुरुष समाज में नारी ने प्रमाणित कर दिया है कि वह पुरुष समाज देश में अपना लोहा रख सकती है। ये सब जानने के बाद भी समाज नारियों के साथ अमानवीय व्यवहार कैसे कर सकता है? क्या ऐसा कृत्य पाशविक का पर्याय नहीं है ? भारतीय इतिहास की सारी उथल–पुथल के बावजूद भारतीय नारी के कुछ ऐसे गुण उसके चरित्र से जुड़े है जिनके कारण वह विश्व की नारितयों से पूरी तरह अलग रही। नम्रता, लज्जा और मर्यादा ये विशेष गुण है जो भारतीय नारी को गौरव मंडित करते है। आज की नारी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने की होड़ में इंजीनियर, डाक्टर वाणिज्य, सेना पायलट आदि सेवाओं में जा रही है। आज के इस समानता–समर्थक युग में इस दौड़ को उचित कहा जा सकता है। भारतीय नारी ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह हर युग में किया है। भारत वर्ष में नारी को सदैव से ही गौरवपूर्ण स्थान दिया गया है। वह प्राचीनकाल से ही वह गौरवमय सिंहासन पर प्रतिष्ठित है। उसने अपने गौरवमयी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है। इस तरह नारी का जीवन बहुआयामी है। समय सदा एक –सा नही रहता। उसमें सदा परिवर्तन होता रहता है। जो आज सफलता के शीर्ष पर विराजमान है वही कल तक असहाय की श्रेणी में रहा करते थे। जिस प्रकार फूलों की विविधता के कारण उपवन की शोभा को चार चाँद लग जाते है उसी प्रकार नारी का विविध रुप से समाज को सुशोभित करता है। शिक्षा के प्रसार ने लोगों के मन से अज्ञानता को समाप्त कर दिया है। सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध मजदूर महिलाओं को सड़क पर उतरकर मुठ्ठी बाँधकर, आक्रोश के साथ बुलंद नारे लगाते मंचों पर, अत्याचारों के विरुद्ध बेखौफ बोलते देखकर मध्यवर्गीय महिलाओं में भी हिम्मत आयी। आज स्त्रियों के काम राष्ट्रीय उत्पाद में उनके योगदान का बड़ा महत्व राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय दोनों स्तरों

पर स्वीकार कर लिया गया है। राष्ट्र और समाज के समग्र विकास तथा उसके निर्माण में नारियों का लेखा–जोखा और उसके योगदान का दायरा असीमित है, तथापि देश के चँहुमुखी तथा समाज में अपनी भागीदारी को सशक्त ढंग से पूरा किया है। अपनी अस्तित्व एवं मर्यादा की स्वतंत्रता कायम रखते हुए वह पुरुषों से भी चार कदम आगे निकल गयी है। संकीर्णता, जाति–पाति, अंधविश्वास, भेदभाव तथा मानसिक और शारीरिक गुलामी की जंजीरों को तोड़कर नारी ने देश को नई सोच, नये विचार प्रदान किये है। विवेकानंद के अनुसार– ''नारी उतनी ही साहसी है जितना की पुरुष।'' नारियों के बढ़ते हुए विकास के इन कदमों के साथ–साथ आज भी उनके जीवन की समस्यायें उसके अस्तित्व के लिए चुनौती बनकर आ खड़ी हुई है। इस पुरुष समाज में उसे निर्णय लेने की स्वतंत्रता नहीं दी जाती है। आज उसकी प्रतिभा और दृष्टिकोण पुरुषों से पीछे नहीं है। वह परिवार और समाज के सभी बंधनों से मुक्त होकर अपने निर्णयों की निर्माता स्वयं हो गयी है। स्त्री समाज की दर्पण है, यदि समाज की स्थिति को देखना है तो वहाँ की नारी की स्थिति को देखना होगा। राष्ट्र की गरिमा, उसकी समृद्धि पर नही अपितु उस राष्ट्र के सुसंकृत व चरित्रवान नारियों से है जो राष्ट्र और समाज को ये संस्कार देती है। यद्यपि भारत में नारी–शिक्षा की स्थिति संतोषजनक नही है, किन्तु आशा जनक अवश्य है। सरकार और समाज के प्रयत्नों से नारी–शिक्षा को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। अनेक प्रांतों में स्नातक स्तर तक ग्रामीण नारियों की शिक्षा मुफ्त कर दी गई है। आधुनिक काल को यदि नारी जागरण के नाम से सम्बोधित किया जाए तो अतिशयोक्ति नही होगी। आज नारी अपनी पराधीनता की बेड़ियों को छिन्न–भिन्न कर चुकी है। शिक्षा के प्रकाश से उसका मुख–मंडल प्रकाशवान हो रहा है। राष्ट्र के निर्माण में महिलाओं की अहम् भूमिका की कभी भी अनदेखी नही की जा सकती है। आजादी के समय से लेकर आज तक समाज व राष्ट्र के नवनिर्माण में महिलाओं ने पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सक्रिय सहभागिता निभाते हुए खुद को साबित किया है।

आधुनिक युग में नारी दिन–प्रतिदिन शिक्षा के नये–नये सोपानों पर कदम रख रही है। आज प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक सभी स्थानों पर उसका वर्चश्व स्थापित हो रहा है। मानव जीवन के हर क्षेत्र में उसका सहयोग आकाशदीप की तरह जगमगा रहा है। नारियों के सशक्तिकरण से सभी क्षेत्रों में प्रगति हो रही है। हमारे समाज में नारी को बचपन से ही कुछ संस्कार सीखाये जाते है, जैसे–धीरे बोलना, घर के अंदर

ही रहना, ज्यादा घुमने पर पाबंदी आदि। हमारा पुरुष समाज क्यों नहीं समझता कि नारी प्रकृति का अनमोल उपहार है, उसके मन में भी कोमल संवेदनाएँ होती है, जो उसे और अधिक खुबसूरत बनाती है। वह ममता का रुप है और इस ममतारुपी नारी को हर रुप में हमेशा छल–कपट ही मिला है। परंतु आज की नारी इन सब बातों को छोड़कर काफी आगे निकल आई है। आज नारी में आधुनिक बनने की होड़ लगी है नारी के जीवन में क्राँतिकारी परिवर्तन हुआ है। वह हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है, बदल रही है। सुमित्रा नंदन पंत के द्वारा– ''मुक्त करो नारी को। आज वही नारी अपने बंधन के जंजीरों को तोड़कर मुक्त हो रही है। आवश्यकता इस बात की है कि नारी–शिक्षा का अधिकाधिक विकास करके उसकी क्षमताओं को विकसीत किया जाए। नारी ने तो अपना नजरिया बदल दिया है अब समाज को अपना भी अपना नजरिया बदलनी होगी। जीवन की कला को अपने हाथों से साकार कर, नारी ने संस्कृति का रुप निखारा है, नारी का अस्तित्व ही सुंदर जीवन का आधार है। मानव समाज के विकास का यह खुला रहस्य है कि सभी लोग सहकारिता से भागीदार नही होते, सबका विकास संभव नही है। इसलिए स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार तथासामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक क्षेत्रों में नारी को पुरुषों के बराबर ही सहभागिता अनिवार्य है, और तभी संपूर्ण समाज का विकास हो सकेगा। नारी का विकास केवल नारी की खुशहाली की दृष्टि से ही आवश्यक नहीं है बल्कि वह संपूर्ण समाज के संतुलित विकास की दृष्टि से भी अनिवार्य है।

आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक अनगिनत महिलाओं ने अपने सशक्तिकरण के माध्यम से समाज को एक नयी दिशा देने का प्रयास कर रही हैं। भारतीय समाज में जिस चिंतन एवं जीवन शैली का विकास हुआ है वह सब नारी की ही देन है।

भरने दो हमें अब उड़ान,
जगत जननी हम है महान
समझो ना अबला हमें तुम
बढ़ाए सदा मान और सम्मान।
सहना नही अब अत्याचार
बन है गयी हम शिक्षित नार
समानता का अधिकार लिए
जीवन की बनती आधार।

■■

eUuw HkaMkjh dh dgkfu;ksa esa cnyrs ifjos'k dh L=h

M,- vkdka{kk feJk
डॉ. राममनोहर लोहिया
अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद (उ.प्र.)

भारतीय समाज के बदलते परिवेश में स्त्री के सामाजिक मूल्यों की परख समाज और साहित्य के भिन्न–भिन्न परिवर्तित परिवेश से हो रही हैं। यही कारण है, कि स्त्री समाज की केंद्र बिंदु रही है। हिंदी साहित्य में भारतेंदु युग, द्विवेदी युग में स्त्री विलास और श्रृंगार मात्र रही है, जबकि प्रेमचंद युग में नारी जागरूक होने के साथ ही अधिकार और कर्तव्यों का बोध रहा है। आधुनिक कालमें नगरीकरणऔरऔद्योगिकीकरण के कारण स्त्री की सक्रियता सामाजिकता का विस्तार हुआ है। हिंदी साहित्य में महिला कहानी कारों में कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, शशि प्रभा, राजी सेठ मनु भंडारी आदि नाम उल्लेखनीय हैं मनु भंडारी ने स्त्री लेखन को एक नया आयाम देते हुए स्त्री अस्मिता के प्रश्न को बड़ी गंभीरता से चित्रित किया है जहां मानवीय संबंधों में माता और संतान का संबंध सर्वोपरि रहा है वही 1 इंच मुस्कान उपन्यास की नायिका अमला के माध्यम से मुक्त और स्वच्छंद प्रेम का चित्रण बखूबी किया गया है, वह पत्नी, प्रेमिका, मित्र आदि बनी किंतु असफल रही है ।

''शिक्षा को मानव जीवन को श्रेष्ठ बनाने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन माना जाता हैं। शिक्षा प्रक्रिया के दौरान प्राप्त ज्ञान, बोध तथा कौशल के द्वारा व्यक्ति अपने जीवन की विभिन्न समस्याओं का समाधान करता हैं, अपने मनोवैज्ञानिक, सामाजिक तथा भौतिक पर्यावरण को उन्नत बनाता है तथा अपने अधिकारों के प्रति सजग रहते हुए अपने कर्तव्यों का समुचित ढंग से पालन करता है। व्यक्तिगत विकास, सामाजिक प्रगति तथा राष्ट्रीय उन्नति में शिक्षा का अत्यन्त सार्थक योगदान होता हैं।''[1]

वर्तमान समय में नवीन शिक्षा प्रणाली एवं बदलते सामाजिक परिप्रेक्ष्य में आधुनिक पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के बीच संघर्ष पैदा हुआ हैं। इससे

उत्पन्न संकट ने मन्नू जी के कथ्य को युगीन बना दिया, जहां पर स्त्री अपने स्वतन्त्र व्यक्तित्व की चाह में परिवार, समाज, व्यवस्था के घेरे में आ गई हैं।

मन्नू भंडारी की कहानियों में कामकाजी नारी के रूप में उच्च, मध्य दोनों ही वर्गो का चित्रण रहा हैं, जहाँ मध्यम वर्गीय नारी की समस्याओं में बढ़ता अंतर्द्वन्द संघर्ष के रूप में उभरकर सामने आया। स्त्री अपने समाज, समय और व्यवस्था के प्रति बड़ी सूक्ष्मता से अवलोकन करती हुई पुरुष प्रधान देश की तरफ संकेत करती हैं। मन्नू भंडारी की समग्र कहानियांअपने बदलते परिवेश में संस्कार और आधुनिकता के बीच स्त्री के मनोदशाओं का चित्रण दिखाई पड़ता है।

''मन्नू भंडारी ने अपनी कुछ कहानियों में मजदूर वर्ग की असहाय नारियों की दरिद्रता, संघर्ष और मानसिकता का बड़ा ही मार्मिक चित्र खींचा है। ''रानी माँ का चबूतरा'' ऐसी ही मार्मिक कहानी हैं। अन्य कहानी लेखिकाओं की तुलना में आपका कथा–फलक विस्तृत है। वस्तुतः आपने भावुकता से हटकर बदले हुए जीवन–सन्दर्भ में खुले दिमाग से नारी–जीवन की वास्तविकता को देखा परखा है और उसे बड़ी सादगी के साथ व्यक्त किया हैं।''[2]

आजादी के बाद स्त्रियों की मनोदशाओं में बदलाव आया इस बदलाव में स्त्री के माध्यम से समाज, घर की व्यवस्थाओं के बीच केंद्र में रखकर स्त्रियों की दशाओं और उनके उमड़े हुए द्वन्द का सुंदर चित्रण दिखाई पड़ता है। उस समय की स्थिति जब स्त्रियों के अस्मिता पर अनेक प्रश्नचिन्ह लगे वही दमित और शोषण भी हुआ।

वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य को रखते हुए मन्नू भंडारी की कहानियों में स्त्रियों की भूमिका घर, परिवार, समाज की व्यवस्था के मध्य रही। लेखिका यहां पर मानव के मनोदशाओं के आधार पर स्त्री के मन की गहराइयों को निकाल पाने में सफल रही हैं। ''समाज में स्त्री के अधिकारो के पक्ष में और स्त्री उत्पीड़न के खिलाफ जब भी आवाज उठी है स्त्री–विरोधी चिंतको एवं संगठनों ने स्त्रीवाद और स्त्री संगठनों पर घृणित रूप से हमला बोला है। आजादी के पहले और आजादी के बाद स्त्री के अधिकारों की लड़ाई को हेय दृष्टि से देखा गया।''[3]

प्राचीन जीवन मूल्यों और आधुनिक जीवन मूल्यों के बीच विसंगतियों, विभिन्न दशाओं वातावरण तथा भिन्न मुद्राओं को निकालते तथा सहेजते हुए

कथा–साहित्य को एक नई दिशा मिली है। इंसा के घर इंसान एक प्लेट सैलाब खोटे सिक्के मैं हार गई अलगाव कहानियों में सामाजिक व्यवस्था का बेनकाब चित्रण किया गया है। इंसा के घर इंसान' कहानी में ईश्वर के प्रति अनास्था का यथार्थ चित्रण दिखाई देता है। एक प्लेट सैलाब' महानगरीय जीवन शैली के विविध आयाम को प्रस्तुत करती है। स्त्री–पुरुष के सम्बन्धों में तनाव उत्पन्न हुए जो प्रायः पारिवारिक अलगाव की त्रासदी से जुड़े विभिन्न आयाम सामने आए है।

''साहित्य सामाजिक स्थितियों को बदलने की वैचारिक भूमिका तैयार करता हैं प्रत्येक उपन्यासकार अपनी रचनाओं में समाज सम्बन्धी अपनी धारणाओं को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रकट करता है।''[4]

मन्नू भंडारी की स्त्रियां समाज में अपनी स्वतन्त्रता तथा अपनी अस्तित्व की खोज करती हुई बहुआयामी संघर्ष झेलती ऐसी स्त्री है जो स्वंतन्त्र होने की आकांक्षा रखते हुए भी परम्पराओं में उलझती हुई परिवार और समाज दोनों के लिए चिंतित रहती है। अपने समय में कहानियां मध्य वर्ग से उच्च वर्ग, उच्च वर्ग से मध्य वर्ग की तरफ संकेत करती हुई व्यापक द्वन्द का बोध कराती हैं।

''परिवेश कोई प्राकृतिक वातावरण तो है नहीं वह समाज, राजनीति, परम्परा में घिरे–उलझे और क्रियाशील व्यक्ति के तनावों, भावनाओं और समस्याओं के माध्यम से ही सजीव और प्रभावी स्तर पर अपनी भूमिका निभा सकता हैं।[5]

वर्तमान मध्यवर्ग, उच्चवर्ग में विकृत परिदृश्य, नैतिक दरिद्रता, उदासी, शोषण, अकेलापन आदि दूर करके मानवता के स्वच्छ, सुंदर और उज्ज्वल भविष्य की नींव को मजबूत करने की क्षमता को मन्नू जी ने वैयक्तिक चेतना दी है। परन्तु व्यक्ति और समाज दोनों का अपना महत्वपूर्ण स्थान हैं, दोनों ही सपेक्षित महत्ता का ज्ञान एक सन्तुलित दृष्टिकोण को जन्म देने के साथ ही संघर्षो को वाणी भी।

क्या यही आधुनिक ट्रेजडी है? आधुनिक मानव का अकेलापन ही उसकी ट्रेजडी और विडम्बना हैं। तभी शायद प्रेम भी विडम्बना है।[6]

मैं हार गई कहानी की नायिका दीपा में एक द्वन्द हैं अंत में वह अपने आप से हार कर अपनी जीत को हार में बदल देती हैं। दीपा और शेखर पति पत्नी है दोनों ही चुनाव में खड़े होते हैं चुनाव में जीत दीपा की निश्चित

देखकर शेखर नारी की सहज भावनाओं की हत्या कर अपनी पत्नी को अपने पक्ष में कर लेता हैं ''इसी का तो गम हैं मेरी जीत की सम्भावना ही मुझे खिन्न बनाये दे रही हैं। सोचता हूँ हार भी गया तो उस लज्जा को सह लूँगा। पुरुष हूँ , और सहने का आदी। पर जीत गया तो दीपा का क्या होगा? तुम देखते नहीं पगली हो गई है इसके पीछे। वह हार का धक्का वर्दाश्त नहीं कर सकती और सच पूछो तो इसलिए चाहता हूँ कि मैं हार जाऊँ।[7] नारी सुलभ भावनाओं को ठेस देने वाला पुरुष पात्र शेखर की ये बाते सुनकर दीपा खुद ही सुबह उठकर अपने पति को वोट दे आती हैं।

मैं हार गई कहानी संकेत करती हैं कि पुरुष प्रधान व्यवस्था में आज भी कही न कहीं भावात्मक रूप से स्त्री को अपनी तरफ आश्रय प्रदान करता है जहां द्वन्द में स्त्री अन्तः समाज और व्यवस्था में स्वतन्त्र और स्वालम्बी होते हुए भी पुरुष व्यवस्था का आश्रय लेती हैं।

मन्नू भंडारी की स्त्री शिक्षित और स्वालम्बी बाहरी दुनिया को समझने परखने वाली है जिस गति से स्त्री में बदलाव आया है उस गति के साथ पुरुष आज भी बदलाव नहीं ला सका है। सम्पूर्ण कथा–साहित्य में बदलती स्त्री और न बदलने वाले पुरुष के बीच के द्वन्द को चित्रित किया गया है।

''सामाजिक –आर्थिक बदलावों और शिक्षा के आगमन से समाज में स्त्री की भूमिका कुछ बदली हैं उसे उसके अधिकार मिल रहे हैं पर साथ ही दायित्वों की फेहरिस्त भी बैठी हैं और इस माध्यम से भी उसका दोहन हुआ हैं शिक्षा का प्रसार हो रहा है ऐसे में मानसिकता बदलने की जरूरत हैं ताकि भविष्य में स्त्री–पुरुष सम्बन्ध अधिक समरस हो सके।''[8] मन्नू भंडारी का लेखन उनके व्यक्तित्व की तरह ही सादा सरल पारदर्शी है, उनकी स्त्रियां सामाजिक व्यवस्थाओं में ढलती हुई सामाजिक ताने–बाने को बुनती हुई अपने पथ पर अग्रसित हैं। भारतीय समाज में स्त्री की सीमाओं का खांका तैयार हैं जहाँ उनके मूल्यों, नैतिकताओं संस्कारो के सतत बोध से हैं।

बदलते समाज में संयुक्त परिवार का परम्परागत ढांचा टूटने के कारण एकांकी परिवार की वृद्धि हुई है जहां मनुष्य की आधुनिक यायावरीय होने के साथ ही व्यक्ति स्वतन्त्र की भावना, अहं, आर्थिक स्थितियों के कारण सामाजिक सम्बन्धों में बदलाव आया। परम्परागत सामाजिक मूल्यों, नवीन जीवन–दृष्टि के मतभेद के कारण आपसी द्वन्द की स्थिति उत्पन्न हो गई।

इन स्थितियों के बीच पारिवारिक ढांचा टूटने के कारण स्त्री और पुरुष दोनों के लिए धन उपार्जित करना अनिवार्य रहा हैं। जहां एक तरफ स्त्री आत्मनिर्भर होकर पुरुष के साथ बराबरी की भूमिका निभा रही हैं वही स्त्री में अहं भावना भी बलवती रहीं उसके अहं से पुरुष आहत रहा। इसका परिणाम वैवाहिक जीवन में दरार उत्पन्न होने लगी। 'आपका बंटी की शुकन में निहित हैं। मानवीय मूल्यों के बदलने के साथ ही आधुनिक समाज में रिश्तों प्रभाव दिखाई पड़ा है। इस माहौल में घुटन भरी जीवन जीने को बाध्य हो रहे प्रायः सभी।

''कहानी को जीवन के वास्तविक प्रश्नों से जोड़ने और यथार्थवादी स्त्री कथा परम्परा का निर्माण करने में इनकी कहानियों का महत्वपूर्ण स्थान हैं। यथार्थवादी कथा परम्परा की सजग लेखिका होने के नाते यह भी बात उभरती हैं कि यथार्थ की कोटि अभी भी स्त्री कथा के लिए प्रासंगिक हैं।''[9]

जीवन के कई–कई स्तरों पर संघर्ष करते हुए सामन्जस्य बिठाते हुए स्त्री आज के बदले हुए परिवेश में घुट–घुटकर मरना नहीं चाहती अपने लिए जीना चाहती हैं। जब समाज में हर क्षेत्र में बदलाव हो रहा था वही परिवर्तित होती हुई सामाजिक और आर्थिक बदलावों में स्त्री भी सामयिक रूप सभी जिम्मेदारियों का निर्वाह करती हुई हर क्ष्रेत्र में बढ़ी।

स्त्री की स्वतन्त्र व्यक्तित्व की चाह ने आधुनिक समय में परम्परागत होते हुए भी विद्रोही और क्रन्तिकारी तत्व उभरकर सामने आए हैं आपका बंटी उपन्यास की शकुन परम्परागत होते हुए भी विद्रोही और क्रन्तिकारी तत्व ज्यादा है अतः उसका अंतद्वन्द उसके अहं से उपजे तनाव और यातना के बीच हैं। इसका प्रभाव बंटी पर पड़ता हैं क्योंकि वह एक असामान्य परिवेश को भोगता हैं। एक नए सिरे से स्त्री बदलते परिवेश में उभरकर आई लेकिन अहं और द्वन्द की टकराहट के कारण स्वतन्त्र निर्णय लेने में विवश रही हैं शकुन का द्वन्द ही रहा जो अलगाव का रूप धारण कर घुटन भरे जीवन में जीने के लिए विवश कर रही। सामाजिक परिवेश में मानव–जीवन में तमाम कठिनाइयां भरी हुई हैं। मन्नू भंडारी की समस्त कहानियां अपने समय से आगे हैं।

I UnHk&

1. डॉ. एस.पी गुप्ता, डॉ. अलका गुप्ता भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्याएं पृ. 363

2. डॉ.रामचन्द्र तिवारी हिंदी गद्य–साहित्य का इतिहास पृ.335
3. जगदीश्वर चतुर्वेदी स्त्रीवादी साहित्य विमर्श पृ .182
4. डॉ. बाबु. जे. राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में सामाजिक चेतना पृ .187
5. नित्यानन्द तिवारी सृजनशीलता का संकट पृ .57
6. देवीशंकर अवस्थी नयी कहानी सन्दर्भऔर प्रकृति पृ.6
7. मन्नू भंडारी तीन निगाहो की एक तस्वीर कहानी संग्रह पृ.8
8. हंस मासिक पत्रिका सितम्बर 2009 नजरिया 5 कविता पृ.83
9. जगदीश्वर चतुर्वेदी स्त्रीवादी साहित्य विमर्श पृ.152

■■

lkfgR; vkj lekt e L=h dk Lo:i

foukn dqekj
अतिथि व्याख्याता (हिंदी)
म.गां. शास. महा. खरसिया

हमारा यह देश जिसका एक गौरवशाली इतिहास रहा है, यहाँ की संस्कृति, सभ्यता ही यहाँ की प्रमुख विशेषताएं है। जिस इतिहास, संस्कृति–सभ्यता पर हम इतना गर्व करते हैं उसमे जब स्त्रियों की स्थिति की बात आती है तो हम अपने आपको हर बार कटघरे में खड़ा ही पाते हैं और यह बात किसी से छिपी नही है। इतिहास गवाह है कि स्त्रियों को समाज मे हमेशा दोयम दर्जे का ही समझा गया है। सती प्रथा, जौहर प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल विवाह, और न जाने ऐसे कितने अभिशाप से इनको गुजरना पड़ा है। वर्तमान में इन सभी कुप्रथाओं पर रोक लगाने के लिए कानून बनाये गए हैं, और काफी हद तक ये अब बंद भी हो गई है। किंतु आज भी स्त्रियाँ समाज की संकीर्ण मानसिकता और पुरुषों की बर्बरता का शिकार हो रही है। स्मृति युग में कहा गया है–

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमयन्ते तत्र देवता''

जहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं। लेकिन जिस युग में तथाकथित देवताएं यहाँ निवास करते थे उस युग में भी क्या स्त्रियों की पूजा होती थी यह विचारणीय है। उस युग में भी सीता, द्रोपदी, अहिल्या इत्यादि स्त्रियों की दशा किसी से छिपी नहीं है। वाल्मीकि रामायण में कहा गया है–

''त्रय शता शताधी हि द ददर्शवेक्ष्यः मातरः।
ताश्चापिस तथैवादी मात्ऋदशरथात्मजाः।।

(वाल्मीकि रामायण 2–39)

राम को वनवास जाने से पहले कौसिल्या, सुमित्रा और कैकेयी के अलावा और 350 माताओं से आज्ञा लेनी पड़ी थी। अर्थात राजा दशरथ की 350 रानिया और थी इसका तात्पर्य यह है कि उस समय भी स्त्रियों को केवल वस्तु के अलावा और कुछ नहीं समझा जाता था। युग बदलते गए

लेकिन स्थितियां लगभग वैसी ही रही, स्त्रियां कभी भी स्वतंत्र नही हो पायी।

''पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने।

रक्षन्ति स्थविरे पुत्रा न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति

(मनुःस्मृति 9:3 अध्यायश्लोक)

कुमारावस्था में स्त्री की रक्षा पिता करते हैं, यौवन में उसकी रक्षा पति करते हैं। बुढ़ापे में पुत्र उसकी रक्षा करते हैं, एक स्त्री कभी भी स्वतंत्र नही मर सकती वह अपने पूरे जीवनकाल में किसी न किसी के अधीन ही रहती है। क्या स्त्री का कभी भी स्वतंत्र अस्तित्व नहीं रहेगा? क्या उसे अपने पहचान के लिए सदैव किसी अन्य पर आश्रित रहना पड़ेगा? ये ऐसे प्रश्न है जो वर्तमान समय में समस्त प्रबुद्ध वर्ग के लोगों के लिए एक समस्या और चुनौती है।

साहित्य समाज का दर्पण होता है इसमें कोई दोराय नही है। समाज में जो चीजे चलती है उसका प्रभाव अथवा चित्र हमें तत्कालीन साहित्य में देखने को मिल जाता है। लेकिन साहित्य से यह भी अपेक्षा रहती है कि उसमें कुरीतियों, सामाजिक बुराइयों एवं विभिन्न अत्याचारो का विरोध हो और समाज को एक नयी दिशा देने का भी कार्य हो। साहित्य निःसंदेह समाज को एक नयी दिशा प्रदान करती है किंतु मध्यकालीन साहित्य में स्त्रियों के स्वरूप को देखा जाए तो उन्हें वहां उपेक्षा ही अधिक मिली है। भक्तिकाल को हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग माना जाता है क्योंकि इस काल में लिखे गए साहित्य उच्च कोटि के हैं और समाजिकता की भावना भी उसमें निहित है। रामचरित मानस एक महत्वपूर्ण और उच्च श्रेणी का महाकाव्य है किंतु स्त्री चित्रण में तुलसीदास जी ने भी कहीं न कहीं इस वर्ग को उपेक्षित ही रखा है–

''काने, खोरे, कूबरे कुटिल कुचाली जानि।

तिय विसेषि पुनि चेरि कहि भरतमातु मुस्कानि।।''

(अयोध्याकांड दो. 14)

जो काने, लँगड़े और कुबड़े हैं, उन्हें कुटिल और कुचाली जानना चाहिए। फिर स्त्रियाँ उनसे भी अधिक कुटिल होती हैं और दासी तो सबसे अधिक। इतना कहकर भरत जी की माता मुस्कुरा दीं। यहाँ तुलसीदास जी ने स्त्रियों को कुटिल बुद्धि का बताया है। अरण्यकांड में तुलसीदास जी

लिखते हैं–

''सहज अपावन नारि पति सेवत शुभ गति लहइ।''

(अरण्यकांड दो.5 क)

अर्थात स्त्री जन्म से ही अपवित्र होती है, किंतु पति की सेवा करके वह शुभ गति (पुण्य) प्राप्त कर लेती है। यहां भी तुलसीदास जी ने स्त्रियों के साथ न्याय नहीं किया। लंकाकाण्ड में रावण– मन्दोदरी संवाद में तुलसी दास जी ने लिखा है–

''नारि सुभाव सत्य सब कहहीं। अवगुन आठ सदा उर रहहीं।
साहस, अनृत, चपलता माया। भय अविवेक, असौच अदाया।।''

अर्थात नारी के स्वभाव के बारे में सभी सत्य ही कहते हैं कि उनके हृदय में आठ अवगुण सदा ही रहते हैं साहस, असत्य, चपलता, माया (छल कपट), भय, अविवेक, अपवित्रता, और निर्ममता।

कबीरदास जी का नारी विषयक दृष्टिकोण भी तुलसीदास से अलग नही था, वे स्त्री जाति को माया और मोक्ष की प्राप्ति में बाधक मानते थे–

''नागिन के तो दोये फन, नारी के फन बीस
जाका डसा ना फिर जीये, मरि है बिसबा बीस।''

(कबीर की साखियां)

''नारी की झाई परत, अँधा होत भुजंग।
कबिरा तिन की कहा गति नित नारी संग।।''

(कबीर की साखियाँ)

यह तो रही भक्तिकालीन साहित्य की बात, इसके बाद यदि हम रीतिकालीन साहित्य की बात करें तो यह साहित्य स्त्रियों के संदर्भ में बदनाम है ही। इस काल में स्त्री को भोग की वस्तु और कामिनी के अतिरिक्त कुछ समझा ही नहीं गया। यह काल स्त्रियों के लिए अभिशप्त ही रहा है। इस काल के सम्पूर्ण साहित्य में श्रृंगारिकता ही प्रमुख रही है।

आधुनिक काल में स्त्रियों की वेदना को आवाज मिली और साहित्य में स्त्री विमर्श का नया अध्याय जुड़ गया। छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा का ''श्रृंखला की कड़ियाँ'' नामक निबंध संग्रह प्रकाशित हुआ जिसमें स्त्री जीवन की अनेक पहलुओं पर निबंध लिखा गया। यह आधुनिक काल में स्त्री विमर्श पर पहला प्रयास कहा जा सकता है। महादेवी वर्मा ने अपने इस

पुस्तक में कहा है ''भारतीय नारी जिस दिन अपने सम्पूर्ण प्राण–आवेग से जाग सके, उस दिन उसकी गति रोकना किसी के लिए सम्भव नहीं।'' महादेवी वर्मा के अलावा जयशंकर प्रसाद ने ''नारी तुम केवल श्रद्धा हा'' कहकर नारी को प्रेम, ममता, त्याग और कोमलता की प्रतिमूर्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया तो वही रामधारी सिंह दिनकर ने ''एक नही दो– दो मात्राएं, नर से भारी नारी'' कहकर नारी को नर से भी श्रेष्ठ स्थान प्रदान किया। सुशीला टाकभौरे का काव्य संग्रह ''स्वातिबूंद और खारे मोती'' तथा यह तुम भी जानों में स्त्री जीवन के यथार्थ का चित्रण हुआ है। इनकी कविताओं में आक्रोश स्पस्ट दिखाई पड़ता है–

''मां –बाप ने पैदा किया था गूंगा
परिवेश ने लंगड़ा बना दिया।''

सुशीला टाकभौरे की यह कविता तत्कालीन समाज में स्त्रियों की दशा का यथार्थ चित्रण करती है। मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, शिवानी, मैत्रेयी पुष्पा अनामिका इत्यादि रचनाकारों ने भी स्त्री जीवन की पीड़ाओं को अपने साहित्य का मुख्य विषय बनाया है।

वर्तमान साहित्य में स्त्रियों की ''आह'' को अभिव्यक्ति तो मिल गई परन्तु समाज में स्त्री अभी भी पूरी तरह स्वतंत्र नही हो पायी है। भले ही आज उनको कागजों में सभी अधिकार प्राप्त हो गए हो फिर भी जमीनी हकीकत तो कुछ और ही है, अभी भी स्त्रियों को पुरुषवादी मानसिकता एवं बर्बरता का शिकार होना पड़ रहा है। जैसे–जैसे यह समाज आगे बढ़ता जा रहा है इन पर होने वाले अत्याचारों के स्वरूप भी बदलते जा रहे हैं। आज इतने कानून और दंड के प्रावधान होने के बावजूद बलात्कार, एसिड अटैक, जिंदा जलाने जैसे घिनौने अपराधों की संख्या बढ़ते जा रही है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के नवीनतम आंकड़ों से सामने आई है। एनसीआरबी के आंकड़ों के मुताबिक, साल 2017 में महिलाओं के खिलाफ अपराध के 3 लाख 59 हजार आठ सौ उनचास मामले दर्ज किए गए हैं। इससे पहले 2015 में महिलाओं के खिलाफ अपराध के 3.29 लाख और 2016 में 3.38 लाख मामले दर्ज किए गए थे।के आंकड़े यह दर्शाती है कि हमारा यह देश उन्नति की ओर अग्रसर है या अवनति की ओर।थॉमसन रॉयटर्स फाउंडेशन (लंदन) के 550 सदस्यों की टीम ने अपने सर्वे में बताया है कि पूरी दुनिया में भारत महिलाओं के लिए सबसे खतरनाक और

असुरक्षित देश है। जहां कहा जाता है, ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमयन्ते तत्र देवता'' वहीं नारियों की यह दुर्दशा हो रही है इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या हो सकता है।

lgk;d xzFk&

1. शृंखला की कड़ियाँ (महादेवी वर्मा)
2. नारीवाद(राधा कुमार)
3 रामचरित मानस (तुलसीदास)
4. अन्य लेख एवं रिपोर्ट्स

■■

Hkkjrh; xkeh.k efgykvksa dh vfLerk

pj.knkl ceu
सहायक प्राध्यापक–हिन्दी
शासकीय नवीन महाविद्यालय चन्द्रपुर
जिला–जांजगीर चांपा (छ.ग.)

किसी भी जाति या प्रदेश की सभ्यता व संस्कृति के अभिज्ञान के लिए वहां के इतिहास का ज्ञान आवश्यक होता है। किसी प्रदेश के जनसमूह में महिला और पुरुष दो वर्ग होते हैं। किन्तु प्रख्यात समाजशास्त्री कार्ल मार्क्स के अनुसार महिलाओं का कोई वर्ग नहीं होता।''नारी जन्मती नहीं बनायी जाती है।''[1] जो समाज के सांस्कृतिक चेहरे का दर्पण होती है। किसी देश के महिलाओं का जीवन उन्मुक्त है तो वहां का समाज भी एक उन्मुक्त और विकसित समाज समझा जाता है। महिलाओं का यातनामय सफर उसी समय से शुरु हो चुका था, जब उसे गोद में बिठाकर खिलाने और स्नेह की सहजता से कुछ लोगों के मन में मानवता की गरिमा लांघने तक की गदंगी सोच बन जाती है। भारतीय महिलाओं की ऐतिहासिक स्थिति कुछ ऐसे ही बयां करती है। उनकी गाथा तो अकथनीय और अवर्णिय है। प्राचीनकाल में महिलाएं शास्त्रार्थ मर्मज्ञ और पूजनीया थीं। महिलाओं को घर के बाहर आने–जाने घूमने पर प्रतिबंध नहीं था। मध्यकाल में इन्हे सम्पत्ति और शिक्षा जैसे मूल अधिकार से वंचित कर केवल पति का आज्ञा पालन तक सीमित दायरे में रख निम्न स्तरीय जीवन जीने के लिए मजबूर किया गया। अंग्रेजी शासनकाल में अनेक समाज सुधारकों द्वारा महिलाओं को समाज में अधिकार दिलाने तथा उनके शिक्षा के प्रचार–प्रसार पर जोर दिया गया। स्वतंत्र भारत में संवैधानिक और सामाजिक दृष्टि से महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया जाने लगा। सदियां बीती बहुत कुछ बदला लेकिन महिलाओं का अपेक्षित सुधार न होने से इनकी समस्याएं यथावत दिखाई पडता है, जैसे–गांवो में महिलाओं की स्थिति, उनकी सुरक्षा, महिलाओं की अशिक्षा और शोषण, कन्या भ्रूण हत्या की बढ़ती घटनाएं, बलात्कार, छेड़कानी, अश्लील हरकतें, महिलाओं के खिलाफ बढ़ती अपराध, मादक द्रव्य व्यसन, दहेज के लिए खुदखुशी, प्यार के नाम पर गलाकाट प्रवृत्ति, चंद नोटो के

खातिर अपहरण, हवस की मंड़ी में बेचना, अश्लील फिल्म बनाकर ब्लेकमेल करना, तेजाब फेंककर नारी जीवन को नारकीय बनाना, नारी को भोग की वस्तु समझना, खाप पंचायतों द्वारा नारी को दोयम दर्जा देना तथा कदम–कदम पर अत्याचार करना और अपराधियों का खुला घुमना। तमाम संवैधानिक कानून के बावजूद महिलाओं को इच्छित पद और सम्मान न मिलना आदि।

छोटी–छोटी मानव बस्तियों को गांव कहते हैं, और निवासी को ग्रामीण। गांव की जनसंख्या कुछ सौ से लेकर कुछ हजार के बीच होती है। प्रायः गांवों के लोग परम्परागत काम करते है। गांवों में घर बहुत पास–पास व अव्यवस्ति होते हैं जहां शहरों की अपेक्षा कम सुविधाएं होती हैं। भारत की 70 प्रतिशत आबादी गांवों में रहती है। अतः ग्रामीण क्षेत्रों की हालत ही हमारे देश का वास्तविक प्रतिबिम्ब है। भारत की जनसंख्या लगभग एक सौ पच्चीस करोड में से 51.3 प्रतिशत पुरुष और 48.7 प्रतिशत महिलाओं की संख्या है। जिसमें ग्रामीण जनसंख्या प्रतिशत 68.8 है। उस ग्रामीण जनसंख्या में महिलाओं की संख्या लगभग 48 प्रतिशत रही है। भारत में संवैधानिक और सामाजिक दृष्टि से महिला को आत्मनिर्भर बनाया जा रहा है। फिर तमाम कानून और महिला सशक्तिकरण के बावजूद महिलाओं के उम्मीदों को रौंदा जा रहा है क्यों ? आज भी उनकी समस्याओं का पिटारा यथावत क्यों है? उनके कारण निम्न को आधार बनाया जा सकता है।

1- 0;fDrxr dkj.k %& भारत में ग्रामीण महिलाएं विकास की मुख्यधारा से दूर जिंदगी को संवारने के लिए संघर्षशील है। उन्हे बुनियादी आवश्यकता रोटी, कपड़ा और मकान के अलावा शिक्षा, स्वास्थ्य, भूमि मालिकाना हक तथा बेराजगारी जैसे समस्याओं से निजाद कब मिलेगा? परिवार और समाज में उन्हे पूर्ण स्वतंत्रता कब दिया जाएगा? उनकी सुरक्षा करना किसकी जिम्मेदारी है? उन पर चारित्रिक कलंक की दाग कब मिटेगा? आदि यक्ष प्रष्न का जब तक पूरा जबाव नहीं मिल जाता तब तक केवल समस्याओं को गिनाना औचित्यपूर्ण नहीं है।

u'kk lou%& आदिम जमाने में दारू को रोग उपचार के रुप में सेवन किया करते थे।''13वीं सदीं में अंग्रेजी शब्द 'वाइन' का प्रयोग पेट को ठीक करने के लिए होता था।''[2] तब से लेकर आम जनता भी नशा सेवन करने लगा है। परिणाम यह कि नशाखोरी तेजी से बढ़ रही है। अशिक्षा के कारण ग्रामीण महिलाएं भी मदिरापान करती हैं। वर्तमान समय की सषक्त महिलाएं महत्वकांक्षाओं की पूर्ति के लिए तनावग्रस्त होती जा रही हैं। फलस्वरुप

तनाव को दूर करने के लिए नशा सेवन की ओर अग्रसर होती जा रहीं है। पुरुष प्रधान समाज में पुरुष द्वारा उधारी लिया जाता है, और उसके बदले में बंधवा मजदूरी करने के लिए महिला को भेजा जाता है। ऐसी स्थिति में महिलाओं को प्रताड़ित करना, सताना, ताना मारना, आम बात है। परिवार में जिल्लत की जिंदगी जीने को मजबूर महिला धीरे–धीरे अपना आत्म संयम खोने लगती है। और वह इसलिए नशापान करने लगती है कि कुछ समय के लिए सारे गमों को भुला सके। जो घर, परिवार और समाज के लिए घातक है, क्योंकि नशा नाश का जड़ है।

2- ikfjokfjd dkj.k %& भारतीय समाज में पारिवारिक संबंध जीवन मूल्यों पर आधारित रहा है। भारत में संयुक्त परिवार होते थे। जिसमें महिलाओं की अहम भूमिका होती थी। पराम्परागत संयुक्त परिवार में पति–पत्नी स्वच्छन्तापूर्वक नहीं मिल पाते हैं जिससे मानसिक तनाव बढ़ता है। ऐसी स्थिति में पति अपने पत्नी को धिक्कारता है। महिला द्वारा विरोध जताने पर शारीरिक और मानसिक प्रताड़ित किया जाता है। ग्रामीण परिवारों में आधुनिकता का प्रभाव होने से पारिवारिक विघटन की समस्या दिखाई देती है। पारिवारिक संरचना का मेरुदण्ड महिला को कहा जाता है। ग्रामीण महिलाओं की पैर घर आंगन की बेड़ियों में बंधी हुई हैं। घर की चारदीवारी ही उनकी दुनियां मानी जाती है। ''ग्रामीण महिलाओं की निद्रा मुर्गे की बांग से टूटती है। वे ढेकी के द्वारा धान को चावल में बदलने, घर की चक्की से पिसाई करने का कठिन श्रम भी करती हैं।''[3] सारे घरेलु काम काज करने के साथ–साथ पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करती हैं। परन्तु घर में उनके समर्पण को मेहनत के रुप में नहीं देखा जाता है। गरीब श्रमजीवी ग्रामीण महिलाएं अथक मेहनत कर परिवार का भरण पोषण करती हैं, लेकिन उन्हें उचित सम्मान नही दिया जाता। ग्रामीण भारत की महिलाएं अपने जागृत जीवन का एक तिहाई हिस्सा पानी लाने, ईंधन और चारा इकठ्ठा करने में खर्च करती हैं। माताएं हर पीड़ा को सह कर औलाद को बढ़ाती हैं, किन्तु वही बच्चे बुढ़ापे में दूर रखता है। स्वतंत्र भारत में कागजी विकास के परिणाम ग्रामीणांचल की महिलाओं में देखने को मिलता है। इनके लिए बनाया जाने वाला शौचालय और स्नानागार केवल गृह शोभा बनकर रह गया है। राष्ट्रीय औसत का सबसे निम्न जीवन स्तर ग्रामीण महिलाओं की स्थिति अधिक चिन्ताजनक है।

fyx&Hkn & जब हम ग्रामीण महिलाओं की बात करते हैं तो पाते हैं कि सामाजिक स्तरीकरण में लिंग–भेद का न तो कोई सार्वभौमिक कारण है और न ही महत्वपूर्ण परिस्थितियॉ लिंग–भेद पर आधारित है। ग्रामीण महिलाओं की स्थिति इस तथ्य से समझ सकते हैं कि उन्हे सामाजिक सहभागिता के अवसर किस सीमा तक प्राप्त होते हैं। वैवाहिक निर्णय में उन्हें कितनी स्वतंत्रता प्राप्त है। आर्थिक क्रियाओं एवं शैक्षणिक जीवन में उनका कितना योगदान है। भारत में पितृसत्तात्मक परिवार प्रचलन में होने से परिवार के धन पर सिर्फ पुरुष का अधिकार होता है महिलाओं का नहीं।

3- lkekftd dkj.k %& ग्रामीण महिलाओं में सामाजिक समस्या का केन्द्र बिन्दु बाह्य सम्पर्क और आधुनिकीकरण के परिणाम का प्रतिफल है। भारत में अनेक धर्म और संस्कृति के लोगों का आगमन हुआ। जिसके कारण महिलाओं पर कुदृष्टि रखते थे। वर्तमान में वही परम्परा शहरी लोगों द्वारा अपनाया जाता है। ग्रामीण महिलाएं शहरी झांसा में आकर अपने को सम्हाल नहीं पाती जो समस्या बनकर रह जाती है। सामाजिक जीवन में कदम–कदम पर शोषण से मुक्ति की गुहार लगाने के बावजूद उन्हें वाछिंत स्थान और सम्मान के लिए जुझना पड़ रहा है। समाज में महिलाओं को कलंकणी कहकर अनादर किया जाता रहा है। ग्रामीणांचल में गरीबी के कारण अनेक गरीब कन्याएं अविवाहित रह जाती हैं।

Ckkyfookg& भारत में बाल विवाह परम्परागत रुप से प्रचलित रही है, और यह प्रथा आज भी जारी है। दुर्गम पिछड़ी क्षेत्रों एवं शिक्षा से कोसों दूर रहने वाले इलाकों में आज भी बालविवाह कर दिया जाता है। ''यूनिसेफ की ''स्टेट ऑफ द वर्ल्डस चिल्ड्रेन '' रिपोर्ट के अनुसार 18 साल की वैध उम्र से पहले 47 प्रतिशत भारतीय महिलाओं की शादी कर दी गयी थी जिसमें 56 प्रतिशत महिलाएं ग्रामीण क्षेत्रों से थी।''[4] पुराने जमाने में बाल विधवाओं को एक बेहद यातनापूर्ण जिंदगी जीने, सर मुड़वाने, अलग–थलग रहने और समाज में बहिष्कृत करने का दण्ड दिया जाता था। किन्तु आज भी अशिक्षित परिवार और रूढ़ीवादी समाज में विधवाओं को उचित सम्मान न देकर ताना देते हैं और उन्हें विविध बहाने सताते हैं। विधवा और बेमेल विवाह अधिक चिन्ताजनक है। एक ओर समाज में आज भी महिला उत्पीड़न, घरेलु हिंसा, बलात्कार, गरीबी, शोषण, कन्या भ्रूणहत्या, पर्दा प्रथा आदि ने अपनी विनाशलीला मचा रखी है। वहीं दूसरी ओर भारतीय समाज में नारी लम्बे समय से अनके कुप्रथाओं का शिकार होती आ रही हैं, जो बहुत बड़ी समस्या

है।

dU;k Hk.kgR;k& भारतीय पुरुष प्रधान समाज में कन्या भ्रूणहत्या से सामाजिक लिंक विशमता बढ़ रही है। यह समस्या पूंजीवादी व्यवस्था से पैदा होकर धन लोलुपता और दहेज जैसी नासूर कुप्रथा पंथियों की देन माना जाता है। कन्या भ्रूणहत्या से समाज केवल विकलांग श्रद्धा की दौड़ बनकर रह जायेगी।

cykRdkj& बलात्कार एक यौन विकृति है। जिन व्यक्तियों में परपीड़न रति नामक यौन विकृति विद्यमान होती है वही व्यक्ति बलात्कारी हो सकता है। बलात्कार अवसर पाए हुए शिकारी का खूनी खिलवाड़ है। भारत में साल 2012 में निर्भया गैगरेप से लेकर आज तक महिलाओं के साथ दुष्कर्म के मामलों में 290 फीसदी बढ़ोतरी दर्ज की गई है। इस मामले में क्रमशः मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश और महाराष्ट्र अव्वल है। भारत में प्रत्येक मिनट में औसतन तीन बलात्कार के मामले दर्ज कराये जाते हैं। ग्रामीण महिलाओं की स्थिति बद से बदत्तर है जहां न्याय और अन्याय में अन्तर मालूम नहीं है। इसके प्रमुख कारण नशा, पुरुषों की मानसिक दुर्बलता, महिलाओं का कमजोर आत्मविष्वास, मवालियों द्वारा एकान्त का फायदा और लचर कानून व्यवस्था है।

vr tkrh; ;k ize fookg& भारतीय समाज में अशिक्षित और रूढ़ीवादी ग्रामीण जन आज भी अंतर्जातीय विवाह या प्रेम विवाह को महत्व नहीं देते। उनके हाथ का बना भोजन ग्रहण नहीं करते। घर, परिवार और समाज सहर्ष स्वीकार न कर विरोध करते हैं और पृथक छोड़ दिया जाता है। उनके सुख–दुख में हिस्सा लेना मुनासिब नहीं समझा जाता। ''झारखंड के संथाल परगना इलाकों में प्रेम विवाह करने वाले युवक–युवतियों और परिवार को सजा देने के लिए 'बिठलहा' प्रथा चलती है।''[5] कुछ प्रांतों में समाज के ठेकेदार बने पुरुष खौप पंचायत के द्वारा दण्ड दिया जाता है। सभ्य मानव समाज में यह दण्ड देने की परिपाटी किसी समस्या से कम नहीं है।

ngst& भारतीय समाज के लिए दहेज अभिषाप और एक ज्वलंत समस्या है। वर्तमान भौतिकवादी युग में मानव मूल्य अर्थ पर केन्द्रित है। धन लोलुपता की भावना ने महिलाओं पर अत्याचार का तांड़व कर जीवन को दुःखदायी बना दिया है। भेष बदलते स्वार्थी पुरुष और लोभी परिवारजन

बहुओं पर आश्रित होते हैं। मनचाहे दहेज न मिलने पर उसकी स्थिति को विवशता का प्रतीक बना दिया जाता है। जिससे रोजमर्रा की प्रताड़ित जिन्दगी से कुंठित होकर बहुएं अग्नि स्नान कर लेती हैं। भारत में प्रतिवर्ष दहेज के कारण तीस हजार से अधिक मौतें होती है। बिड़बना है कि आज तक दहेज के एक भी मामले में किसी भी व्यक्ति को फांसी या कठोर सजा नहीं हुई है। बल्कि भारतीय संविधान में संशोधन कर दहेज हत्याओं में मृत्युदण्ड़ के प्रावधान को समाप्त कर दिया गया। गरीब ग्रामीण परिवार इस दुष्चक्र में पिसते जा रहे हैं। लोभी प्रवृत्ति के लोग किसी तरह विवाह तो कर लेते हैं, फिर मांग पूरा न होने पर तलाक हो जाता है।

ekuo rLdjh& भारतीय ग्रामीण महिलाओं की एक प्रमुख समस्या मानव तस्करी है। अंग्रेजी शासनकाल में कुछ हद तक भारतीय संस्कृति को बजारीकरण कर महिलाओं को मानव तस्करी का प्रतीक बना दिया गया था। जिसकी अमानुषिकता पर उपचार उचित एवं न्यायिक दृष्टि से नहीं होने के कारण यह घिनौना कार्य जीवंत है। पहले आदिवासी एवं पिछड़े क्षेत्र के ग्रामीण महिलाओं को पर्यटको के मनोरंजन के लिए पेष किया जाता था ताकि वे देख सकें कि पारंपरिक ग्रामीण कैसे रहते हैं। मानव तस्करों द्वारा गरीब बालाओं एवं महिलाओं को अच्छी पगार की लालच, देकर ले जाया जाता है। फिर उसके साथ जो होता है वह सुर्खियां बन जाती है। इन महिलाओं को वेश्यावृत्ति या घरेलु कार्य के लिए मजबूर किया जाता है। शोषित व्यक्ति अज्ञानता के वषीभूत होकर शिकार बनती हैं। मानक जीवन जीने की चाहत, निम्न आर्थिक स्थिति व बेरोजगारी से छुटकारा पाने की लालसा भी एक प्रमुख कारण है। झारखंड, छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश की कई हजार लड़कियां गुम हो चुकी हैं, जिनका कोई अता–पता नहीं है।''योजना आयोग द्वारा 2010 में किये गये अध्ययन से कई चौकाने वाले खुलासा हुए। सुखे के दौरान ग्रामीण बालिकायें बहुत सस्ते बिकीं।''[6] गरीबी और भुखमरी के चलते यह क्रम आज भी जारी है। ''महिलाओं के लिए सबसे खतरनाक माने जाने वाले देशों में सोमालिया (37 प्रतिशत) के बाद भारत की आंकड़ा 25.5 प्रतिशत के साथ दूसरा स्थान पर होना चिन्तनीय है।''[7]

4- lkLdfrd dkj.k %& ग्रामीण महिलाएं पुरानी परम्पराओं और प्रथाओं से आज पर्यन्त चिपके हुए हैं, उन्हे समाज तथा विश्व के बारे में जानकारी नहीं के बराबर है। पिछड़े क्षेत्रों में संचार साधनों तथा आवागमन का अभाव के कारण ग्रामीण महिलाएं खुद का विकास नहीं कर पा रही है।

वे संस्कृति संरक्षण हेतु सतत् प्रयत्न करती रही हैं। उनकी पहनावा, रहन–सहन, रीति–रिवाज, खान–पान अपनी अलग विशेषता लिए हुए होता है। उनका पारिवारिक, सामुदायिक जीवन, लगन, व्यवसाय तथा धार्मिक विषेषताएं भी भिन्न होती है। छत्तीसगढ़ के ग्रामीण महिलाओं की सांस्कृतिक जीवन में प्राचीनतम अवशेष प्रत्यक्ष उदाहरण है। ग्रामीण महिलाएं धर्म, जादू, पूजा–पाठ, झाड़–फूक, देवी–देवता जैसे अंधविश्वास को मानती हैं।

5 /kkfeid dkj.k %& भारत में धर्मग्रंथों की दुहाई दिया जाता है। धर्मशास्त्र काल में सतीप्रथा को पत्नी का नैतिक कर्तव्य माना गया। महिलाओं के अधिकार छिन लिए गए। जो महिलाओं के संदर्भ में न्यायोचित नहीं है। पौराणिक काल के बारे में उमेश गुप्ता ने स्त्रियो की स्थिति में लिखा है–धर्मशास्त्र काल में नारी का बुरा युग प्रारंभ हुआ। उसे विद्वानों ने नीच, स्वभाव से मूर्ख, बेवकूफ, नरक के फाटक और अमृत के भेष में जहर बताते हुए अन्धविश्वास, अन्धश्रद्धा, कुप्रथा के दलदल में धकेल दिया। जहां समाज में पैरों की जूती, ढोर, गंवार, शुद्र, पशु बना दिया। डॉ. भीमराव अम्बेडकर हिन्दू महिलाओं के उत्थान और पतन में लिखते हैं–महिलाओं को भोग्य वस्तु समझकर अमीर, पुजारी, व्यापारी और जमींदार उसका शारीरिक शोषण करते थे। प्राचीन परम्परा की रेख वर्तमान में भी जीवित है।

6- vkfFkd dkj.k%& जिसके पास ज्ञान होता है, उसके पास आर्थिक समृद्धि होती है। भारत की 70 प्रतिशत आबादी गांवों में रहती है। राष्ट्रीय जनगणना 2011 के अनुसार भारत की कुल ग्रामीण जनसंख्या 68.8 प्रतिशत है। जिसमें से महिलाओं की संख्या लगभग 48 प्रतिशत है। भारत में कुल 24.39 करोड़ परिवार में से 17.91 करोड़ परिवार गांवों में निवास करते हैं। आर्थिक दृष्टि से गरीब वर्ग विपन्नता की जिंदगी जीने को मजबूर हैं, जिसकी पहचान गरीबी और भूखमरी है। अधिकांश ग्रामीण परिवार के लोग खेती और मजदूरी कर जीवकोपार्जन करते हैं। ग्रामीण महिलाएं मूलतः कृषि पर निर्भर हैं। जिनकी दैनिक मजदूरी अतिअल्प होते हुए भी दिन–रात अपनी ऊर्जाशक्ति खपाती रहती हैं। पुरुष द्वारा कर्ज लेने की प्रवृत्ति के कारण ग्रामीण महिलाओं की स्थिति पर विपरीत प्रभाव पड़ा है। उन्हें परिवार के अन्य सदस्यों के साथ बंधुआ मजदूरी करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। ऐसे लाचार महिलाओं पर गिद्ध दृष्टि रखने वाले अमीर और कापुरुष उनकी मजबूरी का नाजायज फायदा उठाते हुए शारीरिक शोषण के लिए प्रेरित करता है। वर्तमान में अशिक्षित ललनाओं और महिलाओं को उचित रकम का

लालच देकर दैहिक शोषण किया जाता रहा है। ग्रामीणांचल में लघु एवं कुटीर उद्योग संबंधी सामान जैसे–टोकरी बनाना, चटाई बनाना, बांस तथा लकड़ी के दस्तकारी, मिट्टी के बर्तन एवं खिलौने बनाना प्रायः बंद हो गई है, जिससे ग्रामीण महिलाएं बेराजगारी का दंत झेलने से अच्छा पलायन करना उचित समझती हैं। ग्रामीण महिलाएं कभी रोजगार की तलाष में और किसी प्रलोभन में आकर शहरों की ओर पलायन कर रही हैं, जो भविष्य में एक गहरे संकट का संकेत है। जब श्रमजीवी महिलाएं कार्य करने घर से निकलती हैं तो राह चलते रक्त पिपासु लोग घुरने लगते है। छिंटाकसी, उलाहना और यौन प्रेरित बातें करने लगते हैं।दफ्तरों में मालिक द्वारा मानसिक वेदना दिया जाता है। ग्रामीणांचलों में श्रमजीवी महिलाओं को पुरुषों के साथ समान कार्य कराया जाता है किन्तु वास्तविक समान मजदूरी नहीं दिया जाता ।

7- 'kf{kd dkj.k %& शिक्षा के बिना मनुष्य का अस्तित्व अधूरा है। शिक्षा ही एक मात्र ऐसा आधार स्तम्भ है जिस पर मनुष्य की सभी सफलताएं निर्भर है। शिक्षा से ज्ञान का संचार होता है जो व्यक्ति को गरीबी और शोषण से बचाता है। प्रगतिशील समाज की अंधाधुंध दौड़ में ग्रामीण महिलाओं को शिक्षा ग्रहण कर अपने अधिकारों के प्रति जागरुक होने की आवश्यकता है। भारतीय ग्रामीण महिलाओं में शिक्षा के उद्देश्य के प्रति जानकारी का अभाव है। राष्ट्रीय जनगणना 2011 के अनुसार भारत की महिला साक्षरता 64.6 प्रतिशत है। जिसमें ग्रामीण महिला साक्षरता लगभग 57 प्रतिशत है। अधिकांश भारतीय गांवों की भौगोलिक असुविधा और आर्थिक स्थिति सुदृढ़ न होने के कारण शैक्षिक व्यवस्था ठीक नहीं है। ग्रामीणांचल की महिलाएं अभाव से जुझती और रूढ़ियों में जकड़ी है। पग–पग मे उनकी अस्मिता को लूटा जा रहा है। ग्रामीण जन रूढ़ियों और परम्पराओं को महत्व देते हुए लड़कियों की पढ़ाई बीच में ही छुड़ा देते हैं। जिससे ग्रामीण महिला साक्षरता दर सबसे नीचे गिरी हुई है। ''ग्रामीण जनजातियों की शिक्षा–दीक्षा बिल्कुल नगण्य और खस्ताहाल है, क्योंकि उनकों शिक्षा के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाता। वास्तविकता यह है कि जिनको शिक्षा की जरुरत है वे आज भी इसके महत्व से अनभिज्ञ हैं।''[8] ग्रामीण क्षेत्रों में शिशु सुविधाओं की कमी, स्कूलों की दूरी, शिक्षित होने पर संस्कृति का तिरस्कार करना, व्यावसायिक शिक्षा का अभाव, बेराजगारी से उदासीनता बढ़ना आदि कारण शिक्षा के विकास में अवरोध है। ग्रामीण महिलाएं गरीबी, भ्रष्टाचार, पिछड़ेपन और

अल्प साक्षरता के दुष्परिणामों से ग्रसित हैं। उन्हें पढ़ने एवं लिखने का अवसर नहीं मिल पाता है।

8- jktuhfrd ncko %& भारत में राजनीतिक हावी इतनी बढ़ गई है कि महिला संबंधी वास्तविक मामलों की सही आंकड़े शासन–प्रशासन तक पहुंचती ही नही है। जब सत्ताधारी के सेवक किसी मामले में फुस जाते हैं तो राजनीतिक दबाव डालते हुए आरोपी को जमानत पर छुड़ा लिया जाता है। राजनीतिक संरक्षण मिलने से आरोपी का मनोबल अधिक बढ़ जाता है। राजनयिक महिलाओं को घूंघट से बाहर नहीं किलने देना चाहते हैं।महिलाओं की तरक्की के लिए महिला आरक्षण दिये गये हैं। किन्तु उसका लाभ पुरुष लेता है। महिला जन प्रतिनिधि जब अपने अधिकार का प्रयोग करती है तो उन पर दबाव डाला जाता है कि पुरुष वर्ग जो कहे वह वैसा ही करे, अन्यथा उसे बदनाम कर दिया जायेगा। ग्रामीण क्षेत्रों में यह विसंगति अधिक देखने को मिलती है। भारत में ग्रामीण महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी पुरुष से बहुत कम है। शिक्षा जैसे क्षेत्र में राजनीति का बेजा दखल होने से छात्रावास की युवतियां शोषण का शिकार हो रही हैं।

9- LokLF; ,oa ik"k.k %& भारतीय गांवों में स्वास्थ्य सेवा न्यून है। दुर्गम क्षेत्रों में स्वास्थ्य के आभाव के कारण अधिकतर ग्रामीण महिलाएं छोटी–मोटी बीमारी या संक्रामक रोगों से अकाल मृत्यु हो जाती है। दूरदराज क्षेत्रों तक चिकित्सक जाना नहीं चाहते हैं। पहाड़ी क्षेत्रों में ग्रामीण अंधविष्वासी महिलाएं स्थानीय वैद्य या झाड़–फूंक करने वाले तांत्रिक के पास जाते हैं, जिससे बीमारी का निदान नही होता। छत्तीसगढ़ के बलरामपुर जिले में 96 गांवों के बीच एक डॉक्टर है। बाकी प्राथमिक चिकित्सा परिचारक और दफ्तरियों के हवाले है। आज भी ग्रामीण महिलाओं को मलेरिया, पीलिया, पेट या गुप्त रोग आदि के इलाज के लिए कोसों दूर पैदल चलकर जाता पड़ता है। वहां भी दर–दर की ठोकरें खाने तथा गरीबी के कारण धन अभाव में मौत हो जाती है। एक आंकड़े के अनुसार केवल (लगभग) 18 प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं को स्वास्थ्य सेवा का लाभ मिल पाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में पौष्टिक आहार के अभाव से कुपोषित बच्चे जन्म लेते हैं। कम वजन वाले बच्चों का राष्ट्रीय औसत 54 प्रतिशत है। ग्रामीण महिलाओं की वास्तविक स्थिति एक हद तक साफ करती है कि उन्हें संतुलित आहार न मिलने और बिटामीन की कमी के कारण रुग्णता अधिक

होती है। महिला और शिशु कुपोषणः मृत्युदर सरकार तक सही आंकड़े नहीं पहुंच पाना भी सबसे बड़ी समस्या है। भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में औसत महिलाओं के पास अपनी प्रजनन क्षमता पर सुविधा नही होने से नियंत्रण नहीं होता है। गर्भनिरोध के सुरक्षित एवं आत्म नियंत्रित तरीके आज तक उपलब्ध नहीं होते हैं।

10 cjkt xkjh %& ''भारत में कुल महिला आबादी का मात्र 27 प्रतिशत महिलाएं नौकरी में, 36.9 प्रतिशत मजदूरी में और 23.4 प्रतिशत व्यवसाय के कार्यों में सम्बद्व हैं।''[9] ग्रामीण भारत में कामकाजी महिलाओं की हिस्सेदारी मात्र 30 प्रतिशत के करीब रह गई है। गरीबी रेखा के नीचे जीवन यावन करने वाली ग्रामीण महिलाएं लगभग 36 प्रतिशत हैं। ग्रामीण विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा न होने, परम्परागत कला उपेक्षित होने, सरकारी और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में हजारों बैकलाग पद रिक्त होने बावजूद रोजगार मुहैया न कराने के कारण ग्रामीण महिलाएं नौकरी के तलाश में दर–दर भटक रहीं हैं। बेरोजगारी के कारण ग्रामीण महिला पलायन सामाजिक, आर्थिक स्थिति को स्पष्ट प्रभावित करता है। ''महिला सशक्तिकरण की चाहे कितनी ही बातें की जाए लेकिन हकीकत यह है कि उनके साथ दोयम दर्जे का बर्ताव बदस्तूर बरकरार है।''[10]

11- vf/kdkj dk n#i;ksx& भारत में अधिकारोन्मुखी नारिया हर काल, हर समाज में रहीं हैं। अब तक की स्थिति ने महिलाओं को दोयम दर्जे की नागरिकता दे रखी है। वर्तमान में महिलाओं पर अत्यधिक कार्य भार लरदर जर रहा है। घर–गृहस्थी के काम से लेकर बाहरी कार्य कराये जा रहे हैं। घर में पुरुष वर्ग अधिकार पूर्वक सताता है, वहीं कामकाजी महिलाओं को दफ्तर में अधिकारी अपने अधिकार का धौंस देकर उनकी शोषण करने से नहीं चुकते। अधिकार प्राप्त व्यक्ति द्वारा इतना दबाव डाला जाता है कि युवतियां या महिलाएं गलत कदम उठा लेती हैं।

12 ik'pkR; lLdfr dk izHkko& पाश्चात्य सभ्यता के संक्रमण के कारण नारी जीवन में बदलाव देखा जा सकता है। संचार माध्यमों में सैक्स और हिंसा का खुला प्रदर्षन परोसा जा रहा है। मॉडलिग, एक्टिंग और डासिंग के नाम पर नारी अंग प्रदर्षन, टी.वी. पर संशय चरित्र तथा अंधनंगे पोस्टर से पवित्रता क्षीण होते जा रहा है। देखा सिखी की संस्कृति में भ्रूण हत्या कराना आम बात हो गई है। माताएं अपने नवजात शिशुओं को स्तनपान भी नहीं कराना चाहती है। सरोगेटर मदर यानि किराये पर कोख

देने वाली माता बनना नया व्यवसाय है। लिव–इन–रिलेशनशीप का दौर महिलाओं की अस्मिता को प्रभावित कर रही है। आजकल कला के बदले रेव पार्टी प्रचलन में है। जो सामाजिक रुप से महिला के लिए समस्या बन गई है जिसमें केवल स्वच्छन्दता का चलन है।

प्राचीनकाल में जहां नारी की पूजा होती थी वहां लक्ष्मी निवास करती थी किन्तु वही अपमान और बदनाम हो रहीं है। आश्रमों में रहने वाले माठाधीशों के द्वारा शारीरिक शोषण करने से महिलाओं में नैराष्य देखा गया। वर्तमान में महिला हितार्थ अनेक योजनाएं संचालित किये जा रहे हैं परन्तु ग्रामीण स्तर तक लाभ नहीं पहुच पाना चिन्ता का विषय है। संयुक्त राष्ट्र संध ने 15 अक्टूबर को ग्रामीण महिलाओं का अंतर्राष्ट्रीय दिवस घोषित किया है। भारत एवं राज्य सरकारो द्वारा भी महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देते हुए आत्मनिर्भर बनाने के भरसक प्रयास किये जा रहे हैं किन्तु उनके विकास की अनंत संभावनाएं और पराधीनता बना देने की साजिस के द्वन्द्व से जब तक उबारा नही जायेगा, तब तक सब थोथा है। ग्रामीण शिक्षित महिलाएं की प्रतिभा कभी सफल होती है, तो कभी पराधीनता स्वीकार करने के लिए विवश होती है। उन्हें प्रत्येक क्षेत्र में समानता और स्वतंत्रता देकर यथोचित सम्मान देना होगा तभी राष्ट्र का विकास संभव है।

lanHk%&

1. गुंजन मिश्रा–आदिवासी महिलाओं का आर्थिक एवं शैक्षणिक स्तर आलेख से।
2. नशा नाश का जड़ पत्र आलेख से
3. महिलाओं की समस्या, समाधान और विकास पृ. 27
4. ग्रामीण महिलाओं की समस्याएं
5. ग्रामीण जनजातियों की समस्या आलेख से
6. भारत में महिला अत्याचार आलेख से
7. पर्त आलेख से
8. ग्रामीण जनजातियों की समस्या आलेख से
9. भारत की जनगणना से
10. कामकाजी महिलाः एक विमर्श आलेख से

■■

orleku lekftd ifjn`';
,o ukjh vfLerk

Mk- ch-,u- tkx'r — शोध निदेशिका, सहायक प्राध्यापक, शास. दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगाँव

fcUnq Mu lsuk — शोध छात्रा

''नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास
रजत नग पग तल में, पीयूष स्त्रोत
सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।। [1]

– जयशंकर प्रसाद

नारी ईश्वर की सबसे सुन्दरतम् रचना है, सृष्टि के संचालन का महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व नारी के कंधों पर है। नारी शक्ति को यदि सृष्टि का मूल कहा जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। यही कारण है कि नारी को आदि शक्ति, भगवती, देवी स्वरूपा माना जाता है।

'' यत्र नारी पूज्यन्ते, रम्यन्ते, तत्र देवता''

जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवताओं का वास होता है।

''बिन घरनी घर भूत का डेरा''

बिना नारी वाले घर को भूतों का डेरा कहा गया है। भारतीय वैदिक काल में स्त्री और पुरूषो की स्थितियों में समानता थी। नारी का स्थान सम्मानीय था। धार्मिक कर्मकाण्डों में स्त्रियों का महत्व था। उत्तर वैदिक काल में बौद्ध धम व जैन धर्म प्रभाव के समय स्त्रियों को सम्मानपूर्ण दृष्टि से देखा जाता था। धीरे – धीरे धर्म का ह्रास हो लगा, तो महिलाओं की स्थिति में गिरावट आने लगी। ''मनुस्मृति'' में स्त्रियों के वेद, पढ़ने व यज्ञ करने पर प्रतिबंध लगाया गया। मुगलों ने भारतीय समाज को बहुत प्रभावित किया। धर्म और संस्कृति का आड़ लेकर स्त्रियों पर बहुत सारे निषेध लगाये गये और स्त्रियों को दोयम दर्जे का समझा गया। ब्रिटिशकाल में समाजिक सुधार आंदोलनों व ब्रम्ह समाज, प्रार्थना समाज, आर्यसमाज, थियोसोफिकल सोसायटी जैसी संस्थाओं के कारण स्त्रियों की दशा में थोड़ा सा सुधार

आया।

रीतिकालीन कवियों ने तो नारी को विलास की वस्तु और उपभोग की समाग्री मात्र माना जबकि छायावादी कवियों ने नारी के प्रति उदात्त दृष्टिकोण अपना कर समाज में उसके सम्मानीय स्थान को प्रतिष्ठित किया। नारी को प्रेरणा का पावन उत्स मानते हुये, गरिमा प्रदान की, वह दया, क्षमा, ममता, करूणा, प्रेम की देवी है, और अपने इन गुणों के कारण नारी श्रद्धा की पात्र है। पहले नारी का स्थान घर की चाहरदीवारी तक सीमित थी। लेकिन वर्तमान परिदृश्य में नारी हर क्षेत्र को चुनौती दे रही है। चाहे वह राजनीति का क्षेत्र हो, समाजिक क्षेत्र, चाहे हमारी कोई भी सेना हो वायु सेना, जल सेना, थल सेना या इंडियन आर्मी हो या कॉर्पोरेट जगत, खेल जगत (प्रसिद्ध खिलाड़ी एस.मैरी कॉम, सानिया मिर्जा, सानिया नाहिवाल, बबीता फोगाट, गीता फोगाट, सबा अन्जुम) कला जगत (प्रसिद्ध गायिका लता मंगेशकर, आशा भोसलें और प्रसिद्ध सांसद व अभिनेत्री हेमामालिनी) इस तरह आज की नारी हर क्षेत्र में सफलता पूर्वक दस्तक देते हुये देश की तरक्की में अपना सक्रिय योगदान दे रही है।

''70वें गणतंत्र दिवस के मौके पर राजपथ पर नारी शक्ति का अद्भुत नजारा देखने को मिला, राजपथ पर परेड करने वाले 144 पुरूषों की सैन्य टुकड़ी का नेतृत्व असम रायफल्स की एक महिला अफसर (भावना कस्तुरी) ने की यह हमारे लिये, हमारे देश के लिये और पूरी महिला शक्ति के लिये अत्यन्त गौरव की बात है। महामहिम राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल से लेकर कल्पना चावला तक विभिन्न क्षेत्रों में नारियों ने सफलता प्राप्त की है।'

किन्तु नारी के प्रति समाज में पल रहे घृणित सोच कुत्सित मानसिकता वाले लोग नारी को मात्र उपभोग की वस्तु मानकर अपनी वासना का शिकार बनाते रहते है। हमारा भारत वर्ष जो विश्व में अपनी संस्कारों से जाना जाता है। आज आये दिन यहाँ नारी पर तेजाबी हमला (एसिड अटैक) घरेलू हिंसा, लिंग परीक्षण व भ्रूण हत्या कार्यस्थल पर महिलाओं यौन शोषण, निर्भया कांड आसिफा कांड हाल में ही दिल दहला देने वाली हैदराबाद की डॉ. प्रियंका रेड्डी सामूहिक दुष्कर्म और हत्या कांड में देश को झंकझोर कर रख दिया है। एसिड अटैक सुनने व बोलने में कितना साधारण सा लगता है, लेकिन जो महिला उससे पीड़ित है, उसकी क्या पीड़ा है, क्या किसी का चेहरा बिगाड़ देने से आपको सुकुन मिलता है, या समाज को सुकुन

मिलता है। ऐसी घटनाओं ने मानव समाज को सोचने पर मजबूर कर दिया है, कि नारी आज कहाँ सुरक्षित है? क्या हमारा समाज नारी जाती पर हो रहे असंवेदनशील, अमानवीय कृत्य पर मूकदर्शक की भांति तमाशबीन बना हुआ है? मानव संस्कृति को शर्मसार करती घटनाओं पर कैडिंल मार्च निकाल व शोक व्यक्त कर अपनी जिम्मेदारियों से पल्ला झाड़ लेता है।

बलत्कार की यह पहली घटना नहीं है, वरन् इससे पहले भी नारी जाति पर गंभीर अपराध हुये है। स्त्रियों के प्रति हो रहे, इस प्रकार की अमानवीय घटनायें हमारे सुसंस्कृत व सभ्य समाज पर तमाचा नहीं है? यह वही भारतवर्ष है, जहाँ झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, रानी दुर्गावती जैसी वीरांगनाओं ने शस्त्र–शास्त्र के ज्ञान से संपन्न युद्ध में हथियार लेकर लड़ती रही, और अपनी वीरता व कुशल बृद्धि का प्रदर्शन किया है। जहाँ आज नारी की यह दशा है। हालाकि केन्द्र व राज्य सरकार ने महिलाओं के प्रति हो रहे अपराधों के विरूद्ध सुरक्षा प्रदान करने तथा आर्थिक व समाजिक दशाओं में सुधार करने हेतु कानून बनाये है। जिनमें दहेज प्रथा प्रतिषेध अधि ानियम 1961, कुटुंब न्यायालय अधिनियम 1984, गर्भाधारण पूर्व लिंग चयन प्रतिषेध अधिनियम 1994, घरेलू हिंसा 2005, कार्यस्थल पर महिलाओं का लैगिंक उत्पीड़न अधिनियम 2013, राज्य सरकार की देश का पहला वन स्टॉप सेन्टर सखी प्रमुख है। नारी उत्थान व महिला सशक्तिकरण बेटी बचाव बेटी पढ़ाओं को केन्द्रित करके सरकार ने अपनी प्राथमिकताओं में जोड़कर नये आयाम देने का भरसक प्रयास किया है। पर सरकार के इतने प्रयास प्रर्याप्त नहीं कहे जा सकते क्योंकि इन प्रयासों के बावजूद वर्तमान समाज में नारी वह स्थान प्राप्त नहीं कर सकी है जहाँ उसे होना चाहिये। ऐसे जघन्य कृत्य करने वाले लोगों को न तो कानून का भय है, न सजा का डर, इसीलिये महिलाओं के प्रति हो रहे अपराधो में निरन्तर वृद्धि हो रही है। सरकार कानून तो बनाती है, लेकिन क्या वो कानून जमीनी स्तर पर क्रियान्वित हो पाते है?

16 दिसम्बर 2012 का निर्भया कांड जिसके दोषियों को आज तक सजा नहीं मिल पाई है, न्याय में विलंब के कारण महिलाओं में हताशा की स्थिति निर्मित होती है। और जो माता–पिता है वे भी लड़कियों के प्रति असुरक्षा महसूस करते हुये चाह कर भी उन्हें आजादी नहीं दे पाते है।

आजकल दुकानों में आसानी से अश्लील विडियों डाउनलोड बहुत सस्ते दर में हो जाते है, उन पर प्रतिबंध लगाना चाहिए। एसिड की खुलेआम बिक्री पर प्रतिबंध होना चाहिए। पीड़ित महिलाओं को न्याय प्रदान करने हेतु फास्ट ट्रैक कोर्ट की संख्या बढ़ाई जाये। चाहे लड़की हो या लड़का दोनों की समानता से परवरिश किया जाए। केन्द्र व राज्य और समाज के सहयोगात्मक प्रयास से नारी सुरक्षित और उचित सम्मान प्राप्त कर सकती है, समाज को नारी के प्रति अपना दृष्टिकोण बदलना होगा, नारी कोई वस्तु नहीं है वह व्यक्ति है, उसकी स्वतंत्र पहचान है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

1. जयशंकर प्रसाद. कामायनी. विक्रम प्रकाशन ई–5/13, कृष्णनगर, दिल्ली–110051, प्रथम संस्करणः 1995 पृष्ठ 58
2. डॉ. ए.के मित्तल. इतिहास. साहित्य भवन पब्लिकेशन्सः आगरा
3. डॉ. नगेन्द्र. हिन्दी साहित्य का इतिहास. मयूर बुक्स 4226/1 अंसारी रोड दरिया गंज, नयी दिल्ली 110002. 66वां संस्करणः अक्टूबर 2018

■■

lkfgR; e ukjh % dy vkj vkt

Mk- Jherh ch- uUnk tkx'r
सहायक प्राध्यापक
शास. दिग्विजय महाविद्यालय
राजनांदगांव छ.ग.

अबला जीवन हाय, तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।।

कहा जाता है साहित्य समाज का दर्पण होता है। गुप्त जी द्वारा वर्णित नारी का यह रूप समाज में नारी की स्थिति का चित्रण करता है। विभिन्न युगो के साहित्य में नारी विभिन्न रूपों में उपिस्थत होती है। जहाँ कहा जाता है यत्र पुज्यन्ते नारी तत्र रम्यन्ते देवताः।' अर्थात जहाँ नारी की पूजा की जाती है, वहाँ देवताओं का वास होता है। ऐसी सम्मानित नारी की स्थिति किस तरह शोषित–उत्पीड़ित और बेचारी की स्थिति तक पहुँच गई है? जब हम इस प्रश्न का उत्तर साहित्य में खोजते है तो यह ज्ञात होता है कि ''स्मृतिकाल से ही नारी का वास्तविक ह्रास आरंभ हुआ। इसी समय से ही धर्म से ही नारी का संपर्क धीरे–धीरे छुट रहा था। केवल विवाह के अवसर पर ही उसे मंत्रो का उच्चारण करना पड़ता था, अतः शिक्षित करने की भी आवश्यकता नहीं समझी गई।[1]'' इस समय स्त्री स्वतंत्रता का कड़ा विरोध किया गया। किसी भी अवस्था में उसे स्वतंत्र रहने की अनुमति नहीं थी–

''पिता रक्षति कौमारै, भर्ती यौवने।
रक्षन्ति स्थविरे पुत्रः न स्त्री स्वातन्त्रयमर्हति।।[2]''

अर्थात वह कुमारी है तो पिता की रक्षा में रहेगी, युवा है तो पति की रक्षा में, वृद्धावस्था में पुत्र की रक्षा में रहेगी। स्त्री किसी भी अवस्था में स्वतंत्र नहीं रह सकती। धीरे–धीरे नारी की स्थिति समाज में हेय होती गयी। आगे चलकर स्त्रियों का धार्मिक कार्यो में भाग लेना भी निषिद्ध हो गया। नारियों की अलग जाति मानी जाने लगी। और उनकी गणना शुद्रों में की जाने लगी। पौराणिक काल में कट्टर नियमों के कारण वह अपनी वैयक्तिकता को पूर्णतः खो बैठी। ''व्यवस्था के रचयिताओं में व्यवस्था निर्माण में हमेशा इस बात का ध्यान रखा कि नारी का किसी भी प्रकार से स्वतंत्र अस्तित्व प्रकाश में न आये। जैसे–जैसे इन्हे समय–समय

पर समाज–शुचिता का भय सताता रहा, वैसे ही नारी को पिंजड़े की चिड़िया बनाते गये।''[3]

आदिकालीन साहित्य में नारी पुरूषों (राजाओं) के बीच युद्ध का कारण बनकर उपस्थित हुई। सुन्दर नारियों के लिए राजाओं में युद्ध तक होन लगे। इससे सामाजिक दृष्टि से स्त्री की स्थिति और संकीर्ण हो गयी। इसी समय बाल विवाह की प्रथा चलन में आई और विधवा विवाह का निषेध हुआ। साथ ही इस युग में नारी की पतिव्रता और सती नारी जैसे रूप भी चित्रित होते है। वह कर्तव्य भावना को तहत्व देती थी। अधिकार तो उसके पास था ही नहीं। यहाँ उसे सामान्य व्यक्ति के रूप में स्थान प्राप्त नहीं था।

साहित्य के मध्ययुग का कालखंड जिसे भक्तिकाल की संज्ञा से अभिहित किया गया तथा जिसे 'स्वर्ण युग' कहा गया, यीाँ भी नारियों को स्वर्णिम स्थान प्राप्त नहीं हो पाया। संत तथा सूफी कवियों ने पतिव्रता नारी को श्रेष्ठ माना। स्वयं को ईश्वर की प्रेयसी, पत्नी मानकर भक्ति की परन्तु सामान्य नारी को सांसारिक विषय–वासना का प्रतीक कहा। कबीरदास जी लिखते है कि–

कामिनी सुंदर सर्पिणी, जो छेड़े तेहि खाय,।
जो गुरू चरण न रचिया, तिनके न निकट न जाय।।

रामभक्त शिरोमणि तुलसीदास जी ने नारी को ढोर, गवाँ और शुद्र की श्रेणी में लाकर पटक दिया। ''कृष्ण भक्त कवियों ने नारी के मातृरूप और पत्नी रूप (प्रेयसी, सखी) का वर्णन किया परन्तु सामान्य रूप में नारी इन भक्त कवियों के लिए नागिन, नरक का द्वार है, किन्तु दूसरे रूप में परमेश्वर कृष्ण की आल्हादिनी शक्ति, सौंदर्य युक्त संसार में भक्तों की स्वामिनी रूप में है। वह गोलोक में नित्य परंब्रह्म के साथ रासलीला में मग्न रहने वाली उनकी आदि स्वरूपा है।[4]'' यहाँ हम देखते है कि संतो ने नारी को देवी और दानवीं दोनों रूपों में चित्रित किया। ''मध्ययुगीन साहित्य में नारी का स्वतंत्र रूप कहीं नहीं मिलता है। वह पतिव्रता है (पुरूषों के लिए), प्रेयसी है (पुरूषो की), सती है (पुरूष–संदर्भ में) उपासिका है तो ब्रह्म (पुरूष) की, सात्विक है इष्ट राम–कृष्ण (पुरूष) की आराधना कर, असात्विक है तो पुरूष के पथ की बाधा बनती है, बाधा है (पुरूष के मार्ग की), भोग्य है (पुरूषों की) प्रिय है (पुरूष की), तिरस्कृत है (पुरूष द्वारा)।[5]''

उत्तर मध्ययुग जिसे साहित्य में रीतिकाल भी कहा जाता है। इस काल के काव्य में नारी के विलासिनी–प्रेयसी रूप का चित्रण अधिक मिलता है। हम कह सकते है कि रीतिकालीन काव्य पुरूषों द्वारा, पुरूषों के लिए लिखा गया।

विवेच्य काल में हम देखते है कि साहित्य में नारी पराक्षिता के रूप में, भोग्या के रूप में, पुरूष रूपी धुरी के चारों ओर घूमने वाली के रूप में दिखती है। देवी रूप में उसकी पूजा की गई तो दानवी रूप में भर्त्सना है।

आधुनिक युग के आते–आते साहित्य के विभिन्न विधाओं का जन्म हुआ। यह काल साहित्य रचना की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। ब्रजभाषा का स्थान खड़ी बोली ने लिया, राजाओं, सामंतों के दरबार से निकलकर साहित्य का जुड़ाव सामान्य जन से हुआ।

कथा साहित्य के प्रारंभिक काल में ही महिला लेखिका ''बंग महिला'' (राजेन्द्र बाला घोष) अपनी कहानी ''दुलाई वाली'' (1907) के साथ अपनी उपस्थिति दर्ज कराती हैं।

''पुनरूत्थान आंदोलन के फलस्वरूप नारी निंदा की पात्री तथा भोग की वस्तु न होकर पूजा की अधिकारिणी बनी और सन्यास के स्थान पर गाहर्स्थ की महिमा बढ़ी।[6]''

मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पत्र, मुंशी प्रेमचंद जैसे रचनाकारों की एक लंबी सूची है, जिनकी रचनाओं में नारी एक नई संवेदना के साथ दृष्टि गोचर होती है। पंत जी की रचना 'ग्रंथि' में नारी के प्रति व्यक्त यह कोमल भावना देखिए–

''तुम्हारे छूने में था प्राण, संग में पावन गंगा स्नान्।
तुम्हारी वाणी में कल्याणि, त्रिवेणी के लहरों का गान।।''

आधुनिक युग की मीरा महादेवी वर्मा नारी की सामाजिक संदर्भ में यथार्थ मनोभावों का स्वाभाविक चित्रण करती है। कथा साहित्य सम्राट प्रेमचंद जी ने अपने उपन्यासों, कहानियों के माध्यम से ''नारी की सामाजिक स्थिति का यथार्थ चित्रण कर समाज में व्याप्त नारी विषयक विभिन्न समस्याओं, बाल विवाह, अनमेल विवाह, दहेज की समस्या, शिक्षा की समस्या, विधवा पुर्नविवाह पर समाज का ध्यान आकृष्ट किया। प्रेमचंद नारी की सामाजिक स्थिति सुधारने में लगे थे। प्रेमचंद युगीन परिस्थितियों और संवेदनाओं के वाहक अधिकांश नारी चित्रण नैतिकता से पूर्ण और सामाजिक वैषम्य को प्रकाशित करने वाले है।[7]'' प्रसाद जी की

नारी पात्र कर्तव्य भावना से ओतप्रोत है। प्रसाद की प्रतिनिधि नारी श्रद्धा, जैनेन्द्र की मृणाल, यशपाल की दिव्या, भगवती शरण वर्मा की चित्रलेखा, प्रेमचंद के गोदान में मेहता की नारी संबंधी अवधारणा के माध्यम से कथाकार युग की संवेदना और नारी के प्रति काल निरपेक्ष चिन्तन दृष्टि लिए हुए है। आधुनिक लेखिकायें आधुनिक भारतीय नारी को एक नई छवि प्रदान करती है।

'लेखिका मन्नू भंडारी जी के नारी आँचल को दूध और आँखों को व्यर्थ पानी में भरा दिखाने में विश्वास नहीं रखती। वे उसके जीवन यथार्थ को उसी की दृष्टि से यथार्थ रचती है।[8]' महिला लेखिकाओं की संख्या में वृद्धि हुई है। मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा, कृष्णा सोबती, मेहरून्निसा परवेज, जया जादवानी आदि लेखिकाओं द्वारा समाज में नारी स्थिति पर विचार कर नारी के लिये समाज में समानता के अधिकार पर बात की गई और की जा रही है।

आधुनिक युग की चेतना के साथ साहित्य में नारी की स्थिति में परिवर्तन परिलक्षित हो रहा है। आज की नारी सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक सभी क्षेत्रों में पुरूषों की बराबरी की भागीदार है। श्रीमती इंदिरा गांधी से लेकर कल्पना चावला तक विभिन्न क्षेत्रों में नारियों में अपनी क्षमता का परचम लहराया है। नारी न पुरूष से श्रेष्ठ है, न हेय है अब तो समाज को यह स्वीकारना चाहिये की नारी कोई चीज या वस्तु नहीं वह एक व्यक्ति है। व्यक्ति के रूप में उसकी पहचान बनने लगी है। नारी को अपनी ये पहचान कायम रखनी है।

संदर्भ सूची–

1. डॉ. देवेश ठाकुर– प्रसाद के नारी चरित्र– पृ. 37
2. डॉ. शीला रजवार– कथा साहित्य में नारी चिरंजीलाल पराशर– नारी और समाज पृ. 61
3. डॉ. श्यामबाला गोयल– भक्तिकालीन राम तथा कृष्ण काव्य की नारी भावना एक तुलनात्मक अध्ययन– पृ. 165
4. डॉ. शीला रजवार–स्वतंत्रयोत्तर हिन्दी कथा साहित्य में नारी के बदलते संदर्भ पृ. 35
5. हुकुमचंद राणा– आधुनिक काव्य में नवीन जीवन मूल्य पृ. 182
6. डॉ. शीला रजवार– पृ. 61
7. मन्नू भंडारी– यही सच है (कहानी संग्रह)– आमुख

■■

fgUnh miU;klksa esa ukjh dk /kjkryh; lp

fnus'k dqekj lkt;
सहायक प्राध्यापक हिन्दी
एम.जी.कालेज खरसिया

आधुनिक हिन्दी साहित्य में नारी अस्मिता को लेकर बहुत सारे उपन्यास लिखे जा रहें है। महिला उपन्यास के साथ–साथ पुरूष उपन्यास कारों ने भी नारी चित्रण पर अनेक उपन्यासों की रचना की हैं। प्रांरभिक चरण के उपन्यासों में नारी अस्मिता नही था। परन्तु वर्तमान युग के उपन्यासों में नारी अस्मिता से सम्बंधित विभिन्न विषयों जैसे नारी जीवन के तनाव व कुंठा, दांपत्य जीवन की विसंगतियों आक्रोश नारी जीवन की यातनाएँ आदि का यर्थात वर्णन हुआ है। आधुनिक युग के महिला उपन्यासकारों ने नारी शोषण का चित्रण करने के साथ–ही–साथ इससे मुक्ति का मार्ग भी बताया है।

iszepUn iwoZ ;qxhu miU;klksa esa ukjh vfLerk

इस काल के उपन्यासों की प्रवृत्ति प्रधानता सुधारवादी एवं उपदेशवादी था। इस काल के उपन्यासकारों ने नारी के यर्थात रूप का चित्रण न करते हुए प्रायः आदर्श रूप का ही चित्रण किया है। लाला श्रीनिवास दास ने 'परीक्षा गुरू' उपन्यास ने एक आदर्श पतिव्रता नारी का चित्रण किया है। ''लज्जाराम शर्मा के 'आदर्श दंपत्ति' (1904) , 'बिगड़े का सुधार अथवा सती सुख देवी' (1907) और आदर्श हिंदू' (1914) उपन्यासों का विशेष महत्व है।''1आदर्श दम्पत्ति' में उन्होंने नारी के आदर्श रूप का चित्रण किया है। किशोरीलाल गोस्वामी के प्रायः सभी उपन्यास नारी प्रधान रहें है। ''गोस्वामी जी ने सती –साध्वी देवियों के आदर्श प्रेम के साथ ही अवैध प्रेम, विधवाओं के व्यभिचार , वेश्याओं के कुत्सित जीवन और देवदासियों की विह्यसलीला का भी चित्रण किया है। उनका उद्देश्य नारकीय कुत्सित जीवन के दुष्परिणाम दिखा कर लोगों को उच्च नैतिक जीवन में प्रवृत्त करना था, यो निम्न कोटी के वासनापरक चमकिले प्रेम प्रसंगों के प्रभाव से युवा पाठको के पथभ्रष्ट होने का खतरा भी उनके उपन्यासों में कम नहीं है।''[2]

इस प्रकार प्रेमचंद पूर्व उपन्यासों में नारी के जो चित्र मिलते है। वे ज्यादातर आदर्शात्मक ही रहें है।

i`epUn ;qxhu miU;klksa esa ukjh vfLerk

प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में नारी की स्थिति दहेज की समस्या वेश्याओं की जिन्दगी, वृद्धा–विवाह, विधवा समस्या आदि का वर्णन किया हैं। ''सेवासदन में उनका ध्यान मुख्यतः विवाह से जुड़ी समस्याओं – तिलक – दहेज की प्रथा, कुलीनता का प्रश्न , विवाह के बाद घर में पत्नी का स्थान और समाज में वेश्याओं की स्थिति पर रहा। 'निर्मला' में दहेज प्रथा और वृद्ध विवाह से होने वाले पारिवारिक विघटन तथा विनाश का चित्रण है।''[3]

''गोदान' में अतंर्जातीय विवाह के प्रश्न को उठाया गया है। उच्चवर्गीय और मध्यम वर्गीय समाज में नारी की स्थिति तथा अपने अधिकारों के प्रति उसकी क्रमशः उभरती गई जागरूकता तो प्रायः उनके सभी उपन्यासों में चित्रित है। विधवा– विवाह का प्रश्न 'प्रतिज्ञा' में उठाया गया है।''[4] प्रेमचंद के बाद नारी की स्थिति को लेकर जयशंकर प्रसाद ने उपन्यास लिखे है। उन्होंने नारी दुर्दशा का चित्रण कंकाल में दिया है। 'तितली' उपन्यास में तितली और शैली के चित्रांकन के द्वारा भारतीय एवं पाश्चात्य आदर्शो की तुलना की है। सियाराम शरण गुप्त ने अपने उपन्यास 'नारी' में नारी समस्याओं के निराकरण के लिए नये पुराने मूल्यों के समन्वय पर बल दिया गया है। विश्वम्भर नाथ शर्मा कौशिक ने दो उपन्यास लिखे है–भिखारिणी और मां। भिखारिणी उपन्यास में उन्होंने 'अन्तर्जातीय विवाह' की समस्या का वर्णन किया है तथा ' मां ' उपन्यास में मध्यवर्गीय परिवार का चित्रण करते हुए वेश्यालओं के वातावरण का चित्रण किया है। प्रतापनाराण श्रीवास्तव ने अपने उपन्यास 'विजय' में अभिजात वर्गीय विधवा–जीवन की समस्याओं को उठाया गया है।

इस युग में नारी के यथार्थ रूप का चित्रण किया गया है। और नारी के प्रति सुधारवादी दृष्टिकोण अपनाया गया है।

i`epUnksRrj ;qx vk/kqfud ;qxhu miU;klksa esa ukjh vfLerk

विष्णुप्रभाकर का उपन्यास' अर्धनारीष्वर' है। ''इस उपन्यास में केन्द्रीय समस्या नारी–नियति की हैं। जिसे बलात्कार की घटनाओं को केन्द्र में रखकर उठाया गया है। बलात्कार और उससे बलात्कृत नारी के जीवन में उत्पन्न होने वाली विडंबनाओं व समस्याओं को केन्द्रीय वस्क के रूप में'

कोई तो' (1980) में भी उन्होंने उठाया था, किंतु इस उपन्यास में इसे अधिक विस्तार के साथ उठाया गया है। 'कोई तों ' की नर्तिका की कहानी को इस उपन्यास में अधिक विस्तार दिया गया है, साथ ही कई अन्य स्त्रियों के साथ घटित बलात्कार की घटनाओं को प्रस्तुत किया गया है। इन घटनाओं के कारण स्त्री के जीवन में सामाजिक, नैतिक, मनोवैज्ञानिक आदि स्तरों पर जो समस्याएँ उत्पन्न होती हैं, एक तरह से उनका विश्लेषण किया गया है। लेखक पुरूष – संबंध पारस्परिक संहिता का विरोधी है। उसके अनुसार '' पुरूष अहेरी है, नारी शिकार, नारी आलोकमंडित दासी, पुरूष भू–स्वामी', 'नारी भूमि' इसी से अद्‌भूत हुई है। व्यक्तिगत संपत्ति और स्वामित्व की भावना'' यदि स्त्री को इससे मुक्त करना है तो इसे पूर्णतः अस्वीकार करना होगा।''[5]

''मेहरून्निसा परवेज ने अपने उपन्यासों में मध्यप्रदेश के बस्तरक्षेत्र की पृष्ठभूमि में मुस्लिम और इंसाई समाजों का चित्रण किया है। उनके उपन्यासों की केंद्रीय वस्तु मुस्लिम समाज स्त्री के प्रति बहुत अनुदार है। इसके विपरीत ईसाई समाज में स्त्री अधिक स्वाधीन है। लेकिन चाहे मुस्लिम समाज हो, चाहे ईसाईसमाज हो और हिंदू समाज ही क्यो न हो, स्त्री सर्वत्र शोषित और व्यथित है :'' औरत तो जूठा खाने की आदी ही होती है, चाहे खाने के मामले में हो, चाहे शारीरिक संबंध (के मामले) में हो ''('उसका घर')''[6]

नासिरा शर्मा ने भी अपने उपन्यासों में नारी यातना का चित्रण किया है। ''शाल्सली' में हिंदू समाज में विषम दांपत्य जीवन में यातना भोगती स्त्री का चित्र उपस्थित करती है। स्त्री हिन्दू –समाज में उसकी स्थिति और ' भी खराब है। यह बात हमारे सामने 'ठीकरे की मंगनी' आती है।''[7]'' अक्षयवट'' के केन्द्र में इलाहबाद का चित्रण है और 'कुइयांजान' में एक वृद्धा के जीवन के चित्रण के माध्यम से एक पूराने मुस्लिम परिवार का इस वस्तुगत विविधता के बावजूद उनकी चिन्ता के केन्द्र में स्त्री है। दाम्पत्य संबंधों में वे स्त्री की गौणता को स्वीकार करने के लिए तैयार नही है। वे उसकी मर्यादित स्वाधिनता की पक्षधार है।''[8]

''नासिरा शर्मा ही नहीं, नई पीड़ी की तमाम हिन्दी लेखिकाओं की चिन्ता के केन्द्र में में भी वर्तमान बदलते समाज में, समय में स्त्री का स्थिति का प्रश्न है। विवाह–प्रेम, यौन सुचिता, परिवार, बच्चे, आर्थिक आत्मनिर्भता,

निर्णय लेने की स्वाधिनता आदि से सम्बंधित समस्याओं का चित्रण लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में किया है। सुनिता जैन ने प्रायः सभी उपन्यासों असफल और विषम दाम्पत्य जीवन की कथा कही है। इसका कारण उनके अनुसार, वे रूढ़ियां और परंपराएं है, जो तमाम आधुनिकता के बावजूद हमारे समाज में विद्यमान है जब कोई इन पर उंगली उठाता है तो पारम्परिक समाज का विरोध उसे झेलना पड़ता है। 'बोज्यू' उपन्यास लिखने पर सुनिता जैन को झेलना पड़ा।''[9]

''कुसूम अंसल अपने उपन्यासों में स्त्री की उस व्यथा –कथा को प्रस्तुत करती हैं, जो इस तन और मन के विभाजन से उत्पन्न होती हैं। पुरूष के लिए स्त्री शरीर भोग्य हैं, उसे उसके मन से कुछ लेना–देना नहीं। 'तापसी' उपन्यास में वे बा़कायदा शोधकार्य करके वृन्दावन में रह रही विध ावाओं के शोषण और उनकी पीड़ा का प्रामाणिक चित्र प्रस्तुत करती हैं। मृदुला गर्ग ने अपने उपन्यास 'चित्तकोबरा' (1979) में नारी के तन और मन, वासना और प्रेम के द्वैत को चित्रित करने के लिए जब संभोग के कुछ साहसिक चित्र प्रस्तुत किये थे, तो हंगामा मंच गया था। बाद में उन्होंने विभिन्न नारियों की दृष्टि से तन और मन के द्वंद्व को 'कठगुलाब' में फिर उठाया।''[10]

''स्त्री – जीवन की समस्याओं की समान्य भूमि का स्पर्श करते हुए भी, प्रत्येक उपन्यास लेखिका का अपना विशिष्ट अनुभव–संसार है, जिसे उसने अपनी कृतियों में अभिव्यक्त किया किया है। मंजुल भगत ने मध यवर्गीय पारिवारों में चौका–बर्तन करने वाली या इसी प्रकार के अन्य छोटे–मोटे काम करके अपनी जीविका कमाने वाली स्त्रीयों को अपनी सहानुभूति का पात्र बनाया है। इस दृष्टि से 'अनारो' (1977) उनका प्रतिनिधि उपन्यास है। राजनीतिक दुर्घटनाओं की त्रासदी झेलते अफगानों का चित्रण करने वाले उपन्यास 'खातुल' में उनकी सहानुभूति का पात्र स्त्री पात्र : ख़ातुल, जरीखायम ही बने हैं। वे स्त्री के शोषण का भी चित्रण करती है और उसकी आत्मसम्मान की भावना का भी ।''[11]

''इधर की तीन उपन्यास –लेखिकाओं ने विशेष रूप से ध्यान आकर्षित किया है और विशेष चर्चा का विषय अनी हैं। ये हैं प्रभा खेतान मैत्रेयी पुश्पा और अलका सरावगी। प्रभा खेतान ने विभिन्न संदर्भों विभिन्न पृष्ठभूमियों विभिन्न परिवेषों और विभिन्न संस्कृतियों ने नारी – नियति का

चित्रण किया है, जिसका सारांश 'छिन्नमस्ता' की प्रिया के शब्दों में यह हैं :'' औरत कहां नहीं रोती? सड़क पर झाड़ू लगाते हुए, खेतों में काम करते हुए, एयरपोर्ट पर बाथरूम साफ करते हुए या फिर सारे भोग–ऐश्वर्य के बावजूद ... पलंग पर रात–रात भर अकेले करवटें बदलते हुए .... हजारों सालों से इनके ये आसू बहते जा रहें है'' इससे मुक्ति का रास्ता क्या हैं? प्रभा खेतान का उत्तर है स्त्री की आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भता।''[12] ''विद्रोह मैत्रेयी पुष्पा के स्त्री पात्र भी करते हैं। उन्होंने बुन्देलखण्ड और ब्रज क्षेत्र के अहीरों, जाटों और कबूतरा जाति का यथार्थ आंचलिक जीवन चित्रित करते हुए इनके समाजों में स्त्री पर होने वाले अत्याचारों का प्रामाणिक और मार्मिक चित्रण किया है।''[13]

''अलका सरावली के उपन्यासों ने सबसे अधिक ध्यान अपने चमत्कारिक शिल्प के कारण आकर्षित किया है। 'कलिकथा : वाया बाईपास' में यर्थाथ और फंतासी का मिश्रण करके एक मारवाड़ी परिवार की पांच पीढ़ियों की कथा कह दी है, जिसमें प्लासी के युद्ध से लेकर बाबरी मस्जिद के ध्वंस तक की कथा समाहित है। इस उपन्यास वस्तु के अनेक स्तर विद्यमान है। जिनमें से एक स्तर मारवाड़ी समाज में स्त्रियों की घुटनभरी विवश अंधेरी ज़िन्दगी का है, जिसका केन्द्र किशोर बाबू की विधवा भाभी है।''[14]

संदर्भ ग्रंथ–

1. डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, 2013, पृष्ठ क्रमांक – 499
2. डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, 2013, पृष्ठ क्रमांक– 500
3. डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, 2013, पृष्ठ क्रमांक– 559
4. डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, 2013, पृष्ठ क्रमांक– 559
5. डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, 2013, पृष्ठ क्रमांक– 717
6. डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर ऐपरबैक्स, 2013, पृष्ठ क्रमांक– 722

7. डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, 2013, पृष्ठ क्रमांक– 722
8. डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, 2013, पृष्ठ क्रमांक– 722
9. डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, 2013, पृष्ठ क्रमांक– 723
10. डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, 2013, पृष्ठ क्रमांक– 723
11. डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, 2013, पृष्ठ क्रमांक– 723
12. डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, 2013, पृष्ठ क्रमांक– 724
13. डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, 2013, पृष्ठ क्रमांक– 724
14. डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, 2013, पृष्ठ क्रमांक– 724

■■

fgUnh lkfgR; e efgyk yf[kdk,a vkj ukjh vfLerk

Mkeu çlkn pnzo'kh
सहा.प्राध्यापक, हिन्दी
शा. जे. एम. पी. महा., तखतपुर
जिला–बिलासपुर, छत्तीसगढ़

महिला लेखिकाओं का मूल स्वर सदियों से तिरस्कृत,रूढ़ि–रिवाजों से बंधी नारी की मुक्ति की कामना है। अपने साहित्य के माध्यम से उन्होंने उसे साकार करने का सतत् यत्न किया है। इनकी सृजनकला से नारी सोच व चिंतन में व्यापक परिवर्तन हुआ है। नारी अपनी अस्मिता के लिए समाज से संघर्ष करने तैयार हो जाती है और उसमें सफल भी होती है। निरंतर शोधि ात होती आयी नारी जगत, शोषण उपेक्षा और अन्याय के विरूद्ध प्रतिकार की आवाज बुलंद की है। अपनी अस्मिता और स्वयं की रक्षा हेतु नए जीवन मूल्यों की प्रतिस्थापना के लिए उत्सुक रही है। इन लेखिकाओं ने नारी को स्वयं के प्रति सचेत और जाग्रत किया है।

izLrkouk&

विविध विषमताओं के विद्यमानता के फलस्वरूप भारतीय संस्कृति में नारी सदा माता एवं देवी रूप में प्रतिष्ठित रही है। सृष्टि के उत्पति, संचालन व संहार में इनकी भूमिका सर्वदा विद्यमान रही है। अर्थ और सत्ता भूख में मदमत्त पुरूष समाज नारियों की शक्ति को सहन नही कर पाया, फलतः समाज में पुरूषों का एकाधिकार स्थापित हो गया। नारियों की स्थिति बद से बदतर होने लगी। अनेक सामाजिक बंधनों का शिकार होने लगी। अनेक देवदूतों के सामाजिक आंदोलनों ने इन्हें सामाजिक जकड़नों से मुक्त करने का प्रयास किया पर ये सिफर ही सिद्ध हुए । युगों से दबी–कुचली नारी की आवाज उठाने का बीड़ा हिन्दी साहित्यकारों ने उठाया। नारी अस्मिता पर अपनी मौलिक सर्जनात्मकता से महिला लेखिकाओं, कवयित्रियों ने लेखनी चलायी। समाज में व्याप्त रूढ़ियों, कुरीतियों, अंधविश्वासों से मुक्त करने का सार्थक यत्न किया। इनमें प्रमुखतः राजेन्द्र बाला घोष, सुभद्रा

कुमारी चौहान, शैलकुमारी देवी, महादेवी वर्मा, रूक्मणी देवी मित्रा, चंद्रकिरन सोनरिक्सा, उषा प्रियवंदा, मैत्रेयी पुष्पा, कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी, शिवानी, कमला चौधरी, राजी सेठ, ममता कालिया, मृदुला गर्ग, प्रभा खेतान, मृणाल पाण्डेय, सूर्यबाला, निर्मला देशपांडे, सत्यवती मलिक, अचला नागर आदि महिला साहित्यकारों ने समाज में उभरते नए पारिवारिक संबंध बहु विवाह, विधवा विवाह, बाल विवाह, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा, अंधविश्वास, रूढिवादिता जैसे समाज में व्याप्त समस्याओं का विशद वर्णन किया है।

कृष्णा सोबती ने स्त्री के विषय में अपने दृष्टिकोण को बेबाक रूप से अपने कहानियों में प्रस्तुत किया। नसीफा, बादलो के घेरे में, सिक्का बदल गया, मेरी माँ, बचपन इनमें से कोई भी कहानी हो सबमें नारी पात्रों के माध्यम से जीवन मूल्यों की उपयोगिता को प्रस्तुत किया है।

मन्नू भंडारी ने नारी पात्रों के माध्यम से मध्यम वर्गीय सामाजिक और पारिवारिक मूल्यों का अंकन किया है। उनकी कहानी–कथा पटकथा, मैं हार गई, एक कहानी, यह भी उसका उदाहरण है।

मालती जोशी ने अपनी कहानी संग्रह पराजय, एक घर, सपनों की आखरी शर्त बहुरि अकेला के माध्यम से नारी मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास किया है।

उषा प्रियवंदा ने जिंदगी और गुलाब के फूल, फिर वसंत आया, कितना बड़ा झुठ, एक कोई दूसरा, संपूर्ण कहानियों के माध्यम से मध्यम उच्च वर्गीय समाज में गिरते जीवन मूल्यों, भारतीय नारी तथा विदेशी धरातल में जुड़ी नारी की व्यापक समस्याओं का यथार्थ रूप से चित्रित किया है। आपने बनाने का प्रयास किया है कि गिरते जीवन मूल्यों का दुष्प्रभाव सबसे पहले और सबसे ज्यादा नारी पर ही पड़ता है।

मृदुला गर्ग ने अपनी लेखनी कौशल से नारी विमर्श का बखूबी अंकन किया है। आपके कहानी कितनी कैदें, टुकड़ा टुकड़ा आदमी, डेफोडिल जल रहे है। ग्लेशियर से, समागम, उर्फ सैम में नारी विमर्श पर व्यापक प्रकाश डाला है।

मेहरून्निसा परवेज ने नारी पात्रों के माध्यम से अपनी कहानियों फाल्गुनी, समर, जीवन मंथन, अम्मा, कोई नहीं, में मानवीय मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास किया है। नैतिकता के नये मापदण्ड तय की है।

ममता कालिया ने अपनी रचनाओं के माध्यम से बताने का प्रयास किया है कि नारी की कोई स्वतंत्र इच्छा नहीं होती है, उसकी अपनी सोच नहीं होती उन्हें समाज के अनुसार चलना पड़ता है इस प्रकार नारी जीवन का यथार्थ व मर्मस्पर्शी अंकन अपनी कहानियों एक अदद औरत, उसका यौवन, जाँच अभी जारी है, मुखौटा, निर्मोही में किया है।

मृणाल पाण्डेय ने नारी पात्रों के माध्यम से अपनी रचना में नारी को एक नये कलेवर में प्रस्तुत किया हैं। जीवन मूल्यों की महत्ता नारी पात्रों के माध्यम से प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। एक नीच ट्रेजडी, स्त्री का, विदागीत, बचुली चौकीदारिनी की कढ़ी, चार दिन की जवानी कहानियों के माध्यम से अपने नारी अस्मिता को सहज ढंग से प्रस्तुत किया है।

उषा देवी मित्रा जी ने अपनी रचना संसार के नारी के विविध रूपों और संघर्षों को समाज के सम्मुख जीवंत दस्तावेज के रूप में प्रस्तुत किया हैं उनके उपन्यास वचन का मोल, जीवन की मुस्कान, सोहिनी, सम्मोहिता, पिया, पथचारी नष्टनीड़ में नारी पात्रों के माध्यम से समाज के विविध समस्याओं को प्रस्तुत किया है। नारी अस्मिता आपके रचनाधर्मिता का श्रेष्ठ उदाहरण हैं ''विधवा का किसी अन्य की ही नहीं अपनी ही बहिन और भाई की शादी में सुहाग सामग्री छूना अशुभ माना जाता है। ऐसे कितने ही नियम बंग–समाज में विधवा के लिए बनाये गये है।''1 सम्मोहिता उपन्यास के विध ावा शिवानी की यह दशा मर्माहत कर देती है।

रिक्ता, मन की देन खिन्न पिपासा, सांध्य–तारा, जातिसार, देवी कहानियों में नारी चीत्कार को समाज के सम्मुख प्रस्तुत करने में सफल रही है। मन की देन कहानी की ये पंक्ति स्त्री की महानता को व्यक्त करती है– ''सिन्दूर जैसी महान् वस्तु को पैसे से बेचना शर्मनाक ही है।''[2]

fu"d"k

देश की प्रतिष्ठित महिला कथाकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से नारी–जीवन की विभिन्न झांकियाँ प्रस्तुत की है। नारी का एकनिष्ठ प्रेम, त्याग और सहनशीलता, पुरूषों का स्वार्थपरक नारी प्रेम, हृदयहीनता, पुरूषों की नारी के प्रति भ्रमर वृत्ति का अंकन, भारतीय संस्कृति की पोषक नारी, सदियों से तिरस्कृत नारी, रूढ़ि–रिवाजों से बंधी नारी की मुक्ति कामना, पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण प्रवृत्ति की आलोचना, नारी की सोच व चिंतन को अपनी सर्जनात्मकता से नारी भावनाओं को जाग्रत, पल्लवित,

पुष्पित व फलित की हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मित्रा ,उषादेवी; सम्मोहिता, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस दिल्ली– प्रथम संस्करण, 1963, पृष्ठ 33 ।
2. मित्रा, उषादेवी; मन की देन कहानी संग्रह रागिनी, हिन्दुस्तानी पब्लिकेशन इलाहाबाद द्वितीय संस्करण 1949।
3. वर्मा धनंजय, हिन्दी कहानी का सफरनामा, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।
4. सराफ डॉ. रामकली समकालीन हिन्दी–कथा लेखिकाएँ– राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।
5. जगताप डॉ. आर.एस. मेहरून्निसा परवेज के कथा साहित्य में नारी–अमन प्रकाशन कानपुर।

■■

Ukkjh vkj lekt

onuk jkBkj]
बी.एस–सी अंतिम गणित
एम जी शा. महाविद्यालय, खरसिया

महिलाओं की स्थिति पर विचार करने के लिए आवश्यक है कि प्राचीन काल से वर्तमान समय तक की स्थिति पर सम्यक विचार करें।

ikphu dkyhu fLFkfr %&

हमारे धर्म ग्रंथों में उल्लेख है कि ''यत्र नार्यास्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवता।'' अर्थात जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। इससे पता चलता है कि हमारे पूर्वजों ने महिलाओं को अत्यंत आदर की दृष्टि से देखा था। उन्हें बहुत सम्मान दिया जाता था तथा उन्हे ''गृहलक्ष्मी'' मानते थे, उनको अच्छी– से– अच्छी शिक्षा दी जाती थी। कई विदूषी महिलाओं ने प्राचीन में विद्वानों की सभाओं में जाकर शास्त्रार्थ और वाद विवाद भी किया था। महाराज जनक की सभा का याज्ञवल्क्य–गार्गी शास्त्रार्थ प्रसिद्ध हैं। मैत्रेयी भी विख्यात ब्रम्हवादिनी थी। मण्डन मिश्र की पत्नी भारती अपने विद्वान पति के पश्चात् शंकराचार्य से शास्त्रों पर वाद विवाद किया था। महान विभूतियों के पीछे भी देखा जाए तो उनकी प्रगति एवं ख्याति में महिलाओं का ही हाथ रहा है। महान कवि कालीदास के पीछे विद्योत्तमा की प्रेरणा, रामचरितमानस के रचयिता तुलसीदास के पीछे उनकी पत्नी रत्नावली की प्रेरणा, जिसने उनको संसारिक माया–मोह के लिए धिक्कारा और वर्तमान में महात्मा गाँधी के जीवन में उनकी माता पुतली बाई और कस्तुरबा की मूल प्रेरणा ही कार्यरत थी। महाराज शिवाजी की प्रेरणा स्त्रोत भी उनकी माता जीजाबाई ही थी। प्राचीन परम्पराओं और मान्यताओं के अनुसार महिलाओं का स्थान समाज में सदैव पुरूषों से प्रथमतर रहा है। और यही कारण है कि राधेश्याम में 'राधा' का नाम, सीताराम में 'सीता' का नाम व गौरीशंकर में 'गौरी' का नाम प्रथम लिया जाता है। आज भी समाज में महिला को पुरूष का 'बैटरहाफ' अर्थात ''अधिक अच्छा आधा हिस्सा'' माना जाता है। इसका अर्थ यही है कि परिवारिक जीवन में जहाँ पति और पत्नी दोनो मिल कर एक माने जाते हैं तो उसमें अर्द्धांगिनी के रूप में पत्नी

का अधिक महत्व होता है।

वैसे ही महिलाओं को गृहस्थ जीवन की धुरी माना गया है। गृहस्थ में कई रूप हैं जैसे वह माँ के रूप में बच्चों की जन्मदात्री और लालन–पालन करने वाली होती है। तो पत्नी के रूप में वह पति की सहचारिणी होती है। पति के मित्र के रूप में परामर्श देने वाली सहयोगी होने के साथ–साथ वह पति के लिए सर्वस्व बलिदान करने वाली महानदानी भी होती है।

e/;dkyhu ukjh dh iru vkj mRihMu %&

महिलाओं की अतीत निश्चित रूप से गौरव पूर्ण था, परंतु कालांतर में उनकी स्थिति में काफी परिवर्तन आया और धीरे–धीरे उसकी स्थिति दयनीय हो गई। मध्यकाल में मुसलमान आक्रंताओं के आक्रमण से हिंदूसमाज का मूल ढाँचा चरमरा गया और परतंत्र होकर (मुसलमान) शासको का अनुशरण करने लगे।

इस युग में महिला एक ओर भोग विलास और वासना तृप्ति का साध ान बन कर रह गई है। लोगों ने लड़कियों को पढ़ाने के लिए पाठशालाओं में भेजना बंद कर दिया तथा हिंदु समाज में बालविवाह का प्रचलन शुरू हो गया।

बालविवाह तथा भ्रूणविवाह, पर्दाप्रथा, सतीप्रथा कई कुरीतियाँ आई और समाज में सम्पर्ण महिला जाति का विकास रूक गया तथा धीरे–धीरे उन्हें अवनति की ओर उन्मुख होना पड़ा। इस प्रकार महिलाएँ अपनी स्वतंत्रता नष्ट करके मात्र दासी या भोग्या बनकर रह गई। प्रसिद्ध कवि मैथिलीशरण गुप्त ने महिलाओं की दयनीय स्थिति का अत्यंत सजीव चित्रण इस पंक्ति में किया–

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी ।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।।

मध्यकाल मे ंतो जन्मते ही बालिकाओं को मार देने की ''कन्या वध'' या जन्म से पहले ''भ्रुणहत्या'' गंभीर अमानवीय प्रथा भी कुछ जातियों में प्रचलित थी, जो आज भी जारी है। गाँव में तो कुछ जातियों में ंतो लड़की का जन्म होते ही उसे आक की दूध पिलाकर सुला दिया जाता था। समय के चक्र ने महिला को एक निर्जीव संपत्ति की तरह आदान प्रदान का एक साधन मात्र बना दिया तथा बालिकाओं की खरीद फरोख्त भी होने लगी। इस प्रकार महिलाओं पर अत्याचार बढ़ गये।

orleku e: ukjh %&

मध्यकाल से लेकर अब तक महिलाओं के अधिकारों को छीना जाता रहा, उनके ऊपर कई प्रकार के आघात होते रहे तथा उनके शोषण एवं उत्पीड़न के लिए बालविवाह, सतीप्रथा, पर्दाप्रथा अनेक कुप्रथाएँ अस्तित्व में आई। इस कुप्रथाओं को रोकने के लिए अनेक महापुरूष सामने आए जैसे–राजाराम मोहनराय, महर्षि दयानंद सरस्वती, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, महात्मागाँधी, ज्योतिरावफुले इत्यादि सभी ने भरसक प्रयत्न किए लेकिन आज भी ये कुप्रथाएँ समाप्त नही हुई। महिलाओं का शोषण देख कर महान कवि सुमित्रा नंदन पंत के कविहृदय ने इनके पक्ष में अपना आक्रोश पंक्तियों में व्यक्त किया–

''मुक्त करो नारी कोम मानव।
चिरवंदनी नारी का।।''

वस्तुतः महिलाएँ हमारे समाज की अमुल्य धरोहर हैं वे समाज की जननी हैं, किंतु आज उनका स्थान बहुत गिर चुका है। इसलिए आवश्यकता अब इस बात की है कि हम महिलाओं को समाज में बराबरी का दर्जा दे एवं महिलाओं को अपने उस प्राचीनकाल के आदर्श की प्रतिमूर्ति के रूप मे ही माने, महिला जो त्याग तपस्या बलिदान और साधना की अवतार होती हैं इसलिए प्रसिद्ध कवि जयशंकर प्रसाद ने लिखा है कि–

''नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत पग–पग तल में।
पीयूष श्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुंदर समतल में।।''

लेकिन आए दिन समाचार पत्रों की सुर्खियाँ रहती है कि ससुराल वाले दहेज न आने या मांग के मुताबिक न मिलने पर बहु को जिंदा जला देते हैं अधिकतर देखा जाता है कि ''महिला ही महिला की दुश्मन बनी बैठी है।''

सास–बहु की लड़ाई दहेज के लिए बहु पर दबाव डालना इत्यादि।

efgykvk dh lo/kkfud fLFkfr %&

भारत के संविधान में उसके अनुच्छेद 15 के अंतर्गत लिंग के आधार पर भेदभाव का अंत कर दिया गया है। अनुच्छेद 16 के अंतर्गत सरकारी नौकरियों में सभी को समान दर्जा प्राप्त है। अनुच्छेद 23 व 24 के अंतर्गत किसी भी प्रकार के शोषण के विरूद्ध का अधिकार प्राप्त है। इसका अर्थ है कि जब महिलाओं का किसी भी रूप में शोषण नही किया जा सकता।

अनुच्छेद 39 क के अंतर्गत मुफ्त विधिक सलाह दी जाने की बात की गई है। अर्थात पीड़ित/शोषित महिला इस प्रावधान के अनुसार सरकार से मुफ्त विधिक सलाह की व्यवस्था के लिए मांग कर सकती है। इस तरह शोषण व उत्पीड़न से बचाव के लिए सुरक्षा के लिए अनेक छोटे–बड़े अधिनियम बनाए गए हैं और सोशल साईट पर गंदी तस्वीरों पर प्रतिबंध व 12–13 साल के बालिकाओं के लिए पोर्न एक्ट 2012 पारित है। तीन तलाक बिल शादी–सुदा महिला के पति के तलाक के लिए। सन् 1990 में महिलाओं के लिए ''राष्ट्रिय महिला आयोग'' का गठन सभी राज्यों में किया गया है। हमारे देश का इतिहास इस बात का साक्षी है कि महिलाओं के प्रति सदभाव व सम्मान की परम्परा हमारे देश की सांस्कृतिक धरोहर का आधार रही है और यही कारण है कि महिला को हमारे यहाँ 'कमला', 'सरस्वती' व 'लक्ष्मी' के रूप में देवी का सम्मान दिया जाता रहा है। किंतु समय की बदलती करवट और पिछले कुछ वर्षों की घटनाएँ इस बात की साक्षी हैं कि हर क्षेत्र में महत्व, प्रतिष्ठा व सम्मान पाने वाले महिला को आज उसके अपने देश में अत्याचारों व उत्पीड़न की कठोर यातनाओं को सहने के लिए विवश होना पड़ रहा है।

:du d ctk, c<r vijk/k %&

जिस गति से देश समाज का विकास होना चाहिए बल्कि उसी गति से महिलाओं के विरूद्ध अपराध बढ़ रहे हैं। यह बहुत ही दुःखद स्थिति है कि महिलाओं की सुरक्षा व उनके सरंक्षण के लिए पर्याप्त कानून होने के बावजुद भी उनके विरूद्ध किए जाने वाले अपराधों में निरंतर वृद्धि होती जा रही है। इस संबंध में राष्ट्रिय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के आँकड़े बहुत ही चौकाने वाले हैं। प्रतिवर्ष इन आँकड़ों में 10 से 12 प्रतिशत की वृद्धि हो रही है। महिलाओं के विरूद्ध किए जाने वाले अपराधों में अपहरण, बलात्कार, दहेजहत्या, महिला उत्पीड़न एवं यौन शोषण से जुड़े मामलों की संख्या सबसे अधिक सामने आई है। बालीवूड में रुडममजव अभियान बढ़ती संख्या यह बताती है।

16 दिसंम्बर 2012 की निर्भयाकांड के दोषियों को 7 साल बाद सजा मिली, वो भी दोषी इस अमानवीय कृत्य के लिए माफी की फिराक में हैं। हैदराबाद की डॉ. रेड्डी और न जाने कितनी ऐसी अनगिनत दुर्घटनाओं से आज के अखबार भरे पड़े हैं।

महिलाओं के साथ बलात्कार करने की घटनाओं में देश की राजध

ानी दिल्ली सबसे आगे है। इसलिए किसी व्यक्ति ने इस दर्द को पक्तियों में बताया है–

सुना था कि बेहद सुनहरी है दिल्ली,
समंदर से खामोश गहरी है दिल्ली।।
मगर एक माँ की सदासुन न पाई,
तो लगता है गुंगी है बहरी है दिल्ली।।
वो आँखों में अश्को का दरिया समेंटे,
वो उम्मीद का एक नजरिया समेटे।।
यहाँ कह रही है वहाँ कह रही है,
तड़पकर के ये एक माँ कह रही है,
नही पुछता है कोई हाल मेरा ....

दैनिक भास्कर पेज– 4, दिनाँक 10 जनवरी 2020 में बालविवाह के चौंकाने वाले आँकड़े बताए गए कुछ अंश इस प्रकार हैं – 1931 की जनगणना में बालविवाह चारगुना बढ़ गई। 77 साल बाद सुप्रीम कोर्ट ने आदेश दिया कि कोई भी पुरूष 18 वर्ष से कम उम्र की लड़की से शारीरिक संबंध नही बना सकता। फिर भी ये रूकने का नाम नही ले रही है। ऐसीड अटैक की घटनाएँ भी रोज हो रही है। इसकी जागरूगता की ''छपाकमूवी'' ऐसीड अटैक पिड़ीता के दर्द को बताया गया है। निर्भया के दरिंदों को इतने सालों बाद सजा हमारी कानून व्यवस्था पर तीखा प्रहार है। पूर्व ब्रिटिश प्रधानमंत्री विल्यम ई. ग्लैण्डस्टोन का एक चर्चित वाक्य है– '' जस्टिस दि लेट इज जस्टिस डिनाईड''

इस प्रकार की अनैतिक कृत्य के लिए अन्य देशों की प्रावधान पर नजर डालें जो इस प्रकार हैं–

चीन–मेडिकल जाँच के बाद दुष्कर्मी को मौत की सजा।
उत्तर कोरिया–सिर में सरेआम गोली मार दी जाती है।
संयुक्त अरब अमिरात– एक हफ्ते के अंदर फाँसी की सजा।
पॉलैण्ड–आरोपी को नपुंसक बना दिया जाता है।
ईराक–पत्थर से संगसार (मौत की सार्वजनिक सजा)

यह नही कहा जा सकता कि इन देशों के कानून को यहाँ जस के तस अपना लिया जाए।

हमारी न्याय पालिका को तो काफी सोंच समझ कर ही इतना ठोस बनाया गया है कि हर किसी को अपनी बात रखने का पुरा अवसर दिया

जाता है। भले ही वह सिरियल किलर हो या सैंकडों लोगों को मारने वाला आंतकवादी। महिलाओं के विरूद्ध अशिष्ट रूपण के अपराध को रोकने के लिए '' महिलाओं का अशिष्ट रूपण (निषेध) अधिनियम'' पारित किया गया। इसमें प्रावधान है कि महिलाओं के अशिष्ट रूपण करने वाले विज्ञापनों तथा पुस्तक, पुस्तिका, लेखन, फिल्म, छायाचित्र, रंगचित्र, रेखाचित्र आदि के उत्पादन विक्रय व वितरण आदि का निषेध किया गया है। इसका उल्लंघन करने वाले व्यक्ति के लिए इसके धारा 6 क तहत् दो वर्ष तक की कारावास व 2 हजार रूपए तक के जुर्माने का प्रावधान है।

सौन्दर्य प्रतियोगिताओं के नाम पर महिलाओं के अशिष्ट रूपण एवं अर्द्धनग्न प्रदर्शन पर अंकुश लगाने के लिए चन्द्रराजकुमारी बनाम पुलिस आयुक्त हैदराबाद के मामले में आंध्रप्रदेश के उच्च न्यायालय के द्वारा कई दिशा निर्देश जारी करते हुए यह कहा गया कि सौंदर्य का प्रदर्शन इस तरह नही किया जाए की वह दण्डनीय अपराध बन जाए।

कामकाजी महिलाओं के साथ यौन उत्पीड़न पर चिंता व्यक्त करते हुए विशाका बनाम राजस्थान राज्य मामले पर उच्च न्यायालय द्वारा राज्य सरकारों को सलाह दी गई कि वे इसके रोकथाम क लिए कारगर कानून बनाएँ। कामकाजी महिलाओं के साथ यौन संबंध प्रस्ताव रखना, कामोत्तेजनक एवं अश्लील साहित्य आदि का प्रदर्शन करना, आपत्तिजनक व्यवहार करने इत्यादि को यौन उत्पीड़न माना गया। इस प्रकार महिलाओं के प्रति अपराधों की बढ़ती संख्या चिंता का विषय है। यथार्थ यह कि महिलाओं के विरूद्ध अपराधों की रोकथाम के लिए केवल कानून बन जाना ही पर्याप्त नही है। इसके लिए जन जागृति, समाजिक चेतना, नैतिक दबाव एवं प्रबल इच्छा शक्ति का भी होना आवश्यक है। मात्र कानून के सहारे रहना भयंकर भूल है। ऐसे कितने ही मामले हैं जिस पर न्यायालय के आदेश देने के बाद भी प्रचलन बंद होते नही दिख रहे हैं–

1) स्टेट बनाम लक्ष्मण कुमार (दहेज के लिए)

2) प्रभाकर जसप्पा का नगुणी बनाम महाराष्ट्र (पत्नी की गला घोटकर हत्या के संबंध में जो रूक ही नही रही)

3) रामनंद बनाम स्टेट ऑफ हिमांचल प्रदेश के केस में, ये तो भयानक ही है–पति अपनी पत्नी की हत्या करने के लिए अन्तर्ग्रस्त था जबकि वे एक ही छत के नीचे रह रहे थे। मृत शरीर की अन्तयेष्टी कर दी गई और बाद में उसे टाँग एवं भुजा विहिन अवस्था में पाया गया। मांस

कुत्तों द्वारा खा डाला गया था। खोपड़ी का एक भाग अछुता था जबकि पंजर का शेष भाग कुछ दूरी पर पड़ा था। शव अत्यधिक सड़ी हुई थी, तथापि कूल्हे का कुछ भाग का मांस शेष रह गया था। जिस पर जलने के निशान, जिस आधार पर साक्षियों ने उसकी मृतका सावित्री होने की शिनाख्त की। उच्चतम न्यायालय ने अन्ततोगत्वा यह अभिनिर्धारित किया कि अभियुक्त अपनी निर्दोष पत्नी की हत्या के लिए उत्तरदायी था।

4) उदयपाल सिंह बनाम स्टेट यू0पी0 वाद (दुल्हन हत्या संबंधी)

इत्यादी ही अनेक वाद है महिलाएँ संबंधी। इससे लगता है कि महिलाओं की स्थिति बिगड़ रही है। इस स्थिति में मैथिलीशरण गुप्त की कुछ पंक्तियाँ चरितार्थ होती दिखती है–

''कौन थे, क्या हो गए हम,
और क्या होंगे अभी,
आओ विचारें आज मिलकर,
ये समस्याएँ सभी।।''

mi lgkj %&

अंत में इतना ही कहना उचित है कि विधिवेत्ता कितने ही कानून एवं दण्ड का प्रावधान करें, समाजशास्त्री कितना ही समाज सुधारक प्रयास करे, जब तक व्यक्ति की सोंच में मूलभूत परिवर्तन नही आता तब तक नारी उत्पीड़न एवं शोषण से मुक्ति नही पा सकती। समाज में महिला और पुरूष एक दूसरे के पूरक हैं, पोषक हैं न की शोषक। दोनो के बिना स्वस्थ एवं सुसंस्कृत समाज की अवधारणा असंभव है। फिर भी यदि हम व्यक्तिगत निष्ठा द्वारा स्वस्थ समाज के विकास हेतु कटिबद्ध हो जाएँ तो महिलाओं के प्रति बढ़ते अत्याचार रूपी अंधकार का पूर्णतः उन्मूलन करने में जुगनू की भूमिका का निर्वहन कर सकते हैं क्योंकि–

''यदि अमावस से लड़ने की जिद कोई कर लेता है।
एक अकेला जुगनू सारा अंधकार हर लेता है।।''

■■

iepn th d miU;klk e ukjh fpru

Mk- j[kk nqc
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
डॉ0 सी वी रमन विश्वविद्यालय
करगी रोड कोटा, बिलासपुर

नारी मानव की सृजनकर्ता, पालन–पोषण की उत्तरदायिनी और उनके जीवन अग्रगमन की आधार रही है। पौराणिक काल से उसे देवी स्वरूपा माना गया है समस्त कलाओं की अदेयता होने के कारण वह पूजनीय रही हैं। 'यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता' प्राचीन काल से लेकर नारी की स्थिति में काफी बदलाव हुए हैं। नारी का सम्मान पुरूषों के सदृश ही था। उत्तर वैदिक काल में उसकी स्थिति दुर्बल होती चली गयी, उसे परिवार का रक्षक मानने का दृष्टिकोण प्रारम्भ हुआ और वह पारिवारिक जिम्मेदारियों के बीच भी कर्त्तव्यों का निर्वहन करने लगी। हिंदी साहित्य में भी प्राचीनकाल, मध्यकाल, आधुनिककाल में विभिन्न विधाओं में लेखन कार्य प्रारंभ हुआ, जिसमें नारी केंद्र में रही है।

साहित्य जगत में प्रेमचंद जी को उपन्यास सम्राट के नाम से जाना जाता है, क्योंकि उन्होंने अपने साहित्य काल में 1918 से लेकर 1936 तक लगभग 15 उपन्यास लिखे जिसमें मंगलसूत्र उनकी अधूरी रचना मानी आती हैं, जिसे उनके पुत्र अमृतराय के द्वारा पुरा किया गया, साहित्य जगत में प्रेमचंद का आगमन तब हुआ जब समाज में अनेकों कुरीतियाँ और विषमताएॅ अपना घर कर गई थी, जिनमें जाति प्रथा, दहेज प्रथा, सती प्रथा, अनमेल विवाह एवं अनेकों सामाजिक कुरीतियाँ थी, जिससे समाज जूझ रहा था, उनके रचनाओं में सिर्फ और सिर्फ यथार्थता थी और कुछ भी नहीं बचपन से उन्होंने जो देखा जो भोगा उसी को अपनी लेखनी के माध्यम से साहित्य में उकेरा एवं समाज के लोगों को जागृत किया, क्योंकि उस समय केवल साहित्य रचना ही एक ऐसा माध्यम थी जो घर–घर पहॅुच सकती थी, उन्होंने अपनी रचनाओं में नारियों को प्रमुखता से स्थान दिया क्योंकि वो मानते थे कि नारी समाज का अभिन्न अंग है, और इसके बिना समाज की कल्पना करना मुश्किल है। वे स्वंय अपने जीवन काल में अपनी पत्नी से

बहुत प्रभावित थे, उन्होंने अपनी रचनाओं में नारी के हर रूप को दर्शाया है, चाहे वो गबन की जालपा का गहने के प्रति मोह हो या गोदान की धनियॉ का संघर्ष हो जो अपने पति की ही सोचती है कि कब इस घर की परेशानियॉ कम होगी वह समाज के बनाये हुये बंधन को मानने से इनकार कर देती है और झुनिया जो कि उसके पुत्र गोबर की प्रेमिका है, उसे सबके विरूद्ध जाकर पनाह देती है, वह जानती है कि ये समाज के नियम सिर्फ समाज के ठेकेदारों ने बनाये हैं। इससे हम गरीबों का क्या तालूक वह अपने हक अधिकार के लिए किसी से भी लड़ जाती है, एव ंसच कहने से नहीं डरती, वह साधु महराज के पाखंण्ड को भी अच्छे से समझती थी, वह कहती यह सब उनकों शोभा देते हैं, जिनके पास जमींन जायदाद है हम गरीबों के पास तो कुछ भी नहीं है, इस उपन्यास में उन्होंने धनियां के संघर्ष धैर्य, त्याग और बलिदान को प्रमुखता से दर्शाया है कि किस तरह धनियां एक साहसी नारी है जो परिस्थितियों के कमजोर होने पर भी नहीं डरती और एक साहसी नारी की तरह सब परेशानियों का सामना करती है और अपने पति के साथ खड़े रहती है अर्थात् प्रेमचंद यह बताना चाहते है कि जितना समाज में पुरूष का स्थान उतना ही नारी का भी वह भी पुरूष से किसी काम में कम नहीं है और इस परिस्थिति में भी वह हिम्मत नहीं हारती और होरी के साथ डटकर खड़े रहती है।

स्त्रियों को लेकर प्रेमचंद के विचार अपने समकालीन की तुलना में अत्यंत प्रगतिशील है। प्रेमचंद जी ने नारी के प्रति संवेदना मिश्रित सुधारवादी दृष्टिकोण को अपनाया। प्रेमचंद ने नारी को अन्त तक निर्णय नहीं कर पाये थे कि नारी को पूर्ण स्वतंत्रता मिलनी चाहिये या नहीं। सेवासदन उपन्यास में प्रेमचंद जी ने नारी जीवन की समस्याओं दहेज–प्रथा, वेश्यागमन पर केंद्रित है वेश्याओं के सुधार की समस्या उठायी है। डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार –'प्रेमचंद के मुख्य समस्या के साथ अन्य समस्या भी गुम्फित हो गई है। दहेज की समस्या ही वह मूल समस्या है जिसने नारी जीवन को नारकीय बना दिया है। प्रेमचंद को स्त्री जाति की निम्न स्थिति से गहरा असंतोष था।

वही बात गबन की जालपा की जाये तो इसमें स्त्री के आभूषण के प्रेम को दिखाया गया है, कि किस प्रकार जालपा गहने के प्रति आकर्षित है और उसे गहने से कितना मोह है और वह किस तरह चंद्रहार के सपने

देखती है और इसे पाकर वह और उसके पति किस तरह मुश्किल में पड़ जाते हैं, इसके माध्यम से प्रेमचंद यह बताना चाहते है कि किस प्रकार किसी भी चीज की अधिकता नुकसान देह होती है एवं किस प्रकार दाम्पत्य जीवन में ताल–मेल एक न होने से जीवन कष्टप्रद हो जाता है, प्रेमचंद नारी के स्वभाव को दर्शाते है कि किस प्रकार पुरूष उसे समझने की भूल करता है और झूठा दिखावा अपनी पत्नी के सामने करता है, उसे लगता है कि जालपा सब कुछ त्यागकर केवल अपने पति को पाना चाहती है, एवं वह उसे सही गवाही देने के लिए कहकर उसे सबके नजर में महान् साबित भी करती थी अर्थात् नारी को प्रेमचंद त्याग, सम्मान, बलिदान की मूर्ति मानते है, वह कहते है, कि नारी अपने प्रति के सम्मान के लिए सब कुछ त्याग कर भी सुखपूर्वक जीवन का निर्वाह कर सकती है, ये सिर्फ और सिर्फ एक नारी ही कर सकती है, और कोई भी दूसरा नहीं, वहीं उनके निर्मला उपन्यास की बात की जाये तो इसकी नायिका, निर्मला भी सम्पन्न परिवार की बेटी रहती है परन्तु ईश्वर की विडम्बना के कारण उसे अनेकों कष्ट सहने पड़ते है, उसका विवाह भुवनमोहन से तय हो चुका होता है, परन्तु पिता की आकस्मिक मृत्यु हो जाने और दहेज न दे पाने के कारण उस घर में उसका विवाह नहीं हो पाता और आर्थिक तंगी के कारण और दहेज की समस्या के कारण उसका विवाह उसके पिता के उम्र के व्यक्ति जिनका नाम मुंशी तोताराम है, से कर दिया जाता है। जिसके निर्मला की उम्र के लगभग 3 बच्चे पहले ही है, इस उपन्यास में नारी के उस मन की व्यथा कही गई है, जो भारतीय परिवार या समाज की एक बड़ी समस्या है, अक्सर माता–पिता दहेज न दे पाने के कारण उम्र में कई गुना बड़े और पहले से शादीशुदा व्यक्ति से अपनी बेटी का विवाह कर देते हैं, जिससे उम्र में अंतर के कारण दाम्पत्य जीवन में ढंग से ताल–मेल का न बैठ पाना और परिवार में कलह अशांति जैसे समस्या को दर्शाया गया है। इसके साथ ही नारी की दशा और भावुक मन की इच्छा को भी बताया गया है, कि किस प्रकार अपने पिता की उम्र के व्यक्ति को एक बालिका अपना पति मान ले और इससे दाम्पत्य जीवन की शुरूआत करें, वह खुद बच्ची है और किस प्रकार वह हमउम्र की बच्चों की माता बन जाये जो कि कहीं न कही इसके भंयकर अंजाम को दर्शाता और दिखाता है कि नारी तन से भले उम्र में बड़े इन्सान को अपना कतई भी इजाजत नहीं देता और परिवार में बिखराव उत्पन्न होते हैं। प्रेमचंद जी नारी के माध्यम से यह समझाना चाहते हैं की नारी केवल भोग की वस्तु

नहीं है कि जिसका मन चाहे उसके साथ गलत कर उसे झुठा दे वह यह बताना चाहते हैं कि नारी सर्व शक्तिशाली है, वह चाहे तो दुर्गा, काली, चण्डी का रूप लेकर समस्त पुरूष जाति का सर्वनाश कर सकती है, क्योंकि नारी ही जननी है और जननी का सम्मान न कर यदि अपमान किया गया तो इसके दुष्परिणाम सम्पूर्ण मानव जगत को भोगना पड़ेगा उन्होंने हमेशा नारी के सम्मान और नारी को आगे बढ़ाने की बाते कहीं, इसलिए उन्होंने अपने उपन्यास में प्रमुख रूप से उनकी दशा सुधारने की बात कही अन्यथा अंजाम की बात कही वह ऐसे दूरदर्शी थे जो आने वाली समय की बात भी लिख जाते थे।

निष्कर्षतः प्रेमचंद जी उपन्यासों में नारी का स्थान सदैव केंद्र में रहा है। साहित्य मे यथार्थ वादी दृष्टिकोण रखते हुए मुंशी प्रेमचंद जी ने बहुत ही बारिकी से पुरूषसत्ता समाज में नारी की स्थिति को प्रकाश में लाया है। नारी की स्थिति में तब से लेकर अब तक काफी परिवर्तन हुआ है और वह समय के साथ निरंतर अग्रपथ पर चल पड़ी है इस प्रकार प्रेमचंद जी उपन्यासों में नारी की स्थिति को यर्थाथरूप में प्रस्तुत किया है।

संदर्भ–

1. मनुस्मृति – प्रेमचंद
2. गोदान – प्रेमचंद
3. निर्मला – प्रेमचंद
4. गबन – प्रेमचंद
5. नई सहस्त्राब्दी का महिला सशक्तिकरण : अवधारणा, चिन्तन एवं सरोकार (भाग 3) पृ. 214
6. नारी चेतना के आवाज – डॉ. अलका प्रकाश
7. आधुनिक हिन्दी साहित्य में नारी, श्रीमती सरला दुआ

■■

vk/kfud fgUnh dk; e ukjh vfLerk dk /kjkryh; lp

Mk- ch-,u- tkxr
सहा0 शोध निर्देशक
सहायक प्राध्यापक
शा. दिग्विजय महाविद्यालय
राजनांदगाँव (छ.ग.)

ipika ;kno
शोध छात्रा
शा. दिग्विजय महाविद्यालय
राजनांदगाँव (छ.ग.)

हिंदी साहित्य का आधुनिक काल जो हमारी नई सोच और दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है, उसका निर्धारण 1843 ई0 से आज तक किया गया है। परंतु अधिकतर विद्धानों का मत है, भारतेन्दु हरिशचंद के जन्म सन् 1950 ई0 से ही हिंदी साहित्य के आधुनिक काल की शुरुआत हुई है। हिंदी साहित्य में अनेक प्रकार की विषयों को लेकर रचनाएं हुई है, जिनमें से एक विषय है '' नारी '' नारी चेतना, नारी अस्मिता, नारी विमर्श, स्त्री मुक्ति अपने विषयों पर चर्चाएं एवं रचनाएं हो रही हैं। आधुनिक हिंदी काव्य भी इससे अछूता नहीं है। वस्तुतः यह विषय तो प्राची है, जिस पर लेखकों ने रचनाएं भी की है।

भारत के इतिहास के पन्ने भारतीय स्त्रियों के विशिष्ट रचनाओं से भरे पड़े हैं। प्राचीन काल में नारी शिक्षा का अवसर मिलता था, किंतु आधुनिक समय में अंधविश्वास ने नारी शिक्षा से अधिकार पर ग्रहण लगा रखा है। समाज में अनेक कुप्रथाओं का प्रभाव दिखाई पड़ता है, जिसमें नारी को ही भोगना पड़ता है। कवि इन्हीं विषयों को लेकर अपनी रचनाएं करते हैं।

स्त्री शिक्षा की शरुआत आधुनिक काल के नवजागरण काल से ही हुई है। साहित्य में नारी पर अनेक रचनाएं रचित है। नारी की दुर्दशा पर मैथलीशरण गुप्त जी ने अपने विचार प्रस्तुत किये हैं –

'' अबला जीवन हाय, तुम्हारी यही कहानी।
आंचल में है दूध और आंखों में पानी। '' [1]

अंग्रेजी शासन के विरुद्ध नारियों में स्वतंत्रता आंदोलन, सत्याग्रह आंदोलन में भाग लिया और अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आधुनिक

काल में समाज में व्याप्त विसंगतियों के विरुद्ध राजा राममोहन राय और स्वामी दयानंद सरस्वती जैसे समाज सुधारकों ने नारी उत्थान के लिए प्रयास किया। नारी स्वाभिमान को बढ़ावा देकर अथक प्रयास किया, इसी विषय पर सुमित्रानंदन पंत की कविता में लिखा है –

'' योनी नहीं है रे नारी, वह भी मानवी प्रतिष्ठा।
उसे पूर्ण स्वाधीन करो, वह रहे न नर पर अवसिता। '' [3]

राष्ट्रीय चेतना से प्रभावित होकर सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी कविता ''झांसी की रानी'' से नारी के सम्मान में चार चांद लगा दिये। सुंदरता प्राप्ति के पश्चात् नारी समानता के प्रयास किये जाने लगे। नारी को दायरे में रहकर कार्य करने के लिये विवश किया जाता था, किंतु आधुनिक काल में साहित्यकारों ने नारी को समकक्ष खड़े होने की समानता दिलाने के लिये अथक प्रयास किया है, जिससे प्रभावित होकर अनेक महिला साहित्यकारों के नाम सामने आने लगे। जैसे – सुभद्रा कुमारी चौहान, महादेवी वर्मा, मैत्रीय पुष्पा, कुसुम अंसल, मृदुला गर्ग, अमृता प्रीतम, अनामिका निर्णाल पाण्डेय, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, ऊषा प्रियम्बदा, आदि। इन महिला साहित्यकारों ने समाज में अपना एक अलग मुकाम बना लिया है। इनकी रचनाएं राष्ट्रीय एवं अंर्तराष्ट्रीय स्तर की मानी जाती है। आधुनिक काल में कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं रह गया है, जहां नारी का नाम न हो, आधुनिक नारी घर की सीमा को लांघकर अपनी नाम बनाने में जुटी हुई, जबकि पुरुष आज भी घर की सीमा में नहीं पहुंच पाया है। स्त्री की सफलता पर पुरुष मानसिकता बदलती जा रही है और उनकी सोच निम्न होती जा रही है, जिससे समाज में हो रही घटनाएं दिल दहला देती हैं। स्त्री बाहर निकलने से ही असुरक्षित महसूस करने लगती है, जब समानता की बात कही जाती है, तो क्यों स्त्री को ही सहना पड़ता है। कुछ भी गलती है, तो वह स्त्री के माथे मड़े जाती है। आजादी के बाद आधुनिक साहित्यकारों ने नारी स्वतंत्रता के लिये अपनी कलम चलाई है। इनमें से प्रमुख हैं– केदारनाथ अग्रवाल, रघुवीर सहाय, नगार्जुन, रांगेय राघव, त्रिलोचन, राजेन्द्र यादव, आदि। समाज में नारी के साथ जो भेदभाव हो रहे हैं उस पर नागर्जुन ने नारी समानता की बात पर एक कविता लिखी है।

'' नर–नारी में मर्यादा बोध, सम–सम होंगे,
सम–सम होगा न्याय, सम–सम होगा विद्या–बुद्धि और विवेक,

टिक सकता है क्यों कर वहां प्रवाद, जाग्रत होगी जहां परख की आंच।'' [4]

आधुनिक युग में कवियों ने युग–युग से शोषित एवं दलित नारी को उत्थान का संदेश दिया। नारी के उत्थान से ही समाज का उत्थान हो सकता है। जब तक नारी को श्रद्धा की वस्तु माना जायेगा, तब तक वह समाज के विकास में योगदान दे सकते हैं। जहां वह भोग की वस्तु समझी जायेगी, वह समाज की पतन का कारण बन जायेगी। इस प्रकार हिंदी साहित्य में नारी का स्थान उच्च है। आज की नारी समाज के हर रुढ़ि को तोड़कर आगे बढ़ने के लिये प्रेरित हो रही है। नारी अपने अधिकार और समानता के लिये लड़ रही है। आधुनिक नारी अपनी पहचान बनाने में सक्षम होते जा रही हैं। साहित्य के क्षेत्र में महिला साहित्यकारों ने अपनी अलग पहचान बनाई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

01. गुप्त, मैथिलीशरण. यशोधरा. झांसी : साहित्य सदन, चिरगांव. प्राक्कथन से उद्धरित
02. पंत, सुमित्रानंदन. युगवाणी. पृष्ठ क्रमांक– 46
03. पंत, सुमित्रानंदन. युगवाणी. पृष्ठ क्रमांक– 46
04. नगार्जुन. भूमिजा. नई दिल्ली : राधा कृष्ण प्रकाशन दूसरी आवृत्ति पृष्ठ क्रमांक– 67

■■

fgUnh miU;klksa esa ukjh dk /kjkryh; lp

Mk- pUæ dekj tSu
शोध निर्देशक
सहायक प्राध्यापक
शा. दिग्विजय महाविद्यालय
राजनांदगाँव (छ.ग.)

thofrdk Bkdqj
शोध छात्रा
शा. दिग्विजय महाविद्यालय
राजनांदगाँव (छ.ग.)

सृष्टि ने मानवजाति में पुरुष और नारी रुपी भिन्न लिंगों के जीवों का सृजन किया है। इसमें मानव जाति के सृजन तथा विकास के दायित्व की अधिकारिणी नारी शक्ति ही है। समाज में नारी और पुरुष दोनों का अस्तित्व समान है। किसी एक के न होने से दूसरा अधूरा हो जाता है। जैसे गाड़ी के किसी एक पहिये के न होने से गाड़ी आगे नहीं बढ़ सकती। उसी प्रकार नारी के बिना सृष्टि की रचना करना संभव नहीं है। क्योंकि सृष्टि के मूल में ही नारी समाहित है और पुरुष को समान मानने में अच्छा है, किन्तु सदियों से भारतीय समाज पुरुष प्रधान रहा है। पुरुष का स्थान प्रथम है तो नारी का दूसरा। नारी को बचपन से ही घरवालों के बंधन में रहना पड़ता है। नारी को तो विवाह के बाद पति के घरवालों के बंधन में। प्राचीन युग से लेकर आधुनिक युग तक नारी विभिन्न भूमिकाओं में अपना उत्तरदायित्व निभाती हुई समाज में संरचना में अपना योगदान देती आ रही है। उसके भूमिकाओं का स्पष्ट चित्र साहित्य में अंकित है। नारी माता से लेकर प्रिया, पुत्री, सहचरी, आदि भूमिकाओं को निभाते आ रही है।

भारतवर्ष का इतिहास साक्षी है कि यहां ऋग्वैदिक कालीन सामाजिक व्यवस्था में स्त्रियों को पुरुषों के समान बराबरी का दर्जा हासिल था, किन्तु जैसे–जैसे समाज में पुरुषों का वर्चस्व बढ़ता गया, वैसे–वैसे अन्य उपभोग वस्तुओं के समान ''स्त्री'' भी भोग की वस्तु बनकर रह गई। शक्ति और शक्तिशाली की अराधना करते–कराते भारतीय समाज इतना नृशंस, क्रूर और संवेदनशील हो गया है कि उसमें स्त्री के विषय में अनेक ऐसी विरोधी कथाएँ एवं कहावतें एवं किवंदतियां गढ़ ली है, जिनके अवलोकन से ही ध्वनित होता है कि वह मानव पुरुषों की समस्त समाजिक, पारिवारिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं वैयतिक उन्नति की अवरोधक मात्र है। अन्यथा–

'' नारी नसावि तीन सुख, नारी की छाई परत,
कत विधि सृजी नारी जग माही,
जा घर बिटिया सुन्दर देखी, दूधो नहावो फूतो फलो, '' ।। 1

हिंदी उपन्यासों का इतिहास एक प्रकार से आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास है। गद्य की विधाओं में उपन्यास सबसे लोकप्रिय विधा है। उसके बाद नाटक, एकांकी, कहानी आता है। उन्यासों के परंपरागत, जीवन के यथार्थ को रचनाकारों ने अपने उपन्यासों के माध्यम से व्यक्त किया है। और उपन्यासों के माध्यम से सिर्फ अपनी भावना को नहीं बल्कि जीवन को प्रस्तुत किया जाता है। इस तरह से रचनाकार जीवन के सत्य को अपने उपन्यासों के माध्यम से व्यक्त करता है।

हिंदी साहित्य के इतिहास में आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक नारी की जो वास्तविकता है उसको रचनाकारों ने अपने रचनाओं के माध यम से व्यक्त किया है। प्रेमचंद के उपन्यासों में स्त्री के यथार्थ जीवन का चित्रण अपनी रचनाओं के माध्यम से किया है, जिसमें सेवासदन, प्रेमाश्रम, गोदान, गबन, निर्मला इन सब उपन्यासों में स्त्री के यथार्थ जीवन उच्चवर्गीय और मध्यमवर्गीय समाज में नारी की स्थिति तथा अपने अधिकारों के प्रति उसकी क्रमशः उभरती गई जागरुकता को प्रायः उनके सभी उपन्यासों के चित्रित है।

डॉ0 श्यामसुंदर दास के कथनानुसार – '' हिंदी उपन्यास क्षेत्र में प्रेमचंद जी की रचनाओं ने युगांतर उपस्थित किया। हिंदी वालों ने उनके पहले मौलिक उपन्यास ''सेवासदन'' का उतावली के साथ स्वागत किया और ''प्रेमाश्रम'' निकलते ही वे हिंदी के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार कहलाने लगे। '' ।। [2]

''रानी केतकी की कहानी का यह स्थल किसी भी श्रेष्ठ उपन्यास के स्थल से कम मार्मिक नहीं है। '' जब रात सांय–सांय बोलने लगी और साथ वालियां सब सो रही, रानी केतकी ने अपनी सहेली मदनबान को जगाकर यों कहा अरि ओ, तूने कुछ सुना है? मेरा जी उस पर आ गया है, और किसी डौल से थम नहीं सकता। तू सब मेरे भेदों को जानती है अब होनी जो हो सो होय सिर रहता रहे, जाता जाये। मैं उसके पास जाती हूँ। तू मेरे साथ चल, तेरे पांव पड़ती हूँ। कोई सुनने ना पाये। '' ।। [3]

हिंदी उपन्यासों में हम एक परंपरागत मध्यमवर्गीय भारतीय स्त्री की कल्पना करते हैं, तो जो छवि हमारे सामने उभरती है, वह होती है एक दिन ही, सदियों से पीड़ित, वंचित महिला की जिसके मस्तिष्क में विचार एवं मुँह

में जुबान नहीं होती, जिसकी सारी मानसिक व शारीरिक शक्तियां सिर्फ घर व कीचन की देहरी तक सिमित कर दी गई हैं। यानिकी पुरुष खेतों के लिए हैं एवं महिलाएं चुल्हे के लिए, पुरुष आज्ञा देने वाला है एवं स्त्रियां आदेश पालन को। यह निर्धारण परिवार एवं समाज में सुव्यवस्था कायम रखने के लिये किया गया था या वास्तव में स्त्रियों को हाशिये में धकेलने की एक सोची समझी साजिश थी। जिसके फलस्वरुप आज हमारा समाज पितृसत्तात्मक है और स्त्रियां दलित यह बहुत से रचनाकारों के उपन्यासों में दिखाई देता है। मन्नू भंडारी '' आपका बंटी '' के उन बेजोड़ उपन्यासों में है, जिनके बिना न 20वीं शताब्दी के हिंदी उपन्यास की बात की जा सकती है न स्त्री विमर्श को सही धरातल पर समझा जा सकता है। एक स्त्री में कितने रुप होते हैं। एक मां, पत्नी, बहन, भाभी, सहेली और न जाने कितने रुपों में अपने कर्तव्यों का निर्वाह करती है। फिर भी उसे कमजोर और लाचार समझा जाता है। स्त्रियों को अपने अंदर सोई हुई उस शक्ति को जगाकर समाज में अपनी दिव्यछाया छोड़नी होगी, तभी वे देश के विकास में कंधे से कंधा मिलाकर पूर्ण योगदान दे सकेंगी।

भारतीय नारी की समाजिक स्थिति में परिवर्तन लाने के लिये समाज की सोच को बदलना होगा साथ ही महिलाओं में अपने व्यक्तित्व एवं अस्तित्व की रक्षा के लिये जागरुकता पैदा करनी होगी। नारी की सुंदरता का पूर्ण लक्ष्य हम तभी प्राप्त कर सकेंगे, जब हम एक ऐसे सांस्कृतिक वातावरण का निर्माण कर लेंगे, जहां नारी को समाज के एक आवश्यक अंश के रुप में स्वीकार किया जायेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

01. प्रसाद, कमला, शर्मा राजेन्द्र. स्त्री मुक्ति का सपना. नई दिल्ली. वाणी प्रकाशन. द्वितीय संस्करण : 2009
02. सियाराम, स्त्री विमर्श के विविध संदर्भ : दिल्ली, ओमेगा प्रकाशन. प्रथम संस्करण : 2013
03. डालमिया, दिनेश नंदनी, गोयल, संतोष. नारी एक सफर. दिल्ली. ग्यान भारती प्रकाशन. प्रथम संस्करण : 2010
04. अग्रवाल, बिन्दु. हिंदी उपन्यास में नारी चित्रण. नई दिल्ली. राधाकृष्ण प्रकाशन.
05. बद्रीदास. हिंदी उपन्यास पृष्ठभूमि और परंपरा. कानपुर. ग्रन्धम प्रकाशक . प्रकाशन : 1966

■■

Hkkjrh; lekt e ukjh dk LFkku dy] vkt vkj dy

ylunkl ekfudiqjh
अतिथि प्राध्यापक समाजशास्त्र
एम.जी शा. महावि. खरसिया

euh"kk oekZ
Friend कालोनी वार्ड नं.3
खरसिया, जिला रायगढ़ (छ.ग.)

---

iLrkouk &

भारत एक धार्मिक देश है। यहॉ अलग अलग धर्मो के लोग निवास करते है तथा सभी के धर्मो में नारियों के लिये अलग अलग नियम व प्रथाऍं है और हमारे हिन्दू धर्म ग्रंथों में नारी को पूजनीय व देवी का दर्जा दिया गया है। वेदों में कहा गया है कि – यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते तत्र रमन्ते देवता।

अर्थात जहां नारियों की पूजा होती है वहां देवता निवास करते है।

अतः इसका मंतव्य है कि समाज को नारी का आदर करना चाहिए क्योंकि जहां नारी को आदर सम्मान दिया जाता है वहां सुख समृद्धि एवं शांति रहती है। नर व नारी दोनो ही समाज का महत्वपूर्ण अंग है। नर व नारी समाज रूपी गाड़ी के दो पहिये है, यदि इनमें से एक पहिया निकल जाए या दुसरे से छोटा–बड़ा कर दिया जाए तो यह समाज रूपी गाड़ी कभी आगे नहीं बढ़ सकती। अर्थात नर–नारी दोनो में से किसी का भी महत्व कम कर दिया जाए तो समाज की, देश की प्रगति रूक जाएगी। पुरूषों की तुलना में महिलाओं के महत्व को कम कर दिये जाते है और पुरूष प्रधान समाज बनाया जाता है, परंतु यह सदैव हानिकारक है। यदि समाज की प्रगति करनी है तो नारी को भी पुरूष के समाज महत्व व सम्मान दिया जावे। भारतीय नारियॉ स्वयं के साथ–साथ परिवार, समाज व देश की भी प्रगति करती है। कहा जाता है कि एक पुरूष साक्षर होगा तो सिर्फ एक पुरूष ही साक्षर होगा परंतु यदि एक स्त्री साक्षर होगी तो दो परिवार व आने वाली पढ़ी भी साक्षर होगी। क्योंकि स्त्रियॉ ही अपने बच्चों का पालन पोषण करती है और यदि वह साक्षर हुई तो वह अपने बच्चों की अच्छी शिक्षा एवं संस्कार दे सकेगी अर्थात स्त्री के सम्मान में कभी कमी नहीं चाहिए क्योंकि स्त्रियॉ भी समाज का अभिन्न अंग है।

ikphu dky esa ukjh dk LFkku &

प्राचीन काल में भारतीय समाज में नारी को महत्व प्रदान किया जाता था नारी को पुरूष के पूरक माना जाता था। किसी भी धार्मिक अनुष्ठान बिना पत्नि के अधूरे माने जाते थे। इसीलिए श्रीराम ने अश्वमेघ यज्ञ के समय सीता माता की स्वर्ण प्रतिमा बनवाई थी। सीता, सावित्री, शकुन्तला को नारी रत्न माना गया है, जिन्होने अपने कार्य एवं व्यवहार से संसार के समक्ष आदर्श प्रस्तुत किया। महाकवि कालिदास ने नारी की सामाजिक भूमिका उल्लेख करते हुए उसे ''गृहणी सचिव'' प्रिय सध्वी कहा है, प्राचीन भारत की नारी स्वेच्छा से वर चुनती थी, स्वयंवर प्रथा इसका प्रमाण है।

e/;dky esa ukjh dk LFkku &

मध्यकाल में आकर नारी की स्थिति शोचनीय हो गई। उसे घर की चार दिवारी में बंद होने को मजबूर (विवश) होना पड़ा, मुसलमानों का शासन स्थापित हो जाने पर देश में पर्दाप्रथा का प्रचलन हुआ और नारी की स्वतंत्रता पर अंकुश लग गया, उसे यथासम्भव घर के कामबाज तक सीमित कर दिया गया। परिणामतः उसका तेज एवं गौरव लुप्त हो गया। वह पुरूष की वासनापूर्ति का साधन मात्र बनकर उपभोग की वस्तु बन गई। बाल विवाह, सती प्रथा एवं पर्दा प्रथा जैसी सामाजिक बुराइयों का जन्म इसी काल में हुआ, अल्पायु में ही विवाह बंधन में बांध दिया जाता था। अतः नारी का शिक्षा की ओर ध्यान भी कम हो गया। पति की मृत्यु हो जाने पर उसे जीते जी चिता पर जलने को विवश किया जाता था और जला भी दिया जाता था। समाज में विधवा स्त्री की दशा पशुओं से भी बदतर थी और पौष्टिक भोजन भी नहीं ले सकती थी। पिता अथवा पति की सम्पत्ति की उत्तराधिकारी भी वह नहीं बन सकती थी। वस्तुतः इस काल की नारी भोग्या थी तथा हिंदी के मध्यकालीन काव्य में नारी को नरक का द्वार तक कहकर उसकी निंदा की गई हैं कबीर ने नारी के संबंध में कहा हैः–

नारी की झाई पड़त अंधा होत भुजंग।

अर्थात गभर्वती नारी की छाया मात्र पड़ने से सर्प भी अंधा हो जाता है।

vk/kfud dky esa ukjh dk LFkku &

आधुनिक काल में पुनः नारी की अवस्था में सुधार हुआ। स्वतंत्रता आंदोलन में भी नारियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। झॉसी की रानी

लक्ष्मीबाई अपने अपूर्व शौर्य का परिचय देकर नारी की शक्ति का बोध कराया तो सरोजनी नायडू, कस्तुरबा, कमला नेहरू जैसी नारियों ने अंग्रेजो के खिलाफ संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। इस काल में अनेक समाज सुधारको ने भी नारी की स्थिति को सुधारने में योगदान दिया। राजा रामनोहन राय, महर्षि दयानंद सरस्वती, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जैसे लोगों ने सती प्रथा के विरूद्ध आवाज उठाई तथा विधवा विवाह की वकालत की। साहित्यकारों ने भी नारियों का खोया गौरव पुनः प्रदान करने की दिशा में बहुत योगदान दिया। प्रसाद जी ने कामायनी में नारी गौरव प्रतिष्ठित करते हुए नारियों के संपूर्ण व्यक्तित्व को एक ही पंक्ति में परिभाषित कर दिया है।

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विष्वास रजत नग पग तल में।
पीयुष स्त्रोत सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।।

अर्थात नारी करूणा, क्षमा, स्नेह, ममता, विश्वास की देवी है। नारी पुरूष के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका है। छायावादी कव पंत जी ने भी स्त्री को देवी, मॉ, प्राण कहकर अपनी श्रद्धा व्यक्त की है तथा महादेवी वर्मा छायावादी साहित्य में मानवीकरण अलंकार में ख्याति प्राप्त की थी। आधुनिक काल की नारियॉ पुरूषों से कंधा मिलाकर चल रही है। हर क्षेत्र में स्वतंत्र और प्रतिभा दिखा रही है। लता मंगेशकर गायन के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा दिखा रही है, हिमादास एथलेटिक्स चैम्पियनशिप की 400 मीटर दौड़ स्पर्धा में पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला खिलाडी बनी। इसी तरह बहुत सी नारियॉ है जे हर क्षेत्र में अवना वर्चस्व बना रही है।

vk/kfud lekt e ukjh d vf/kdkj &

भारतीय संविधान ने नारी को समान अधिकार प्रदान किये है उसे मतदान करने का अधिकार है तथा पिता की सम्पत्ति में हिस्सा प्राप्त करने का भी अधिकार है। महिला आरक्षण एवं शिक्षा से उनमें आत्मविश्वास का संचार किया है और अब वे प्रत्येक क्षेत्र में सक्रिय भूमिका का निर्वाह कर रही है। आज वे बड़े बड़े पदों पर कार्यरत है। पुलिस, प्रशासन, न्याय, शिक्षा जैसे क्षेत्रो में उन्होने अपनी योग्यता के झण्डे गाड़े है। राजनीति में प्रधानमंत्री स्व. इंदिरा गांधी ने नारी के गौरव को स्थापित किया।

अब वे पुरूषों के इशारों पर नाचनें वाली कठपुतली नहीं रही है अपितु इनका स्वतंत्र व्यक्तित्व है और उनकी स्वतंत्र सत्ता है। पंचायतों,

जिला परिषदों में उन्हें पूरा प्रतिनिधित्व प्राप्त है। आज उनका कार्यक्षेत्र घर की चार दिवारी से बढ़कर बाहर के दफ्तरों, अस्पतालों, अदालतों, शिक्षा संस्थाओं व संसद में भी अच्छी संख्या में दिखाई पड़ रही है। महिलाएं अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो रही है और समाज भी उनके अधिकारों का सम्मान कर रहा है। किंतु जब तक हमारे समाज में लड़के–लड़की को समान नहीं समझा जायेगा उनके प्रति भेदभाव किया जायेगा तब तक नारियों की स्थिति में सुधार का दावा नहीं कर पायेगें।

fu"d"k &

अंत में इतना ही, कि समय आ गया है, जब हम समाज में नारी को बराबरी के अधिकार दें, तभी हमारा समाज प्रगति पथ पर अग्रसर हो सकेगा। आज नारी को प्रत्येक क्षेत्र में स्वतंत्र कर देना चाहिए। यदि नारियों का साथ दिया जाए आगे बढ़ने में, तो वह हर क्षेत्र में जीत हासिल कर सकती है। नारियों को पुरूष समाज अधिकार दिया गया, परंतु कुछ विषयों में अभी भी उन्हें पुरूषों की तुलना में स्वतंत्रता नहीं है। आधुनिक काल में महिलाओं को आगे बढ़ने का मौका दिया जा रहा है, परंतु उन्हें आगे बढ़ते हुए कई आपराधिक तत्व अपराध का शिकार भी बना रहे है। महिलाओं के साथ अपराध तेजी से बढ़ रहे है जिन्हें रोकना आवश्यक है। फिर उन्हें हर क्षेत्र में आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता तथा महिलाओं की शक्ति को पहचानना आवश्यक हैं। महिलाओं को आगे बढ़ने के लिये प्रेरित करें।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. स्त्रोत– दैनिक भास्कर, हरिभूमि (बिलासपुर संस्करण)
2. विकीपीडिया, सोशल मीडिया

■■

fgUnh lkfgR; e ukjh&foe'k

Mk- lquhrk jkBkj
शा.एम.एम.आर. पीजी कॉलेज, चांपा
डॉ. बी.आर.. महिपाल
शा.एम.एम.आर. पीजी कॉलेज, चांपा

हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श जिसमें नारी जीवन की अनेक समस्याएं देखने को मिलता है। हिन्दी साहित्य में छायावाद काल से स्त्री–विमर्श का जन्म माना जाता है। महादेवी वर्मा की ''श्रृंखला की कड़िया'' नारी सशक्तिकरण का सुन्दर उदाहरण है।

प्रेमचंद से लेकर आज तक अनेक पुरूष लेखकों ने स्त्री समस्या को अपना विषय बनाया लेकिन उस रूप में नहीं लिखा जिस रूप में स्वयं महिला लेखिकाओं ने लिखी है। अतः स्त्री विमर्श की शुरूवाती गुंज पश्चिम में देखने को मिला। सन् 1960 ई. के आस–पास नारी सशक्तिकरण जोर पकड़ी जिसमें चार नाम चर्चित हैं। उषा प्रियम्वदा, कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी एवं शिवानी आदि लेखिकाओं ने नारी मन की अन्तद्वंदो एवं आप बीती घटनाओं को उकेरना शुरू किए और आज स्त्री–विमर्श एक ज्वलंत मुद्दा हैं।

सुशीला टाकभौंरे के काव्य संग्रह 'स्वातिबूंद' और 'खारे मोती' तथा 'यह तुम थी' जानों काफी चर्चित रहे हैं। इनकी विद्रोही कविता में आक्रोश की घ्वनि सुनाई पड़ती हैं –

''मां बाप ने पैदा किया था गूंगा
परिवेश ने लंगड़ा बना दिया
चलती रही परिपाटी पर
बैसाखियां चरमराती है।
अधिक बोझ से अकुलाकर
विस्कारित मन हुंकारता है
बैसाखियों को तोड़ दूं।''

उपर्युक्त कविता स्त्री–जीवन की वास्तविकता को प्रदर्शित कर रही हैं।

स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी गद्यकार एवं कवि रघुवीर सहाय जी नारी जीवन की वास्तविक चित्र खींचा हैं, उन्होंने अपने काव्य में स्वतंत्रता के बाद स्त्री जीवन की अनेक समस्याओं को विषय बनाया हैं। जिस भारत में स्त्री वैदिक काल में ''यत्र नार्यस्तु पूज्यंते तत्र रमेते देवता'' कहा जाता था, आज वही अनेक शोषण का शिकार हो रही है ? वह कहता है–

'' नारी बेचारी है
पुरूष की मारी
तन से क्षुदित है
लपक कर झपक कर
अंत में चित्त है।''

प्रस्तुत पंक्ति में कविवर सहाय जी नारी को बेचारी कहकर उसकी दयनीय दशा का वर्णन किया है जो अपने अधिकारों के लिए लड़ नहीं पाती। लेकिन वर्तमान में यह स्थिति परिवर्तित नजर आती है। भारत सरकार ने सन् 2001 को महिलाओं के सशक्तिकरण वर्ष के रूप में घोषित किया। अब नारी अपनी हर एक अधिकार को लेकर रहेगी। यही लड़ाई स्त्री–विमर्श या नारी सशक्तिकरण के रूप में परिलक्षित होती है।

हिन्दी कथा साहित्य में नारी–विमर्श का जोर आठवें दशक तक आते–आते एक आंदोलन का रूप ले लिया। आठवें दशक के महिला लेखिकाओं में उल्लेखनीय है – ममता कालिया, कृष्णा अग्निहोत्री, चित्रा मुद्‌गल, मृदुला सिन्हा, मंजुला भगत, मैत्रयी पुष्पा, मृणाल पाण्डेय, प्रभा खेतान, जया जादवानी, मुक्ता रमणिका गुप्ता आदि ये सभी लेखिकाओं ने नारी मन की गहराइयों, अंतद्वंदों तथा अनेक समस्याओं का अंकन संजीदगी से किया हैं।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता हैं कि नारी आदिकाल से ही पीड़ित एवं शोषित रही है, पुरूष प्रधान समाज मान मर्यादा के आड़ में सदा उसे दबाकर रखना चाहा। कभी घर का इज्जत कहकर तो कभी देवी कहकर चार दीवारों के अंदर कैद ही रखा। इन्हीं परम्परागत पितृसत्तात्मक बेड़ियों को लांघने की लड़ाई है स्त्री–विमर्श।

■■

vxuik[kh e ukjh l?k"k

Mk- gfj.kh jkuh vkxj
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
शा. विलासा गर्ल्स पीजी कॉलेज,
बिलासपुर (छ.ग.)

y{k'ojh
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
कि0 शा. कला एवं विज्ञान महावि.
रायगढ़ (छ.ग.)

मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य के केन्द्र बिन्दु में नारी है। लेखिका नारी शक्ति के विभिन्न और नवीन आयामों का निरंतर छानबीन कर अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त करती है, इसलिए उनकी साहित्य मे पितृसत्तात्मक समाज के प्रति अत्यंत आक्रोश दिखाई देता है। मैत्रेयी पुष्पा की उपन्यास अगनपाखी में लेखिका ने मानवीय संबंधों की जटिलता, घुटन, तनाव, अंधविश्वास और सती प्रथा जैसे कुंरीतियों आदि को अत्यंत सचिवता पूर्वक प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास की नायिका भुवन ससुराल वालों की ओर से मिलने वाली विभिन्न प्रकार की कष्टों और यातनाओं को झेलती हुई जीवन की सत्यता और वास्तविकता से रुबरु होकर अपने अधिकारों के प्रति सजग हो पितृसत्तात्मक विचारधारा और सामंती प्रथा का विरोध करती है। भुवन संबंधों के आड़म्बरों को, सदियों से चली आ रही नारी उत्पीड़न की जर्जर परम्पराओं को तोड़ती हुई अपनी अस्तित्व और अस्मिताओं की पहचान और सुरक्षा हेतु जागृत दिखाई पड़ती है।

भारतीय समाज में नारी सामंती विचारधारा और कुप्रथा का शिकार होती है, तथा समाज में प्रचलित कुरीतियों और अंधविश्वासों के नाम पर स्त्री अपने कष्टों को भाग्य का लिखा मानने के लिए बाध्य हो जाती है। धर्म और रीति रीवाजों के नाम पर नारी की स्वतंत्रता छीनकर दासतापूर्ण जीवन जीने के लिए पितृसमाज मजबूर कर उनका आर्थिक, शारीरिक और मानसिक शोषण करता है। अगनपाखी उपन्यास में लेखिका भुवन के माध्यम से सामंती विचारधारों को कड़ी टक्कर देती हुई दिखलाई पड़ती है।

■■

ukjh foe'k dh ifjçs{; esa ^fNUueLrk*

M,- n;kfuf/k lk
सहायक प्राध्यापक व विभाग प्रमुख, हिन्दी विभाग
महात्मा गांधी स्नातक महाविद्यालय, भुकता, जिला– बरगढ़,
ओड़ीशा

çLrkouk&

डॉ. प्रभा खेतान बीसवीं शताब्दी की एक सशक्त महिला कथाकार व विशिष्ट साहित्य साधिका हैं।[1] नवंबर 1942 को कोलकाता में जन्मी प्रभा जी व्यक्तित्व बहुआयामी एवं वैविध्य पूर्ण है। दर्शनशास्त्र में एम.ए., पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त करनेवाली प्रभा जी हिन्दी की साहित्य साधिका के रूप में उत्कृष साहित्य कृतियाँ सरजी हैं। आओ पेपे घर चलें, छिन्नमस्ता, पीली आँधी, अग्निसंभवा, तलबंदी, अपने–अपने चेहरे सरीखे उपन्यास के माध्यम से नारीवादी स्वर बुलंद करनेवाली समर्थ कथाकार हैं। प्रतिभाशाली महिला पुरस्कार, टाप परशनलिटी अवार्ड, महा पंडित राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार जैसे प्रतिष्ठित सम्मानों से सम्मानित प्रभा खेतान की साहित्य प्रतिभा पूरे हिन्दी साहित्य जगत को प्रभावित करनेवाली है। सन 1993 में प्रकाशित 'छिन्नमस्ता'नारी विमर्श की कई परतों को खोलनेवाली सफल उपन्यास कृति है।

ukjh dh ikfjokfjd&lkekftd igpku &

नारी विमर्श मूलतः नारी समाज का उत्कर्ष साधित करने वाला एक साहित्यिक आंदोलन है। सभ्यता, संस्कृति, कला धर्म, विज्ञान राजनीति, अर्थनीति, कानून, साहित्य सरीखे क्षेत्रों में नारी विषयक चिंतन, विचार, तर्कदृ वितर्क तथा कल्पना की अभिव्यंजना ही नारी विमर्श है। नारी विमर्श, नारीवाद या नारी मुक्ति पर एक चिंतन मनन है, यह एक विचारधारा है जो नारी स्वातन्त्र्य की वकालत करती है। नारी को पुरुष एवं नारी (मानव समाज) शोषण, अन्याय, अत्याचार से मुक्ति दिलाना और समाज की मुख्य धारा से जोड़ कर राष्ट्रनिर्माण तथा विश्व–निर्माण में शामिल करना ही नारी विमर्श या नारीवाद का प्रदेय है। यह नारी अस्मिता व नारी चेतना का दूसरा

रूप है जो नारी मुक्ति, नारी शक्ति, नारी स्वातन्त्र, नारी सशक्तिकरण जैसे मुद्दों पर कारगर कदम उठाता है। नारी विमर्श को परिभाषित करते हुए डॉ. सूर्यबाला लिखती हैंदृ"मेरी समझ में नारी जीवन का विश्लेषण ही नारी विमर्श है नारी को सम्पूर्ण अंतरंग और बहिरंग को समझने की कोशिश, आवरणों और जकड़नों को भेदकर बाहर आई स्त्री का मन, स्त्री की सोच दृष्टि समस्याओं, स्थितियों तथा मनः स्थितियों का विश्लेषण ही नारी विमर्श है।''[01]

आजादी के सत्तर साल गुजर जाने बाद भी आज हम स्वस्थ–समृद्ध भारत का निर्माण नहीं कर पाये हैं। आज हमारे सामने ढेर सारी चुनौतियां खड़ी हैं, जिन्हें खत्म करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। नारी समाज के प्रति हमारी सोच आज भी हीनग्रस्त है। आज भी नारी हमारे बीच असुरक्षित हैं और अपनी सुरक्षा को लेकर संवेदनशील है। आए दिन नाबालिग लड़कियों के साथ, बहूदृबेटियों के साथ, पत्नियों के साथ कई तरह के उत्पीड़न हो रहे हैं। आज नारी उत्पीड़न की शिकार हो रही है। वर्तमान कालीन समाज में नारी की यथार्थ स्थिति को डॉ० गिरधारी के इन शब्दों से समझा जा सकता है– "कितने आश्चर्य की बात है कि जो नारी सम्पूर्ण मानव जाति के मूल उत्स का साधन है, वही नारी पुरुष की अहं भावना की शिकार है। उसकी उद्दाम शक्ति और त्याग, पुरुष की हिराकत, तिरस्कार और उपेक्षा से पीड़ित है। नारी अस्तित्व को स्थापित करने के लिए कितना भी संघर्ष क्यों न करे, किन्तु व्यावहारिक स्तर पर उसे महत्व नहीं मिलता।"[02]

ukjh foe'k dk orZeku ifj–'; &

'वीमेन एम्पावरमेंन्टमिशन' यानी नारी सशक्तिकरण अभियान एक जन आंदोलन के रूप में उभरा साहित्यिक आंदोलन है। यह आंदोलन राजनीतिक आंदोलन के रूप में सबसे पहले सन 1960 में फेमिनिस्ट मूवमेंट की शकल में इंग्लैंड और अमेरिका में सक्रिय हुआ था। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 08 मार्च 1975 से अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की शुरुवात हुई। सन 1975–1985 विश्व महिला दिवस के रूप में फलित करके महिलाओं को सामाजिक–आर्थिक दृष्टि से मजबूत करने का प्रयास किया गया था। नारी को विकास की मुख्यधारा से जोड़ कर नारी को आत्म निर्भर बनाना नारी सशक्तिकरण अभियान को सार्थक बनाने की कोशिश की गई।

सन 1985 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय के तहत महिला एवं

बाल विकास विभाग की स्थापना की गई। फिर ३० जनवरी २००६ को महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की स्थापना की गई । १९९२ को राष्ट्रीय महिला आयोग का गठन हुआ। सन २००१ को महिला सशक्तिकरण वर्ष घोषित किया गया। सरकार की तरफ सुकन्या योजना, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना, महिला स्वयं सेवी संगठन जैसी सरकारी योजनाएँलागू की गईं हैं। राजनीति और नौकरी के क्षेत्र में ३३ः आरक्षण का प्रावधान है । नारी को समाज की मुख्य धारा से जोड़कर राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीदारी दर्ज करने का कार्य किया गया है।

^fNUueLrk*e ukjh foe'k ¼ekufld mRihMu½&

'छिन्नमस्ता' में नायिका प्रिया अपने पति से तलाक ले लेती है आत्म निर्भर बनकर अपना खुद का व्यूजनेस शुरू करती है। उसका लेदर एक्सपोर्ट का व्यूजनेस निकल पड़ता है और वह व्यूजनेस के सिलसिले में विदेश की यात्रा करती रहती है। प्रिया हमेशा विदेशों की टूर में रहती है। इंग्लैंड से इंडिया लौटते समय अचानक फ्लाइट में प्रिया की तबीयत बिगड़ जाती है। वह अपने मित्र फिलिप के घर में कुछ दिन आराम फरमाती है। बिस्तर में लेटी हुई वह अपने अतीत को याद करती है। लेखिका ने फ्लेश्बैक तकनीक का प्रयोग करती हुई प्रिया के बचपन में पाठक को ले जाती हैं। प्रिया अपने बीते हुए जीवन को याद करती है और देखती है उसका जीवन कितना संघर्षमय रहा है। प्रिया के संघर्षमय जीवन का दास्तां ही यहाँ उपन्यास की कथावस्तु का रूप धारण किया हुआ है।

'छिन्नमस्ता' उपन्यास की नायिका प्रिया का कोलकाता के मारवाड़ी (खेतान) परिवार में जन्म लेते ही माँ द्वारा तिरस्कार करना शुरू हो जाता है। प्रिया की माँ हमेशा उसे गाली देती रहती है, बात बात पर कोसती रहती है। दाई माँ ही सिर्फ प्रिया से स्नेह करती है। माँ हमेशा गाली–गलौज, छोटी–छोटी बातों पर झिड़कियां दे दिया करती है। प्रिया अपने बचपन की मायूसी से तंग आकार कहती है– "कैसा अभाव बचपन था। अम्मा ने कभी मुझे कभी गोद मे लेकर चूमा नहीं। मैं घंटों उनके कमरे के दरवाजे पर खड़ी रहती, शायद अम्मा मुझे अंदर बुला ले।"[3]

प्रिया को दाई माँ द्वारा असीम प्यार, ममता की बौछार होती रहती है। दाई माँ प्रिया को माँ की ममता उड़ेलती है। पाँच भाई–बहनों (सरला, सरोज, अजय, विजय, प्रिया) में प्रिया सबसे असुंदर, साँवली, दंतुली है,

इसीलिए माँ उसे गलत नजर से देखती है। जब प्रिया अपने बाल पर कंघी करने को कहती है तो माँ उस पर बिगड़ती हुई कहती है– "तो अक्ल पर पत्थर पड़ा था। बिना शीशे के खाली ब्रश से कैसे बाल सवारु? सल्लो बेटा! तू ही इस छोरी को ट्रेनिंग देकर लाइन पर ला। राम जी ही मालिक हैं। न जाने कौन इसको पसंद करके ले जाएगा ?"[4] प्रिया हमेशा भाई–बहनों द्वारा नफरत की शिकार होती है। घर में केवल पिताजी, दाई माँ द्वारा वह प्यार–दुलारपाती है। उसके पिताजी खुसी से हमेशा कहा करते हैं– "यह तो मेरी लक्ष्मी बेटी है। जब से जन्मी है, पैसा ही पैसा बरस रहा है। देखो अपने घर के मकान मे यह पहला बच्चा जन्मा है।"[5]

प्रिया बड़ी होकर स्कूल जाती है। स्कूल में अपने सहपाठियों के साथ वह घुल मिल नहीं पाती। स्कूल की दुनिया उसे अलग ही लगती है। स्कूलमें अपने मित्रों के साथ रहती और पढ़ाई करती हुई घर के तनावपूर्ण माहौल से मुक्त रहती है। घरवालों के मानसिक उत्पीड़नसे मुक्ति पाकर वह स्कूल में शांति से कुछ पल गुजरती है। उसे पढ़ाई में रुचिहोने लगती है– "किताबों की दुनिया ही अलग थी। वहाँ न अम्मा की झिड़की थी और न भैया की दहशत। शरतचन्द्र की पारो ? नहीं ऐसा भी क्या पागल होना? प्रेमचंद की जलपा? गहनों के लिए पति को चोरी करने पर मजबूर करे, नहीं। धर्मवीर भारती का 'गुनाहों का देवता'पढ़कर बहुत दिनों तक मैं रोती रही थी।"[6] प्रिया स्कूली पढ़ाई खत्म करके कॉलेज में दाखिला लेती है। वहाँ भी वह खुद को अलग–थलग पाती है। पढ़ाई खत्म करके वह नौकरी करना चाहती है, पर उसकी शादी कर दी जाती है।

शादी के बाद प्रिया ससुराल में सासु माँ और पति नरेंद्र द्वारा उत्पीड़न की शिकार होती है। उसके पति नरेंद्र उसके साथ मशीन की तरह पेश आता है। नरेंद्र उसे भोग विलास की वस्तु के रूप में इस्तमाल करता है। नरेंद्रएक व्यूजनेस मैन के रूप में दिन रात काम में व्यस्त रहता है। प्रिया को घर की चार दीवारी में कैद करके रखना चाहता है। घर से बाहर खुले आसमान के नीचे सांस लेने की आजादी नहीं देना चाहता। प्रिया जब घर से निकलना चाहती है और अपने पैर पर खड़ा होकर कुछ करना चाहती है तब नरेंद्र कहता है– "दरअसल तुम्हें इतनी खुली आजादी देने की गलती मेरी थी। मुझे पहले ही चिड़िया के पंख काट डालने चाहिए थे। पर मैं तुम्हारी बातों में आ गया। तुम्हारे इस भोले चेहरे के पीछे एक मक्कार औरत का चेहरा है।"[7]

नरेंद्र के गलत बर्ताव से तंग आकर प्रिया तलाक लेकर अकेली होकर एकाकी जीवन जीने का फैसला करती है। अपने इकलौते बेटे संजू से दूर अलग रहने का दंशसहती हुई वह अपने पति नरेंद्र से अलग रहने का निश्चय करती है।

ukjh ;ku mRihMu (Sexual Harressment) –

नारी यौन उत्पीड़न आजकी सब से बड़ी समस्या बन गई है। आए दिन नारी के साथ यौन उत्पीड़न की जो वारदातें हो रही हैं, वह इंसानियत को शर्मसार करने वाली हैं। नाबालिग बच्चियों से लेकर बुजुर्ग महिलाओं तक का जो यौन शोषण हो रहा है, वह पुरुष समाज को कटघरे में खड़ा कर रहा है। आज नारी घर बाहर कहीं भी सुरक्षित नहीं है। नारी की अस्मत के साथ खेलने कक जघन्य अपराध करके पुरुष अपनी पशुता साबित कर रहा है। प्रिया भी इसी यौन शोषण का शिकार होती है। वह अपने ही घर में किशोरावस्थामें ही अपने सौतेला बड़ा भाई द्वारा यौन उत्पीड़न, बलात्कार का शिकार होती है। जब वह स्कूल के बाद कॉलेज पहुँचती है, वहाँ अपने सहपाठियों के साथ घुल मिल नहीं पाती। कॉलेज में प्रो. मुखर्जी के प्रतिवह आकर्षित होती है। प्रो. मुखर्जी के प्रति प्रेमाकर्षणप्रेम की सुखद अनुभूति से उसे सराबोर कर देता है। प्रोमुखर्जी उसे बहला फुसला कर यौन शोषणकरता है,फिर उसका तिरस्कारकर देता है।

कॉलेज में एक युवक असीम द्वारा प्रेम प्रस्ताव रखने प्रिया उसका खंडन करती हुई कहती है– "प्रेम करके उस एक पुरुष के लिए आधी जिंदगी रोती रही हूँ। नहीं असीम, मुझमें अब और रोने की हिम्मत नहीं, क्योंकि मेरी सबसे बड़ी दिक्कत है कि मैं भ्रमों में नहीं जी सकती। और प्रेम? वह उठती–गिरती लहरों का भंवर है, मरीचिका है।"[8] प्रिया अपने पति नरेंद्र द्वारा भी यौन उत्पीड़नका शिकार होती है। नरेंद्र की कामुक मानसिकता उसे चौन से रहने नहीं देती, परेशान करके रख देती है। शारीरिक–मानसिक प्रेम संबंध के प्रति उसके अंदर एक नकारात्मक सोचउत्पन्न होती है।

नारी के पारिवारिक–सामाजिक वजूद की लड़ाई–(Struggle for familiar&social status of Women)

आजादी के बहत्तर साल गुजर जाने के बाद भी आज हमारे देश में नारी स्वतंत्र नहीं है। नारी स्वातंत्र्य का मुद्दा आज भी उठाया जा रहा है। नारी आज घर परिवार में स्वतंत्र रूप से जिंदगी जीने के अधिकारों से वंचित

है। नारी को अपने पारिवारिक–सामाजिक अधिकारों की लड़ाई लड्नी पड़ रही है। नारी को न तो ससुराल की संपत्ति का हक मिलता है न ही मायके की संपत्ति का। वह तो पुरुष की परछाई या सेविका के रूप में जिंदगी जीती है। पति नरेंद्र प्रिया को घर की चार दीवारी मे कैद करके रखना चाहता है। दृप्रिया अपने पति के इस गलत आचरण का विरोध करती हुई कहती है– "मैंने कब कहा कि मैं जीनियस हूँ। कब मैंने प्रशंसा की? मगर क्या एक साधारण औरत को साधारण तरीकों से भी जीने का अधिकार नहीं? काम की दुनिया मुझे ताकत देती है। काम के कारण मेरा आत्म विश्वास बढ़ता है। नरेंद्र, तुम हर समय मेरे आत्म विश्वास को क्यों तोड़ते रहते हो?"[9]

उपन्यास में हम देखते हैं कि प्रिया के ससुर का एक दूसरी औरत से नाजायज संबंध है। उस औरत को प्रिया छोटी सासु माँकहती है ।छोटी सासु माँ की एक बच्ची भी है, सामाजिक मान्यताओं के अनुरूप उसे पिता का नाम नहीं मिल सकता। प्रिया के ससुर जी की मौत हो जाने से वह परंपरानुसार घाट पर अकेली अपनी चुड़ियाँ तोड़ती है और मांग का सिंदूर पोंछती है। एक सुहागन नारी के लिए इससे बढ़कर दुख की स्थिति क्या हो सकती है। छोटी सासु माँ के प्रति हमदर्दी, अधिकारों की लड़ाई का जिक्र करती हुई प्रिया कहती है– "छोटी माँ घाट पर अकेली अपनी चूड़ियाँ तोड़ रही थीं। उन्होने मांग का सिंदूर मिटाया था। फिर भीड़ से अलग चुपचाप निकाल गई थीं। आज भी आँखें भर आती हैं। मेरी सास को तो दस–दस औरतें थामे हुई थीं। सब पत्थर दिल। पर मैं किसे गाली देना चाह रही थी? व्यक्ति को? समाज को? किसको? पता नहीं।"[10]

उपन्यास नायिका प्रिया नरेंद्र से अलग होकर व्युजनेस करने की सोचती है। वह व्यूजिनेस वीमेन के रूप मे प्रतिष्ठित होकर आत्म निर्भर होना चाहती है। अपनी एक लेदर कंपनी खोलती है और नारी प्रतिभा का परिचय देती है। लेदर की चीजों की डिमांड विदेशों में होती है और इसी सिलसिले में प्रिया विदेश की यात्रा करती रहती है। विदेशों में कई व्युजनेस मैन से उसकी दोस्ती होती है। फिलिप उसका एक अच्छा दोस्त है, सुख–दुख में साथ देता है। प्रिया पति–पत्नी के संबंध को लेकर फिलिप के सामने कहती है–"पुरुष भूमि है, आकाश है, अग्नि है, जल है। लेकिन स्त्री बीज बनकर धरती के नीचे दबना जानती है, वक्त आनेपर अंकुरित होती है और फिर

शाखा–प्रशाखाओं मे फैलती हुई पूरा जंगल हो जाती है।"[11]

vk/kfud ukjh d: i e çkphu feFkdk&ijEijkvk dk [kMu &

लेखिका ने उपन्यास में नारी स्वातंत्र्य का मुद्दा पूरजोर से उठाया है। प्रिया नारी केआधुनिक रूप और स्वतंत्र अस्तित्व स्थापित करने में कामयाब भी होती है। वह अपने पति और ससुरालवालों के विरोध के बावजूद व्यापार शुरू करती है। नरेंद्र को प्रिया का घर से निकलना,व्यूजनेस करना,क्लाइंट के साथ मीटिंग करना– ये सबकुछ बिलकुल अच्छा नहीं लगता। नरेंद्र के मना करने पर प्रिया कहती है– "नरेंद्र, मैं व्यवसाय रुपए के लिए नहीं कर रही। हाँ, चार साल पहले जब मैंने पहले–पहल कम शुरू किया था, मुझे रुपयों की भी जरूरत थी। पर आज मेरा ब्यवसाय मेरी आइडेंटिटी है। यह आए दिन की विदेशों की उड़ान, मेरी जिंदगी के कैनवास को बड़ा करती है। नित्य नए लोगों से मिलना जुलना, जीवन के कार्य जगत को समझना। मुझे जिंदगी उद्देश्यहीन नहीं लगती ।"[12]

देवी छिन्नमस्ता के रूप में नारी की जिंदगी के मिथक का खंडन प्रभा खेतान जी ने किया है। देवी छिन्नमस्ता का विकृत रूप, लहू लुहान शरीर सदियों से अत्याचारित होती आ रही नारी का प्रतीक है। नारी हमेशा पुरुष प्रधान समाज द्वारा एक्सप्लाइट होती आ रही है। वह पुरुष के शारीरिक–मानसिक उत्पीड़न एवं यौन उत्पीड़न का शिकार होकर दहशत भरी जिंदगी जीने को मजबूर हो रही है। प्रिया अपनी पिछली जिंदगी को याद करती हुई मन ही मन सोचती है– "औरत कहाँ नहीं रोती ? सड़क पर झाड़ू लगते हुए, खेतों में कम करते हुए, एयरपोर्ट पर बाथरूम साफ करते हुए या फिर सारे भोग ऐस्वर्य के बावजूद मेरी सासु जी की तरह पलंग पर रात–रात भर अकेले करवट बदलते हुए। हाड़–मांस की बनी ये औरतें, अपने–अपने तरीके से जिंदगी जीने की कोशिश में छटपटाती ये औरतें, हजारों सालों से इनके ये आँसू बहते आ रहे हैं।"[13]

उपन्यास की उत्कृष्टता सिद्ध करते हुए और स्वयंसिद्धा के रूप में नारी के आधुनिक रूप की प्रतिष्ठा पर जोर देती हुई वैशाली पांडेजी लिखती हैं– "प्रिया का यह व्यवहार आधुनिक नारी के उस रूप का उदघाटन करता है, जो पुरुष प्रधान समाज के अत्याचार के विरोध में खड़ी होकर अपनी क्षमता को साबित करती है। शोषण के सामने चुनौती बनकर खड़े रहने की क्षमता आज की नारी में आ चुकी है और प्रिया उस नारी का प्रतिनिधित्व

कर रही है।"[14]

miyfC/k;k &

वस्तुतः'छिन्नमस्ता' नारी विमर्श का जीवंत दस्तावेज है। 'छिन्नमस्ता'नारी यातना, विद्रोह और मुक्ति की गाथा है। नारी के स्वतंत्र अस्तित्वनिर्माण मेंप्रभा खेतान जी को कामयाबी हासिल हुई है। उपन्यास नायिका प्रिया जिस तरह से तमाम चुनौतियों से लड़ती हुई पुरुष वर्चस्ववादी समाज में नारी का स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण करती है, उसका यह साहसिक कदम उसे आज के नारी समाज की रोल माडलके रूप में स्थापित करता है। प्रिया एक क्रांतिदर्शी आधुनिक नारीहै, जो सामाजिक व्यवस्था दोष के खिलाफ आवाज उठाने और लड़ाई लड़ने की हिम्मत रखती है। प्रभा खेतान जी नारी विमर्श की सफल पैरोकारके रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज करती हैं। डॉ. गोपाल राय शब्दों में "'छिन्नमस्ता' आधुनिक नारी की त्रासदी और उसके संकल्प का प्रामाणिक दस्तावेज है।"[15]

lanHkZ xzaFk lwph&

01) वर्तमान साहित्य रू अंक मार्च–2008,सं–कुवरपाल सिंह, पृष्ठ –55

02) समकालीन हिन्दी कथा साहित्य रू सृजन के विविध आयाम– डॉ. राधा गिरधारी, पृष्ठ–37

03) छिन्नमस्तादृप्रभा खेतान, पृष्ठ –17 राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,प्रथम संस्करण– 1993

04) छिन्नमस्तादृप्रभा खेतान,पृष्ठ –42 राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,प्रथम संस्करण– 1993

05) छिन्नमस्तादृप्रभा खेतान,पृष्ठ –47 राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,प्रथम संस्करण– 1993

06) छिन्नमस्तादृप्रभा खेतान,पृष्ठ –61 राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,प्रथम संस्करण– 1993

07) छिन्नमस्तादृप्रभा खेतान,पृष्ठ –11 राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,प्रथम संस्करण– 1993

08) छिन्नमस्तादृप्रभा खेतान,पृष्ठ –97 राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,प्रथम

संस्करण– 1993

09) छिन्नमस्तादृप्रभा खेतान,पृष्ठ –185 राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,प्रथम संस्करण– 1993

10) छिन्नमस्तादृप्रभा खेतान,पृष्ठ –130 राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,प्रथम संस्करण– 1993

11) छिन्नमस्तादृप्रभा खेतान,पृष्ठ –137 राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,प्रथम संस्करण– 1993

12) छिन्नमस्तादृप्रभा खेतान,पृष्ठ –10 राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,प्रथम संस्करण– 1993

13) छिन्नमस्तादृप्रभा खेतान,पृष्ठ –139 राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,प्रथम संस्करण– 1993

14) स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकर दृडॉ. वैशाली पांडे, राधाकृष्ण प्रकाशन, इलाहाबाद

15) हिन्दी उपन्यास का इतिहास दृडॉ. गोपाल राय,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली

■■

Ukkjh vkj lekt

Mk- Jherh l'khyk xk;y
सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र)
महात्मा गांधी शास. महाविद्यालय
खरसिया, जिला रायगढ़ (छ.ग.)

नारी के बिना समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती, नारी ही तो सृष्टि का प्रमुख उद्‌गम स्रोत है। बिना स्त्री के पुरूष अधुरा है। स्त्री और पुरूष एक गाड़ी के दो पहियों की तरह हैं जिनसे संसार चलता है। भारतीय समाज में जो स्थान नारी को दिया गया है वह स्थान किसी और को प्राप्त नहीं है, क्योंकि नारी ही हमारे समाज में अलग–अलग रूपों में अपने आपको प्रकट करती है और अपने दायित्व का निर्वहन करती है। जो सहनशक्ति नारी के अन्दर है वह सहनशक्ति संसार के किसी और प्राणी के अन्दर नहीं है। इस धरती पर जब इंसान किसी भी विकट स्थिति में खुद को पाता है, उस समय इंसान के मुंह से सिर्फ और सिर्फ एक ही शब्द निकलता है और वह है माँ। माँ नारी का ऐसा रूप है जिससे नारी के समस्त रूपों का प्रादुर्भाव हुआ है। इतना सब कुछ होने के बावजुद भी पुरूष को शक्तिशाली और स्त्री को अबला नारी कहा जाता है। जो महत्ता स्त्री को समाज में मिलनी चाहिए, वह नहीं मिलती।

आज के वक्त में समाज में जब हम महिलाओं और बच्चियों की स्थिति के बारे में सोचते हैं तब मन बहुत ही ज्यादा व्यथित हो जाता है क्योंकि आज के समय में नारी हर तरह से संघर्ष कर रही है, नारी अपने सम्मान को बनाये रखने के लिए संघर्ष कर रही है, नारी खुद को साबित करने के लिए संघर्ष कर रही है। परन्तु इतने संघर्ष के बाद भी नारी ने अपने आपको हर एक क्षेत्र में साबित करने में सफलता भी पाई है, अपने जुझारू व्यक्तित्व और सहनशीलता की वजह से ही आज नारी हर एक क्षेत्र में अपनी बुलंदी का झंडा गाड़ रही है। इन सबके बावजुद जो बात मन को सबसे ज्यादा तकलीफ देती है, वह है कि नारी ही सबसे ज्यादा त्याग क्यूं करें? सारा दर्द सिर्फ नारी के लिए ही क्यों? हर तरह से शोषण का शिकार नारी ही क्यूं होती है? जो हम सबकी जननी है, जो हम सभी की पालक है उसी के ऊपर आखिर इतना अत्याचार क्यों और आखिर कब तक ऐसा होता रहेगा।

नारी मां, बहन, बेटी चाहे किसी भी रूप में हो, उसे और उसकी भावनाओं को समझने की चेष्टा कम ही की गई है। कभी सीता के रूप में तो कभी द्रौपदी के रूप में नारी पुरूषो के हाथों प्रताड़ित होती आयी है।

हर तरफ सिर्फ और सिर्फ नारी की चीख ही सुनाई देती है। कहीं नारी का मानसिक शोषण हो रहा है तो कहीं नारी का शारीरिक शोषण हो रहा है। कहीं नारी दहेज की आग में जल रही है तो कहीं तेजाब में झुलस रही है। कहीं नारी पुरूष समाज के तानों को सह रही है तो कहीं झूठी इज्जत और झूठी शान के नाम पर नारी की हत्या की जा रही है और तो और सबसे ज्यादा दर्दनाक पहलू यह है कि समाज में कन्या को पैदा होने से पहले गर्भ में ही मार दिया जाता है।

औरत बचपन से ही जुल्म सहने की आदि हो जाती है, औरत अपना सब कुछ परिवार पर न्यौछावर कर देती है। इतना ही नहीं यदि कोई पुरूष अपनी पत्नि का सहयोग और प्यार के दो बोल बोल देता है तो समाज उसे ''बीबी का गुलाम'' कहकर व्यंग्य कसता है।

नारी के दर्द और तकलीफों के बारे में सोचते–सोचते बस एक ही बात मन में आती है कि हमारी पुरातन सभ्यता और संस्कृति में नारी को जो स्थान दिया गया था, उसे हम सभी ने मिलकर नारी से छीन लिया है, इसके लिए समाज का हर एक व्यक्ति जिम्मेदार है और हम सभी ने नारी को घुट–घुटकर जीने के लिए मजबूर कर दिया है। हम सभी को यह समझना होगा कि अगर नारी जगत जननी है तो नारी काली भी है और जब नारी अपने विनाशकारी रूप में आती है तो उस समय प्रलयरूपी विनाशलीला में सब कुछ खत्म कर देती है।

अगर ध्यान दें, तो कुछ अद्‌भुत करने वाली नारी तो हर काल में रही है, परन्तु नारी की स्थिति में कितना परिवर्तन आया ? वैसे तो समाज में नारी के प्रति काफी परिवर्तन आये है, इंदिरा गांधी भारत की पहली प्रधानमंत्री और किरण बेदी भारत की पहली महिला आई.पी.एस. ऑफिसर बनी। लेकिन साधारण महिलाओं ने परिवर्तन को किस तरह से देखा, जरूरत है आप लोगों के जीवन में परिवर्तन लाने की, उनकी सोच में परिवर्तन लाने की, समाज में सुरक्षा लाने की।

सबसे पहले तो हर नारी को शिक्षा देना अति आवश्यक है, यदि माता शिक्षित होगी तो उसकी संतान भी शिक्षित होगी अर्थात् पूरा घर शिक्षित

होगा। स्त्री अपने पति के कार्यों में हाथ बँटा सकेगी और स्वयं भी आत्मनिर्भर बनेगी। प्रत्येक नारी को उसका हक और मान सम्मान मिलना चाहिए। हर नारी को अपने तरीके से जीने की स्वतंत्रता, बाहर आने–जाने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। इस सोच को आगे बढ़ाने की जरूरत है ताकि समय आने पर वे कुछ कर सकें, अपने परिवार को संभाल सकें।

परन्तु आज नारी की स्थिति में काफी बदलाव हुआ है। आज की नारी अपने अधिकारों के प्रति जागरूक दिखाई दे रही है। आज नारी का कार्यक्षेत्र भी घर की चार दिवारी के बाहर जा पहुंचा है और आर्थिक रूप से भी स्वतंत्र हो रही है। अब उनकी पहचान है और काफी क्षेत्रों में पुरूषों को पीछे छोड़कर परिवार की कर्ता बन रही है।

यदि पुरूष इन प्रश्नों पर ध्यान दें और हल ढूंढ़ने की कोशिश करें तो शायद उनका रवैया नारियों के प्रति प्यार का होगा।

1. क्या सारी पाबन्दियां नारी के लिए ही बनाई गई है?
2. क्या नारी के बिना पुरूषों का जीवन अधुरा नहीं है?
3. क्या पुरूष अपना जीवन अकेला व्यतीत कर सकता है?
4. क्या नारी का अपमान पुरूष का अपमान नहीं है?

जिस दिन इस पुरूष प्रधान समाज को ये प्रश्न सकारात्मक रूप से समझ आ जाएंगे शायद उसी दिन नारी का सही मायने में उद्धार होगा।

अन्त में यही कहना चाहूंगी कि अगर नारी के सम्मान की रक्षा नहीं की गई तो वह दिन दूर नहीं जब हम सभी जीवन के आखिरी चक्र में खुद को पायेंगे क्योंकि जो जीवनदायिनी है अगर वही सुरक्षित नहीं है तो ऐसी परिस्थिति में सृष्टि का सुचारू रूप से चल पाना संभव नहीं है। नारी के महत्व के सन्दर्भ में इतना कहना उचित प्रतीत होता है कि जिस प्रकार तार के बिना वीणा और धुरी के बिना रथ का पहिया बेकार होता है उसी तरह नारी के बिना मनुष्य का सामाजिक जीवन।

l UnHk xzUFk %&

1. डॉ. राजकुमार, नारी के बदलते आयाम।
2. राम आहुजा, भारतीय सामाजिक व्यवस्था।
3. नदीम हुसैन, समकालीन भारतीय समाज।

■■

fgUnh lkfgR; e ukjh foe'k

vfer dekj pkc e tjh d'kokgk
शोध छात्र, स्त्री अध्ययन विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा महाराष्ट्र

साहित्य के माध्यम से हमें अपने परिवेश और समाज को जानने, समझने की परख होती है। साहित्य उन सभी सामाजिक गतिविधियों का जीवंत दस्तावेज है, जिसे साहित्यकार अपनी रचनाओं का आधार बनाता है। साहित्य केवल कोरी कल्पना भर नहीं है वरन उसमें सामाजिक यथार्थ का स्वरूप समाहित है। साहित्य हमें वह दृष्टि प्रदान करता है जिसके द्वारा घटना–परिघटना को निष्पक्ष रूप देख सके। वर्तमान समय में साहित्य के पटल पर विविध विमर्शों के माध्यम से हाशिए परक लोगों के अस्मिताओं को लेकर बातचीत की जा रही है। इन विमर्शों में स्त्री विमर्श भी है। भारतीय समाज में स्त्रियों की दशा एवं दिशा उत्तर–वैदिक काल से ही दोयम दर्जे की बनी हुयी है। पितृसत्तात्मक फरेब के बीच नारी हर काल में उलझी हुयी दिखाई देती है। प्रत्येक वर्ग की स्त्री किसी न किसी रूप में शोषण की शिकार है। साहित्य के मनीषियों ने स्त्री विमर्श जैसे अतिसंवेदनशील मुद्दे को बहुत मार्मिक और आलोचनात्मक तर्ज पर स्वीकार किया।

वर्तमान समय में स्त्री विमर्श के अर्थ और सैद्धांतिक अवधारणा को समझने की आवश्यकता है। यदि इस विमर्श के अर्थ को समझने की कोशिश करें तो स्त्री (नारी) शब्द 'स्त्यै' धातु में ड्रप और डींप प्रत्यय के योग से निष्पंदित हुआ है। जिसका शाब्दिक अर्थ है ठहरना, रुकना, घेरा बनाना इत्यादि। इस विमर्श का सम्यक विवेचन करने की भी आवश्यकता है। इसी के साथ यह तर्क हमारे सामने आता है कि हिंदी साहित्य के फलक पर स्त्री विमर्श के मायने क्या हैं? कहानी, उपन्यास, इतिहास, कथेतर, आलोचना, कविता, इत्यादि मानवीय संवेदनाओं की वाहक विधाएँ हैं। यह दलित, स्त्री, अल्पसंख्यक तथा अन्य हाशिए के विमर्शों को किस रूप में चित्रित करती हैं? मूलरूप में साहित्य यर्थाथवादी है लेकिन क्या स्त्री विमर्श की मूल अवधारणाओं को आमजन की संवेदना से जोड़ पाया या विकसित कर पाया? क्या साहित्य स्त्री विमर्श के जटिल एवं संकीर्ण तर्क को समाज के

बीच सहजतापूर्वक ला पाया? ऐसे तमाम सवाल हमारे जेहन में आज भी हैं। स्त्री विमर्श को जिस हाशिये का विषय कहा जाता है, असल में वह हाशिए का नहीं वरन जीवन के केंद्रीय पक्ष का विषय है। साहित्य के लेखन इतिहास को देखें तो उसमें पुरुष वर्चस्ववाद का स्वरूप दिखाई देता है। परंतु इसका तात्पर्य यह नहीं स्त्री को उपेक्षित कर दिया गया है। अमूमन वह यदि संघर्ष भी कर रही है तो उसका संघर्ष पितृसत्तात्मक मनोसंरचना का होता है।

वर्तमान समय में साहित्य में महिला लेखन विभिन्न कहानियों, कविताओं तथा आत्मकथाओं में स्त्री की दैहिक पीड़ा से परे जाकर उसकी वर्गीय, जातीय एवं लैंगिक पीड़ा का वास्तविक स्वरूप प्रतिबिंबित क्यों नहीं हो पा रहा है? साठ के दशक में वर्चस्ववाद की सामाजिक सत्ता और संस्कृति के खिलाफ स्त्रियों के द्वारा जिस आंदोलन कि शुरुआत की गयी उसे नारीवादी आंदोलन का नाम दिया गया। वस्तुतः नारीवादी आंदोलन एक राजनीतिक आंदोलन है जो स्त्री की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एंव दैहिक स्वतंत्रता का पक्षधर है। जिस स्त्री विमर्श की खोखली बात साहित्य करता है, वह केवल स्त्री मुक्ति के लिए नहीं है। वह प्रश्न सपूर्ण मानव जाति का प्रश्न है। यह स्त्री अस्मिता की लड़ाई है। इतिहास के माध्यम से यह बात बार–बार हमारे समक्ष उभरकर आती है। यदि आधुनिक काल खंडों में स्त्री के अस्मिता एवं उसके मूलभूत प्रश्नों का विवेचन करें तो भारतेन्दु युग में पहली बार स्त्रियों की सामाजिक दशा की तरफ ध्यान को आकृष्ट किया गया। जी इस युग में स्त्रियों दशा थी उससे स्वयं भारतेन्दु तथा इस युग के अन्य साहित्यकार भली–भांति पारिचित थे। वे उनकी स्थिति में सुधार लाने के पक्षधर थे। वहीं द्विवेदी युग में स्त्रियों को साहित्य के माध्यम से अनेक समस्याओं को कृतियों संदर्भित किया गया। सामाजिक कुरीतियों को सामने लाकर उनका विरोध करना ही इस युग का लक्ष्य रहा। "अधखिला फूल" (हरिऔध) में इसके उदाहरण मिलते हैं। जबकि प्रेमचन्द युग में आते–आते स्त्री विमर्श के मायनों में परिवर्तन आ गया था। अब स्त्री सशक्त और अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो चली थी। यह विचार, संक्रांति और संघर्ष का काल था। जिसमें स्त्री को सशक्त रूप में प्रस्तुत किया गया। गोदान में धनिया और मालती का चित्रण इस बात का गवाह है।

प्रेमचंदोत्तर युग में स्त्री का मानसिक स्तर उजागर किया गया है। इसके बाद स्त्री लेखन के माध्यम से इस विमर्शों पर बात शुरू हुयी। इसी

युग में बड़ी संख्या में लेखिकाएं जैसे कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी, पदमा सचदेव, मृदुला गर्ग, उषा प्रियंवदा, मृणाल पांडे, चित्रा मुदगल, मैत्रयी पुष्पा, नासिरा शर्मा, प्रभा खेतान, गीतांजलि श्री, मनीषा, जयंती आदि महिला मुद्दो पर अपनी कलम चलाने लगीं। इसके साथ ही स्त्री विमर्श ने पुरजोर पकड़ लिया। लेकिन इन सब के बावजूद स्त्री की जातीय अस्मिता की पहचान कहाँ है? जनता के अधिकारों के माँग के साथ–साथ जो स्त्री मुक्ति चेतना निर्मित कहाँ है? आज भी समाज में स्त्री के प्रति गंभीर समझ का अभाव है। लेखक, लेखिकाएँ जाने–अनजाने बाजार के माँग एवं पूर्ति के लिए साहित्य की रचना करने पर मजबूर हैं। साहित्य के फलक पर विमर्शों, संघर्षो एवं विचारधाराओं का अभाव नजर आता है। समकालीन समाज का साहित्य मुद्दों को उठाने में सफल तो है लेकिन की विषमताओं से घिरा हुआ है। उसके केंद्र में भी स्त्री है और परिधि पर भी, लेकिन स्त्री के मूल प्रश्न का निवारण नदारद है। 21वीं सदी में जब हम स्त्री विमर्श और प्रश्न की बात करते हैं, तो कहीं न कहीं स्त्री हाशिए का विषय बनी हुयी है। स्त्री प्रश्न के प्रति संकीर्ण अनुभववादी और एकांगी नजरिए समाज में बना हुआ है। नारी मुक्ति आंदोलन के बारे में एक संतुलित और व्यापक दृष्टि का अभाव है। समाज में यह एक गंभीर समस्या है। इसके पार्श्व में स्त्रीवादी प्रश्नों और सिद्धांतों की असमझ है। समाज के अग्रणी मनीषियों के द्वारा इसे लगातार उपेक्षित किया जा रहा है। साहित्य जिस स्त्री विमर्श के लिए प्रतिबद्ध है, वह केवल व्यक्तिगत समस्या नहीं है। यह व्यक्तिगत होने के साथ–साथ सामाजिक भी है।

आज लेखन के माध्यम से साहित्य में अनेक विमर्शों को केन्द्रित किया गया है। हशिए के लोगों को सामाजिक अस्मिता दिलाने के लिए बहुत से लेखकों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से बात की है। ऐसी अवधारणा है कि स्त्री का लिखना अनुभवजनित है। एक पुरुष और एक स्त्री का लेखन समानान्तर विषय भिन्न हो सकता है। अतः सुधा सिंह के अनुसार यदि स्त्री को कोई शैली हो सकती है तो वह आत्मीय शैली है। परंतु स्त्री लेखिकाओं को यह सचेत प्रयास करने की आवश्यकता है कि आत्मकथाओं के वर्णनात्मक पहलुओं, जिस पर हमेशा मध्यमवर्गीय सवर्ण स्त्री के जीवन के झूठे छल प्रपंचों से भरे होने का आरोप लगाया जाता रहा है, से इसके परे जाकर स्त्री प्रश्नों पर ठोस सैद्धांतिक बहसों को केंद्र में लाकर साहित्य में स्त्री–विमर्श की परंपरा की शुरुआत की जाए। मैत्रेयी पुष्पा, सुधा अरोड़ा

चित्रा मुदगल, अनामिका, कात्यायनी, प्रभा खेतान, सुधा सिंह, रोहिणी अग्रवाल, मधु कांकरिया, वंदना टेटे जैसी स्त्री लेखिकायों के रचना संसार में ऐसे उदाहरण मिलते हैं। इनमें जहां तक देखा जाए तो कात्यायनी एक सशक्त स्त्री विमर्श कि लेखिका हैं। इनकी लड़ाई सिर्फ स्त्री शोषण से नहीं बल्कि पूँजीवाद सांप्रदायिकता और वर्ग भेद से है। इनके समक्ष मैत्रेयी पुष्पा ने भी अल्मा कबूतरी, चाक के मध्याम से स्त्री प्रश्नों को समाज के सामने प्रस्तुत किया है। युवा कथाकारों की बात की जाए तो उसमें में भी वंदना राग का लेखन स्त्री विमर्श को बहुत परिपक्व रूप में समेटता है। उनकी कहानियों में स्त्री प्रश्न, बदलते समय में स्त्री की भूमिकाएँ उनकी आर्थिक व राजनैतिक स्वतंत्रता को दर्शाता है। उपरोक्त जिन महिला कथाकारों को चिन्हित किया गया है, हिन्दी साहित्य को उनके सख्त लेखन की आवश्यकता है। जो कि पितृसत्तात्मक जनमानस को उसके दोयम चेहरे से रूबरू करा सके। इस विमर्श पर जहां तक हम पुरुष लेखन कि बात करें तो लेखन के समय पुरुष लेखक की अनुभूतियाँ और संवेदनाएँ स्त्री लेखक से विपरीत होती है। पुरुष लेखक अपने अनुभव के माध्यम से इस विमर्श को आधार बनाता है जबकि वहीं स्त्री लेखक अपने भोगे हुये यथार्थ के माध्यम से।

अनुमानतः पुरुष नारी मुक्ति आंदोलन का राजनीतिक सूत्रीकरण तो कर सकता है लेकिन रचनात्मक धरातल पर उसकी कृति बोध या धारणाएँ एक हद तक वह नहीं हो सकती जो स्त्री लेखिका की होंगी। आज समाज में या लेखक जगत में एक चीज देखने को मिलती है कि स्त्री विमर्श के नाम पर अश्लील प्रेम संबंधों अथवा विवाह संस्था में पत्नी के कपटपूर्ण विवाहेतर संबंधों को ही नारी मुक्ति का कारण स्वीकार किया जाता है। भले ही लेखक कि रचना नारीवादी या स्त्री विमर्श की बात करती हों लेकिन वह नारीवादी या स्त्रीवादी कहलाना पसंद नहीं करता है। इसका यह मतलब नहीं की वह स्त्री हित में नहीं है बल्कि जेंडर की सामाजिक निर्मिति से वह प्रभावित होता है।

इन तमाम बातों के विवेचन के बाद एक प्रश्न उठता है कि क्या कोई रचना सिर्फ कल्पना की उड़ान होती है या यर्थाथ के साथ उसका रिश्ता है? समाज इसे नकारता क्यों है? क्यों स्त्री विमर्श समाज के लिए दोयम दर्जे का बना हुआ है? स्त्री विमर्श मर्दवादी नजरीया है? जिसके इर्द–गिर्द स्त्री विमर्श बिखर गया है। यह प्रश्न आज भी हमारे समक्ष बने हुये हैं। 'चूँकि

ज्ञान परंपरा तथा इतिहास के चालक तत्व के रूप में सदैव पुरुष आगे रहा इसलिए जाहिर सी बात है कि सभी मानक भी उसी ने तय किए जिसे सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया गया। आधुनिक महिला लेखिकाओं ने जब लेखन के क्षेत्र में कदम रखा तो उन्होंने पहले से तय मानकों के अनुसार ही अपने कथा साहित्य में लेखन किया इसलिए अनायास ही स्त्री लेखन उस पितृसत्तात्मक संरचना के माकड़जाल में उलझ कर रह गया। कैथरकला की औरतें, छत्तीसगढ़ एवं बस्तर के कोलियारी या ईंट भट्ठा पर काम करने वाली लड़कियाँ, भूमि संघर्षो में मर्दों से भी अधिक हिम्मत का परिचय देनेवाली औरतें विमर्श की दुनिया से अनुपस्थित होती चली गई। कथा साहित्य का वह शिल्प और सौंदर्यशास्त्र जिसे पुरुषवादी लेखक वर्ग ने यर्थाथवाद के नाम पर गढ़ा और जिसके इर्द–गिर्द स्त्री विमर्श पर बहस हो रही थी और जिसे स्त्री लेखन ने भी अपनाया था। उस यर्थाथवाद का मिथक अब टूट रहा है।'1 दरअसल वह अपनी मूल प्रकृति में ही ब्राह्मणवादी और पितृसत्तात्मक है। इसलिए स्त्री अपना अलग सौंदर्यशास्त्र और शिल्प गढ़ने की आवश्यकता है। जिससे उनके अस्मिता और सामाजिक असमानता को दूर किया जा सके।

lanHkZ lwph&

1. तिवारी, रामचंद्र(2014).गद्य साहित्य का इतिहास. वाराणसीरू विश्विद्यालय प्रकाशन
2. https://www.jansatta.com/sunday-magazine/jansatta-ravivari-is-woman-writing-literature-of-woman-asmita/598718/
3. https://vishwahindijan.blogspot.com/2017/11/blog-post_21.html
4. सुजाता (2009).स्त्री निर्मिति.नयी दिल्ली, सामयिक प्रकाशन

■■

Ukkjh vkSj dkuwu

enu eYgk=k
डाटा एन्ट्री आपरेटर
महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान
स्नातकोत्तर महाविद्यालय खरसिया

हमारा स्वर्णिम भारत नारी प्रधान समाज है जिसमें नारियों की पूजा की जाती है। समाज में नारी का अद्वितीय स्थान रहा है किन्तु आज के आधुनिक समय में नारियों पर प्रत्येक मिनट, घण्टा के अनुपात में अनेक प्रकार के अपराध होते दिखाई पड़ते हैं। नारी आज आधुनिक समाज में कुछ व्यक्तियों के दृष्य में विलासिता की वस्तु बन कर रह गई है जो कि हमारे समाज के लिए घातक सिद्ध हो रही है। इसलिए हमारे संविधान में नारियों की सुरक्षा के लिए अनेक प्रकार के कानून बनाये गये हैं जिससे नारियों की अस्मिता की रक्षा की जा सके। भारतीय संविधान में नारियों की सुरक्षा हेतु निम्नलिखित कानून बनाये गये हैं–

?kjsyw fgalk ls efgyk laj{k.k vf/kfu;e&

घरेलू दायरे में हिंसा को घरेलू हिंसा कहा जाता है। किसी महिला का शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, मौखिक, मनोवैज्ञानिक या यौन शोषण किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा किया जाना जिसके साथ महिला के पारिवारिक संबंध है, घरेलू हिंसा में शामिल है। घरेलू हिंसा के विरूद्ध महिला संरक्षण अधिनियम की धारा 2005 में घेरलू हिंसा को परिभाषित किया गया है। इसमें प्रतिवादी का कोई बर्ताव, भूल या किसी और को काम करने के लिए नियुक्त करना, हिंसा में माना जाएगा; क्षति पहूँचाना या जख्मी करना या पीड़ित व्यक्ति के स्वास्थ्य, जीवन अंगों या हित को मानसिक या शारीरिक तौर से खतरे में डालना या ऐसा करने की नीयत से रखना और इसमें शारीरिक, यौनिक, मौखिक, और भावनात्मक और आर्थिक शोषण शामिल है।

vuSfrd O;kikj ¼fuokj.k½ vf/kfu;e 1956&

भारतवर्ष में वैवाहिक संबंध के बाहर यौन संबंध अच्छा नहीं समझा जाता है। वेष्यावृत्ति भी इसके अन्तर्गत है। लेकिन दो वयस्कों के यौनसंबंध को,

यदि वह जन शिष्टाचार के विपरित न हो, कानून व्यक्तिगत मानता है, जो दण्डनीय नहीं है। ''भारतीय दण्ड विधान'' 1860 से ''वेष्यावृत्ति उन्मूलन विधेयक'' 1956 तक सभी विपरीत न हो, कानून व्यक्तिगत मानता है, जो दण्डनीय नहीं है। ''भारतीय दण्डविधान'' 1860 से वेष्यावृत्ति उन्मूलन विधेयक'' 1956 तक सभी कानून समान्यतया वेश्यालयों के कार्यव्यापार को संयत एवं नियंत्रित रखने तक की प्रभावी रहे हैं। वेश्यावृत्ति उन्मूलन सरल नहीं है, पर ऐसे सभी संभव प्रयास किए जाने चाहिए जिसमे इस व्यवसाय को प्रोत्साहन न मिले, समाज की नैतिकता का ह्रास न हो और जनस्वास्थ्य पर रतिज रोगों का दुष्प्रभाव न पड़े। कानून स्त्रीव्यापार में संलग्न अपराधियों को कठोरतम दण्ड देने में समक्ष हो। यह समस्या समाज की है। समाज समय की गति को पहचाने और अपनी उन मान्यताओं और रूढ़ियों का परित्याग करें, जो वेश्यावृत्ति को प्रोत्साहन प्रदान करती है। समाज के अपेक्षित योगदान के अभाव में इस समस्या का समाधान संभव नहीं है।

fookfgrk dk lkFk n0;ogkj ugh&

आईपीसी की धारा 498–ए, दहेज संबंधित हत्या की आक्रामक रूप की निंदा करती है। इसके अलावा, दहेज अधिनियम 1961 की धारा 3 और 4, न केवल दहेज देने या लेने के बल्कि दहेज मांगने के लिए भी दण्ड का प्रावधान करती है। एक बार दर्ज की गयी एफ आई आर इसे गैर–जमानती अपराध बना देता है ताकि महिला की सुरक्षा को सवालों के घेरे में रखा जाए और आगे भी उसे किसी प्रकार के दुर्व्यवहार से बचाया जा सके।

किसी भी तरह का दुर्व्यहार चाहे व वह शारीरिक, मौखिक, आर्थिक या यौनिक हो, धारा 498–1 के तहत आता है। आईपीसी के अलावा, घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम 2005 (डीवी एक्ट) आपको संसाधनों का उपयोग करने में सक्षम बनाता है, जो उचित स्वास्थ्य देखभाल, कानूनी मद्द, परामर्श और आश्रय गृह में मदद कर सकता है।

rykd'kqnk dk vf/kdkj&

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21 (जीवन का अधिकार) के तहत पत्नी को मौखिक अधिकार है कि वह अपने विवाह के टुट जाने के बावजूद विवाहित नाम का प्रयोग कर सकती है, पूर्व पति के उपनाम के उपयोग करने से तभी रोका जा सकता है, जब वह इसका उपयोग बड़े पैमाने पर धोखा देने के लिए कर रही हो। एक माँ अपने बच्चे को अपना उपनाम दे

सकती है।

lrh ¼fuokj.k½ vf/kfu;e 1987&

सती या विधवाओं या स्त्रियों का जीवित दहन या गाड़ा जाना मानव प्रकृति की भावनाओं के विपरीत है और यह भारत के किसी भी धर्म में कही भी अनिवार्य कर्तव्य के रूप में आदिष्ट नहीं है।

lrh deZ dk xkSjokUo;u dk fy, n.M&

जो कोई सती कर्म के लिए गौरवान्वयन के लिए कोई कार्य करेगा, वह कारावास से जिसकी अवधि एक वर्ष से कम नहीं होगी किन्तु जो सात वर्ष तक की हो होगी तथ जुर्माने की राशि पॉच हजार से तीस हजार तक हो सकती है।

Hkkjrh; n.M lafgrk 1973 dk vUrxZr lqj{kk&

दंड प्रक्रिया संहिता 1973 के अन्तर्गत महिला आरोपियों को विशेष सुरक्षा प्रदान की गई है। धारा 46 में गिरफ्तारी के नियम बताए गए हैं, जिसमें महिला आरोपी की गिरफ्तारी महिला अधिकारी द्वारा ही की जाएगी। महिला चिकित्सक के द्वारा ही महिला आरोपी का परीक्षण किया जाएगा।

xHkZ dk fpfdRlh; lekiu vf/kfu;e 1971&

इस अधिनियम के माध्यम से अबॉर्शन के नियम दिए गए हैं। कोई भी अबॉर्शन किस डॉक्टर द्वारा किया जाएगा यह व्यवस्थित रूप से इस अधिनियम में बताया गया है। यह एक अपराधिक अधिनियम है, जिसमें गैर पंजीकृत चिकित्सक द्वारा गर्भ समापन हेतु दण्ड रखा गया है।

Hkwz.k fyax p;u fu"ks/k vf/kfu;e 1994&

इस अधिनियम के अन्तर्गत लिंग के चयन को निषेध किया गया है एवं लिंग के परीक्षण को पूर्णतः अवैध बताया गया है।

nqljk fookg&

विवाह आईपीसी धारा 494 के अनुसार, जो कोई, पति या पत्नि के जीवित होते हुए किसी ऐसी दशा में विवाह करेगा, जिसमें ऐसा विवाह इस कारण शून्य हो कि वह ऐसे पति या पत्नि के जीवन काल में होता है, इस प्रकार पहले जीवन यापन करने वाली साथी के जीवित रहने पर दूसरा विवाह करना दण्डनीय अपराध है। इसके लिए 07 वर्ष तक की सजा का प्रावधान है और दोषी पाए जाने पर जुर्माने से भी दण्डनीय होगा। परंतु यह धारा उन

लोंगों पर लागू नहीं होती है, जिन लोगों का व्यक्तिगत विधि के अन्तर्गत दूसरा विवाह करने का अधिकार अपनी रूढ़ि और प्रथाओं द्वारा दिए गए हैं। जैसे मुस्लिम और आदिवासियों पर यह धारा लागू नही होती है, क्योंकि मुस्लिम धर्म और आदिवासी रूढ़ियों, प्रथाओं के अनुसार कोई पुरूष दूसरा विवाह कर सकता है परंतु स्त्री दूसरा विवाह नहीं कर सकती है। हिंदू विवाह अधिनियम 1955 के अनुसार दूसरे विवाह को प्रतिबंधित किया गया है।

ng t lc/kh vijk/k&

आईपीसी की धारा 304 बी दहेज की मांग न पूरी होने पर वधू की हत्या की घटनाएं निरंतर बढ़ती जा रही है। ऐसा विधायिका के संज्ञान में आया। खाना बनाते समय चूल्हे की आग वधु को काल कवलित करती है, ऐसा अधिकतर देखा जाता है। वर पक्ष का भी शायद ही कभी जलकर मरता तो। इस समस्या से प्रभावी ढंग से निपटने हेतु भारतीय दंड संहिता में दहेज प्रतिषेध अधिनियम 1986 बनने के बाद धारा 304 बी दहेज मृत्यु के नवीन अपराध को जोड़ा गया है। वास्तव में इस संशोधन से पूर्व दहेज प्रतिषेध अधिनियम 1961 को दहेज की कुरीति पर नियंत्रण रखने हेतु अधिनियमित किया गया था, परंतु दहेज की मांग मृत्यु का कारण बनने लगी इसी कुरीति पर प्रभावी अंकुश लगाने के उद्देश्य से भारतीय दण्ड संहिता की धारा 304 बी तथा भारतीय साक्ष्य अधिनियम की धारा 113 बी जोड़ी गई है। यह आजीवन कारावास तक से दण्डनीय अपराध है।

स्त्री की लज्जा हेतु भारतीय दंड संहिता के अन्य प्रावधान धारा 354 में स्त्री की लज्जा भंग करने के आशय से उस पर हमला अपराधिक बल का प्रयोग के विषय वर्णित है कि जो कोई भी किसी स्त्री की लज्जा भंग करने के आशय से यह संभव जानते हुए कि ऐसा कार्य करते हुए वह उसक लज्जा भंग करेगा, उस स्त्री पर हमला करेगा वह दोनों में से किसी भांति के कारावास से जिसकी अवधि 02 तक की हो सकती है या जुर्माने से या फिर दोनों से दण्डित किया जाएगा। इस धारा का लक्ष्य स्त्री के अस्तित्व की रक्षा करना है तथा उसके आत्मसम्मान और उसकी अस्मिता की रक्षा करना है।

bVjuV ij lj{kk dk vf/kdkj&

आपकी सहमति के बिना आपकी तस्वीर या वीडियो, इंटरनेट पर अपलोड करना कानून अपराध है। किसी भी माध्यम से इंटरनेट या

व्हाट्सएप पर साझा की गई आपत्तिजनक या खराब तस्वीरें या वीडियोज किसी भी महिला के लिए बूरे सपने से कम नहीं है। आपको उस वेबसाईट से सीधे सम्पर्क करने की आवश्यकता है, जिसने आपकी तस्वीर या वीडियो को प्रकाशित किया है। ये वेबसाइट कानून के अधीन है और इनका अनुपालन करने के लिए बाध्य भी। आप न्यायालय से आदेश प्राप्त करने का विकल्प भी चुन सकती है, ताकि आगे आपकी तस्वीरों और वीडियो को प्रकाशित न किया जाए। सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम (आईटी एक्ट) की धारा 67 और 66–ई, बिना किसी भी व्यक्ति की अनुमति के उसके निजी क्षणों की तस्वीर को खीचनें, प्रकाशित या प्रसारित करने को निषेध करती है। अपराधिक कानून (संशोधन) अधिनियम 2013 की धारा 354–सी के तहत किसी महिला की निजी तस्वीर को बिना अनुमति के खींचना या साझा करना अपराध माना जाता है।

mi lgkj&

भारतीय संविधान में नारियों की सुरक्षा के लिए कठोर से कठोर कानून होने के बावजूद भी अपराध प्रतिदिन बढ़ती जा रही है जो हमारे समाज और देश के लिए घातक साबित हो रही है। वर्तमान में अपराध बढ़ने का सबसे बड़ा कारण न्याय व्यवस्था बिलंब होता है। न्यायालय की न्यायालयीन प्रक्रिया जटिल होती है। इसका स्पष्ट उदाहरण दिल्ली की निर्भया बलात्कार कांड जो 16 दिसम्बर 2012 में घटित हुई थी से लिया जा सकता है।

■■

Lokr«;kRrj dky dh fganh dfork e ukjh

Mk- Lokehjke c tkj
विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग
भा.प्र.दे.शा. स्नातकोत्तर महा.कांकेर (छ.ग.)

सन् 1940–41 के आस पास भारत में प्रगतिवादी साहित्य' तेजी से लोकप्रिय हो रहा था। भारतीय पूंजीपतियों ने व्यक्तिवादी साहित्यकारों को बढ़ावा और संरक्षण दिया। ऐतिहासिक दृष्टि से 1943 में प्रकाशित 'तार सप्तक' से प्रयोगवादी कविता का जन्म होता है। प्रयोगवादी कविता के जनक अज्ञेय जी के कई संग्रह प्रकाशित हुए जिनमें नारी पुरूष के पारस्परिक संबंधो का विवेचन है। 'चिन्ता' नामक काव्य संग्रह में दो खण्ड हैं। प्रथम है 'विश्वप्रिया' और दूसरा है, 'एकायन' इसमें स्त्री–पुरूष संबंध देखिए–

तुम होओ जीवन के स्वामी, मुझसे पूजा पाओ।
या मैं ही होऊॅ देवी जिस पर तुम अर्ध्य चढ़ाओ।।[1]

इस कविता में स्त्री पुरूष की समानता के विचार को वाणी दी गई है। एक दूसरी कविता में नर–नारी के आकर्षण–विकर्षण को वाणी देते हुए कहते हैं –

''कहॉ कौन है जिसको है मेरी परवाह
जिसके डर में मेरी कृतियॉ जगा सके उत्साह।।''[2]

वह पुरूष अहंकारी, विद्रोही है । नारी के सहारे अपने व्यक्तित्व को विकसित करना चाहता है परन्तु उसमें बाधा आती है उसका अहंकार तो अहंकारी भाषा में कहता है –

दूर रहने की हृदय में ठानती क्या हो
मत हॅसो नारी, मुझे अपना वशीकृत जान
तोड़ दूॅगा मैं तुम्हारा आज यह अभिमान।।[3]

कवि ने ''एकायन'' में नारी को रूप सौन्दर्य का पर्याय न मानकर उसे उत्ताप और दीप्ति से ओत–प्रोत कहा है। उनकी दृष्टि में पुरूष तर्कनामय है और नारी भावनामय–

'पुरूष तर्क का कठपुतला भर
स्त्री असीम अन्तः निर्झर।।''[4]

''चिन्ता'' की नारी में आत्माभिमान है। वह कहती है, ''क्या मैं सचमुच केवल मोम की पुत्तलिका, कोमल, चिकनी हूं? मुझमें वहीं उत्ताप हैं, मैं भी एक प्रखर ज्वाला हूं।'' [5]

लेकिन पुरूष को वह त्याग नहीं सकती और पुरूष भी उसे त्याग नहीं सकता। पुरूष के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करने वाली नारी पुरूष द्वारा मर्माहत होने पर भी प्रतिशोध को भावना से पीड़ित नहीं होती। इस सरल सहृदयता के कारण ही पुरूष द्वारा वह छली जाती है। [6] अज्ञेय की प्रणय भावना में सहजता, निश्छलता, अनासक्ति का भाव विद्यमान है.... यह तथ्य वह भूल नहीं सकते कि आत्मा देह से ही उपजी है।''[7]

'देहवल्ली' कविता में कवि ने कहा है–
'देहवल्ली'
रूप को। एक बार बेझिझक। देख लो।
पिंजरा है। पर मन इसी से उपजा है।
जिसकी उन्नति शक्ति। आत्मा है।'' [8]

अज्ञेय ने प्रेम को न देवी माना है न दानवी। बल्कि उसे मानवी रूप में स्वीकार किया है। 'कलगी बाजरे की' उनकी अपेक्षाकृत सुन्दर और प्रसिद्ध रचना है। पुराने उपमान निष्प्राण हो गए हैं अतः अज्ञेय जी अपनी प्रेयसी को ''ललाती सांझ के नभ की अकेली तारिका ''या शरद के भोर की नीहार न्हाई कुई चम्पे की चटकी कली ।'' न कहकर वे उसे बिछली घास'' और ''लहलहाती हवा में कलगी छरहरी बाजरे की'' कहना अधिक पसंद करते हैं ।'[9] अज्ञेय जी का मत है कि ''अश्लीलता वस्तु में नहीं दृष्टि में होती है। अधूरी दृष्टि ही अश्लीलता को जन्म देती है। परिणामतः नई कविता में लज्जा एवं गोपन के स्थान पर नारी अंगो को उधाड़ने में कवियों ने दिलचस्पी ली। विज्ञान की शिक्षा, निरन्तर संस्कार हीनता, फ्रायड का प्रभाव इन सबने मिलकर'देवी सहचरी' नारी को उन्मुक्त, सहज, मॉसल व मानवी रूप में प्रस्तुत किया है। इस प्रकार अज्ञेय की 'चिन्ता' में पुरूष और स्त्री के दृष्टिकोण से मानवीय प्रेम के उद्भव, विकास–हास, पुनरूत्थान एवं परम संतुलन की कहानी है। यौन कुंठाओं का त्याग करने के कारण तथा नये

उपमानों के अन्वेषक होने के कारण उनकी कविता में नारी के उन्मुक्त, सहज, मॉसल तथा रमणीय चित्र प्रस्तुत किए गए हैं। अज्ञेय ने नारी को सहज ''मानवी'' रूप में स्वीकार किया है।

कवि गिरजा कुमार माथुर की कविताओं में भोगवाद की प्रचुरता है प्रेयसी पर छाया बसंत कवि को ताजगी देता है। प्यार की तलाश उन्हें जीवन के सत्य के निकट पहुंचा देती है कहते हैं'–

''मेरे युवा आम में नया बौर आया है।

खुशबू बहुत है क्योंकि तुमने लगाया है।''[10]

माथुर जी की कविता में देह का आकर्षण है। उन्होंने नारी को यौवन रस की विषमय प्याली कहा है। देह की आवाज मनुष्य को पशु बना देती है परन्तु देह से ही मन पंकज (कमल) खिलता है। वे मानव तन को सबसे सुन्दर बतलाते हैं। उन्होंने कहीं–कहीं नारी के रूप चित्रण में प्रकृति का आश्रय लिया है–

'देह कुसुमित मृणाल'

जैसे गेहूँ की बाल।''[11]

नारी के देह सौन्दर्य के साथ मिलन की सूक्ष्म मनोदशा का चित्रण देखिए–

बोलने में
मुस्कुराहट की कनी
रह,गई–गड़कर
नही निकली अभी अनी
खेल से–
पल्ला जो ऊंगली पर कसा
मन लिपट कर रह गया
छूटा वहीं
बहुत पूछा
पर नहीं उत्तर मिला
है लजीले मौन
बातें अनगिनी।''[12]

माथुरजी की प्रेमभावना अपराध भावना से ग्रसित नहीं, अतः प्रेम की

स्वीकृति लौकिक धरातल पर हुई है। प्रेम की खुशबू स्थायी है वह मन में समाई रहती है–

''क्युटी क्युरा पाउडर की सी
भीनी गन्ध
मन में
ये तुम भी हो
याद भी।''[13]

इस प्रकार माथुर जी की कविताओं में प्रणयानुभूति के मॉसल चित्र मिलते हैं। ''नारी उनके लिए प्रेरक, मादक, मधुर सुंगंधित झंकार है जो पुरूष के जीवन में एक उल्लास भर देती है। पुरूष जीवन में नारी के रमणीय अस्तित्व का वर्णन माथुर जी की कविताओं में मिलता है। कवि ने जीवन के यथार्थ से नारी को जुड़ी हुई पाया है। घास काटने वाली स्त्री का स्थान उपवन के फूलों बसंत ऋतु के कारण परिवर्तित प्रकृति की ओर नहीं बल्कि घास की तरफ है। वह घास बाजार में बिकेगी तो उसके लिए आटा बन जाएगी।''[14] स्त्री को कवि फागुनी चॉद की तरह अपनी बाहों में समेट लेना चाहता है

परन्तु उससे भी बढ़कर नारी की गरिमा और उसके दुखों का अनुभव कर वह चाहता है–

''स्त्री
लेकिन तुम सिर्फ सुगंध नहीं
तुम एक पूरी दुनिया हो
मैं तुम्हारे हाथों की समर्थ तनिमा में
सौंप देना चाहता हूं
वे सभी नियामतें, जो सब तुम्हारी हैं।
तुमसे है
जिनसे तुम वंचित हो
जिससे यह दुनिया
और ज्यादा जीने लायक फिर बन जाय
लोहे की धार
पॅखुरी में बदल जाए।''[15]

इससे अधिक स्वस्थ नारी विषयक दृष्टिकोण और क्या हो सकता है? माथुर जी ने स्त्री शक्ति का सही–सहीं मूल्यांकन कर उसे स्वस्थ दृष्टिकोण से देखा है।

कवयित्री 'कीर्ति' चौधरी ने वृक्ष और लता के प्रतीकों द्वारा नर–नारी संबंध को व्यक्त किया है। नारी तो जन्म से ही सृजन का अधिकार लेकर आयी है और सृजन तो कहीं भी अच्छा लगता है। वह अक्षम कैसे हो सकती है?

पुष्पमयी फलदायिनी, अक्षम, किस अर्थ में
सुषमा की आश्रय में फले क्यों व्यर्थ में।''[16]

'सीमा रेखा' कविता में कीर्ति चौधरी, ने रामायण के ''सोने की मृग' वाले प्रसंग को लिया है। आधुनिक सीता जब रामके लौटने की आशा न रही, लक्ष्मण से भी निराश होती है तो संकल्प करती है–

''मन मेरे अब रेखा लॉघो
आये वह अन्य छद्मधारी।
अविचारी का खंडित कलंकित।
ले जाये तो ले जाये।।''[17]

नारी के संकल्प का यह उद्दाम प्रवेग है। अब नियंत्रण उसे अस्वीकार है। बेपरवाह होकर वह कहती है–

''कौन वहॉ आतुर है
किसे यहॉ देनी है
ऊॅचा ललाट रखने की वह अग्नि परीक्षा।'' [18]

नैतिकता और सामाजिक सम्मान के लिए वह अपना जीवन नष्ट नहीं करना चाहती है। इस कविता में नर–नारी के मुक्त साहचर्य को समर्थन मिलता है और प्रकारान्तर से'' योनि–शुचिता'' जो नैतिकता का आधार बनी हुई है, उस पर गहरा प्रहार भी कवयित्री ने किया है।

कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी का नई कविता में विशिष्ट स्थान है। उनका सौन्दर्यबोध सामाजिकता से कटा हुआ नहीं है। कवि भद्दे होठों वाली प्रेमिका से प्यार कर सकता है यदि वह किसी थके प्राणी के दर्द को सहलादे वे लिखते हैं–

मैं तुम्हारे भद्दे होंठो की
काली दरारों में जी सकता हूं।
यदि तुम थककर गिरे हुए
किसी चरण के घाव चूम लो
और हर दर्द को
सपनों की जयमाल पहना दो।''[19]

कवि पुरूष के सामान्य जीवन में, हर रोज के जीवन में स्त्री के सौन्दर्य पूर्ण शरीर के स्थान पर स्त्री का उदार हृदय चाहता है।

नारी के सहयोग के बिना आदर्श समाज की संभावना ही नहीं हो सकती परन्तु पुरूष प्रधान समाज से नारी के प्रत्येक कार्य में शंकालु दृष्टि लेकर उस पर अंकुश रखना चाहा। ऐसी अविश्वासमयी भावना घातक होती है। इसी भावना ने गृहस्थी के लहलहाते उपवनों को उजाड़ दिया है। कवि भवानीप्रसाद की कविता इस दृष्टि से दृष्टव्य है। संगीतप्रिय रानी किसी पगले का गीत प्रतिदिन सुनती थी उसके साथ गाती थी । शंकालु राजा यह सह न सका और पागल तथा रानी को सूली पर लटका देता है–

''तुम जहॉ खड़े हो यहॉ कभी सूली थी,
रानी की कोमल देह यहीं झूली थी,
हॉ पागल को भी यहीं, यही रानी की
राजा हॅसकर बोला,–रानी भूली थी।।[20]

उसके पश्चात् राजा आजीवन पश्चाताप की अग्नि में जलता रहा। नारी की ओर देखने की पुरूष की दृष्टि इसमें स्पष्ट हुई है।

साठोत्तरी कवि 'श्रीराम शुक्ल' ने आन्द्रे ब्रेन्तों के अति यथार्थवाद से प्रभावित होकर' मरी हुई औरत के साथ संभोग' कविता लिखकर नारी की गरिमा का इतिहासान्त ही कर दिया। आधुनिक मानव का संत्रास यही है कि मानवीय संबंधों में धीरे–धीरे विखराव आ रहा है। आधुनिक सभ्यता ने मर्द और औरत में सारे समाज को परिवर्तित कर दिया है।

आदमी हुआ सस्ता
अब मॉ है, न बाप है
न पत्नी है, न पति

अब फ्लेक्सी ग्लास के
किसी भी उधड़े फ्लैट में
कोई भी मर्द है,
काई भी औरत है।''[21]

आज की इलेक्ट्रान सभ्यता ने मानव को सुख–सुविधाएं तो दी पर भोग की वृत्तियॉ भी दीं। बच्चे जन्मते ही मां बाप की ममत्व भरी छाया महसूस करने की जगह अपने माता पिता की मारपीट, लड़ाई, झगडे देता है। बार बार तलाक के कारण मॉ बाप के प्रेम से वंचित हैं स्त्री शरीर का प्रयोग विज्ञापन के रूप में हो रहा है। कवि धूमिल की कविता है–

स्त्री पूंजी है
बीड़ी से लेकर
बिस्तर तक
विज्ञापन में फैली हुई।''[22]

धूमिल ने कविताओं में नारी को किशोरी, युवती, वेश्या, विवश भोग्या, सफल गृहिणी, आदर्श मां, बहन इत्यादि कई रूपों में प्रस्तुत किया है। वे मानते है कि स्त्री मां के रूपमें ''आंचल की छाया'' है जो स्नेह देती है परन्तु पुरूष के लिए एक शरीर है जो उसकी काम पिपासा को बुझाता है। उनकी कविता में कहीं पुरूष नारी के प्रति आसक्त पानी में बसी हुई कच्चे इरादों की एक भरी पूरी दुनिया है या उसका चेहरा नन्हीं गौरेया के पंखहीन बच्चे का घोंसला है।

कवि अरूण कमल जी, ''एक नवजात बच्ची को प्यार'' कविता में समाज में और की यातना भरी जिंदगी की तस्वीर खींची है। कवि कहता है तुम्हारे जन्म पर मॉ–बाप दादी कोई भी खुशियॉ नहीं मनाता हो क्या ? इसमें आश्चर्य नहीं क्योंकि –

जिस दादी ने जूठन खाकर ही गुजार दी जिन्दगी
जिस मॉ ने अपने पति की मार चुपचाप सही।
और जिस पिता ने देखा है तिलक दहेज का
क्रूर व्यापार वे कैसे खुश होंगे ।''[23]

इस तरह स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में नई स्त्री–जीवन पद्धति ने

व्यक्ति स्वातंत्र्य को बढ़ावा दिया। नारी वर्ग के प्रति नई दिशा में विचार आरंभ हुआ। नारी विषयक दृष्टिकोंण को पाश्चात्य साहित्य संपर्क से भी दिशांए मिली। नारी को नारी के रूप में देखने की प्रवृत्ति ने बल पकड़ा। नैतिक वर्जनाएं और यौन कुंठाए खुलकर व्यक्त हुई। आधुनिक युग में नारी के सहयोग से विश्व की सृजनात्मक आस्था मूलक पुनर,रचना करने की संभावना ने नारी को पुरूष के समकक्ष लाकर खड़ा कर दियाहै। साठोत्तरी कविताओं में 'बेटी' विषयक कविताओं में पुरूष हृदय के वात्सल्य को वाणी मिली है। इसमें पुरूष के नारी विषयक पूर्ण परिष्कृत दृष्टि पायी जाती है जो नारी के स्वस्थ भविष्य की पूर्व सूचना कही जा सकती है।

Igk;d InHk xUFkk dh Iph

01. चिन्ता– अज्ञेय सरस्वती प्रेस इलाहा बाद द्वितीय संस्कर 1946 ई. पृष्ठ 159 –160

02. वही – पृष्ठ 159 –160

03. वही – पृष्ठ 159 –160

04. वही – पृष्ठ 159 –160

05. वही – पृष्ठ 159 –160

06. इत्यलम अज्ञेय प्रगति प्रकाशन दिल्ली. प्रथम संस्करण 1946 पृष्ठ 143

07. नये प्रतिनिधि कवि –डॉ. हरिचरण शर्मा, पृष्ठ– 43

08. बावरा अहेरी– अज्ञेय सरस्वती प्रेस इलाहाबाद प्रथम संस्करण 1954 ई. पृष्ठ – 36

09. हरी घास पर क्षण भर– अज्ञेय प्रगति प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण 1941 पृष्ठ 57–58

10. छाया मत छूना मन– गिरीजा कुमार माथुर नेशनल पब्लिशिंग हाऊस दिल्ली पृष्ठ 71

11. शिलापंख चमकीले– गिरीजा कुमार माथुर साहित्य भवन प्राईवेट लिमिटेड इलाहाबाद प्रथम संस्करण 1961 पृष्ठ– 53

12. वही – पृष्ठ 53

13. भीतरी नदी की यात्रा– गिरीजा कुमार माथुर नेशनल पब्लिशिंग

हाउस दिल्ली पृष्ट– 24

14. मैं वक्त के हूँ सामने– गिरीजा कुमार माथुर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली. प्रथम संस्करण 1990 पृष्ठ–101
15. वही – पृष्ठ 106–107 (स्त्री कविता)
16. हिन्दी के प्रमुख कवि–रचना और शिल्प –डॉ. अरविन्द पाण्डे अनुभव प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण 1986 ई. पृष्ठ – 228
17. वही – पृष्ठ क्र. 44
18. वही –पृष्ठ क्र. 44
19. सर्वेश्वर कविताएं –एक, राजकमल प्रकाशन दिल्ली छठवां संस्करण 1990ई पृष्ठ– 40
20. कवितायन– संपादक भेलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण 1990 ई. पृष्ठ– 96–97 (सन्नाटा कविता भवानी प्रसाद मिश्र)
21. भीतरी नदी की यात्रा – गिरीजा कुमार माथुर नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली. पृष्ठ – 48–49
22. ससंद से सड़क तक– सुदामा पाण्डे धूमिल की कविता में यथार्थबोध डॉ. चमनलाल गुप्ता भावना प्रकाशन दिल्ली. प्रथम संस्करण 1990 ई. पृष्ठ– 91
23. आठवें दशक की कविता– संपादक विश्वनाथ प्रसाद तिवारी कीर्ति प्रकाशन गोरखपुर प्रथम संस्करण 1982 पृष्ठ– 172

■■

Ukkjh vkj lekt

fMEiy vxzoky
कॉमर्स अथिति व्याख्याता
शासकीय महात्मा गांधी कला एवं विज्ञान
महाविद्यालय, खरसिया

कवि जयशंकर प्रसाद ने स्त्रियों की महत्ता का बोध इन पंक्तियों के माध्यम से किया हैः–

नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुंदर समतल में।

çLrkouk&

नारी का समाज में विशेष स्थान है, सारा का सारा भारतीय साहित्य नारी के विविध चित्रों से ओतप्रोत है। वास्तव में सत्य यह है कि जिस युग के समाज में नारी का जो स्थान है, उस युग के साहित्य में नारी उसी रुप में चित्रित की गई है। साहित्य समाज का दर्पण होता है। समाज की सारी मान्यताएँ, मर्यादाएँ उसके युग के साहित्य में स्वतः उभर उठती हैं। यही कारण है कि आदि काल से लेकर आज तक साहित्य में चित्रित नारी के विविध रुप, अपने युग की नारी विषयक मान्यताओं के ही प्रतिरुप में हैं। नारी के बिना तो समाज की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। कहा भी गया है कि–

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः

भारतीय इतिहास का प्रारंभ वैदिक युग से होता है। वैदिक युग में भारतीय संस्कृति का उज्जवलतम युग था, उस युग में नारी का समाज में आदर था, वह पुरुषों के साथ ही जीवन के क्षेत्र में कन्धों से कन्धा मिलाकर कार्य करती है। उसे पुरुष के समान अधिकार प्राप्त थे। गार्गी, मैत्रेय, विश्ववारा उस युग की ऐसी नारियाँ हैं, जिन्होंने प्रतिभा के बल पर ऋषियों का पद प्राप्त है।

भक्ति–काल का प्रारम्भ निर्गुण सन्तों की वैराग्यपूर्ण उक्तियों द्वारा हुआ, इसलिए संतो ने साधना के पथ में नारी को बाधा स्वरुप माना। उसे माया ठगिनी आदि विशेषणों से विभूषित किया। नारी जीवन के उज्जवल पक्ष इन सन्तों की दृष्टि से अपरिचित रहे। कबीर की कुछ पंक्तियाँ–

निरगुन फांसि लिये कर डोले, बोलै मधुरी बानी।
नारी तो हम भी करो, नाना नहीं विचार।
जब जाना तब परिहरि, नारी बड़ा विकार।
नारी की झांर्झ परत, अन्धा होत भुजंग।
कबिरा तिनकी कौन गति, नित नारी को संग।।

इस पंक्तियों के माध्यम से कबीर जी ने नारी को वासनात्मक पक्ष की ओर सचेत किया है। भारतीय नारी अपने गुणों के कारण सर्वश्रेष्ठ मानी गई है। लज्जा, त्याग, ममता, शीलता और मर्यादा भारतीय नारी के आभूषण है। देखा जाए तो औरत का जीवन अपने लिए नहीं होता है वह हमेशा दूसरे के लिए कार्य करती है। उसी के बलबूते पर यह भारतीय समाज खड़ा है। नारी ने भिन्न–भिन्न रुपों में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। चाहे वह सीता हो, झांसी की रानी, इंदिरा गांधी हो, सरोजनी नायडू। किन्तु फिर भी वह सदियों से क्रूर समाज और अत्याचारों का शिकार होते आई है। उसके हितों की रक्षा करने के लिए समानता एवं न्याय दिलाने के लिए संविधान में आरक्षण की व्यवस्था की गई है। महिला विकास के लिए आज विश्व भर में महिला दिवस मनाए जा रहे है। इनके लिए समाज में भी 33 प्रतिशत आरक्षण है, इतना होने के बाद भी महिलाएं प्रतिदिन अनाचार का शिकार हो रही है इसलिए समाज को अपना रुख इनको न्याय दिलाने में करना चाहिए। समाज का भी चहुँमुखी विकास तभी होगा जब नारी अपनी अस्मिता एवं अस्तित्व को पूर्णतः एवं हक के साथ प्राप्त कर सके।

भारत में शताब्दियों की पराधीनता के कारण महिलाएं अभी तक समाज में पूरी तरह से वह स्थान नहीं प्राप्त कर सकी है जो उन्हें मिलना चाहिए और जहां दहेज की वजह से कितनी ही बहू–बेटियों को जान से हाथ धोना पड़ता है तथा बलात्कार आदि की घटनाएं भी होती रहती है, वहीं हमारी सभ्यता और सांस्कृतिक परम्पराओं और शिक्षा के प्रसार तथा नित्य प्रति बढ़ रही जागरुकता के कारण भारत की नारी आज दुनिया की महिलाओं से आगे है और पुरुषों के साथ हर क्षेत्र में कंधे से कंधा मिलाकर देश और समाज की प्रगति में अपना सहयोग दे रही है।

सदियों से समय की धार पर चलती हुई नारी अनेक विडम्बनाओं और विसंगतियों के बीच जीती रही है। पूज्य, भोग्य, सहचरी, सहधर्मिणी, मां, बहन एवं अर्धांगिनी इन सभी रुपों में उसका शोषित और दमित स्वरुप ही दिखाई देता है। वैदिक काल में अपनी विद्वता के लिए सम्मान पाने वाली नारी मुगलकाल से रनिवासों की शोभा बन गई। लेकिन उसके संधर्षों से, उसकी योग्यता से बन्धनों की कड़ियां चरमरा गई। उसकी क्षमताओं को पुरुष प्रधान समाज रोक नहीं पाया, उसने स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में भी कमर कस कर भाग लिया और स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात संविधान में बराबरी का हिस्सा पाया लेकिन नारी को समाज में यह सम्मान सिर्फ महापुरुषों के अथक प्रयासों के बाद ही मिला है।

आज की संघर्षशील नारी इन परस्पर विरोधी अपेक्षाओं को आसानी से नहीं स्वीकारती, आज की नारी के सामने सीता या गांधारी के आदर्शो का उदाहरण दिया जाता है तब वह इन चरित्रों के पहलू को ज्यों का त्यों स्वीकारने में असमर्थ रहती है। देश, काल, परिवेश और आवश्कताओं का व्यक्ति के जीवन में बहुत महत्व है। समाज सेविका श्रीमती ज्योत्सना बतरा का कहना है कि घ्आज के परिवेश में सीता बनना बड़ा कठिन हैघ्। दूसरों के लिए आदर्श बनने के लिए व्यक्ति को स्वयं कई त्याग करना पड़ता है, जैसे सीता ने किया था। आज हम नारी–जागृति ,नारी–सम्मान की बात करते है, बड़े अधिकारी नेतागण, अन्य सभी बुद्धिजीवी लोग सभाओं, सेमीनारों एवं मंचों पर नारी के समान अधिकार, महिला–उत्पीड़न के मुद्दों पर लच्छेदार भाषण देते पर इस पुरुष प्रधान समाज में नारी के प्रति नजरिया कुछ और ही होता है।

निष्कर्ष के रुप में यह कहा जा सकता है कि नारी को समाज में आज भी पुरुषों के बराबर स्थान नहीं मिल पाया। अतः उसको यह स्थान दिलाने और उनको अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने के लिए प्रयास करना चाहिए। ताकि स्त्री पुरुष में भेद भाव न हो सके और उन्हें भी पुरुषों के समान ही स्थान मिल सके।

lanHk&

1. राकेश कुमार, नारीवादी विमर्श।
2. जगदीश्वर चर्तुवेदी, स्त्रीवादी साहित्य विमर्श।

■■

fgUnh egkdkO; e ukjh vfLerk dk /kjkryh; lp

t ;jke dqjs
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी
शासकीय महात्मा गांधी स्नातकोत्तर
महाविद्यालय खरसिया, जिला –रायगढ़ (छ.ग.)

भारतीय काव्य में नारी की स्थिति आदिकाल से वर्तमान तक एक चुनौतीपूर्ण प्रश्न के साथ उपस्थित रही है क्योंकि काव्यों में नारी को केवल एक सहायक पात्र के रूप में ही उपस्थिति मिली है। काव्य जगत में आधुनिक काल ही ऐसा युग रहा जिसमें नारी के मानवीय गुणों और महत्ता की अभिव्यक्ति प्राप्त होती है। परन्तु यह काव्यों तक ही सीमित रही, महाकाव्यों में नारी की स्थिति मुख्य नायक के रूप में दिखाने का साहस बहुत कम ही कवि कर पाए, उसमें भी वे पुरूष पात्रों के तानेबाने प्रस्तुत करने को ही विवश रहे। चूंकि हमारे समाज में नायकत्व का सेहरा हमेशा पुरूषों के माथे पर ही होता है और नारी की स्थिति केवल सहायक बनकर ही रह जाती है। अतः साहित्य में भी यही हुआ है। हिन्दी साहित्य के एक हजार वर्षो के इतिहास में कुछेक बीस–बाइस ही नारी प्रधान महाकाव्य प्राप्त होते है जो विचारणीय है। यही स्थिति समाज, संस्कृति की है कि हम नारी अस्मिता का रूप किस स्तर तक रखते आए हैं।

Hkkjrh; lekt ,oa lkfgR; e ukjh &

मानव ने जब से सभ्यता का विकास किया है तब से समाज में संस्कृति और साहित्य साथ–साथ चलते रहे है जिसमें स्त्री और पुरूष का समान योगदान रहा है। चूंकि दोनों में कुछ भिन्नताएं हैं फिर भी दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। परन्तु इन्हीं भिन्नताओं को आधार बनाकर एक वर्ग प्रमुख होने लगा और दूसरे वर्ग को उसका सहायक बनाने लगे। भारतीय इतिहास में सबसे प्राचीन सिंधु घाटी की सभ्यता से प्राप्त स्त्रोतों से पता चलता है कि उसकी व्यवस्था मातृसत्तात्मक थी जहॉ नारियों का स्थान पुरूषों से अधिक था, जो पुरूषों का महत्व कम नहीं करता था वरन् महिलाओं के गुणों

को उद्घटित करता था। परन्तु उसके पश्चात वैदिक युग आया, जिसमें स्त्रियों को पुरूषों के बराबर सम्मान तो दिया गया लेकिन अधिकार और वर्चस्व पुरूषों का ही रहा। फिर उत्तरवैदिक काल से, जो पुरूष प्रधान समाज की प्रवृत्ति भारतीय सामाजिक व्यवस्था में पनपी, वह वर्तमान पर्यंत तक अनवरत रूप से बनी हुई है। स्त्रियों की दशा धीरे–धीरे बद से बदतर होती चली गई, उन्हें अधिकारों से वंचित किया जाने लगा, राजपूत काल से लेकर मुगलकाल तक स्त्रियों की दशा अत्यन्त भयावह हो गई। इन पर अत्याचार, शोषण, भ्रुण हत्या, दहेज प्रथा, विधवा विवाह निषेध, बाल विवाह, सती प्रथा, सम्पत्ति का अधिकार न मिलना, साथ ही उनके ऊपर संस्कार, लोकलाज, मार्यादा का पर्याय बनाकर अनेक व्यवस्थाएं लाद दी गई, जबकि पुरूष वर्तमान में भी इन सभी से मुक्त है। इनकी दयनीय स्थिति पर थोड़ा–सा सुधार अंग्रेजो के समय सामाजिक सुधार आंदोलनों से आया और इन्होंनें पुनः समाज में अपनी भागीदारी सुनिश्चित की। स्वतंत्रता आंदोलनों में भागीदारी, नेतृत्व, निर्वाचन इत्यादि विभिन्न क्षेत्रों में योगदान देने लगीं। इस तरह देखा जाए, तो आरंभ से ही भारतीय समाज पुरूष प्रधान रहा और स्त्रियाँ गौण रूप में व्यक्त की जाने लगी। इस व्यवस्था का प्रभाव साहित्य में भी पड़ा है। भारतीय साहित्य में नारी कभी भी प्रधान बनकर नहीं आयी। वह कभी भी समाज में न तो मुख्य नायक बनी, न ही हिन्दी साहित्य में बन पायी।

हिन्दी महाकाव्य में नारी अस्मिता का धरातलीय सच–

इस संसार में पुरूषों को उत्पन्न करने वाली नारी की स्थिति भी पुरूष ही तय करते है। धर्मों में इन्हें देवी तो बनाया गया, परंतु वर्चस्व पुरूष देवताओं का ही रहा। भारतीय आख्यानों में देखा जाए तो सर्वाधिक त्याग वृत्ति–नायिकाओं की ही रहा। परंतु पूरी कथा को ऐसा व्यक्त किया गया जैसे वह गौण पात्र हो। जैसे रामचरित्मानस में सीता, उर्मिला, कृष्ण कथा में राधा, प्रेमाख्यानों में उर्वशी, कामायनी आदि। सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य को देखा जाए तो आदिकाल की रचनाएं युद्ध प्रधान व लौकिक श्रृंगार युक्त ही रही, जिसमें नारी केवल एक मुख्य पात्र की नायिका भर रह गयी। भक्तिकाल में निर्गुण संतो ने तो नारी को केवल माया कहकर साहित्य से त्याग ही दिया जैसे नारी में केवल वासना ही रहती है। उनके देवतुल्य गुणों की अवहेलना की गई। यदि संत होकर उस युग में नारी केवल वासना की

मूर्ति थी तो फिर हम किस युग में नारी की अस्मिता की रक्षा कर सकते है। यहां तक कि नारी को मोक्ष मिलना संभव नही माना गया। इस तरह उन्हें धर्म और साहित्य से निष्काषित कर दिया गया, जबकि मानसिक कमजोरी पुरूष वर्ग की है। वह केवल उसी नजर से ही नारी को देखता है, जबकि उनमें समाज की रीढ़– दया, ममता, विश्वास, त्याग, प्रेम आदि होते हैं। अंधात्व पुरूष प्रधान समाज को ये सभी दिखायी ही नहीं देता। सूरदास आदि कृष्ण कवियों ने राधा जैसे पात्रों पर रचना तो किया परन्तु उन्हें कथा नायक बनाने का साहस न कर पाये, न ही उनपर महाकाव्य लिखे। वही तुलसीदास ने केवल राम के चरितगान को महत्व देते हुए अन्य पात्रों की उपेक्षा करते गये। कुछ पद तो मानस में ऐसे मिलते है जो नारी पर ही प्रश्नचिन्ह् लगाते है, अतः उनसे नारी को नायक बनाने का प्रश्न् ही नहीं उठता। यदि सर्वाधिक मात्रा में महाकाव्य नारी को प्रमुख बनाकर लिखे गये तो वह सूफी काव्यधारा है जिसमें नारी को ईश्वर का प्रतीक मानकर किया गया और नायक को जीव बताया गया, जो उसे प्राप्त करने में समस्त चीजों का त्याग कर देता है। भले ही सूफी काव्य नायिका के नाम पर रखा गया और उन्हें ईश्वर बताया गया परन्तु इसमें भी कथा नायक पुरूष को ही सिद्ध करने का प्रयास किया गया है और स्त्री केवल ईश्वर का प्रतीक ही रही, श्रृंगारिक ही रही। साथ ही इसमें बहुपत्नी प्रथा का भी खुलकर समर्थन होने लगा। स्त्री ईश्वर का प्रतीक तो बन गई परन्तु मानवीय गुणो से वंचित भी कर दी गयी।

इसके पश्चात जो रीतिकाल अथवा श्रृंगार युग आया। उसमें तो कवि नारियों के प्रति पूर्णतः अंधे ही हो गये उन्हें नारी के केवल शारीरिक श्रृंगार, नखशिख, चंचलता, हावभाव, शारीरिक प्रेम से अधिक ना जा सके और साहित्य में नारी केवल वासनावृत्ति बढ़ाने का सामान बनकर रह गयी। रीतिकाल के आचार्य कहे जाने वाले केशव, मतिराम, चिंतामणी, देव आदि कवियों ने तो यहाँ अपना पाण्डित्य सिद्ध करने का प्रयास किया अथवा श्रृंगार वर्णन किया। वे नारी के गुणों तक पहुंच ही नहीं पाये। यहाँ तक कि रीतिकाल के सबसे बड़े कवि बिहारी भी केवल श्रृंगार की धारा में बह गये। उनके काव्यों में भी नारी कभी साहित्य के मुख्य वस्तु नहीं बन पायी। कुछ–एक नारी की सच्ची भावना घनानंद के काव्यों में प्रेम पीर रूप में प्राप्त होती है परन्तु वह भी न्यून है। इस तरह समूचे रीतिकाल में नारी की

अवहेलना की गई है। आधुनिक काल में समाज सुधार आंदोलनों से नारी की स्थिति में कुछ सुधार आया तो साहित्य में भी वह नायक बनकर आने लगी, लेकिन इनकी संख्या भी कम है और केवल पौराणिक कहानियों से ही उभरकर आती है जैसे उर्वशी, कामायनी, उर्मिला इत्यादि। वर्तमान नारियों को मुख्य नायक बनाकर लिखने का साहस नहीं हो पाया, जो वास्तविक धरातल पर सम्पूर्ण नारी समाज है वह साहित्य से अछूता रहा है। कुछ कहानियों अथवा उपन्यासों में ही नारी मुख्य नायक बन पायी परन्तु महाकाव्यों की भूमि इससे अछूती ही रही और जो कुछ बूँदें टपकी, उसमें भी नायक के रूप में पुरूषों को ही बनाने का प्रयास हुआ है।

नारी प्रधान महाकाव्य –

1 हंसावली – इसके लेखक असाइत हैं जिन्होंने विक्रम बैताल की कथा से वीर रस एवं प्रेम प्रधान रचना की। इसमें पाटण की राजकुमारी हंसावली की कथा है जो पूर्वजन्म में किसी संस्कार वश पांच पुरूषों की हत्या का नियम ले रखा था जिसे नायक हृदय परिवर्तन कर उसके प्रेम को प्राप्त कर लेता है।

2 चंदायन – मुल्लादाउद द्वारा रचित प्रेमाख्यान है जिसमें लोरिक एवं चंदा की प्रेम कथा है इसे लोर कथा भी कहा जाता है परन्तु चंदायान नाम अधिक पसंद है। इसमें चंदा की सौदर्य प्रेम एवं अनेक गुणों का वर्णन हुआ है।

3 सत्यवती कथा – इसके रचनाकार भक्तिकाल के कृष्ण उपासक ईश्वर दास है, जिसका कथानक राजकुमारी सत्यावती एवं ऋतुपर्ण की प्रेम कथा है, जिसमें राजकुमार को नायिका के श्राप से कोढ़ी होना पड़ता है और अंत में उसका नायिका से विवाह हो जाता है और श्राप मुक्त हो जाता है।

4 मृगावती – कुतुबन कृत यह रचना भी परंपरागत प्रेमाख्यान है जिसमें नायक की मृत्यु के पश्चात नायिका मृगावती का सती होना दिखाया गया है।

5 पद्मावत – मलिक मुहम्मद जायसी की यह रचना इस परंपरा की प्रौढ़तम कृति है। इसमें रत्नसेन एवं पद्मावती तथा नागमती की कथा है। यह कथा प्रतिकात्मक अथवा रूपक काव्य भी है जिसमें पद्मावती ईश्वर,

रत्नसेन जीव तथा नागमती संसार का प्रतीक है।

6 मधुमालती – मंझनकृत यह रचना मधुमालती की प्रेम कथा है। इसमें नायक अन्य काव्य की तरह ही मधुमालती की प्राप्ति के लिये अनेक कष्टों का सहन करते हुए उसके प्रति एकनिष्ठ प्रेम को दिखाता है। अन्य सूफी काव्य की भांति इसमें बहुपत्नि प्रथा का निषेध है।

7 चित्रावली – उस्मानकवि ने यह रचना अमर होने की इच्छा से लिखा है, साथ ही अन्य कवियों को इससे बढ़कर प्रेमकथा लिखने की चुनौतियां भी दी है। परंतु यह कथा भी अन्य प्रेमाख्यान के समान ही है।

8 छिताईवार्ता– नारायण दास द्वारा रचित यह इतिहास और कल्पना का विषय है इसकी नायिका छिताई है। पद्मावत का राघवचेतन भी इसमें दौत्यकर्म का पालन करता है अतः यह पद्मावत से प्रभावित लगता है।

vk/kfud dky d egkdk0;&

1 प्रियप्रवास – अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने राधा–कृष्ण प्रेम की परंपरा को अनूठे ढंग से प्रस्तुत किया है। कृष्ण के मथुरा जाने और लौट के न आने की कथा इसमें है। इसमें राधा का परकीया रूप अलग होकर देश सेविका के रूप में हैं। भले ही यह नारी प्रधान महाकाव्य न रहा हो परन्तु पूरी कथा राधा के ही व्यक्तित्व को उभारती है।

2 वैदेही वनवास – यह भी अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' द्वारा रचित महाकाव्य है, जो मूलतः बाल्मिकी रामायण पर आधारित है, जिसमें सीता का निर्वसन चुपचाप न दिखाकर जन सामान्य गुरू जनों द्वारा भावभीनी विदाई के चित्रण के साथ प्रस्तुत है। महाकाव्य का नाम सीता के नाम पर रखने के साथ ही इसमें सीता का नायकत्व एवं चरित्रगान है।

साकेत – साकेत में मैथिलीशरण गुप्त जी ने रामकथा से उपेक्षित पात्र उर्मिला के चरित्र की श्रेष्ठता उद्घाटित की है साथ ही साकेत में अभिसक्त कैकेयी वात्सल्यमयी मॉ के रूप चित्रित की गयी है। लेकिन गुप्त जी भी रामकथा का मोह त्याग न कर पाये और शीर्षक उर्मिला न रखकर साकेत (आयोध्या) रखा है।

यशोधरा – इसमें भी गुप्त जी ने भगवान बुद्ध जी के चरित्र से सम्बन्ध रखने वाले पात्रों की सुंदर व्यंजना गद्य–पद्य शैली में प्रस्तुत की है। इस कृति में नारी जीवन की मार्मिक अभिव्यक्ति साकेत से बढ़कर हुई है।

कामायनी – 1936 की यह रचना जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित एक मात्र छायावादी महाकाव्य है, जिसमें मानव जीवन को आगे बढ़ाने वाले मनु, श्रद्धा एवं ईड़ा का प्रतिकात्मक कथा है। जिसमें बुद्धिवाद के विरोध में हृदयतत्व की प्रतिष्ठा की गयी है। इसमें मनु में अनेक दुर्गुणों के होते हुए भी प्रसाद जी ने मनु को नायक बनाने का प्रायास किया, जबकि मानवीय जीवन की प्रेरणा, सत्वगुण से युक्त श्रद्धा नायिका ही बन कर रह जाती है, नायक नही बन पाती।

उर्वशी – रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित उर्वशी और पुरूरवा, प्राचीन आख्यान पर आधारित है। उर्वशी प्रेम और सौंदर्य का काव्य है, जिसमें जीवन दर्शन की अन्य धाराओं का सम्मेलन है। यह ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित महाकाव्य है, जिसमें उर्वशी के उदात्त चरित्र एवं एकनिष्ठ प्रेम की व्यंजना है।

भूमिजा – रघुवीर शरण मिश्र द्वारा 1961 की यह रचना है, जिसमें सीता के चरित्र को आठ सर्गों में प्रस्तुत किया गया है।

इसके अतिरिक्त, अन्य महाकाव्यों में मैथिलीशरण गुप्त की विष्णु प्रिया, चैतन्य महाप्रभु की धर्मपत्नि की गाथा है। नूरजहॉ में शाहजहॉ का उत्कट अनुराग है। कैकेकी में उसके व्यक्तित्व की उत्कृष्ट उपलब्धि है। ऋतम्बरा, कामायनी की भांति मानवता का संदेश देने वाली है। कणुप्रिया, धर्मवीर भांती द्वारा रचित राधा की चरितगाथा है। द्रौपदी में नरेन्द्र शर्मा ने द्रौपदी को जीव शक्ति का प्रतीक माना है। डॉ. रामकुमार वर्मा ने जौहर में राणा सांगा की पत्नि करूणा देवी की कथा रखी है। बालकृष्ण शर्मा नवीन की उर्मिला भी समष्टि हित के लिए व्यष्टि बलिदान का संदेश देती है। रांगेय राघव ने भी पांचाली में द्रौपदी के चरित्र की नवीन दृष्टि प्रस्तुत की है।

mi lgkj &

इस तरह हिन्दी साहित्य में आदिकाल से वर्तमान तक केवल गिने चुने ही नायिका प्रधान महाकाव्य लिखे गये है, जिसमें भी नायिका प्रधान होने पर भी आलोचकों ने नायक पुरूष पात्र को ही सिद्ध करने का प्रयास किया है। जैसे उर्मिला, साकेत, उर्वशी, द्रौपदी इत्यादि। इन दिनों स्त्रियों के अधिकारों की सीमा बढ़ी तो है परंतु कानून का पालन न होने व पुरूष प्रधान समाज की व्यवस्था और सोच को न बदल पाने से महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं हो पा रहा है।

यह प्रश्न सामाजिक स्वीकृति की है कि जब तक समाज की सोच नही बदलेगी, तब तक स्थिति बदलने वाली नहीं है। केवल कुछ कानूनी अधिकार मिलने से ही नारियों की स्थिति नहीं सुधर सकती, बल्कि सामाजिक स्वीकृति भी आवश्यक है। यही स्थिति साहित्य जगत में भी है। जब तक साहित्य–नायकत्व को पुरूष प्रधान व्यवस्था से निकालकर मानवीय वास्वतिक पृष्ठभूमि पर नहीं रख दिया जाता तब तक नारी की अस्मिता पर आधारित रचनाएं साहित्य जगत में नहीं आ पायेगी।

lUnHkZ xzUFk &

1. रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास।
2. डॉ. नागेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, (पृष्ठ 179 से 187)

■■

ukjh&foe'k

Mk- cfB;kj flag lkg
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी
राजेन्द्र महाविद्यालय, छपरा बिहार,

चिरन्तन सत्य के साथ समय सदैव बदल रहा है। आज समाज बदलाव के जिस पड़ाव पर पहुॅचा है वहॉ शिक्षा, संस्कृति और जीवनगत् अधिकांष साधन, सुविधाओं में वृहद् विकासात्मक बदलाव आया है। आदि काल, मध्य काल, आधुनिक काल, उत्तरआधुनिक काल जैसी विभिन्न अभिधाओं से युग–परिवेश के चिन्हांकन में परिवर्तन देखा जा रहा है। शिक्षा, चिकित्सा, राजनीति, अर्थव्यवस्था, सूचनातंत्र, मनोरंजन, आवश्यकता और विलासिता के संसाधनों में अचरजमय अभिनवता देखी जा रही है। दूसरी तरफ समाज परम्पराओं, रूढ़ियों, अंधविश्वासों, कर्मकाण्डों और भेदभावों को लेकर जिस जगह पर खड़ा था वह वहॉ से आज भी हिलता–डुलता नहीं दिख रहा है, सर्वथा जड़वत् वहीं खड़ा है। जाति, धर्म, लिंग, भाषा, भूगोल आदि ऐसे तत्व आज भी चरम पर चलायमान हैं जिनसे समाज की विद्रूपता में दिन ब दिन बेतहाशा वृद्धि होती हुई दिखाई दे रही है।

स्त्री–पुरूष भेदभाव भारतीय समाज का सदा से एक बड़ा विकार रहा है और आज भी बना हुआ है। कहने को तो कहा जा रहा है कि पहले की तुलना में समाज काफी बदल चुका है। जाति, धर्म, लिंग आदि विषमता और भेदभाव के रूढ़ आधारों के प्रति लोगों के दृष्टिकोण और व्यवहार में सकारात्मक बदलाव आया है। आज स्त्री–पुरूष वास्तव में जीवन व समाज की गाड़ी को चलाने वाले दो पहिए के रूप में अपनी–अपनी समान भूमिकाएॅ अदा कर रहे हैं। स्त्री, पुरूष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है और वह शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, राजनीति, प्रशासन, खेलकूद, कलाएॅ आदि किसी भी क्षेत्र में पुरूषों की तुलना में कम नहीं ऑकी जा सकती। आज वह गांव से शहर तक, घर से कार्यालय तक, सड़क से संसद तक, जमीन से आसमान तक हर मोर्चे पर समानता के साथ सफल नज़र आ रही है। किंतु ये बातें सभाओं में माईक थामकर तालियॉ बटोरने के अलावा और कुछ नहीं। सच्चाई के धरातल पर इस तरह की जुमलेबाजियॉ

दम तोड़ देती हैं। ऐसी सफल महिलाओं की गणना की जाए और उनका प्रतिशत निकाला जाए तो सारा हकीकत खुद ब खुद बयां हो जाएगा। आज भी क्रीमीलेयरों की तरह इन महिलाओं के अलावा अधिकांश का जीवन उन्हीं पुरानी घर की चहारदीवारी, चूल्हे चक्की, बच्चों और बुजुर्गों की सेवा–सुश्रुषा तक सीमित नज़र आती है। इसके अलावा उनकी अमानुषिक प्रताड़नाओं की लम्बी कहानी अलग।

परिवार से लेकर विशाल समाज की यात्रा में कदम–कदम पर उन्हें अनेक मर्यादाओं, वर्जनाओं और प्रताड़नाओं का सामना करना पड़ता है। भ्रूण हत्या, दहेज उत्पीड़न, बलात्कार, हत्या, वैश्यावृत्ति आदि बड़ी समस्याएँ एक तरफ समाज का चेहरा प्रत्यक्ष तौर पर दागदार करती हैं वहीं घर पर ही अपनी इच्छाओं और स्वतंत्रता के साथ कदम–कदम पर समझौता करने पर बाध्य होना और किसी के मनोनुकूल कार्य न हो पाने पर गालियॉं, मारपीट बर्दाश्त करना और कार्यकौषल में अभाव के कारण माता–पिता पर बरसने वाली फब्तियॉं सहने पर मजबूर होकर पराश्रित, लाचार और समझौतापरस्त जीवन जीने की अप्रत्यक्ष समस्या उसकी स्वयं महसूस करने की है जिसका अधिकांश हिस्सा अनुभूतिजगत् में ही सीमित रहता है जुबान तक का सफर तय ही नहीं कर पाता।

यह शोषण और उत्पीड़न का व्यापक जाल पुरूषवर्चस्ववादी सुनियोजित षड्यंत्र के तहत समाज में फैलाया गया है। इसकी जड़ें बहुत गहरी हैं धर्म की आड़ लेकर आस्था और कर्मकाण्डों के प्रावधान बड़ी चतुराई से किए गए हैं जो सामाजिक व्यवस्था का सूत्रपात करने वाले प्राचीन ग्रंथों में देखे जा सकते हैं। ''भारतीय चिंतन का आरंभ ऋग्वेद से होता है। वेदों की मुख्य देवियॉं हैं– ऊषा, सरस्वती, पुरान्धी, इला, इन्द्राणी, वरूणानी आदि। इन देवियों में से किसी का महत्व देवताओं के समकक्ष नहीं है। वेदकालीन अधिकांश देवियों का बाद के साहित्य में उल्लेख नहीं मिलता। कुछ अपवाद हैं– पृथ्वी और सरस्वती।''[1] इन ग्रंथों के रचयिताओं ने देवी–देवताओं तक को नहीं छोड़ा। छोड़ते भी कैसे यदि इनमें समानता की स्थिति दिखाई जाती तो क्या समानता की परम्परा इन्सानों तक विकसित नहीं होती? वहॉं से लैंगिक समता के उदाहरण नहीं लिए जाते? और उस आधार पर समानता मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार नहीं मान लिया जाता? और यदि कोई उनके अधिकार हनन करने का दुस्साहस करता तो क्या उसके विरूद्ध महिलाएँ

आक्रोशित होकर प्रतिरोध का स्वर मुखर नहीं कर देतीं? किन्तु ऐसा कुछ नहीं हुआ और समाज के व्यवस्था निर्माताओं ने अपनी चतुराई और चालाकियों से मनोनुकूल मान्यताओं व क्रियाकलापों को व्यावहारिकता के स्तर पर लोगों के दिलोदिमाग में आख़िरकार रोप ही लिया।

प्राचीन समाज के संविधान 'मनुस्मृति' ने समाज के भीतर अन्याय के बीज बोने के अपने बहुआयामी प्रयासों में जिस तरह से दूरगामी सफलता पाई है उन्हीं में से एक लैंगिक भेदभाव भी है। यह ग्रंथ उपदेश देता है कि–

''विशीलः कामवृत्तो वा गुणैर्वा परिवर्जितः। उपचर्यः स्त्रिया साध्व्या सततं देववत्पतिः।।''[2] अर्थात् यदि पति अनाचारी हो या परस्त्री में अनुरक्त हो, या विद्यादि गुणों से रहित हो, तो भी साध्वी स्त्री को सर्वदा देवता की तरह अपने पति की सेवा करनी चाहिए। इसी तरह आगे लिखा गया है–

इस तरह की व्यवस्था को भेदभाव एवं कपटपूर्ण माना जाना स्वाभाविक है। जब प्रकृति ने किसी की सृजन प्रक्रिया में, पालन पोषण में और कार्यकुशलता में कोई भेदभाव नहीं किया तो फिर इस तरह के भेद किया जाना मानवीय कुटिलताओं के अलावा और क्या कहा जा सकता है। दरअसल, स्वयंभू श्रेष्ठ पुरूष ने अपना वर्चस्व व हुकूमत कायम करने और स्त्री को अपनी अपेक्षाओं के अनुरूप इस्तेमाल करने के उद्देश्य से यह सारा नाटक रचा है और इसकी असलियत के आगे पर्दा डालकर उसने अपने मंसूबों में दीर्घकालीन सफलता पाई है। किन्तु सत्य यह है कि हर छल का देर–सबेर खुलासा होता ही है, सच्चाई एक दिन सबके सामने आती ही है और जिस दिन यह संभव होता है चाहे कोई भी धर्म हो, कोई भी संस्कृति हो, कोई भी पूज्यपाद प्रतिष्ठित तथाकथित महामानव हो उसके खिलाफ आक्रोश और विद्रोह की रणभेरी बजना स्वाभाविक है। क्या डॉ. अम्बेडकर के द्वारा हजारों लोगों की विशाल सभा में मानवता विरोधी मनुस्मृति दहन ऐसा ही उदाहरण नहीं है?.... और क्या उनके मानस पुत्रों का सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक आदि क्षेत्रों में उत्तरोत्तर विकास नहीं हो रहा है? रूढ़ अमानवीय मान्यताओं और प्रचलित व्यवहारों के प्रति विद्रोही विचार रखने वाली और अपने जीवन में क्रियान्वित करने वाली बहुचर्चित लेखिका तसलीमा नसरीन लिखती हैं ''धर्म के कवच का इस्तेमाल करते हुए पितृसत्तात्मकता को बनाए रखने की साजिश काफी पुरानी है। अगर कोई 'संस्कृति' कहती है कि स्त्री को जंजीरों में जकड़ कर, दास बनाकर रखना

चाहिए तो ऐसी संस्कृति का सम्मान चाहे वह हिंदू हो, मुस्लिम हो, ईसाई हो या यहूदी हो कोई भी समझदार, सुसंस्कृत और प्रगतिशील व्यक्ति नहीं कर सकता। सही मायनों में सुसंस्कृत लोगों ने हमेशा बर्बर प्रवृत्तियों का विरोध किया है। बंगाल के महान् समाज सुधारकों ईश्वरचंद्र विद्यासागर और राममोहन राय ने भी बदलाव लाने के लिए हिंदू धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाई थी।'[3] यहाँ धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाई थी कहने का आशय स्पष्ट है कि व्यक्ति जिस भी धर्म का अनुयायी हो यदि उसकी सोच मानवीय है, उसकी दृष्टि में मनुष्य को मनुष्यता का दर्जा प्राप्त है, तो वह उन तमाम कारकों के खिलाफ खड़े होने के लिए तत्पर होगा जो मनुष्यता के आड़े आ रहे हैं और जिनसे किसी का निर्दोष जीवन कष्टमय हो रहा हो।

समय की गतिशीलता के साथ–साथ स्त्री उत्पीड़न के नये–नये आयाम भी अस्तित्व में आते जा रहे हैं। कहीं दहेज के नाम पर महिला को क्रूरतापूर्वक जला देना, सरकारी–गैर सरकारी कार्यक्षेत्रों में उनका दैहिक शोषण, भ्रूण हत्या, चलती गाड़ियों में बलात्कार, पद और पैसे की ताकत का दुरूपयोग करते हुए बदस्तूर नित नवीन लिखी जा रहीं बदनुमा, दागदार, काली इबारतें प्रकाश में आ रही हैं। अनेक सफेदपोश नेताओं, मंत्रियों और सूट–बूट वाले अफसरों की काली करतूतों के नित नवीन मामले जैसे–जैसे सामने आ रहे हैं नारी उत्पीड़न के समकालीन तौर–तरीकों का एक नया अमानवीय इतिहास ही बनता जा रहा है।

वैसे उम्मीद यह की जाती है और वास्तव की जानी चाहिए कि शिक्षा का स्तर बढ़ने के साथ–साथ समाज में जागृति आएगी। इसी के साथ नारी उत्पीड़न और शोषण भी मिटेगा लेकिन संतोषजनक ऐसा होता हुआ नहीं दिख रहा है। पिछले कुछ बरसों के दरमियान देश की राजधानी में महिलाओं के साथ होने वाले बर्बर अत्याचार, विभिन्न प्रान्तों के प्रतिष्ठित पदों पर विराजमान लोगों द्वारा चारित्रिक पतन की घटनाएँ, संतो–महात्माओं के वेषधारियों द्वारा स्त्रियों के साथ कथित अत्याचार की घटनाएँ... नारी उत्पीड़न को स्पष्ट करती हैं। प्रदेश के सन्दर्भ में देखें तो छत्तीसगढ़ राज्य महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष आर. विभाराव ने कहा था कि, ''ग्रामीण इलाके की महिलाएं शिक्षित तो हैं लेकिन समाज में बदनामी के कारण घरवालों की प्रताड़ना सहती हैं। जब स्थिति विकराल होती है तब वे मजबूर होकर महिला आयोग या फिर पुलिस की मदद की गुहार लगाती हैं। आयोग में

कुछ एक मामले ऐसे भी आते हैं जहां महिलाएं ही दबाव में आकर बयान से ही मुकर जाती हैं और दोषी खुला घूमता है।''[4] गांवों की शिक्षा में अभी भी तुलनात्मक दृष्टि से पिछड़ेपन का हावाला देकर पिण्ड छुड़ाने जैसा कुछ उपाय किया जा सकता है किन्तु महानगरों की गति के साथ दौड़ लगाने वाले राजधानी जैसे शहरों के बारे में क्या कहा जाए जहॉ नितनवीन अप्रिय, बर्बर घटनाएँ घटित होती हैं और पूरा देष संवेदनाओं से भर जाता है। दामिनी, निर्भया जैसी कितनी वारदातें मनुष्य को भीतर से झिंझोड़ जाती हैं।

इनके अलावा नारी का एक दूसरा रूप भी है जहॉ उसे सौन्दर्य उपादान के रूप में देखा या प्रस्तुत किया गया है। रीतिकालीन कवि भूषण की उक्ति 'जदपि सुजाति, सुलक्षिणी, सुबरन, सरस, सुवृत्त/भूषण बिनु न बिराजई कविता, बनिता मित्त।' के तर्जे बयॉ पर पहनने–ओढ़ने और सजने संवरने तक ही सीमित होकर रह गई है। उसका विवेक, उसकी आत्मनिर्भरता, उसका आत्मसम्मान और स्वाभिमान जैसी चीजें मानो उसे कभी मिली ही न हों और वह तमाम भौतिक साधनों के बीच भी जीवन का एक कदम भी पिता, भाई, पति या पुत्र के द्वारा बिना सहारा प्राप्त किए कभी उठाया ही न हो। उसके इस रूप को रेखांकित करते हुए सुधा अरोड़ा ने अपनी एक कविता में लिखा है–''अकेली औरत, चेहरे पर मुस्कान की तरह/गले में पेंडेंट पहनती है, कानों में बूंदे, उंगली में अंगूठियां, और इन आभूषणों के साथ अपने को लैस कर, बाहर निकलती है, जैसे अपना ऐश्वर्य साथ लेकर निकल रही हो/पर देखती है कि उसके कान बूंदों में उलझ गए, उंगलियों ने अंगूठियों में अपने को बंद कर लिया, गले ने कसकर नेकलेस को थाम लिया.../पर यह क्या...,सबसे ज़रूरी चीज तो वह, साथ लाना भूल गई जिसे इन बूंदों, अंगूठियों और नेकलेस से बहला नहीं पाई! उसका अपना आप जिसे वह आलमारी के किसी बंद दराज में ही छोड़ आई।''[5] पूरी कविता का लब्बो–लुआब यही कि गहनों और कपड़ों में लदी–फंदी, संजी–संवरी खूबसूरत लगने वाली उस औरत का अस्तित्व जैसे उन्ही लबादों के बीच कहीं खो गया है। जैसे वही उसकी पूर्णता है, इसके अलावा उसके व्यक्तित्व का और कोई आयाम नहीं है। जबकि सच तो यह है कि जो कुछ वह है, वह इन सबसे बहुत ऊपर है। वह उसका एक इन्सान के रूप में वैचारिक, भावनात्मक स्वत्व और पूरा व्यक्तित्व है।

सच तो यह है कि स्त्री को कभी समाज में उसका वाजिब स्थान

मिला ही नहीं। एक इन्सान होने के नाते उसे इन्सानों सा जीवन जीने ही नहीं दिया गया। उसे या तो पैरों की जूती माना गया, स्वीच ऑन करते ही चलने वाला कोई भौतिक उपकरण माना गया। किसी ने पशु के साथ उसकी तुलना की, किसी ने मोक्ष के मार्ग में उसे बाधक माना, किसी ने रजस्वला या विधवा के रूप में उसके दर्शन या छायास्पर्श को अपशकुन मान लिया या फिर किसी ने उसकी व्यथा कथा से संवेदनशील होकर उसे बच्चों को लाली पॉप या झुनझुना थमाकर पुचकारने जैसा देवी का दर्जा दे दिया और कह दिया कि उनका सम्मान करने से, उसकी पूजा करने से देवता भी प्रसन्न होते हैं। दोनों ही स्थितियों में उसके वास्तविक जीवन का दमन हुआ है। वह कहीं भी अपने भीतर जो कुछ है उसे जी नहीं पाई है और न ही उसे पा लेने के लिए चेतनामय होकर संघर्ष कर पाई है। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में एक दृष्टि स्थापित की है कि जो समस्या जिस पर चल रही है उसे स्वयं उसके निराकरण के लिए आगे आना होगा। यही उसके निदान का कारगर और सशक्त उपाय है। यही बात यहॉ लागू होती है। बाहर से नारी सशक्तीकरण के भाषण चाहे जितने भी दिए जाएँ, योजनाएँ चाहे जितनी भी बनाई और संचालित की जाएं लेकिन जब तक स्वयं नारी अपनी समस्याओं को पहचानेगी नहीं और उनसे निजात पाने के लिए खुद आगे नहीं आयेगी तब तक संतोषजनक समाधान कठिन है।

आज शिक्षित और जागृत महिलाओं के एक वर्ग द्वारा लेखन के स्तर पर नारी जीवन की दशा पर बड़ी गंभीरता से काम किया जा रहा है और आवाज दूर–दूर तक पहुँच रही है। इन्होंने अतीत के काले दागदार इतिहास को चिन्हित करते हुए भविष्य के लिए नए रास्ते खोलने का सशक्त प्रयास आरंभ कर दिया है। इस क्षेत्र में भी हमेशा पुरूष वर्चस्व रहा है। इसलिए सत्ता का सिंहासन डोलता हुआ और प्रतिष्ठा सुख का बॅटवारा होता हुआ देख सबके लिए बर्दाश्त करना मुश्किल भी हो रहा है। स्त्री–विमर्श पर केन्द्रित वर्तमान महिला साहित्यकारों में ख्यातिलब्ध लेखिका मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी लेखिका मित्र अर्चना वर्मा को लिखे एक पत्र में इन दशाओं का चित्रण करते हुए लिखा है– ''अर्चना, कितना मुबारक मुहूर्त था जब तुमने मुझसे आत्म चरित्र लिखने की पेशकश की थी, यह बात आज महसूस हो रही है नहीं तो इस लेखन–जगत में खुद को रचनाकार के रूप में स्थापित मालिकाना स्वभाव वाले लोगों के चेहरों का मुखौटा कैसे टूटता? उनके

भीतर का खौफनाक मर्द खौफजदा माहौल कैसे बनाता? और उस अठारहवीं सदी के प्रेत के बरअक्स नयी सदी का खुद्दार साहित्यिक समाज लानत कैसे बरसाता। स्त्री को भी अपने होने और साहित्य में लोकतंत्र की छवि का आभास किस तरह होता, अगर ऐसा घटित न होता तो। साथ में यह भी विश्वास कि सत्य के चेहरे के मुकाबले मुलम्मे सदा ही कमजोर पड़ते हैं।''[6] इसी तस्वीर को सुधा अरोड़ा का यह कथन रेखांकित करता है– ''हमारा भारतीय लेखक समाज काफी क्रूर और निर्मम है। बाहर–बाहर से सहानुभूति जताता हुआ, यह एक लेखिका के पर कतरने को और उसके औरत होने के कारण जन्मे दुख, उसकी तकलीफ, उसकी व्यथा पर ठहाका लगाने की मंशा रखता हुआ शातिर अंदाज में मंद–मंद मुस्कुराता और व्यंग्यात्मक टिप्पणियॉ करता है।''[7] तात्पर्य यही है कि ये सारे कार्य जैसे लेखन के क्षेत्र में जमे हुए पुरूष मठाधीशों के हैं और जब कोई महिला इस क्षेत्र में आती है तो वह जैसे कोई नुमाईश की वस्तु होती है जिसे देखकर, उसकी बातें सुनकर वास्तविक बुद्धिजीवीगण जैसे कुछ देर के लिए मन बहलाव ही कर लेते हों और वे पुनः अपने में रमे रह जाते हों, जैसे क्लास रूम में किसी स्टूडेंट की कुछ ओजस्वी बातें सुनकर टीचर मंद–मंद मुस्कराते हुए उसकी कही हुए बातों से तो बरसों पहले से ही अवगत होने के गौरवबोध से फूला न समा रहा हो।

'स्त्री–पुरूष तुलना' में ताराबाई शिंदे ने पुरूषों को आईना दिखाने वाले अंदाज में लिखा है कि ''स्त्री भैंसों के समान मूरख कहलाती है। उसे न पढ़ना आता है न ही लिखना, तो क्या ईश्वर ने उसे बुद्धि नहीं दी थी? अविचारी होते हुए भी वे तुमसे तो अच्छी हैं। तुम अपने आप को जरा देखो भी– स्वयं को सयाने, विद्वान समझते हो, फिर भी कारागृहों में तुम्हारी ही भरमार है। किसी ने जाली रूपए बनवाए, किसी ने खून किया, किसी ने रिश्वत ली, कोई दूसरे की बहू लेकर भागा, राजद्रोह किया, किसी न किसी गुण के कारण सरकार ने तुम्हें बंदीशालाओं में आतिथ्य प्रदान किया है।''8 यहॉ पुरूषों के स्वभाव में जो परूषता विद्यमान होता है उसकी ओर संकेत किया गया है। वह छल, छद्म, अहंकार, लोभ, काम, क्रोध जैसे तत्वों को अपने स्वभाव में स्थान प्रदान कर चुका होता है जिसकी परिणति स्त्री पर होने वाले बहुविधि अन्याय और अत्याचारजनित अनेक सामाजिक विकृतियॉ होती हैं। जबकि स्त्री में ममता, दया, भावुकता, त्याग, प्रेम, सेवा जैसी कोमल

भावनाओं का अधिक वास होता है। किन्तु इनकी भी एक सीमा के बारे में सोचना होगा क्योंकि अधिक सुकुमारता और उदारता को कमजोरी मानने में देर नहीं लगती और यही होता भी आया है। इसलिए उसमें भावना और बुद्धि दोनों का यथोचित समन्वय और संतुलन आवश्यक है।

fu"d"k %&

fu"d"kr% संक्षेप में कहा जा सकता है कि, पुरूष प्रधान भारतीय समाज में नारी सदैव न केवल दोयम दर्ज पर रही बल्कि वह शारीरिक और मानसिक दोनों ही स्तरों पर शोषण, अपमान, तिरस्कार और उत्पीड़न का शिकार भी होती रही। उसके साथ ये स्थितियॉ घर के भीतर भी रहीं और बाहर भी। उनकी इस दशा के प्रति संवेदनशील होने वाला व्यक्तित्व प्रायः हर युग में उत्पन्न हुआ है जिसने नारी के पक्ष में बुलंदी से आवाज उठाई है और उनके कुछ सार्थक परिणाम भी समाज को प्राप्त हुए हैं किन्तु आज भी नारी जीवन की अनेक ऐसी समस्याएॅ हैं जिनमें से कुछ सनातन रूप से उसके साथ–साथ चल रही हैं और काल–परिवेश के परिवर्तन से कुछ नई विषंगतियों ने भी सिर उठाया है, जिनके समाधान की आवश्यकता है। इन मुद्दों को लेकर कुछ सरकारी नीतियॉ भी बनाई जा रही हैं, उनका क्रियान्वयन भी सफल–असफल, अर्द्धसफल या आंशिक सफल तरीके से हो रहा है। सामाजिक कार्यकर्त्ताओं, पत्रकारों, साहित्यकारों, कलाकारों द्वारा अपने–अपने स्तर पर यथासामर्थ्य प्रयास किए जा रहे हैं। इनमें पुरूष भी हैं, महिलाएॅ भी हैं किन्तु ऐसा माना जाता है कि 'स्वानुभूति' और 'सहानुभूति' में अंतर होता है। जिस पीड़ा का जो स्वयं भुक्तिभोगी होता है उसकी संवेदना और संघर्ष के तेवर व कलेवर में अधिक गंभीरता और वास्तविकता होती है। जैसा कि आज साहित्य के क्षेत्र में देखा जा रहा है। मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, चित्रा मुद्गल, मृदुला गर्ग, नासिरा शर्मा, मैत्रेयी पुष्पा, अलका सरावगी, जया जादवानी, सुधा अरोड़ा, अर्चना वर्मा, प्रभा खेतान, तसलीमा नसरीन, शीबा असलम फहमी, रमणिका गुप्ता, हेमलता महिश्वर, सुशीला टाकभौरे, नीलाक्षी सिंह, चन्द्रकान्ता, अनामिका, मधु कांकरिया, लवलीन, नीलाक्षी सिंह, कौसल्या बैसन्त्री, किरण सिंह, जयश्री राय, लता शर्मा, मनीषा कुलश्रेष्ठ, विमल थोरात, निरूपमा अग्रवाल, सुमित्रा महरोल आदि महिला लेखिकाओं द्वारा विभिन्न विधाओं में सशक्तता से गंभीर कार्य किये जा रहे हैं वहीं पुरूष वर्ग से भी अनेक चिंतकों, लेखकों, पत्रकारों, सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ताओं

द्वारा न केवल समर्थन दिया जा रहा है बल्कि पूर्ण संवेदना और ईमानदारी के साथ सार्थक कार्य भी किए जा रहे हैं। कुल मिलाकर स्त्री दशा–दिशा को केन्द्र में रखकर हो रहे चिंतन, लेखन और सभी तरह के साहित्यिक उपक्रम 'स्त्री–विमर्श' के कन्द्रीय पक्ष हैं। इनमें निरंतर पल्लवन–पुष्पन की आवश्यकता है क्योंकि यह समाज की 'आधी–आबादी' के अस्तित्व और विकास से सरोकार रखने वाला ऐसा गंभीर मुद्दा है जो उनके व्यक्तिगत् जीवन की सहजता, सुगमता, खुशहाली और न्याय से जुड़ा है वहीं सम्पूर्ण समाज के समग्र विकास से भी गहरा संबंध रखता है। साथ ही समस्या की जड़े बहुत गहरी हैं और फैलाव अत्यंत व्यापक। इसलिए धैर्य और दृढ़तापूर्वक सुदीर्घ निदानात्मक प्रयासों की आवश्यकता है।

lnHk lph %&

1. व्ही. पी. गुप्ता–मोहिनी गुप्ता : स्वतंत्रता संग्राम और महिलाएँ, पृ. 50
2. गणेशदत्त पाठक (टीकाकार) : मनुस्मृति, पृ. 190
3. तसलीमा नसरीन : हंस, जुलाई–2011, पृ. 35
4. हरिभूमि, 11 नवंबर, 2011, पृ. 5
5. सुधा अरोड़ा, हंस, अगस्त– 2011, पृ. 40
6. मैत्रेयी पुष्पा : कथादेश, दिसंबर–2010, पृ. 39
7. सुधा अरोड़ा : हंस, अगस्त– 2011, पृ. 129
8. शंभुनाथ सिंह (संपादक) : सामाजिक क्रांति के दस्तावेज, भाग–2, पृ. 860

■■

ukjh ,oa lekt

f'kokuh 'kekl
अतिथि प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान
मा. गां. शा. कला एवं विज्ञान
स्नातकोत्तर महाविद्यालय
खरसिया, जिला– रायगढ़

नारी, यह शब्द सुनते ही हृदय में करुणा और वात्सल्य का संचार होने लगता है। समर्पण से भरा इस नारी का जीवन अत्यंत दयनीय है। प्राचीन काल से लेकर आज तक हम देखें तो नारी की स्थिति निम्न स्तर की ही बनी हुई है। हमारा समाज पहले भी और कुछ सीमा तक आज भी पुरुष प्रधान ही है। यहां पितृसत्तात्मक व्यवस्था ही चली आ रही है। नारी को नारायणी का रूप माना जाता था कहा जाता था जहां नारी है वहां देवता का निवास होता है पर यह केवल कोरा आदर्श है वास्तविकता कुछ भी नहीं। स्त्री जाती तब भी प्रताड़ित की जाती थी और आज भी।

नारी और समाज का संबंध प्रारंभ से ही विपरीत रहा है। इन के मध्य संबंध शेर और लोमड़ी के मध्य संबंध जोड़ने जैसा होगा। समाज शुरुआत से ही नारी स्वतंत्रता का विरोधी रहा है। नारी प्रारंभ से ही शोषण का शिकार होती आ रही है। बाल विवाह, सती प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या, सब ने नारी के सम्मान को तार–तार किया है। सती प्रथा द्वारा जीवित स्त्री को अपने मृत पति के साथ जिंदा जला दिया जाता था। छोटी छोटी बालिकाओं का विवाह कर उन्हें पारिवारिक जिम्मेदारी में बांध दिया जाता था। इसे लोग प्रथा समझते थे और यही नारी जाति के जीवन का उद्धार समझा जाता था परंतु वास्तविकता यह थी कि विधवा स्त्री के भरण–पोषण से बचने के लिए ऐसा किया जाता था। प्रारंभ से ही स्त्री को पुरुष से पीछे रखा गया नारी का अस्तित्व ही पुरुष के साथ जोड़ दिया गया नारी पुरुष के बिना अस्तित्व हिन मानी जाती थी। हमारे समाज में नारी को बचपन से ही कुछ संस्कार दिए जाते हैं और वे संस्कार उन्हें सहज कर रखना होता है। जैसे धीरे–धीरे बोलो, किसी के सामने ज्यादा नहीं हंसना, समझदार बनकर रहना। उस बच्ची का बचपन ना जाने किस अंधेरे कमरे में गुमनाम हो जाता

है। विवाह से पूर्व एक लड़की का अस्तित्व उसके पिता से होता है और विवाह पश्चात पति से इसी समाज में एक विवाहित कन्या को यह सिखाया जाता है कि उसका पति परमेश्वर के समान है उसकी आज्ञा का पालन करो समझौता करके चलो यह तो सभी लड़की को करना ही पड़ता है। हमें यह कहीं नहीं सुनने को मिलेगा की पत्नी देवी का रूप है इनका सम्मान करो। ईश्वर ने समाज में स्त्री और पुरुष को समान रूप से बनाया है यह तो लोगों की सोच है जो स्त्री को दास और पुरुष को उसका स्वामी समझते हैं। स्वतंत्रता प्रत्येक प्राणी को अत्यंत प्रिय है परंतु यह समाज स्त्री की स्वतंत्रता का हनन यह कह कर करता है क्योंकि तुम स्त्री हो ! इसी को देख एक नारीवादी विचारक सिमोन कहती है "नारी जन्म से नहीं होती बल्कि बनाई जाती है।"[1] इस सृष्टि की कल्पना नारी के बिना अधूरी है। इस लौकिक संसार की रचयिता नारी ही है यह नारी का समर्पण, त्याग, उसके हृदय की कोमलता ही है, जो परिवार को जोड़ कर रखती है। क्या किसी ने यह सोचा कि मनु के संग सतरूपा ना होती तो क्या इस सृष्टि की रचना होती ? फिर भी निर्मात्री होकर भी नारी का स्थान अंत में आता है।

पश्चिमी देशों में भी नारी की यही दशा थी जिसे सुधारने के लिए विभिन्न विद्वानों ने अपने विचारों का प्रयोग किया। उन्होंने स्त्री की समानता को स्वीकारा जिनमें प्लेटो और जे एस मिल का नाम प्रसिद्ध है। यूनानी विचारक प्लेटो का मानना था कि "लिंग के अतिरिक्त स्त्री पुरुष में अन्य कोई भेद नहीं"[2] उनकी सोच थी कि जो कार्य पुरुषों द्वारा किया जाता है उन्हें स्त्रियां भी कर सकती हैं। उन्होंने कहा "जिस प्रकार एक कुत्ता घर की रखवाली कर सकता है उसी प्रकार एक कुत्तिया भी कर सकती है। "इसी प्रकार जेएस मिल ने स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार दिलाने के लिए स्त्री मताधिकार का समर्थन किया। उनके प्रयासों के परिणाम स्वरुप ही विश्व के विभिन्न देशों में स्त्रियों को मतदान का अधिकार प्रदान किया गयां।

विश्व के अन्य देशों की तरह ही भारत में भी नारी की दशा और जीवन की दिशा चिंतनीय थी। यह भारतीय समाज की ही देन तो थी जिसमें स्त्रियों को सती बनाकर उनके पति के शव के साथ जिंदा जला दिया जाता था। स्त्रियों को परिवार संभालने और बच्चों का पालन पोषण करने वाली समझा जाता था। कई स्थानों पर एक वस्तु की तरह उनकी खरीदी और बिक्री की जाती थी। पुत्र की प्राप्ति ना होने पर एक पुरुष कई अन्य स्त्रियों से विवाह करता था। इस समाज में नारी भौतिक सुख का साधन मात्र बन गई थी नारी के प्रति मानवता तो समाप्त होती जा रही थी।

ना उसे खुलकर बोलने की आजादी थी ना पढ़ने की ना घूमने की उसकी दशा आंगन में बंधे उस जानवर के समान थी जो बाहर चारा चुगने भी ले जाए जाते तो एक पुरुष साथ जाता था। गुलाब की पंखुड़ी के समान ह्रदय वाली नारी को सजीव आत्मा ना मानकर केवल दूसरों की इच्छा पूर्ति का साधन माना गया। किंतु नारी की यह दशा लंबे समय तक नहीं बनी रह सकी इसका विरोध किया गया जिनमें सर्वप्रथम राजा राममोहन राय का नाम आता है जिन्होंने सती प्रथा का विरोध किया तथा विधवा पुनर्विवाह का समर्थन कर सती प्रथा को दंडनीय अपराध घोषित करवाया। वही विलक्षण संस्कृत की ज्ञाता पंडिता रमाबाई स्वयं महिला होकर भी महिलाओं के उत्थान उनकी शिक्षा के लिए बहुत कार्य किया कृपा सदन, शारदा सदन जैसे आश्रम बनाकर विधवा महिलाओं को आश्रय दिया उनको शिक्षित किया तथा लघु एवं कुटीर उद्योग आदि के द्वारा उन्हें रोजगार उपलब्ध करवाया। इसी तरह महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद आदि महापुरुषों ने नारी की दशा में सुधार के लिए प्रयास किए। गांधी जी ने कहा–" स्त्री अहिंसा की मूर्ति है। अहिंसा का अर्थ है अनंत प्रेम और इसका अर्थ है कष्ट सहने की अनंत शक्ति। इस शक्ति का अधिक से अधिक मात्रा में परिचय पुरुष की माता, स्त्री से बढ़कर और कहां मिल सकता है।"[3]

इस पितृसत्तात्मक समाज को यह समझना होगा कि नारी अबला नहीं यह उसका प्रेम है जो उसे विरोध करने से रोकता है यह नारी की विवशता नहीं की वह पुरुष के पीछे चलना स्वीकार करती है यह उसका शौर्य है जो उसे यह हिम्मत देता है कि वह लड़खड़ा ने पर एक पुरुष को पीछे से संभाल सके।

गांधी जी ने कहा था कि–" स्त्री को अबला कहना उसका अपमान करना है पुरुष उसे अबला कह कर उसके साथ अन्याय करता है। यदि शक्ति का अर्थ पार्शि्वक सकती है तो पुरुष की अपेक्षा स्त्री में निसंदेह कम पशुता हैं। किंतु यदि शक्ति का अर्थ नैतिक शक्ति है तो पुरुष की अपेक्षा स्त्री निश्चित रूप से अधिक शक्तिशाली है।"[4] नारी एक देह में नौ रूपों को धारण करती है। यह पार्वती बनकर शिव से प्रेम कर सकती है तो काली बनकर उसके क्रोध का दमन भी कर सकती है।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है और हमें यह परिवर्तन इस युग के समाज में भी देखने को मिलेगा जिसकी वजह स्वयं नारी है जिसने अपनी वीरता अपनी प्रतिभा का प्रमाण देते हुए अपनी दशा में सुधार किया है। आज की नारी ने अपना स्थान पुरुषों के बराबर स्थापित कर लिया है। नारी की

बदलती स्थिति में समाज के विचार को भी बदलना प्रारंभ कर दिया है आज हमारा समाज पुरुषों की प्रधानता को छोड़ स्त्री–पुरुष की समानता में विश्वास करने लगा है।

आज स्त्रियां चांद पर जा रही है फौज में शामिल हो रही है जो अब तक अपने परिवार तक सीमित थी जो मां बनकर बस अपने बच्चों की देखभाल किया करती थी आज वह पूरे देश की रक्षक बन चुकी है। फिर भी कुछ सीमित मानसिकता है जो उनका पीछा नहीं छोड़ रही है यह उन्हें चार दीवारों में कैद रखना चाहती है लेकिन यह दृढ़ विश्वास है कि जिस तरह महिलाएं आगे आ रही हैं अपना सम्मान पूर्णता समाज में स्थापित करके रहेगी।

स्त्री का सम्मान प्रत्येक राष्ट्र की जिम्मेदारी है। जहां स्त्री का सम्मान नहीं होगा वह राष्ट्र अपना विकास कभी नहीं कर सकता नेहरु जी ने कहा भी था–" कोई भी देश तब तक महान नहीं बन सकता जब तक उसके देश के लोगों की सोच और कर्म संकीर्ण हो।"[5] राष्ट्र रूपी रथ की स्त्री और पुरुष दो पहिए हैं यदि इनमें से एक भी सही ना हो तो विकास के पथ में उसका आगे बढ़ना संभव नहीं है। भारत जहां स्त्री को देवी माना जाता है वहां के लोगों को यह स्वीकारना होगा कि "भोली सी सूरत है यह नारी, मां ममता की मूरत है यह नारी धन्य हुए हम इन्हें देखकर, इस धरती पर देवी का अवतार है या नारी।" उन्हें नारी का सम्मान करना होगा और मां भारती की सभी संतानों को समान रुप से सम्मान देना होगा यही मां भारती के चरणों में सही भेंट होगी।

lanHk xzFk

1. इग्नू राजनीति विज्ञान नोट्स पीडीएफ नारीवाद
2. राजनीति विज्ञान, राम प्रसाद एंड संस लेखक– डॉ जे श्याम सुंदरम पृष्ठ संख्या 21
3. राजनीतिक चिंतन भारतीय एवं पाश्चात्य, लेखक– प्रो. पी .डी. पाठक पृष्ठ संख्या 82
4. राजनीतिक चिंतन भारतीय एवं पाश्चात्य, लेखक– प्रो. पी. डी. पाठक पृष्ठ संख्या 82
5. आधुनिक राजनीतिक विचारक, लेखक– डॉ. बी एल फाडिया पृष्ठ संख्या 342
6. इंटरनेट विकीपीडिया

jk"Vªh; 'kks/k& laxks"Bh
vk;kstu fnukad % 08 Qjojh 2020
foHkkx& fgUnh

विषय % ''आधुनिक कालीन हिन्दी साहित्य में नारी–अस्मिता का धरातलीय सच''

laj{kd vkSj izkpk;Z	:	डॉ. पी सी घृतलहरे, मो0 नं0 9754187484
la;kstd	:	डॉ. रमेश टण्डन (विभागाध्यक्ष– हिन्दी), मो. नं. 9685671975
lg& la;kstd	:	श्री दिनेश संजय (सहायक प्राध्यापक– हिन्दी), मो. नं. 7898680604
	:	श्री विनोद जाँगड़े (अतिथि प्राध्यापक– हिन्दी), मो. नं. 6261749484
dks"kk/;{k	:	श्री जयराम कुर्रे (सहायक प्राध्यापक– हिन्दी), मो. नं0 7089104909
vk;kstu lfefr	:	श्री एम एल धीरही (विभागाध्यक्ष– इतिहास)
	:	डॉ. पी एल पटेल (विभागाध्यक्ष– राजनीति शास्त्र)
	:	डॉ. सुशीला गोयल (विभागाध्यक्ष– समाज शास्त्र)
	:	श्रीमती सरला जोगी (विभागाध्यक्ष– प्राणी विज्ञान)
	:	श्री अश्वनी पटेल (विभागाध्यक्ष– वनस्पति विज्ञान)
	:	श्री काश्मीर एक्का (विभागाध्यक्ष– भौतिकी)
	:	श्री पवन कुमार चेतानी (विभागाध्यक्ष– वाणिज्य)
	:	श्री मनोज कुमार साहू (सहा. प्राध्या.– वाणिज्य)
	:	श्री जुवेल केरकेट्टा (विभागाध्यक्ष– अंग्रेजी)
	:	श्री शिवाकांत इजारदार (सहा. प्राध्या.– अंग्रेजी)
	:	श्री दुष्यंत कुमार भोई (सहा. प्राध्या.– राज. शास्त्र)
	:	श्रीमती रीता सिंह (विभागाध्यक्ष– अर्थशास्त्र)

vk;kstu lg;ksx ¼'kS{kf.kd½

श्री प्रमोद राठौर, श्री एल डी मानिकपुरी, श्री हरिकृष्ण पटेल,
श्री अर्जुन झा, श्री मनोज बरेठा, श्रीमती प्रियंका राठौर,
कु. शिवानी शर्मा, कु. डिम्पल अग्रवाल.

vk;ktu lg;kx ¼dk;ky;½

श्री डी के यादव, श्री यू एस टोण्डे, श्री आर के साहू, श्री संजय गुप्ता, श्री मदन मलहोत्रा, श्री एस के मेहरा, श्री गोपेश पाण्डेय, श्री एल एस पोर्ते, श्री डी के नागरे, श्री जी डी महंत, श्री प्रेमसाय कश्यप, श्री अरूण यादव, श्री संदीप शर्मा, श्री लखन भारती, श्री रूद्र कुमार राठिया.

jk"Vh; 'k¨ek& l¨x¨"Bh fgUnh d¨ lykgdkj e.My%&

1. श्री ब्रज बिहारी कुमार संपादक चिन्तन–सृजन पत्रिका नई दिल्ली
2. डॉ. के एल वर्मा केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय नई दिल्ली /पं0 रविशंकर विवि रायपुर
3. डॉ. के बी सिंह प्रोफेसर, संपादक अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका ''शोध समीक्षाऔर मूल्यांकन'' जयपुर
4. डॉ मनीषा शुक्ला संपादक अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका ''आन्वीक्षिकी'' वाराणसी
5. डॉ. आशीष शर्मा संपादक अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका ''नवीन शोध संसार'', दिव्य शोध समीक्षा'' नीमच
6. डॉ. विनय कुमार पाठक पूर्व अध्यक्ष छत्तीसगढ़ी राजभाषा आयोग छ.ग.
7. डॉ. एस आर कमलेश प्राचार्य शा. ई राघवेन्द्र राव पी जी विज्ञान महाविद्यालय बिलासपुर/ अपर संचालक क्षेत्रीय कार्यालय उ़च्च शिक्षा विभाग छ.ग. बिलासपुर
8. डॉ. एस एल निराला प्राचार्य बिलासा शा. कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय बिलासपुर
9. डॉ. अंजनी तिवारी प्राचार्य कि. शा. कला एवं विज्ञान स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय रायगढ़
10. डॉ. पी डी महन्त प्राचार्य शा. महावि. जैजैपुर/हसौद
11. डॉ. सुधीर शर्मा, कल्याण कॉलेज भिलाई
12. डॉ. उषा वैरागकर आठले रायगढ़
13. डॉ. मीनकेतन प्रधान केजी शा. महाविद्यालय रायगढ़
14. डॉ. पी सी घृतलहरे प्राचार्य शा. महावि. खरसिया
15. डॉ. डी आर लहरे प्राचार्य शा. महाविद्यालय सारंगढ़
16. डॉ. एफ आर भारद्वाज प्राचार्य शा. महावि. डभरा
17. डॉ. एस एल सोनवानी प्राचार्य शा. महावि. बरमकेला
18. प्रो. बी के पटेल प्राचार्य शा. महावि. नवागढ़

19. प्रो. अर्चना आसटकर प्राचार्य शा. महावि. जोबी/बर्रा
20. डॉ. देवेन्द्र शुक्ला शा. महाविद्यालय सक्ती
21. प्रो. डी के अम्ब्रेला शा. महावि. पत्थलगांव
22. डॉ. मदन लाल पाटले शा. महावि. जांजगीर
23. डॉ. रविन्द्र चौबे केजी शा. महाविद्यालय रायगढ़
24. डॉ. हेमन्तपाल घृतलहरे शास. महावि. सनावल
25. डॉ. आर के टण्डन शा. महाविद्यालय खरसिया
26. डॉ. तारणीस गौतम बिलासा शा. महावि. बिलासपुर
27. प्रो. राजकुमार लहरे पीडी शा. महाविद्यालय रायगढ़
28. प्रो. चरणदास बर्मन शा. महाविद्यालय चन्द्रपुर
29. प्रो. मार्ग्रेट कुजूर शा. महावि. धरमजयगढ़

&¼Lukrd kŸkj fgUnh lkfgR; ifjषn½&

कमलेश धीरहे, रत्ना माहेश्वरी, शैलेन्द्र सिंह, माधुरी चौहान

&¼d{kk ifrfuf/k½&

शोभा राजपूत, सरस्वती खूंटे

&¼ vU; ½&

लता बंजारा, रेणुका महंत, निर्मला राठिया, माधुरी राठिया, सुनील, दीपक, उनिता, मनीषा, माया, ईश्वर, जशवीर, सहदेव, सहोद्रा, पुष्पा, गणेशी, सुजाता, जागेश्वरी, राजेश्वरी, अंजली, रविशंकर, खिलेश्वरी, कुमेश्वरी, मंजू, पद्मिनी, चुनेश्वरी

&¼Nk= l?k inkf/kdkjh½&

श्रीया अग्रवाल, पूर्णिमा साहू, निखिल अग्रवाल, रौशनी राठौर

&¼vk;kstd½&

हिन्दी विभाग

महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय खरसिया,

जिला– रायगढ़